परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्‌घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्‌घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

डिंगल कोश

सम्पादक

डॉक्टर नारायणसिंह भाटी

प्रकाशक

राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी

जोधपुर (राजस्थान)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

डिंगल - कोष

[डिंगल भाषा के ६ पर्यायवाची, १ अनेकार्थी व
२ एकाक्षरी छन्दोबद्ध प्राचीन कोषों का संकलन]

सम्पादक :
डा. नारायणसिंह भाटी,
निदेशक
राजस्थानी शोध-संस्थान, चौंपासनी,
जोधपुर

प्रकाशक
जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त शोध केन्द्र
राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी,
जो ध पु र
१९७८

प्रकाशक
चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा सस्थापित
राजस्थानी शोध-सस्थान, चौपासनी
जोधपुर

प्रथम सस्करण १९५७
द्वितीय सस्करण (परिमार्जित) १९७८
मूल्य पचहत्तर रुपये

मुद्रक :
अनन्त प्रिण्टर्स,
जोधपुर

विषय - सूची

सम्पादकीय - - - - - - - - ७

पर्यायवाची कोष –

१ डिंगल नाम - माळा कवि हरराज - - - - १७
२. नागराज डिंगल - कोष : नागराज पिंगल - - - - २५
३. हमीर नाम - माळा : हमीरदान रतनू - - - - ३३
४ अवधान - माळा . कवि उदयराम - - - - ६२
५ नाम - माळा अज्ञात - - - - १४३
६. डिंगल - कोष : कविराजा मुरारिदान - - - १६७

अनेकार्थी - कोष –

७ अनेकारथी - कोष कवि उदयराम - - - - २६३

एकाक्षरी - कोष –

८ एकाक्षरी नाम - माळा वीरभाण रतनू - - - - २७५
९ एकाक्षरी नाम - माळा कवि उदयराम - - - - २८१

अनुक्रम - - - - - - - - ३१७

द्वितीय संस्करण का
निदेशकीय वक्तव्य

इस ग्रथ के प्रथम सस्करण की सीमित प्रतिया ही प्रकाशित की गई थी। राजस्थानी भाषा के अध्यय-अध्यापन मे पिछले वर्षो मे द्रुतगति से विकास हुआ जिसके फलस्वरूप इसकी माग देश विदेशो मे वहुत वढी। सस्था की आर्थिक कठिनाइयो के कारण इसका पुनर्मुद्रण कार्य हाथ मे नही लिया जा सका पर इस ग्रथ के महत्व को देखते हुए चौपासनी शिक्षा समिति ने इसके प्रकाशनार्थ विशेष रूप से स्वीकृति प्रदान की और इस कार्य मे समिति के सचिव डा० गोविन्दसिह जी ने विशेष रुचि ली जिसके लिये मैं उनको धन्यवाद देता हू। प्रथम सस्करण मे जो त्रुटियाँ रह गई थी वे इसमे दूर करदी गई है।

आशा है यह ग्रथ भारतीय भाषाओ के वैज्ञानिक अध्ययन और राजस्थानी साहित्य के उन्नयन मे उपयोगी सिद्ध होगा।

—नारायणसिह भाटी
निदेशक

दिनाक 18 अप्रेल' 78

भूमिका

भाषा समाज की पहली आवश्यकता है और मानव के विकास का सबसे महत्वपूर्ण साधन भी। मानव के भौतिक एव सास्कृतिक विकास के साथ-साथ भाषा का भी विकास होता है। समाज की उन्नति और उसकी नानारूपेण प्रवृत्तियो में सतत प्रयत्नशील मानव-समूह अपनी आवश्यकताओ के अनुसार जाने-अजाने ही भाषा को नये-नये रूप प्रदान करता है। इसी से भाषा के कई रूप बनते और बिगडते रहते हैं। पर मिटने वाली भाषाओं का प्रभाव नवोदित भाषाओ पर किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रहता है, क्योंकि नवीन भाषाएँ प्राचीन भाषाओ की कोख से ही उत्पन्न होती हैं, यद्यपि अन्य भाषाओ के प्रभाव से भी वे पूर्णतया अछूती नही रह पाती। भाषाओ का यह विकास-क्रम स्वय मानव जाति के सामाजिक इतिहास से अविच्छिन्न जुडा हुआ सतत प्रवहमान होता रहता है। कौनसी भाषा कितनी समृद्ध और महान है, यह उस भाषा का साहित्य ही प्रमाणित कर सकता है। साहित्य की रचना शब्दो के माध्यम से सम्पन्न होती है। अत किसी भाषा का शब्द-भडार ही उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता का द्योतक है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य की समृद्धि पर विभिन्न दृष्टियों से विचार करते समय उसके शब्द-भडार की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है। शब्द-भडार पर शब्द-कोषो के माध्यम से विचार करने मे सुविधा होती है, और उसमे हर प्रकार के कोषो का अपना महत्व होता है। आधुनिक प्रामाणिक कोषो के उपलब्ध होते हुए भी सस्कृत भाषा का कोई विद्यार्थी 'अमर-कोष' की उपेक्षा नही कर सकता। इसीलिए इन प्राचीन डिंगल कोषो का भी अपना महत्व है।

विभिन्न भाषाओ के प्राचीन कोषों की तरह ये कोष भी छन्दोबद्ध हैं। प्राचीन काल में जब छापाखाने की सुविधा उपलब्ध नही थी—ज्ञान अर्जित करना, उसे समय पर प्रयोग मे लाना और आने वाली पीढी को उससे लाभान्वित करना एक बहुत बडी समस्या थी। हस्तलिखित पोथियों का प्रयोग अवश्य होता था पर व्यवहार मे स्मरण-शक्ति का भी बहुत सहारा लेना पडता था। लयात्मक और तुकान्त भाषा मे कही गई बात स्मृति मे सहज ही अपना स्थान बना लेती है, इसीलिए अति प्राचीन काल मे समाज की धार्मिक, राजनैतिक और सास्कृतिक मान्यताएँ तक छन्दो का सहारा ढूंढती प्रतीत होती हैं। साहित्याचार्यो ने भी अपने मतो का प्रतिपादन छन्दो के सहारे ही करना उचित समझा, जिसके फलस्वरूप

छन्दोबद्ध रूप में कई लक्षण-ग्रन्थों तथा कोषों का निर्माण हुआ। ये कोष तत्कालीन समाज और साहित्य में जिस रूप में महत्वपूर्ण थे ठीक उसी रूप में आज नहीं हैं। पर आधुनिक ढंग के कोषों से जहाँ केवल शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है, ये कोष अन्य कोई महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी भी देते हैं। इन कोषों में तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और साहित्यिक प्रवृत्तियों सम्बन्धी कई महत्वपूर्ण सकेत सुरक्षित हैं, जिनके माध्यम से कई महत्वपूर्ण निर्णयों तक पहुँचने में सहायता मिलती है। इनके अतिरिक्त सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि आधुनिक कोषों में जहाँ लेखक या सम्पादक का व्यक्तित्व निहित नहीं रहता वहाँ इन प्राचीन कोषों में उनके रचयिताओं का व्यक्तित्व काफी मात्रा में सुरक्षित है।

इस प्रकार के कोषों के निर्माण की प्रवृत्ति उस समय की विशेष आवश्यकताओं की ओर भी सकेत करती है। तत्कालीन सामन्ती व्यवस्था में इन कोषों का महत्व पाठक के बनिस्पत कवि के लिए अधिक था। राजस्थान में जहाँ कई मौलिक सूझ-बूझ वाले और प्रतिभा-सम्पन्न कवि हुए वहाँ कविता के साथ व्यावसायिक लगाव रखने वालों की जमात भी काफी बड़ी थी। उनके लिए कविता इतनी स्वतःस्फूर्त न होकर अभ्यास की चीज थी। कविता को अत्यधिक प्रयत्न-साध्य और अभ्यास की चीज बनाने के लिए काव्य-रचना सम्बन्धी आवश्यक उपकरणों को स्मरण-शक्ति में हर समय बनाए रखना और उन पर अधिकार करना आवश्यक होता है। यह उद्देश्य बहुत कुछ इन कोषों के माध्यम से भी पूरा होता था, क्योंकि शब्दों के साथ-साथ छन्द-रचना सम्बन्धी नियम और उदाहरणों की व्यवस्था तक कई कोषों के साथ की गई है। रीतिकालीन हिन्दी साहित्य में तो इस प्रकार के ग्रन्थों की भी रचना हुई जो विभिन्न प्रकार के वर्णनों के लिए फार्मूले मात्र प्रेषित करते थे। वर्षा, वाटिका, तडाग जलक्रीडा आदि वर्णनों के लिए वे निश्चित शब्दों की सूची तक बना कर इस प्रकार के कवियों की कवि-कर्म के निर्वाह में पूरी सहायता करते थे। सामाजिक परिवर्तनों के साथ जब कवि का दृष्टिकोण और उसकी साहित्यिक मान्यताएँ बदली तो साहित्य के विभिन्न अंगों के साथ-साथ इन कोषों की उपयोगिता के प्रकार में भी अंतर आया। आज वे जितने कवि के लिए उपादेय नहीं उतने विद्यार्थी के लिए सुविधाजनक हैं।

किसी भी भाषा का कोष उस भाषा की साहित्य-रचना के पश्चात निर्मित होता है। जब किसी भाषा का साहित्य काफी उन्नत और समृद्ध हो जाता है तभी कोष तथा लक्षण-ग्रन्थों के निर्माण की ओर आचार्यों का ध्यान आकर्षित होता है। अतः अच्छी सख्या में डिंगल के इतने समृद्ध कोषों की उपलब्धि इस भाषा की समृद्धि की भी परिचायक है। इतना ही नहीं इन कोषों में तत्कालीन डिंगल साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों के सकेत भी मिलते हैं। प्राचीन डिंगल साहित्य में अपनी सामाजिक पृष्ठ-भूमि के अनुरूप वीर, शृंगार तथा शांतरस की धाराओं का प्राधान्य रहा है और इन्हीं रसों को व्यंजित करने वाली सशक्त शब्दावली को प्राय इन सभी कोषों में विशेष स्थान मिला है। कविराज मुरारिदानजी के डिंगल-कोष का विस्तार कुछ अधिक है पर उसमें भी ऐसे ही शब्दों की प्रधानता है।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से इन कोषों का महत्व असाधारण है। किसी भी भाषा के विकास-क्रम को समझने के लिए उस भाषा के बहुत बड़े शब्द-समूह पर कई दृष्टियों से विचार करना आवश्यक हो जाता है। कई बातों की जानकारी तो भाषा का व्याकरण ही दे देता है पर

शब्दों के रूप में कब और कैसे परिवर्तन हुए, इसका अध्ययन करने के लिए समय-समय पर होने वाले शब्दों के रूप-भेद की पूरी जाँच करनी होती है तभी शब्दो के रूप-परिवर्तन में बरते जाने वाले नियमो का भी स्पष्टीकरण होता है। अतः वैज्ञानिक ढग से राजस्थानी भाषा के विकास को समझने में ये कोष एक प्रमाणिक सामग्री का काम दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त राजस्थानी में प्रयुक्त अन्य भाषाओं के शब्दों की स्थिति भी इनसे सहज ही स्पष्ट हो जाती है।

वर्णिक-क्रम के हिसाब से राजस्थानी का आधुनिक शब्द-कोष तैयार करने में इन कोषो से मिलने वाली सहायता का महत्व असंदिग्ध है। डिंगल-भाषा के मुख्य-मुख्य शब्द अपने मौलिक तथा परिवर्तित रूप मे एक ही स्थान पर उपलब्ध हो जाते हैं। कई शब्दो के समय-समय पर होने वाले अर्थ-भेद तक का अनुमान इनके माध्यम से मिल जाता है। इतना ही नहीं, सूक्ष्म अर्थ-भेद को इंगित करने वाले समान शब्दो पर भी इन कोषो के आधार पर विचार किया जा सकता है। संग्रहीत डिंगल-कोषों के सभी रचयिता अपने समय के माने हुए विद्वान और कवि थे। ऐसी स्थिति मे उनके शब्द-ज्ञान मे भी संदेह की विशेष गुंजाइश नहीं बनती। प्राचीन पोथियों की प्रामाणिकता को कायम रखने मे लिपिकारो की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। अत कई स्थलों पर उनकी असावधानी के कारण अस्पष्टता तथा त्रुटियो की सम्भावना अवश्य बनी हुई है। इनके अतिरिक्त मौखिक परम्परा पर जीवित रहने के पश्चात लिपिबद्ध होने वाले कोषो के उपलब्ध रूप और मौलिक रूप मे अवश्य कुछ अन्तर है, जिसका आभास समय-समय पर लिपिबद्ध होने वाली एक ही कोष की कई प्रतियो मे हो सकता है। 'नागराज डिंगल-कोष' तथा 'डिंगल-नाम-माळा' इसी प्रकार के कोष हैं जो अपूर्ण भी हैं और निर्माण-काल के काफी समय बाद की प्रतिया हमे उपलब्ध हो सकी हैं। अत. इन कोषो का समुचित प्रयोग उपरोक्त तथ्यों को ध्यान मे रख कर होना चाहिए।

अब यहाँ सम्पादित प्रत्येक डिंगल-कोष और उसके रचयिता के सम्बन्ध मे आवश्यक विचार कर लेना उचित होगा।

डिंगल नाम-माळा :

यह कोष सम्पादित कोषों में सब से प्राचीन है। मूल प्रति मे इसके रचयिता का नाम हरराज मिलता है। हरराज सं० १६१८ में जैसलमेर की गद्दी पर बैठा था। इससे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इस कोष की रचना उसी समय के आसपास हुई है। श्री अगरचन्द नाहटा के मतानुसार हरराज स्वय कवि नही था। कुशललाभ नामक जन कवि ने उसके लिए इस ग्रन्थ की रचना की थी*। वैसे प्राप्य 'डिंगल नाम माळा' की पुष्पिका मे हरराज के साथ कुशललाभ का नाम जुड़ा हुआ है। इससे यह अनुमान होता है कि कुशललाभ ने स्वयं यदि इस ग्रन्थ का निर्माण नहीं किया तो ग्रन्थ-निर्माण में सहायता तो अवश्य की होगी, अन्यथा उसका नाम यहाँ मिलने का कारण नहीं। वास्तव मे हरराज कवि था या नहीं यह विषय विचारणीय अवश्य है और अंतिम निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए समर्थ प्रमाणों की आवश्यकता है।

---

* राजस्थान भारती, भाग १, अंक ४ जनवरी १६४७

इस कोष के शीर्षक से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है। मूल प्रति में कोष का शीर्षक है—'अथउ डिंगल नाम-माळा', पुष्पिका में पूरा नाम 'पिंगल सिरोमणि उडिंगल नाम-माळा' भी मिलता है। अत यहाँ दिये गये डिंगल और उडिंगल शब्दो मे कौनसा शुद्ध शब्द है, कहना कठिन है। वैसे शीर्षक मे प्रयुक्त 'उ' अक्षर यदि 'अथ' के साथ से हटा कर 'डिंगल' के साथ रख लेते हैं तो यहाँ भी उडिंगल हो सकता है। डिंगल शब्द का प्रयोग १९ वीं शताब्दी मे मिलता है,* पर उससे भी पहले, बहुत सभव है, डिंगल के लिये उडिंगल ही प्रयुक्त होता हो। प्राचीन डिंगल शब्द को आधुनिक अंग्रेज विद्वान डॉ० ग्रियर्सन आदि ने उच्चारण की सुविधा के लिये पिंगल के आधार पर डिंगल बना दिया है।† इसके पहिले इस प्रकार की ध्वनि वाला शब्द नही था। 'उडिंगल शब्द के मिलने से इस तथ्य पर पुनर्विचार करने की गुंजाइश बन जाती है। यह कोष प्राचीन होने के कारण कई तत्कालीन शब्दों की अच्छी जानकारी देता है, इसलिए राजस्थानी भाषा के विकास की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। कोष का आकार बहुत छोटा है तथा इसकी पुष्पिका मे भी यही प्रतीत होता है कि यह पूरे ग्रन्थ 'पिंगल सिरोमणी' का एक अध्याय मात्र है। इस कोष की केवल एक ही प्रति श्री अगरचन्द नाहटा के संग्रह से हमे उपलब्ध हो सकी, इसलिए उसी को आधार मान कर चलना पडा है।

नागराज डिंगल-कोष

इस कोष के रचयिता के सम्बन्ध मे निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं होती। केवल कुछ किंवदंतियाँ सुनने को मिलती हैं, जिनमें एक किंवदंती तो बहुत प्रसिद्ध है‡ जिसके अनुसार शेषनाग ही छन्द-शास्त्र का प्रणेता माना गया है। संस्कृत का 'पिंगल सूत्र' बहुत प्रसिद्ध है, जिसके रचयिता पिंगल मुनि बतलाये जाते हैं। उन्हें शेषनाग का अवतार भी माना गया है। वैसे शेषनाग का पर्याय भी पिंगल होता है। पिंगल शब्द छन्द-शास्त्र के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है, पर डिंगल-भाषा का कोई नागराज या पिंगल नाम का विद्वान हुआ हो ऐसा उल्लेख प्राचीन ग्रन्थो में नहीं मिलता। यह भी संभव हो सकता है कि किसी विद्वान ने पिंगल की प्रसिद्धि देख कर, पिंगल के नाम से ही डिंगल मे भी ऐसे ग्रन्थ की रचना कर दी हो जो कालान्तर में पिंगल ही की मानी जाने लग गई हो, और प्राप्य कोष उसी का अंश हो। संपादित कोष की मूल हस्तलिखित प्रति जुडिये (मारवाड) के पनारामजी मोतीसर के पास सुरक्षित थी। उसका शीर्षक 'नागराज पिंगल कृत डिंगल कोष' है। लिपिकाल सं० १८७१ दिया हुआ है। अत उसी को आधार मान कर इस कोष का प्रकाशन किया गया है। केवल २० छन्दो का ग्रन्थ होते हुए भी पर्यायवाची शब्दो की अच्छी सख्या इसमे मिलती है। सिंह तथा पानी नाम तो विशेष तौर से द्रष्टव्य हैं।

---

* डॉ० मोतीलाल मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० १५

† " " " राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० २०.

‡ एक बार गरुड ने क्रोधित होकर शेषनाग का पीछा किया। शेषनाग ने अपने आपको बचाने की बहुत कोशिश की पर अन्त मे कोई उपाय न देख कर गरुड को समर्पण कर दिया,

हमीर नाम-माळा

इसके रचयिता 'हमीरदान रतनू' मारवाड के घडोई गाव के निवासी थे। पर उनके जीवन का अधिकाश भाग कच्छभुज मे ही व्यतीत हुआ। ये अपने समय के अच्छे विद्वानो मे गिने जाते थे। इन्होने छन्द-शास्त्र सम्बन्धी कई ग्रन्थ लिखे हैं, जिनमे 'लखपत पिगल' बहुत महत्वपूर्ण है। 'भागवत दरपण' के नाम से इन्होने राजस्थानी मे भागवत का अनुवाद किया है, जिससे इनके पाडित्य का प्रमाण मिलता है। हमीर नाम-माळा' डिंगल कोषो मे सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रचलित है, इसलिए समय-समय पर लिपिबद्ध की हुई प्रतिया भी अच्छी स्थिति मे उपलब्ध होती हैं। यहाँ इस ग्रन्थ का सम्पादन तीन प्रतियो के आधार पर किया गया है। इन तीनो प्रतियो के अतिमद्दाले मे ग्रन्थ का रचना-काल १७७४ मिलता है—

समत छहोतरं सतर मैं
मती ऊपनी हमीर मन,
कीधी पूरी नाम-माळिका
दीपमाळिका तेण दिन।

—(मूल प्रति)

हमारे सग्रह की मूल प्रति (लिपिकाल स १८५६) के अतिरिक्त जिन दो प्रतियो के पाठान्तर दिये गये हैं उनमें (अ) प्रति की प्रतिलिपि भी श्री अगरचन्द नाहटा से उपलब्ध हुई है। इसके पाठान्तर बडे महत्वपूर्ण हैं। मूल प्रति का लिपिकाल सवत १८५० के लगभग है (ब) प्रति श्री उदयराज उज्वल के सौजन्य से प्राप्त हुई है। यह प्रति भी शुद्ध और पूर्ण है। इसका लिपिकाल सवत १८७४ है। 'हमीर नाम-माळा' डिंगल के प्रसिद्ध गीत 'वेलियों' मे लिखी गई है। हर एक शब्द के पर्याय गिनाने के पश्चात अतिम पक्तियो मे बडी खूबी के साथ हरि-महिमा सम्बन्धी सुन्दर उक्तियाँ कह कर ग्रन्थ मे सर्वत्र अपन व्यक्तित्व की छाप छोडने का प्रयत्न भी किया गया है। इसलिए यह ग्रन्थ 'हरिजस नाम माळा' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

'हमीर नाम-माळा' की रचना मे धनजय नाम-माळा, मानमजरी, हेमी कोष तथा अमर कोष से भी यथोचित सहायता ली गई है, जिसका जिक्र कवि ने स्वय अपने ग्रन्थ के अन्त मे

पर एक बात उसने ऐसी कही जिससे गरुड को सोचने के लिए बाध्य होना पडा। नागराज ने कहा, मुझे मरने का दुख नही होगा पर मैं छन्द-शास्त्र की विद्या का जानकार हूँ और वह विद्या मेरे साथ ही समाप्त हो जाएगी। ऐसी स्थिति में एक ही उपाय है कि तुम मुझ से छन्द-शास्त्र सुन कर याद कर लो, फिर जो चाहो करना। गरुड ने बात मान ली, पर एक आशका व्यक्त की कि कहीं तुम धोखा देकर भाग न जाओ। इस पर शेषनाग ने वचन दिया कि मैं जब जाऊगा, तुम्हे कह कर चेतावनी दूगा कि मैं जा रहा हू। शेषनाग ने पूरा छन्द-शास्त्र सुनाया और अत मे भुजगम् प्रयातम् (भुजगप्रयात—सस्कृत मे एक छन्द का नाम) कह कर समुद्र मे प्रविष्ट हो गया। शेषनाग की चतुराई पर प्रसन्न होकर कहते हैं कि गरुड ने उसे क्षमा कर दिया और आदेश दिया कि छन्द-शास्त्र की पूर्णता के लिए कोष भी बनाओ। तब शेषनाग ने शब्द-कोष का भी निर्माण किया। तब से वे ही इसके प्रणेता माने गये।

किया है ।* 'हमीर नाम-माळा' ३११ छन्दो का ग्रन्थ है। इन छन्दो मे प्राचीन तथा तत्कालीन साहित्य मे प्रचलित डिंगल-भाषा के बहुत से शब्द अपने विशुद्ध रूप मे सुरक्षित हैं।

अवधान-माला :

इस ग्रन्थ के रचयिता बारहठ उदयराम मारवाड के थबूकडा ग्राम के निवासी थे। इनकी जन्म-सम्बन्धी निश्चित तिथि उपलब्ध नहीं होती, पर अन्य साधनो के आधार पर यह सिद्ध होता है कि ये जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के समकालीन थे।† इन्होने कच्छभुज के राजा भारमल तथा उसके पुत्र देसल (द्वितीय) की प्रशसा अपने ग्रन्थो मे स्थान-स्थान पर की है। इससे पता चलता है कि ये उनके कृपापात्र थे और जीवन का अधिकाश भाग वही व्यतीत किया था। वे अपने समय के विद्वानो में समादरित तो थे ही इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्याओ मे निपुण होने के कारण अन्य राज्य-दरबारों मे भी सम्मान पा चुके थे।

इनके ग्रन्थो मे 'कविकुलबोध' सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति श्री सीताराम लाळस के माध्यम से उपलब्ध हुई थी। इसमे गीतो के लक्षण उदाहरण-सहित दिए गए हैं तथा गीतो मे प्रयुक्त अन्य आवश्यक शैलीगत उपकरणो का भी सुन्दर विवेचन किया गया है। यहा सम्पादित अवधान-माळा, अनेकारथी कोष, तथा एकाक्षरी नाम-माळा भी इसी ग्रन्थ से उपलब्ध हुए हैं। इसके अतिरिक्त कई छन्दो के लक्षण तथा लक्ष्मी-कीर्ति-सवाद के दो महत्वपूर्ण अध्याय भी इसमे हैं।

'अवधान-माळा' ग्रन्थ की छन्द सख्या ५६१ हैं। डिंगल के प्रचलित शब्दो के अतिरिक्त भी कवि ने कुछ शब्द विद्वतापूर्ण ढग से बना कर रखे हैं। इस कोष की एक बहुत बडी विशेषता यह है कि छन्दपूर्ति आदि के लिए पर्यायवाची शब्दो के अतिरिक्त बहुत कम निरर्थक शब्दो का प्रयोग मिलता है।

इस ग्रन्थ मे इनका कही-कहीं उदयराम के अतिरिक्त उमेदराम नाम भी मिलता है। संभव है इनके ये दोनो नाम उस समय मे प्रचलित हो।

नाम माळा :

इस ग्रन्थ की मूल प्रति हमारे-सस्थान के संग्रहालय मे है। इसमें न ग्रन्थकार का नाम मिलता है न लिपिकार का। प्रति करीब १०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए ऐसा अनुमान इसके पत्रो की लिखावट से लगता है। मूल प्रति में इस कोष के साथ कुछ गीतो के उदाहरण भी दिए हुए हैं। कई शब्दो के प्राचीन शुद्ध डिंगल रूप इस कोष मे देखने को मिलते हैं, जिससे यह अनुमान होता है कि इसका रचयिता कोई अच्छा विद्वान होना चाहिए। ईश्वर, वृक्ष, भमर, चपळा आदि के कई महत्वपूर्ण पर्याय इस कोष मे द्रष्टव्य हैं। छन्द-पूर्ति आदि के लिए भी बहुत ही कम निरर्थक शब्दो का प्रयोग देखने को मिलता है जो कवि का शब्द तथा छन्द दोनों पर अधिकार साबित करता है।

---

* हमीर नाम-माळा—पृ० ८८

† हमारे शोध-सस्थान मे सुरक्षित महाराजा मानसिंहजी के समकालीन कवियो के चित्र मे इनका चित्र भी नाम सहित मिलता है।

डिंगल-कोष

पर्यायवाची कोषो मे यह कोष सबसे बडा है। इस कोष के रचयिता बूंदी के कविराजा मुरारिदानजी, महाकवि सूर्यमल के दत्तक पुत्र तथा उनके शिष्यो मे से थे। वशभास्कर को सम्पूर्ण करने का श्रेय भी इन्ही को है। इस कोष में करीब ७००० शब्द ग्रन्थकार ने समाहित किये हैं। यह कोष पुराने ढग से बहुत पहले प्रकाशित हो चुका है जिसकी प्रतियां अब उपलब्ध नही होती। इसमे छपाई की अशुद्धिया भी बहुत हैं। मूल ग्रन्थ में छन्दो तथा अलकारो पर भी प्रकाश डाला गया है, पर कोष ही उसका मुख्य अग है, इसीलिए पूरे ग्रन्थ का नाम भी 'डिंगल-कोष' ही रखा गया है। डिंगल ग्रन्थो में प्रयुक्त शब्दो को ही इस ग्रन्थ मे स्थान मिला है। अपनी ओर से गढे हुए अथवा अप्रचलित शब्दो का मोह कवि को विचलित नही कर पाया है। सस्कृत शब्दो को कवि ने कई स्थानो पर नि सकोच अपनाया है। अमर-कोष की तरह यह कोष भी विभिन्न अध्यायो मे विभक्त किया गया है, जिससे ऐसा आभास होता है कि कवि उक्त कोष की शैली अपनाने का प्रयत्न करना चाहता था। कोष के प्रारम्भिक अध्यायो मे गीतो का लक्षण बताने के पश्चात गीत के उदाहरण मे भी पर्यायवाची कोष का निर्वाह किया है। इस प्रकार की शैली अन्य किसी कोष मे नही अपनाई गई है, यह इसकी अपनी विशेषता है। कोष का निर्माण आधुनिक काल के प्रारम्भ मे हुआ है, इसलिए डिंगल से अनभिज्ञ पाठको की सुविधा को ध्यान मे रख कर नामो के शीर्षक प्राय हिन्दी मे ही दिये हैं और उनको उसी रूप मे अनुक्रमाणिका मे भी रखा गया है।

डिंगल-कोषो मे यह कोष अतिम, महत्वपूर्ण एव प्रामाणिक है।

अनेकारथी कोष

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, यह कोष भी बारहठ उदयराम द्वारा रचित 'कवि-कुलबोध' का ही भाग है। डिंगल भाषा का इस प्रकार का यह एक ही ग्रन्थ उपलब्ध है। इसमे ठेट डिंगल के अतिरिक्त सस्कृत भाषा के भी शब्द हैं। कही-कही पर कवि ने अपनी ओर से भी शब्द गढ कर रखने का प्रयत्न किया है। जैसे—'मधु' के अनक अर्थ सूचित करने वाले शब्दो में 'विष्णु' नाम न लेकर उसके स्थान पर माकत शब्द रखा है।* मा=लक्ष्मी, कत=पति अर्थात विष्णु। पर विष्णु के लिए माकत शब्द का प्रयोग डिंगल ग्रन्थो मे नही देखा गया।

पूरा ग्रन्थ दोहो मे लिखा गया है जिससे कठस्थ करने मे बडी सुविधा रहती है। ग्रन्थारभ मे, प्रत्येक दोहे मे एक शब्द के अनेक अर्थ दिये गये हैं। आगे जाकर प्रत्येक दोहे मे दो शब्दो के अनेकार्थी क्रमश. पहली और दूसरी पक्ति मे रखे गये हैं।

'कविकुलबोध' की प्रति पर रचनाकाल और लिपिकाल न होने से इस ग्रन्थ के रचनाकाल के सम्बन्ध मे भी निश्चित रूप से कुछ कहा नही जा सकता।

---

* अनेकारथी कोष—पृ० २६५, छद ५.

एकाक्षरी नाम-माला :

इसके रचयिता कवि वीरभाण रतनू भी हमीरदान के ही गाव घडोई (मारवाड) के रहने वाले थे। इनकी जन्म-तिथि के सम्बन्ध मे विशेष जानकारी नहीं मिलती। पर इतना तो निश्चित है कि ये जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के समकालीन थे। यह उनके प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ 'राजरूपक' से प्रमाणित होता है, जो अभयसिंहजी द्वारा किये गये अहमदाबाद के युद्ध की घटना को लेकर लिखा गया है। यह भी कहा जाता है कि कवि स्वय युद्ध मे मौजूद था।

उनका यह एकाक्षरी कोष आकार मे बहुत छोटा है। महाक्षपण कवि रचित सस्कृत के एकाक्षरी कोष की छाया इसमे स्थान-स्थान पर मौजूद है। कोष बहुत ही अव्यवस्थित ढग से लिखा गया है। इसमें न तो कोई क्रम अपनाया गया है और न अलग-अलग शीर्षक देकर ही कोई विभाजन किया गया है। ऐसी स्थिति मे कई स्थानो पर अस्पष्टता रह गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि स्वय कोष रचना मे दिलचस्पी नही ले रहा है।

इस कोष की प्रतिलिपि नाहटाजी ने भिजवाई थी। उनके मतानुसार इसका लिपि-काल १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध है।

एकाक्षरी नाम-माला

यह कोष भी बारहठ उदयरामजी के 'कविकुलबोध' से ही लिया गया है। ग्रन्थ की दसवी लहर या तरग के अन्त मे यह पूर्ण हुआ है। ऐसा क्रमानुसार लिखा हुआ पूर्ण कोष डिंगल मे दूसरा नही मिलता। सस्कृत, प्राकृत, और अपभ्र स के कई कोषो मे भी इस प्रकार की क्रम व्यवस्था कम देखने को मिलती है। अन्य कोषो की तरह इस कोष मे भी कवि ने अपने विस्तृत ज्ञान का परिचय दिया है। ठेट डिंगल के अतिरिक्त सस्कृत के शब्दो का भी प्रयोग किया गया है, पर कही-कहीं तो जन-जीवन मे प्रचलित अत्यन्त साधारण शब्दो तक को कवि ने अनोखे ढग से अपनाया है। जैसे 'झै' का अर्थ उन्होंने करभ-झेकतांकाज* अर्थात ऊंट को बैठाते समय किया जाने वाला शब्दोच्चारण किया है, जो जन-जीवन में अत्यन्त प्रचलित है। ऐसे शब्दो का प्रयोग कवि के सूक्ष्म अध्ययन का परिचायक है।

सग्रहीत कोषो मे ३ कोष बारहठ उदयरामजी के हैं। तीनो कोष अपने ढंग के अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अत डिंगल-कोष रचना मे उदयरामजी का विशेष स्थान है।

कोषो-सम्बन्धी इस आवश्यक जानकारी के पश्चात अब उनकी कुछ सामान्य प्रवृत्तियो का विवेचन किया जाता है जो इनके प्रयोग तथा मूल्यांकन मे सहायक होगा।

(१) इन कोषो मे कई स्थल ऐसे भी हैं जहा जातिवाचक शब्दो के अन्तर्गत व्यक्तिवाचक शब्दों को भी ले लिया गया है। जैसे 'अप्सरा' के पर्याय गिनाते समय विशिष्ट अप्सराओ के नाम भी उसी मे समाहित कर लिये गये हैं।‡ पर यहा एक ध्यान देने योग्य बात यह है कि डिंगल के प्राचीन काव्य-ग्रन्थों में व्यक्तिवाचक शब्दों का प्रयोग जातिवाचक शब्दो की तरह भी किया गया है। एरावत इन्द्र के हाथी का ही नाम है पर साधारण हाथी के लिए भी प्रयुक्त होता रहा है। अतः सभवतया ग्रन्थकारो ने इस प्रकार की प्रवृत्ति को ध्यान में रख कर ही यह प्रणाली अपनाई होगी।

---

*एकाक्षरी नाम-माळा—पृ० २९५, छद ११६

‡डिंगल नाम-माळा—पृ० २२, छद १७ अवधान-माळा—पृ० ९७, छद ७५

(२) कई स्थानों मे पर्यायवाची शब्दो का रूप एकवचनात्मक से बहुवचनात्मक कर दिया गया है। जैसे, तलवार के लिये—करवाणा, करवाळा आदि[1] घोड़े के लिये—हया, रेवता, साकुरा, अस्सा, जगमा, पमगा हैवरा आदि[2] यह केवल मात्राओ की पूर्ति के लिये तथा तुक के आग्रह से किया गया प्रतीत होता है।

(३) कही-कही पर्यायवाची देने के साथ, बीच-बीच में, वस्तु की विशेषताओं और प्रयोग आदि का वर्णन करके भी अपनी विशेष जानकारी को प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया है। 'नूपुर' के पर्याय गिनाते समय उससे शरीर मे हर्ष सचरित होने वाली विशेषता की सूचना भी दी है[3] और 'नागरवेल' के पर्यायवाची शब्दो के साथ उसके प्रयोग का जिक्र भी किया है।[4] इसी प्रकार के कितने ही उदाहरण कोष्ठको मे लिये हुए मिलेंगे।

(४) विद्वान् कवियो ने कई शब्दो की परिभाषा तक देने का प्रयत्न किया है। जैसे, प्राकृत को नर-भाषा, मागधी को नाग-भाषा सस्कृत को सुर-भाषा, और पिसाची को राक्षसो की भाषा कह कर समझाने का प्रयत्न किया है।[5]

(५) ऐसे शब्दो को भी किसी शब्द के पर्याय के रूप मे स्थान दे दिया गया है जो कि सही अर्थ मे ठीक पर्याय न होकर कुछ भिन्न अर्थ व्यजित करने की भी क्षमता रखते हैं। जैसे 'स्नेह' के लिए 'संतोष' तथा सुख' आदि का प्रयोग।[6] इस प्रकार की उदारता थोडी-बहुत सभी कोषो में बरती गई है।

(६) जैसा कि पहले सकेत कर दिया गया है, कई कवियो ने अपनी चतुराई से भी शब्द गढे हैं जो बडे ही उपयुक्त जंचते हैं। जैसे—ऊट के लिए 'फीणनाखतो'[7] तथा अर्जुन के लिए 'मरदा-मरद'[8] शब्द का प्रयोग किया गया है, पर ये शब्द प्राचीन डिंगल कविता मे उपरोक्त अर्थ मे प्रयुक्त नहीं हुए। इस प्रकार शब्द-रचना की स्वतन्त्रता बहुत कम स्थानो पर ही देखने मे आती है।

(७) कई स्थानो पर तो शब्दों के पर्यायवाची न रख कर केवल तत्सम्बन्धी वस्तुओ की नामावली मात्र दी गई है। उदाहरणार्थ—सताईस नक्षत्र नाम[9] शीर्षक के अतर्गत २७ नक्षत्रों के नाम गिना दिये गये हैं, जोकि सत्ताईस नक्षत्र के पर्यायवाची नही कहे जा सकते। इसी प्रकार चोईस अवतार नाम[10], मातधात रा नाम[11], बारै रासा रा नाम[12], आदि के सम्बन्ध मे भी यही युक्ति काम मे ली गई है।

---

[1] डिंगल नाम-माळा—पृ० २०, छद ८
[2] डिंगल-कोष —पृ० १७५, छद ८१
[3] अवधान-माळा—पृ० १३४, छद ४८५
[4] अवधान-माळा—पृ० १४२, छद ५५६
[5] अवधान-माळा—पृ० १३१, छद ४६०
[6] हमीर नाम-माळा—पृ० ६६, छद २०१
[7] नागराज डिंगल-कोष—पृ० २८, छद ५
[8] हमीर नाम-माळा—पृ० ५५, छद १२४
[9] अवधान-माळा—पृ० १३०, छद ४४८, ४४९, ४५०, ४५१
[10] अवधान-माळा—पृ० १३०, छद ४४२, ४४३, ४४४.
[11] ,, ,, —पृ० १३१, छद ४५६.
[12] ,, ,, —पृ० १३१, छद ४५२

(८) छन्द पूर्ति के लिए कई निरर्थक शब्दों का प्रयोग करना भी आवश्यक हो गया है। प्रत्येक कवि ने अपनी इच्छानुसार छंद-पूर्ति करने की कोशिश की है। छंद-रचना में कुछ कवियों ने कम-से-कम भरती के शब्दों को स्थान दिया है पर कई कवियों ने पूरी पंक्ति तक, अपने नाम की छाप लगाने को समाविष्ट कर ली है। आखो, आख, कहो, मुणो मुणात, चवो, चवीजै, गिणो, गिणात आदि शब्द छन्द में गति उत्पन्न करने तथा मात्राओं की पूर्ति के लिए बहुत प्रयुक्त हुए हैं। इस तरह के शब्दों व पंक्तियों को कोष्ठकों—( )—के भीतर ले लिया गया है।

आज के प्रजातान्त्रिक युग में भाषा और समाज के सम्बन्धों को अत्यन्त गहराई से हृदयगम करने के पश्चात जब हमारी राष्ट्रभाषा और प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति के लिए विशेष सजगता के साथ प्रयत्न होने लगे हैं तो करीब डेढ करोड मानवों की भाषा राजस्थानी का प्रश्न भी अत्यंत महत्वपूर्ण और विचारणीय हो गया है। ऐसी स्थिति में आधुनिक साहित्य के निर्माण के साथ-साथ उसके व्याकरण, शब्दकोष तथा भाषा के क्रमबद्ध इतिहास को प्रकाश में लाना बहुत आवश्यक है। राजस्थानी भाषा का व्याकरण तो प्रकाशित हो चुका है और राजस्थानी शब्द-कोष तथा भाषा के इतिहास पर भी राजस्थान के विद्वान बहुत लगन के साथ कार्य कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में इन छन्दोबद्ध कोषों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण प्रमाणिक सामग्री का काम दे सकेगा। वर्तमान परिस्थितियों में इनकी विशेष उपादेयता को ध्यान में रख कर ही यह प्रकाशन किया जा रहा है, यद्यपि विभिन्न भारतीय भाषाओं में अन्तर्प्रान्तीय स्तर पर होने वाले शोध-कार्य में भी इनकी अपनी उपयोगिता है।

प्राचीन ग्रन्थों की बहुत छानबीन करने तथा राजस्थानी भाषा के जाने-माने विद्वानों की सहायता लेने के बावजूद भी हमें केवल ६ कोष उपलब्ध हो सके हैं। राजस्थानी भाषा इतनी प्राचीन और समृद्ध है कि इसके अगणित हस्तलिखित ग्रन्थ विभिन्न सग्रहालयों के अतिरिक्त कितने ही लोगों के पास आज भी मौजूद हैं। ऐसी स्थिति में कुछ नये कोष तथा इन कोषों की कुछ प्रतियां और उपलब्ध हो जायें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

श्री उदयराजजी उज्ज्वल, श्री सीतारामजी लाळस तथा श्री अगरचन्दजी नाहटा से हमें कई कोषों की प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं (जिनका उल्लेख यथास्थान कर दिया गया)। श्री सीतारामजी लाळस ने तो इस काम में विशेष दिलचस्पी लेकर 'हमीर नाम-माळा' के पाठान्तर निकालने में, कई शब्दों पर विचार करने में, तथा कई महत्वपूर्ण बातों की जानकारी प्राप्त करने में अन्त तक हमारी पूरी सहायता की है, जिसके लिये मैं इन विद्वानों का हृदय से आभारी हूँ।

राजस्थान लॉ वीकली प्रेस के मैनेजर श्री हरिप्रसादजी पारीक ने पूरी दिलचस्पी और परिश्रम के साथ ग्रन्थ के प्रूफ देखे हैं, अनुक्रमणिका बनाने में सहायता की है, तथा छपाई-सफाई में भी इस प्रकाशन के महत्व को समझ कर, विशेष ध्यान दिया है, जिसके लिए वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

अंत में जिन महानुभावों ने जिस किसी रूप में हमें सहायता प्रदान की है, उन सब का आभार प्रदर्शन करना मैं अपना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

—नारायणसिंह भाटी

पर्यायवाची कोष–१

डिंगल नांम-माला

कविराज हरराज विरचित

अथउ डिंगल नांम - माला

राजा नाम

पार्थिव ख्योणीपति राज - भूपाण रायहर ,
नरवर ईस नरेंद भाणकुळजा महिराणवर ।
प्रजापाळगर (नाम)[1] जगतमावीत्र अजादे ,
धणीमाळ—चोधार[2] भारभुज सिंह (सुनादे) ।
अणवीह (काज) गाजागिरै सूरपति नरसिंह (कहि) ,
(कर जोड राव हरियद लहि) राण राव (चे नाम सहि) ।।—१

मंत्रीवी नाम

मत्री गूडा - वाच वुधिवळ लायक (दखे) ,
सचिवा (फिर) सचिवाळ राजअगधारसु (तख्ये) ।
प्राभ्रोपुरस प्रधान दाणपुरधाण पुरोहित ,
विरतीचख वरियाम फौजआभरण (जाण) मित ।
अकहूतलेखाळ (कहि) मरद वजीरा जोधगुर ,
(कर जोड एम पिंगल कह्यो तिम रूपक हरियद कर) ।।—२

जोधा नाम

सिंह सूर सामंत जोध भुजपाळ घडीभिड ,
(भिडै) फौजगाहणा वेढ भीचा जोधार गिड ।
अणीभमर वधिसमर अछरवर हंसा[3] (अखा) ,
सवळ - दळा - गाहणा सूरजमडळ - भिद (सखा) ।
रूपफौज (भूप आगळ रहै कवि पिंगल अे नांम कहि) ,
जोधार (जिसा भीमेण ज्यो) महा अडिग कमधाण(महि)।।—३

हाथी नाम

दती (कहि) दताळ अेकडसण लंबोवर ,
द्विरद गैवरो द्विप्प गधमद (जाण) गल्लवर ।

---

१ इन कोष्ठको वाले शब्द छन्द - पूर्ति आदि के लिए प्रयुक्त हुए हैं ।

२ धणीमाळ चोधार=धणी - माळ, धणी - चोधार ।

३ 'हसा' शब्द अधिकतर अप्सरा के लिए प्रयुक्त होता है, पर शास्त्रो में योद्धा को विदेह भी कहा गया है । अत 'हंसा' का अर्थ योद्धा भी हो सकता है ।

सु डाडड सु डाळ मत्त मातग गजोवर ,
नाग कु जर श्र ग करी वारण करीवर ।
दतुर दतुल (फेर दख चवि) चोडोळो चरणचतु ,
(पिंगल प्रमाण कवि पेखिय) गात्रशैल नागाण (गति) ॥—४

घोड़ा नाम

वाजि वाह वाजाळ पंख पखाळ विपखी ,
अर्वा (कहि) अर्वंत हयं गंधर्व वलख्खी ।
त्रिपद सैंधव तेज ताज तेजी वानायुज ,
कावोजो हसाळ जवण पु छाळ जटायुज ।
हैवर मनउपयग (मुणि) रेवत खेंग खुरताळ रो ,
सावकर्ण चलकर्ण (सहि) पवणवेग पथाळ रो ॥—५

रथ नाम

वाहण सकट वडाळ अणे गाडो गाडोलो ,
सतअगो (कहि) सस्म (फेर) स्यदन सादाळो ।
चक्रणधुर चक्रळ भारवह - गात्र (भणिज्जै) ,
वाहळ (कहि फिर) वहळ माझवत रथ (सु मुणिज्जै) ।
अश्वरूढ वखरूढ़ (कहि) अकुसमुख गजरूढ (गिण) ,
(कहि हरियद) वाणावळो दसचरण दुवार (भण) ॥—६

वखभ नाम

सौरभेय सीगाळ (कहि) वखभ अनडुहो (गाइ) ,
धरिधारण कवाळधुर वाहण - सभु (कहाइ) ॥—७

तरवार नाम

असि करवाण खग (झटा) करवाळां तरवार ,
वीजळ सार दुधार (वदि) लोहसार झटसार ॥—८

कटारी नाम

सर्पजीह दुवजीह (दख) कोरठ सार कटार ,
महिखजीह कु तळमुखी हथ्यहेक (अणहार) ॥—९

फरी नाम

फरी चर्मफालिक (कहो) रख्यातण (अणुभाण) ,
सहण सुखण गज सहम (कहिभणो) गोळ-जिम-भाण ॥—१०

बुरछी नाम

संकू कुतळ बुरछ (कहि) डागळा बुरछाळ,
नेजरूप धजरूप (कहि) घमीड़ां-मुख-काळ ।।—११

तीर नाम

पंखी (कहि) पंखाळ विसिख वाणाळ सुवद्द,
अजिह्मग (कहि) अलखखग्ग (कहि) खुहम निखद्द ।
कक्रवा करडङ (कहो) मारगण अगणाळ,
पत्री (कहि) विणपख्य रोख-इखा इखधाळा ।
खेड मेड खगाळ (कहि) नाराचा निरवाण (रो),
नीरस्ता नाराट नख खुरसाणज खुरसाण (रो) ।।—१२

धरती नाम

धरा धरत्री धार धरणि ख्योणी धूतारी,
कु प्रथु प्रथ्वी काम सर्व-सह वसुमति (सारी) ।
वसुधा उरवी वाम खमा वसुधर ज्या (दख),
गोत्रा. अवनी गाई-रूप मेदनी (सुलख्य) ।
विपुला सागर-अवेरा[1] खुरखूं (दीखै (गाळरा),
राजाप्रथूचीपरठि (रटि) वरियण (आग) वज्रगरा ।।—१३

पुन धरती नाम

तुगा वसुधा इळा भूम भरथरी भडारी,
जमी खाक दरदरी धरा धरणी धूतारी ।
मूळा महि रखमडप मुक्तवेणी सुरबाळी,
अमर आदि गिरधरणि सुथिर सुदर सहिलाली ।
भूला छिकमल गोरभ गरद (धासिविया भूपति घणा,
(कर जोड़ कवित पिंगल कहै तीस नाम धरती तणा) ।।—१४

अकास नाम

दिवारूप दिव (दख्य) अभ्रमारग आकास,
व्योम (कहि) व्योमाळ ग्रहाचोरहण अवास ।

---

१ 'सागर-मेखळा' शब्द तो पृथ्वी के लिए प्रयुक्त होता है पर 'सागर-अवेरा' शब्द का अर्थ स्पष्ट नही होता, सम्भवत 'सागर है अवर (वस्त्र) जिसका' से तात्पर्य हो ।

पुहकर अवर परठ अतरिख नभ (फिर अख्य),
गगन (नाम) गरण - अभ अनत सुरमारग (सख्य)।
अतराळ अवराळ (कहि) अच्छर - ऊपर - गायरा,
(कर जोड अेम हरियंद कहि नमो तेय) घर - नायरा ।।—१५

पाताल् नाम

अधो - भुवन पाताळ (ग्रहा कहीजै जिरा वळि रो),
नागलोक निरवारा कुहर (कहि तिरा) रसतळ (रो)।
सुखरा - मारग - सरस विवर (जिरा थी वाखारा),
गरता अवटा गरट (जेथ फिर) जळनीवारा।
अधकार आकार (कहि तामिश्रां चै तोलिय),
(कर जोड अेम हरियद कहिं अे पाताळा वोलिय) ।।—१६

अपसरा नांम

सुरवेस्या (कहि) अछरा उरव्वसी (अभिराम),
मेनक रभ घ्रतायची सुकेसी तिलताम ।।—१७

किन्नर नाम

अस्वमुखा किन्नर (कहो जे घोहड हदे नाम),
(ते मुख हूती जोड़िजै मयु किन्नर अभिराम)[१] ।।—१८

समुद्र नाम

समुद्रा कूपार अवधि सरितापति (अख्य),
पारावारा परठि उदधि (फिर) जळनिधि (दख्य)।
सिंधू सागर (नाम) जादपति जळपति (जप्प),
रतनाकर (फिर रटहु) खीरदधि[२] लवरा (सुथप्प)।
(जिरा धाम नाम जंजाळ जे सट मिट जाय ससार रा,
तिरा पर पाजा वधियां अे तिरा नामा तार रा ।।—१९

परवत नाम

महीधरा कूधर (मुरगो) सिखिर द्रखत (चय सोय),
(धर) पर्वत धारीधरा अग्रग्राव गिर (जोय) ।।—२०

---

१ घोड़े के सभी पर्यायवाची शब्दों के आगे मुख शब्द जोड देने से किन्नर के पर्यायवाची शब्द बनते हैं, जैसे—रेवतमुखा, तुरगमुखा आदि-आदि।

२ खीरदधि लवरा=खीर - दधि, दधि - लवरा।

ब्रह्मा नाम

धाता ब्रह्मा (धार) जेष्ठसुर अतम - भवन ,
परमाइस्ट परठ पितामह हिरण - उपवन ।
लोकईस ब्रह्मज (कज्ज) देवाण (मुकरिय) ,
(धराहेत किह धुनि) चतर चतारण (चविय) ।
विरच (नाम वाखाणिय) वछचोर साहोगमन ,
(कर जोड श्रेम हरियद कहि जे सता वासिट चवन ॥—२१

विष्णु नाम

नारायण निरलेप निगुण नामी नरयद ,
किसन रुकमणिहार देवगण अहिग वद[१] ।
वैकुंठा - ग्रह - विमळ दैत - अरि (कहो) दमोदर ,
केसव माधव चक्रपाणि गोविंद लाछवर ।
पीतावर प्रहलाद - गुर कछ - मछ - अवतार[२] (किय) ,
(कर जोड श्रेम हरियद कहि नमो नमो जिण वेद गिय) ॥—२२

सिव नाम

पसुपति सभू परब्रह्म जोगाण गाणवर ,
माहेसुर ईसाण सिव सकर त्रिसूलधर ।
नागाणद नरयद जोग वासिद्द सारविद ,
त्रिह्लोचन (रत तास अग भभूत सुघसत) ।
पारवतोपती जख्यपति भूतापति प्रमथापति ,
(कर जोड श्रेम हरियद कहि नमो नमो) नागापति ॥—२३

देव नाम

जरारहित (जिण अग सोभा आकास) ,
आदितपुत्र (अहिनाण अखिल सुरलोक अवास ।
अमृत - पान - आधार विवुध (कहि) दानव - गज्ज ,
(अगा आभा अमळ रोम तारागण सझ्झ) ।
(तेतीस कोड सख्या तवी सेससिरोमण माहि सहि ,
कर जोड श्रेम हरियद कहि कुसललाभ देवाण मयि ॥—२४

---

१ देवगण अहिगण वद = देवगण - वद, अहिगण - वद ।

२ कछ - मछ अवतार = कछ - अवतार, मछ - अवतार ।

दूहा

सोई ग्रथा थी सुण्यो, जोई वरिणय जाण ।
सोई जोई धर सुकवि, आदि अत अहिनाण ।।—२६

धू अवर जा लग धरा, रिघू राम ज्या राज ।
ता पिंगल आखी तवा सकळ सिरोमरिण साज ।।—२७

इति श्री महाराजाधिराज महारावल श्रीमाल
पाटपति तस्यात्मज कुवर सिरोमणि हरिराज
विरचिताया पिंगल सिरोमणे उडिंगल नाम-
माळा चित्र कथनं नाम सप्तमोध्याय ।

●

स १८०० वर्षे श्रावण सुदि ६ चन्द्रवारे लि प्रो दुर्गादास
गुमानीराम । सेवग वसुदेवजी तत्पुत्र सदाराम पठनार्थं ।

पर्यायवाची कोष–२

नागराज डिंगल-कोष

नागराज पिंगल विरचित

नागराज डिंगल - कोष

नागराज पिंगल विरचित

अगनी नाम

घिघक घोम वनि दहन जळण जाळण जाळानळ,
हुतासण पावक भोम सुरामुख उळत अळियळ।
मगळ अगनी जुनी कपीठ दावानळ (देखहु),
साथण[1] क्रोध समीर हाडजळ अनळ अदोखहु।
वेदजा कुण्ड हुतभुख वहन अधर असम (इण विध वही),
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नाम) जाळानळ-(सही) ।।—१

इन्द्र नाम

मघवा इन्द्र महीप दीपसुरलोक आखडळ,
सचीराट मामन्त वैर वैत्रासुर-तडल।
कौशक धारणवज्र पाकसासन जववेदी,
परहुत कळत्रच्छकेळी काराग्रह-राक्षसकैदी।
(तस पुव जयत सुतपाभगत) कळधारण विरखाकरण,
(कव कवत अेह पिंगल कहै वीस नाम) इन्दरह (तण) ।।—२

सुनासीर सुरईस सहसचख (जिमा) सचीपति,
पराखाड दुरातसत्य पाकसासन पूरबपति।
रिपवळी रिखप स्वराट हरी वासव जळधारी,
त्रिखा हलमि विवह मेघवाहण वरनारी।
सत्यमृत्यु भूत्राम निरध्यकव अछरवर आखडळी,
उग्रवन्त इन्द्र विडोजा हरि (इन्द्र नाँम इण मडळी) ।।—३

हाथी नाम

एरापत गज सहड सिंधुर मातग गणेसर,
सारग कुकम करी अथग फौजाँ-अग्रेसर।
तवेरंव भूडाळ ढीलढाळो ढळकतो,
देवळ-थभो (दुरस मेर) हसत महमतो।

---

१ साथण क्रोध समीर=साथण-समीर, साथण-क्रोध।

गज - सावज (कहिये) गहीर कौसक - वाहण अतुर-क्रम ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै बीस नाम) गजराज (इम) ।।—४

ऊट नाम

गिडग ऊट गघराव जमीकरवत जाखोडो ,
फीणानाखतो (फवत) प्रचड पागळ लोहतोडो ।
अणियाळा उमदा आखरातवर (आछी) ,
पीडाढाळ प्रचड करह जोडरा काछी ।
(उमदा) ऊट (अति) दरक (द्रव) हाथीमोला मोलघण ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै बीस नाम) ऊटा (तण) ।।—५

समुद्र नाम

उदध अव अणथाग आच उधारण अळियळ ,
महण (मीन) महराण कमळ - हिलोहळ व्याकुळ ।
वेळावळ अहिलोल वार ब्रहमड निघूवर ,
अकूपार अणथाग समद दध सागर सायर ।
अतरह अमोघ चडतव अलील (बोहत) अतेरुडूबवण ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै वीस नाम) सामद (तण) ।।—६

घोडा नाम

वाज तुरग विहग असव ऊडड उतगह ,
जगम केकाण जडाग राग भिडग पमगह ।
तुरी घोडो तोखार वाज वरहास (वखाणो) ,
चीगो रुहीचाळ वरवेरण (वखाणो) ।
(वावीस नाम वाणी बोहत कवि पिंगल कीरत कही ,
(ग्रथ आद देखे मता) सवळ (नाम सारा सही) ।।—७

धरती नाम

तुगी वसुधा इळ भोम भरथरी भण्डारी ,
खाक जमीं दरदरी धरैती धूतारी ।
मही सूळा रिणमडप मुगत वेहरी खिणवाळी ,
अचळा उदै गिरधरण सुथर सुन्दर सोहलाळी ।
अटळज झूला चिगरज गिरद (घासावण भूपत घणा) ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नाम) प्रथ्वी (तणा) ।।—८

तरवार नाम

खाडो किरमर खग घडच बाकल धाराळी ,
सुधवट्टी समसेर मालवन्धरण मूछाळी ।
कडबांधी केवाण विजढ वाणास चमक्की ,
तोल धूप तरवार सगत आसुधर चक्की ।
किरमाळ सूर-झटका-करण (घण मरद बाधै घणा) ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नाम खाडे तणा) ।।—६

महादेव नाम

ईसर सिव हर अव अखव - धुज ब्रह्म कपाळी ,
सभु रुद्र भूतेस त्रयण त्रोडण मझताळी ।
अेकलिंग लोदग गगसिर भग - अहारी ,
नीलकठ मुरनैण वाणपत्ती जटधारी ।
सिसमत्थ विहारी सूळहथ गिरजापत वासव (गिणा) ,
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नाम) सकर (तणा) ।।—१०

भाला नाम

भालो सेल त्रभाग ऊळळ वझेळ सावजळ ,
कुन्त अणी असि (काज) अलळ झाळामुख सावळ ।
खिवण डहण अतखभ ग्रहण - वैरी उग्राहण ,
सापिण""छडाल साग गाजा , चौधारण ।
वळकती - केळ लसकर (वळे) करणपोत हसती-कणा ,
(माम रै सुकर सोहै सदा तीस नाम वरछी तणा) ।।—११

सूरज नाम

तरण दिवायर तिमहर भांण द्रहपती भासकर ,
हीर जुगण मिण महर रसण आराण रातवर ।
रानापति दिव विव मित्र हर हस महाग्रह ,
पिंगळ विरळ पतग धीर सामळ जगचख्खह ।
आदीत उदोत सपत हरमोद समडळ चक्रधर ,
(छतीस नांम) सूरज किरमाळ ज्योत विरोचन तिमरहर ।।—१२

आख नाम

चरस आख चामणी नैत्र दिग नजर निरम्मळ ,
लोचण कायालज जोय रतन कायाजळ ।

कामधीठ कटाक्ष रार मोहन मनरजन ,
(काम सिव काज भवन) विमळ जगभाळरा ।
(बावीस नाम वांरगी वोहत जारगग गुहियरग लहै) ,
(कव कवत श्रेह पिंगल कहै श्रयनवीम) चक्षु (चहै) ।।—१३

सेर नाम

श्रगपत आननपच सिंघ सादूळ मतग - रिप ,
किंदर - ग्रह कठीर (लाड) दीरघ - छल करछिप ।
लोहलाठ लकाळ भूप - वन रिरग - नह - भागह ,
सनमुख - भाला - सहरग जोग एकवळा (जागह) ।
केसरी खिरगकर चोळचख ढुंढराव श्रासद्धनख ,
सारग (गाम पिंगल) सवज श्रवनवीस (सजा दिखत) ।।—१४

गरुड नाम

सुतपावहन (सरस) दुरस खगराज (दरसिये) ,
नागान्तक निखळ मरुतभानह (गुरग ग्रसिये) ।
त्रेन - तनय लघुग्रसरग चररगद्व भुजा - वेद - चव ,
वायु - विरोधी जतीवाह कसप - तनु (हेकव) ।
तारक्ष भक्ततारगतररग (सीतहररग सीतासमर) ,
(वसु श्रयन नाम पिंगल वचन) गरुड (नाम गाढा गुग्रर) ।।—१५

पारगी नाम

भू श्रल हर श्रव भख तरग श्रजरग जोतवळ ,
रग पारगी टातव भोमीवळ (है) सेतवळ ।
नीर वार नीलठा छापि सी थट्ट वधारगी ,
नर श्रतर नीचघ - परगग पयोहवा श्रारगी ।
झरनाळ श्रभुत उदग गगाजळ उजळ सीतळ (श्रखही) ,
(तीस नाम पारगी तरगा कवत श्रेह पिंगल कही) ।।—१६

पुन हाथी नाम

एरावत गज सिहर सिंधूर गरग खभ गरगेसुर ,
मदकररग उदमद्द (वरगे) श्रगखभ वरगेसुर ।
ढाह ढोह ढीचाळ ढीलढाळो ढळकतो ,
श्रतीसील आवरत मैंर हसती मयमतो ।

सू डाळ सकज (ओपी) सथिर (घरणु विसद आगळ घणा ,
(कवि नागराज पिंगल कहै वीस नाम) हसती (तणा) ।।—१७

मेघ नाम

पावस प्रथवीपाळ वसु हब्र वैकुंठवासी ,
महीरजण अंव मेघ इलम गाजिते - आकासी ।
नैणे - सघण नभराट ध्रवण पिंगळ धाराधर ,
जगजीवण जीभूत जलद जळमडळ जळहर ।
जळवहण अभ्र वरसण सुजळ महत-कळायण (सुहामणा) ,
परजन्य मुदिर पाळग भरण (तीस नाम) नीरद (तणा) ।।—१८

चन्द्र नाम

निसमडण निसनैण सोम सकळ की ससिहर ,
राजा रतन निरोग इदु दुज जटा - अमीभर ।
मयक अगाअक अम्व्र नरजपूरी तारापत ,
रोहणीवर राकेस किरण - ऊजळ सकळीव्रत ।
वादल[1] कमोदी निसचरण प्रमगुरु उडूपती सीमग (सुय) ,
चकवी-वियोग चकोट विधु चन्द (नाम) सुभ्र (सन्नदुय) ।।—१६

पुन सिंह नाम

गजरिपु साहल ग्रीठ वाण वनराज कठीरव ,
पचायण गहपूर वाघ (जच) सिख भुभारव ।
महाताव अगराव सीह कठीर सहारण ,
काळ ककाळ नहाळ दुगम दाढालह डारण ।
अमल मयद अणभग हरी मगहदी जख अगमारण ,
पचाण (सित पिंगल कहै तीस नाम) केहर (तणा) ।।—२०

●

१ 'वादल' शब्द का अर्थ चन्द्रमा होने मे सशय है ।

पर्यायवाची कोष-३

हमीर नांम - माला

हमीरदान रतनू विरचित

श्री गणेशाय नम   श्री सारदाय नम.

अथ हमीर नांम - माला

गीत बेलियो

गणेस नाम

गणपति हेरव लबोदर गजमुख ,
सिद्धि - रिद्धि - नायक[1] बुद्धि-सदन ।
एकदत[2] सूंडाळ विनायक ,
परमानद[3] (हुयजै प्रसन्न) ।।—१

पारवती नाम

(तूझ) मात[4] गोरी पारवती , हरा सकरी[5] वोस-हत्थी[6] ।
उमा अपरणा अजा ईसरी , काळी गिरजा सिवा (कथी) ।।—२
देवी सिघ - वाहणी दुरगा , जगजणणी[7] अविका (जिका) ।
भगवती चडका भवानी , त्रपुरासुर - स्यामणी[8] (तिका) ।।—३
माहेस्वरी तोतळा[9] मगळा , सरवाणी असकत[10] सकत ।
तुलज्या[11] त्रिलोचना कात्यायनी , महमाया (हुयजे मदति) ।।—४

मूसा नाम

मूसक[12] ऊदर[13] खणक सुचीमुख, वजरदत आखू असवार ।
देवा - आगीवाण[14] (हुकम दे भणू सुजस राघा - भरतार) ।।—५

सरस्वती नाम

भाख गी सरस्वती भारती , वाक्य गिरा गो बच बचन ।
ब्रह्माणी सारदा सुवाणी , धवळा - गिर - वासणी (धन) ।।—६

(अ) [5] सकरा [6] वीस-हथि [7] जगजननी ।
(ब) [1] सिध - बुधिनायक [2] एकरदन [3] परमनदन [4] तुहिज मात [8] सुरसामिणि [9] तोतला [10] अिसकति [11] तुलजा [12] मुस्यक [13] ऊदिर [14] देवा - आगेवाण ।

हंस नाम

चक्रांग्रग धीग्ट मुकताचर मानसूक[१] अविदात[२] मराळ,
हंस सुचलि लीळग - वाहणी (कृपा राखि जिम कथा कृपाळ[३] ।।—७

बुद्धि नाम

धी प्रगना[४] मनीखा धिखणा,
मेधा आसय[५] समझ मति ।
अकलि[६] चातुरी सुबुधी (आपजै,
प्रभणा गुण त्रिभवण - पति) ।।—८

परमेस्वर नाम

त्रभुवणनाथ[७] रणछोड़ त्रिविक्रम[८],
केसव माधव कृष्ण[९] किल्याण[१०] ।
परमेस्वर करतार अपपर,
प्रभु परमगुरू पुरिखि - पुराण[११] ।।—९

हर[१२] रुघवस[१३] विसंभर नरहर,
गोविंद जगतारण[१४] गोपाळ ।
मोहण बाळमुकंद मनोहर,
देव दमोदर दीनदयाळ ।।—१०

कानड रासरमण करणाकर,
अंतरजामी अमर अनंत ।
वीठळ व्रजभूखण लिखमीवर[१५],
भूधर भगतवछळ भगवत ।।—११

सामळ कमळनयण मधूसूदन,
धरणीधर सेवग - साधार ।
वामण[१६] वळिवंधण जगवदण,
कंसनिकदण नंदकुमार ।।—१२

(अ) [४] प्रागिरा [५] आसई [६] अकल [८] अविक्रम [११] पुरख-पुराण [१२] हरि [१३] रघुबंस [१४] गजतारण [१५] लिखमीस्वर [१६] वावन ।

(ब) [१] मानमोक [२] अवदात [३] क्रिपाळ [७] त्रिगुणनाथ [९] किसन [१०] कल्याण ।

असुर - दहण[१] धर - भार उतारण ,
धू - तारण नरसिंघ[२] सधीर ।
वासुदेव केवल जदूवसी ,
[विसन किसन अवगत वळि - वीर]* ॥—१३

मुरळीधर सुंदर वनमाळी ,
गोकळनाथ चरावण - गाय ।
[निराकार निरगुण नारायण]† ,
[रुकमणकथ सिरोमण - राय]‡ ॥—१४

रीखीकेस[३] राघव सारंगी ,
सुरनायक असरणसरण ।
पुरखोतम[४] धारण - पितांबर ,
वारिजलोचण घणवरण ॥—१५

घणनामी अवगति[५] आणंदघन ,
आदपुरख[६] ईसर अखळीस ।
चिदानंद पावन अघमोचन ,
जनम - मरण - मेटण जगदीस ॥—१६

सारंगधर गिरधर जगसाई[७] ,
अलख अगोचर अजर अज ।
भवतारण भैंहरण त्रभंगी[८] ,
धणी महणमह गरुडधज ॥—१७

व्रंदावनवासी व्रजवासी ,
अवणासी[९] अवतार - अनेक ।
जोतस्वरूप[१०] अरूप निरंजण ;
अणहद - सबद[११] परमपद एक ॥—१८

पतराखण श्रीपत सीतापत ,
निकळंक निगम निरोत्तम (नाम) ।

(अ) [२] नसघ [३] रुखीकेस [४] पुरसोतम । [*विस्वक सेन विसन वळवीर] ।
‡[रुखिमिणिकत मिरोमणि - राय] ।

(ब) [१] अमुर - वहण [५] अविगत [६] आदिपुरसि [७] अकलीस [८] जळसाई [९] त्रिभगी
[१०] जोतिमरूप [११]अनहद । [†निकळंक निराकार नाराइण] ।

लकलियरण सहोदर - लिखमण ,
रुघराजा रावण - रिपु राम ।।—१६

पदमनाभ चत्रभुज चक्रपाणी ,
मछ कछ आदि - वाराह मुरारि ।
पार - अपार सकळ - जगपाळक ,
वहोनामी[१] (सूरत वळिहार)[२] ।।—२०

ब्रह्मा नाम

[ऊ ओ ब्रह्मा आतमभू]* ,
विधि कोलाळी चत्रवदन ।
धाता वेधा द्रुहिण विधाता ,
वेद - भेद - समझण - वचन ।।—२१

परमेसटी विरच पितामह ,
कमळासण कमळज लोकेस ।
(कं) सुरजेठ हस जगकरता ,
हिरण - गरभ[३] अज जनक - महेस ।।—२२

सिव नांम

सरव महेस ईस सिव सकर ,
भव हर वोमकेस भुतेस ।
सभू अचलेसर[४] कोटेसर[५] ,
जोगेसर[६] जटधर जोगेस ।।—२३

महादेव रुद्र भीम पचमुख[७] ,
सामी[८] चद्रसेखर[९] समराथ ।
धूरजटी श्रीकठ प्रमथाधिप[१०],
नीलकंठ पारवतीनाथ ।।—२४

[त्रिवक भारग पिनाखी त्रिनयण]† .
वामदेव उग्र ईसवर ।

(अ) ४ अचेम्वर ५ कोटेस्वर ६ जोगेस्वर ८ स्वामी ९ चंद्रसिखर १० प्रमुथादिप ।
† [अव - सरव पिनाकी त्रिनयन] ।

(ब) १ वहनामी २ मूरति वळिहार ३ हरणि - गरभ ७ पचमुख ।
*[ओ ब्रह्मा ओहिज आतिमभू] ।

पीअण - जहर[१] गिरीस कपरदी ,
घमळ - आरोहण[२] गगधर ।

सूरज नांम

(सत-रज-तम-गुण विष्ण ब्रह्म सिव ,
त्रण देवत वसुदेव तण) ।
जोत-प्रकासण कोटि सूरज (जिम) ,
कमळ - विकासण दिनकरण ।
मारतु ड हरिहस गयणमणि ,
वीरोचन रानळ[3] सु वर ।
[भाण अरजमा पतग भासकर]* ,
[कासिप - सुतन रवि सहसकर]† ।।—२७

प्रभा विभाकर वरळ ग्रहापत ,
अरक करम - साखी आदीत ।
मित्र चित्र भाणू असुमाळी ,
प्रद्योतन उद्योत प्रवीत ।।—२८

विवसवान दुतिवान विभावसु ,
तरण तपन सविता तिगम[४] ।
रातवर भगवान निसारिप ,
जनक‡ - जमण - सिन - करण-जम ।।—२९

[उस्म-रस्म अहिमकर विधिनयण]◆ ,
दुणियर तपघण[५] मिहर[६] दिनद ।
(धन वडिम गोवरधन धारण ,
चख यक सूर वियोचख चद) ।।—३०

चन्द्र नाम

सोम सुधासु सिसि सिस्हिर ,
कळानिधि उडपति[७] सकळक ।

(अ) [१] पीवण - जहर [२] धवळ - आरोहण [४] राचल [४] तिग्म ।
* [भाण अरकमा पतग भास्कर] † [कासिपसुत रवि सहसकर] ।
(ब) [५] दिणियर [६]महर [७] उडपत ◆ [नसन रसमि अहमकर अवन अनि] ।
‡ जनक - जमण जनक - सिन, जनक-करण, जनक - जम ।

कुमदवधु श्रीवधु[1] हेमकर[2] ,
अग - अक दुजराज मयक ।।—३१

सुभ्रकर किरणसनेत समदसुत ,
रोहणी धव - नखत्रेस निरोग ।
इंदू श्रीखदी - ईस अम्रतिमय ,
विधू रतन चक्रवाक - वियोग ।।—३२

प्रमगुरु सोलह - कळा सपूरण ,
(पौहचि वडी तै वडी प्रमाण) ।

समुद्र नांम

मथण महण दध[3] उदव[4] महोदर[5] ,
रेणायर सागर महराण[6] ।।—३३

रतनागर अरणव लहरीरव ,
गौडीरव दरीआव गभीर ।
पारावार उधधिपत मछपति ,
[अथग अवहर अचळ अतीर]* ।।—३४

नीरोवर जळराट[7] वारनिधि ,
पतिजळ पदमालयापित[8] ।
सरवान सामद ,
महासर[9] अकूपार उदभव-अम्रति[10] ।।—३५

नदी नांम

नदी आपगा धुनी निमनगा[11] ,
परवतजा जळमाळा (पणी) ।
[श्रोताश्रोत श्रवेती श्रवती]† ,
तटणी तरगणी (नाम तिणि) ।।—३६

वाहा जभाळणी[12] प्रवाहा ,
सेलवणी निरभरणी[13] साव ।

(अ) [7] जल - रास [8] पादमालय - पार्वत [9] महासूर [10] उदध - यम्रत [11] निहगा [12] जवाहणी *[अथ अवहर अतर अतीर] ।

(ब) [1] सीमत [2] हिमकर, हमकर [3] दधि [4] उदिधि [5] महोदधि [6] महिराण [13] नीभरणी † [श्रोत श्रोतस्वती श्रवती] ।

कुलय खगा वाहणी कुलया ,
सिंधु दीपवती सभलाय ।।—३७

[(सरित तणौ पती गिणि सायर]* ,
मेघ सिध तणो मैंहराण ।
सदा वास करि पौढै सुखिया ,
(विसन समद जामात वखाण) ।।—३८

तरग नाम

उरमी वेळ किलोळ (आखीजै) ,
(तविजै) भ्रमर इलोळ तरग ।
[वेलू छौळ उरमावळि वीची]† ,
(भणि) नुतकळी कावळी भग ।।—३६

(तास नाम) वेळावळ (तवीजै) ,
वेळा उळधी उजळ वहाय ।।—४०

लिखमी नाम

वेळा - वळधी श्रीया (वचाई) ,
प्रभा रमा रामा भा पदमा ।
कमळा चपळा (ताई कहाई ।।—४१

लेखवि (नाम) इदरा लिखमी ,
(लिखमी - वर नाइक सुरलोक ।
सहिवाता राखै हरि सारै ,
थारै भला हुअै सह थोक) ।।—४२

गगा नाम

जगपावन त्रिपथा जाहनवी[1] ,
सुरगनदी सुरनदी (सुचग) ।
सरितिवरा[2] रिखधुनी[3] हरसिरा ।।—४३

गोम - गमण हेमवती गग ,
सहसमुखी आपगा सुरसरी ।

(अ) [1] जन्हवी [2] सरतवरा [3] रिखव - धुनी * [सरता तणो पती गिण साग(य)र]
† [वेल छोळ उमवि वळ वीची] ।

भागीरथी त्रिपथगा (भाळि),
मदाकनी हरिपदी (महिमा) ।
(पवित्र हुई हरि - चरण पखाळि) ।।—४४

जमना नाम

जम - भगनी काळिंद्री जमना,
जमा (वळै) सूरिजिजा (जाणि) ।
कृष्णा (तास पासि की कीळा,
विसन वाळ - लीला वखाणि) ।।—४५

सरप नाम

सरप दुजीह फणी पवनासण[१],
आसी - विख विखधर उरग ।।
गरलस भुजग[२] भुजीस भुजगम[३],
पनग[४] सिरीश्रय गूढ - पग ।।—४६

दद - सूक[५] भोगी काकोदर,
कुभीनस दरवीकर काळ ।
चील प्रदाकु कचुकी चक्री,
वक्रगती जिह्मग[६] अहि व्वाळ ।।—४७

लेलिहान चखश्रवा विलेसय,
दीरघ - पीठ कुडळी (दाखि) ।
(काळिनाग नाथियो कान्हड,
भूपो - भूप तणो जस भाखि) ।।—४८

सेस नाम

अनत्र यक[७] - कुडळ (वळि) आळुक,
भुजगपती[८] (कहि) महाभुजग ।
जीह - वोसहस विसहस - नेत्रजिणि,
पनग - सेस (हरि तणो पलग) ।।—४९

(अ) . [१] पवनासन [२] भुजग [३] भुजगमु [५] दुदुमूक [६] जिमगं [७] अणक [८] भुजग-ईस ।

(व) [४] परग ।

पाताल नाम

(तवा वाडवा - मुख प्रिथमीतळ ,
पनग - लोक अध - भुयण पाताळ ॥—५०

भूमि नाम

भूमि जमी प्रिथी[१] प्रिथमी[२] भू ,
पहवी[३] गहवरी[४] रसा महि ।
इळा समंद - मेखळा अचळा ,
महि मेदनी धरा महि ॥—५१

धरती वसुह वसुमती धात्री ,
क्षोणी[५] धरणी क्षिमा[६] क्षिती[७] ।
अवनी विसभरा अनता ,
थिरा रतनगरभा सथिति ॥—५२

विपळा वसव कु भती वसुधा ,
सागर - नीमी सरवहा[८] ।
गोत्रा गऊ रसवती जगती ,
(मिनखां - मन - मोहणी महा) ॥—५३

(उरवी सुरपग ले भरि उभौ ,
वामण रूपी ब्राहमण ।
वलि राजा छळि जैण वाधियो ,
नमो पराक्रम नारिश्रण) ॥—५५

धूल नाम

धूळि खेह रज रजी धूसरी[९] ,
सिकता[१०] रेण[११] सरकरा सद ।
वेळू रेत पासु (वाळो ,
मुख जिण हरि न भजै मतमंद) ॥—५५

(अ) [१] पथी [२] पथमी [३] पोहमी [४] गहरी [५] खोणी [६] खिमा [७] खित
[९] धूसळी [१०] सिकत [११] रेत ।

(ब) [८] सरवसुहा ।

वाट नाम

वाट वरतमा गैल वरत्री[१],
पथ निगम पदवी पविति[२] ।
अैन[3] सचरण[४] मारग अधवा,
सरणी सञ्चरण प्रचर मत ।।—५६

(उत्तम राह चालि ग्रहि उत्तम,
करग दान पुनि ग्रहि सुकृति ।
भाखि साच जग माहि भलाई,
चत्रभुज चरणै राखि चित) ।।—५७

वन नाम

विपन गहन कानन कछ[५] वारिख,
कातार ऊख[६] दुरग (कहाइ) ।
आरण[७] खड व्रदावन[८] अटवी[९],
(गोविंद तेथ चराई गाई) ।।—५८

व्रख नाम

सिखरी फळग्राही व्रख लाखी,
[विस्टर - मही रुह तरोवर][*] ।
[कुट विटपी महीसुत कीरसकर][†],
घरणपत्र पत्री खगाघर ।।—५९

[कुसमद अद्भुज फळद कराळद][‡],
[निद्रा - वरत फळी निनग][◆] ।
खितरुह रूख अनोकुह दरखत,
अद्री अद्रप झाड - अग ।।—६०

(चोर चोरि तर ऊपर चढियौ,
गोपगना तणा गोपाळ ।
अरज करै ऊभी जळ अतर,
दे व्रजभूखण दीनदयाळ) ।।—६१

(अ) [१] वरतणी [२] पद्मीपत [3] अोन [४] सचेरण [५] करव [६] झख [७] अरनि [८] वनरावन [९] अटावी [*] [विसटर द्रुम द्रु तरोवर कूट] [†] [विट महवी-सुत महका करसकर] [‡] [कुसमज अदभूत फरज करालिक] [◆] [निघावरत फळी नवनग] ।

फूल नांम

लेखवि[1] फूल मणी - वक हलक ,
सुम सुमनस फळ - पिता[2] कुसुम ।
सून प्रसून कह्लार[3] सुगधक[4] ,
(नाम) रगत सधक नरम ।।—६२

उदगम - सुमना पुसप लता - अत ,
(पुसपति के कहिजै प्रिवित ।
श्री रिणछोड तणै सिर छोगी ,
ईख निजरी भरीजै अम्रिति) ।।—६३

भमर नाम

रोळ - वव[5] चचरीक झकारी ,
भ्रमर द्विरेफ[6] सिलीमुख भ्रग ।
कीळालप[7] कसमल - प्रिय मधुकर ,
सोरभचर खटपद सारग ।।—६४

(दाखि) मधुप हरि (नाम) इदु - दर ,
वाळ मधु - ग्राहक मधु - बरत ।
(पुसप - गध रस अलिअळ पाळग ,
भगतवछळ पाळग भगवत) ।।—६५

वानर नाम

मरकट गो लागूळ[8] वलीमुख ,
पलवग[9] पलवगम[10] पलवग ।
कीस हरि वनओक[11] वनर कपि ,
साखा - म्रग[12] फळचर सारग ।।—६६

(तास कटक मेले दसरथ तणा ,
लोपि समद लीधो गढ लक ।
मम करि ढील म धरि मन माया ,
समरि समरि श्रीराम निकळक) ।।—६७

(अ) [1] लेखव [2] सफळ-पित [3] कळवत [4] सुगद्दक [5] रोलब [6] दुरेफ [7] कलालीप [8] लागूर [9] अजळ [10] पलवगम [11] वनमुख [12] साखा-चर ।

हिरण नाम

वातप[1] हिरण एण वातायू[2] ,
सकु हरि प्रखत कुरंग ।
म्रग (रूपी मारीच मारियो ,
भुजा भामणी राम अभंग) ।।—६८

सूअर नाम

कोड आस[3] लांगळ (अर) सूकर ,
दुगम वाडचर गिडि[4] दाढाळ ।
घ्रोणी (अनै) आखणक घ्रिष्टी ,
एकल वहु - प्रज दात्रीडीयाळ ।।—६९

कोल[5] डारपति थूळनास किर ,
(दाखत) वव - रोमा भू - दार[6] ।
(कहि) दस्टरी सीरोमरमा (कहि) ,
आदी - वाराह प्रभू अवतार) ।।—७०

सिंघ नाम

वाघ सिंघ[7] कठीर कठीरव ,
सेत पिंग अस्टापद सूर ।
म्रगइंद्र[8] (कहि) पारंद[9] पंचमुख ,
पंचसिख पचाइण[10] गहपूर[11] ।।—७१

अभंग सरभ सादूळ नखायुध ,
हरि जख केहरि मगहर ।
महानाद[12] म्रगपति[13] म्रग-मार ,
अस्टापाद गजराज - अरि ।।—७२

(कोपमान नरसिंघ रूप करि ,
विकट विराट वदन विकराळ ।
सोखे रंगत असुर हरिणाकस ,
प्रभु प्रहळाद भगत प्रतिपाळ) ।।—७३

(अ) [1] वात - पियण [2] वातापी [3] आसि [4] गिट [5] कवल [6] भू-धार [7] सीह [8] म्रगेंद्र [9] पारद्द [10] पचायण [11] ग्रहपूर [12] माहानाद [13] वनपति ।

हाथी नांम

गज सासज मातग मतगज,
हाथी इभ हसती हसत।
कुजर सिंधुर करी पौहकरी[१],
मेगळ दोईरद[२] मद - मसत ।।—७४

गैमर नाग गइद[३] धैंधींगर,
वारण भद्रजाती वयंड।
सारंग कवु सुडाळ सिंघळी,
पट - हथ[४] तवेरव प्रचड[५] ।।—७५

द्विप हरि व्याळ पटाभ्भर दती,
कुभी वेरक यभ अनेकप।
(अनत सत गजराज उधारण,
जपि गिर - धारण तणो जप) ।।—७६

पींपल नाम

(वदि) चळ-दळ कुजर-भख अस्वथ,
श्रीव्रख वोधीव्रख सुव्रख।
(प्रथी विखै उत्तम फळ-पीपळ,
परमेस्वर उत्तम पुरखि) ।।—७७

वड़ नाम

वैश्रवणालय ध्रूअ[६] साखा-व्रख,
(गिण) रतफळ वटी[७] जटी निग्रोध।
(पान प्रयाग वड़ तणै पौढियौ,
सुजि हरि समरि ऊवर करि सौध) ।।—७८

वास नाम

तुची - सार त्रिधज[८] मसकर तस,
प्रभणा जळफळ[९] सत-परव।

(अ) [१] पुसकरी [२] दोयरदन [३] गयद [४] पट - हर [५] परचड [६] ध्रुव [७] वट
[८] अण - धूज।

(व) [९] जव - फळ।

(वेण वास वासळी वजावण ,
धिनि मोहन राधिका धव) ।।—७९

हरडी नाम

पथ्या चेतकी जवा[1] अव्यथा[2] ,
अभया[3] सिवा प्राणदा (आखि) ।
कायस्था इमिरिता[4] काळिका ,
(भणि) हिमजा[5] हेमवती (भाखि) ।।—८०

सरवारा[6] जीवती सुरभी ,
हरडै रोम तुरजिका (होई) ।
(सोई) पूतना (अनै) श्रेयसी ,
(कहै) प्रेयसी (नाम सी कोई) ।।—८१

हरीतकी (जिमो रोग हरण हद ,
हरि समरण पातिक हरण ।
द्वारामती - पती मुख दरसण ,
मेटो दुख जामण - मरण) ।।—८२

केसर नाम

पीतन रगत वनी - सिख दीपना ,
वाह्लोकजा गुड - वरण ।
(कही) सकोच पिसुण (वळि) कु कम ,
कसमीरज मगळ - करण ।।—८३

लोहित चदण देववलभा ,
(धर) काळेक (कहे कवि धीर ।
केसर तणो तिलक निज कीजै ,
विमल भजन कीजै वलिवीर) ।।—८४

चदण नाम

पनग - पाळ रोहिणी - द्रुम (पणीजै) ,
सोर - मूळ (अनै) गध - सार ।

(अ) . [1] जया [2] प्रपथ्यो [3] अभया [4] इमरता [5] हेमज [6] सुरत्वारी ।

मुनग[1] सुभाड सुगधक सुरभी ,
सीत - रूख रूंखा - सिणगार ॥—८५

उत्तम - तर[2] मळियातर[3] मलयज ,
चील - प्यार श्रीखड चदन ।
(चदन कुवज्या आणि चाढियो ,
पुरखोतम करिवा प्रसन) ॥—८६

पहाड नाम

सानुमान सिखरीस[4] सिलोचय[5] ,
धरि - नग अद्री[6] धराधर ।
भाखर डूगर अनड दरिभ्रति ,
आहारज[7] परवत (अवर) ॥—८७

त्रिकूट मरुत पहाड गिरिंद (तवि) ,
अग शृगी भूधर अचळ ।
गोत्रग्राव गिरवर गोवरधन ,
(करि सिर धारै चख कमळ) ॥—८८

पाखाण नाम

ग्राव धात घण सिला उपल (गिणि) ,
पाथर असम[8] द्रखद पाखाण ।
(नाम प्रताप तारिया जळनिधि ,
विधि-विधि भणि जिण रा वाखाण) ॥—८९

सोना नाम

वसू भूतम लोहीतम[9] सोव्रन ,
कर - बुर[10] चामीकर कचन[11] ।
साति-कुभ[12] गागोय[13] सेल-सुत ,
हेम कनक हाटक हरन ॥—९०

(अ) [1] सुभग [2] उत्तिम - तरु [3] मलियागर [4] सिखरीक [5] स्यलोचय [6] ईद्री [7] आहारिज [8] अमर [9] लोहत्तम [10] करव [11] कचन्न [12] सात-कुभ [13] गगेय ।

गैरुक[१] महारजत[२] (वळि) गारुड ,
भूर अस्टपद (अरु) भरम ।
(नाम) अगिनवीरज जाबूनद[3] ,
रजत - धात ओपम रुकम[४] ।।—६१

(कह) तपनीय पीतरंग कुरमदन[५] ,
जात-रूप कळधोत (जथा) ।
(लाख जुगा लग काटन लागै ,
कलक न लागै राम कथा ।।—६२

रूपा नाम

हस रूपो खिरजूर हिमाश्रु[६] ,
सेत रजत[७] दुर-वरणक[८] (सोई) ।
जात - रूप कळधोत सार - जग[९] ,
(हरि सेवियो तिका घरि होई) ।।—६३

तावो नाम

सुलव घिस्टि[१०] कनोग्रस[११] (अर) सावर[१२] ,
मरकट आसि मलेछमुख ।
वरसट मेछ (वळै) त्रिम वरधन ,
रगत उतवर[१३] (नाम रुख) ।।—६४

(सद ओखदी परसि तावो सुज ,
सोव्रन धात हुवै ततसार ।
राघव तणी परसतां पद - रज
इमि गोतिमि त्रिय हुई उधार) ।।—६५

लोह नाम

किसना-मिख[१४] अय त्रण काळायस ,
सिला-सार[१५] तीखण घण सार ।

(अ) [१] गारक [२] माहारजत [3] जामूनद [४] रुखम [५] कुनण [६] हिमासु [७] स्वेत-वरण [८] दुर-जतक [९] ताई जग [१०] घिस्ट [११] कनिस्ट [१२] सावक [१३] उदमहर [१४] क्रम्णा - मुख [१५] गिर - सार ।

[पिंड पारथ करूक पारसव]* ,
ससत्रक ससत्र सत्रा - सधार ।।—९६

(वोटरण लोह पाप री वेडी ,
सेवा करी हरि जाणँ सही ।
कहि चिति निति सपवित्र ही कीरति ,
कीरति वेद पुराण कही) ।।—९७

मुलक नाम

विखय[१] मुलक रासट उपवरतन ,
जनपद नीव्रति देस जनात ।
मडळ (न को अेहडो व्रज - मडळ ,
अवतरिया हरि करण अख्यात) ।।—९८

नगर नाम

नगम पुरी[२] पुर[३] पटण[४] निवेसन ,
नगरी पुट[५] पतन नगर ।
अधिस्थान[६] नृपस्थान (ईखता ,
महरा सिर मथुरा) सहर ।।—९९

तलाव नाम

सर वरख्यात पुसकरण[७] सरसी ,
पदमाकर कासार (प्रमाण ।
सिरहर अवसरा नारियण सिर ,
वडो) तळाव तडाग जीवाण ।।—१००

नीर नाम

नीर खीर दक उदक कुलीनस ,
क पौहकर[८] घणरस कमळ ।
अरुण पाथ पय मेघपुसप अप ,
जीवन (जा दिन पास) जळ ।।—१०१

(अ) [१] विखै [२] नभ - पुरी [३] पुट [४] पाटण [५] पुट - भेदण [८] पूकर ।
* [पिंड पथर सुत रूपक पारसव] ।
(ब) [६] अधिस्ठान [७] पौहकर ।

सलिल[1] कपीट[2] भुवन सर संवर ,
आव[3] कवध कुस[4] विस्त अम्रति[5] ।
मळमजण कीळाळ मरवमुख ,
पाणी पारणद वन (प्रविति) ।।—१०२

अव[6] वार गग तोइ[7] घोई - अग ,
(करि श्रीक्रसन तणा कँ वार ।
उत्तम होई जनम - क्रम आतम ,
सुगम तरै दधि विसम ससार) ।।—१०३

कमल नाम

सहसपत्र सतपत्र कुसेमय ,
पकेरुह पकज पदम ।
नलणी जळज नालीन कोकनद ,
जळरुह जळरुट जळजनम ।।—१०४

सर - जनमा खरदंड सुधारस ,
कुवलय सरसीरुह कमळ ।
पुंडरीक उतपळ हर पोहकर ,
पिता - विरंच महोतपळ ।।—१०५

राजीव कज सरीज तामरस ,
विस - प्रसून[8] नीरज अरविंद[9] ।
वारज अबुज नयण इदीवर[10] ,
(नमो पराकम मथुर - नरद ।।—१०६

मछी नाम

सलकीजा[11] दुख कुलखय कुसळी ,
सवर झख सफरी सफर ।
अनमिख इदुजयकर अलूकी ,
चचळ वारज वारचर ।।—१०७

(अ) [1] सलल [2] क्रपी [3] अवू [4] कुसमई [5] इम्रत [6] मग [7] तोय [8] विस - परसूति [9] अरिविंद [10] इदवर [11] सलक्रजा ।

(चवां) आतमासी सिधचारी,
वैसारण खडपीरण[1] विसार[2]।
प्रथुरोमा पाठीन मीन (पढि),
(केवळ मछ रूपी करतार ॥१०८

काछिवा नाम

कूरम कमठ काछवौ कछप.
गुपतिपचअग चतुरगति।
पाणीजीवा[3] तुद (वळै) क्रोडपग,
(प्रगट रूप सुजि जगतपति) ॥—१०९

देवल नाम

देवळ मडप चैत देवाळय,
हृद धजर प्रासाद विहार।
(माहि तास सौभै हरि मूरति,
झालिर तरा हुवै झणकार) ॥—११०

धजा नाम

कदळी वईजयती कैतेन,
(भरा) जयता केत (भराय)।
(ताई) पराका चैहन पताका,
(सिरै धजा हरि देवळ साय) ॥—१११

गढ़ नाम

वप्रवरण भुरजाळ दूरग (वळि),
परिघ श्रूळ गढ चय प्राकार।
(लका कोट रामचद्र ले करि,
दान दिये अैहडो दातार) ॥—११२

छडीदार नाम

छडीदार दरवान उछारक,
हुसियारक हाजिरि[4] प्रतिहार[5]।

(ग्र) [1] खडाखीरण [2] वीसार [3] पाणीजीव [4] हाजर [5] प्रतहार।

द्वारपाळ डडी[१] दरवारी ,
(नुजि हरि वळै) पोळियो (मुधार) ।।—११३

घर नाम

ग्रेह[२] ओक आमाम (वळै)[३] गह ,
धवळ सकेत निकेतन[४] धाम ।
पद आसय[५] रहणाक आमपद ,
आलय निलय मिंदर आराम ।।—११४

वास निवास सथानिक[६] वसती ,
सदन भवन वेसभ सदम ।
धिसन अगार[७] (जादवां घर घन ,
जिण घर हरि लीन्हौ जनम) ।।—११५

राजा नांम

भूपति भूप पारथव अविभू ,
विभू प्रभू (अनि) ईसवर ।
परव्रढ मघि लोकेस देसपति ,
सामी भरता नरेसर ।।—११६

नाथ प्रजाप[८] महीपति नाइक[९] ,
अरज ईस ईसर ईसान ।
नरपती नरिंद[१०] अवपति[११] नेता ,
राव[११] राट राजा राजान ।।—११७

(राम समान न कोई राजा ,
सरति न काइ सुरसरी समान ।
सती न काइ समोवड सीता ,
गीता समोवड नको गियान) ।।—११८

जुधिष्ठर नाम

भरता नवयराज लखमा[१३] (भणि) ,
कौंतयस अजमीढ कक ।

(अ) [१]दडी [२]गेह [३]सरण [४]केतन [५]आश्रम [६]सुथानिक [८]नाथ - प्रजाह [९]खितनायक [१०]नरद [११]अदप - पति [१२]राऊ ।

(व) - [७]आगार [१३]लखमण ।

(सुजि) सिलियार अजात - तणोसत्र ,
(सोम - वस राजा अणसक) ॥—११६

पाडव - तिलक पति - हथणापुर ,
धरम - आतमज[1] (तास धन) ।
(जीहा साच बोल तौं) जुजिठळ ,
(साच तणो वेली किसन) ॥—१२०

जिग नांम

मन्यु ससर ईसपति (तत) मख ,
(तवि) सविक्रत[2] घ्रिति[3] होम वितान ।
ज्याग[4] सातोमि[5] वहुरी अधिवर[6] जिगि[7] ,
जिगन पुरख (त्रिभुवण राजान) ॥—१२१

भीम नाम

(दाखि) पवनसुत वळण वक्रोदर ,
कीचक - रिपि मूंदन[8] किरमीर ।
कौरव - दळण[9] भ्रमावण - कुंजर
(भीम सवळ जै री हरि भीर ॥—१२२

अरजुण नाम

धनंजय अरिजन जिसन कपीवज ,
निर - कार - रूपी व्रहनट ।
पारथ सव्यसाची मधिपंडव
सक्रनदन विभचछ सुभट ॥—१२३

गुडाकेस व्रखसेन फाळगुण ,
सुनर मोक वेधी - सवद ।
राधावेधा सुगत किरीटी ,
महीसूर मरदा - मरद ॥—१२४

सेतअस्व सुभद्रेस करण - सत्र ,
(सखा तास वसदेव सुत ।

(अ) [1] आतमज [2] सवक्रत [3] घ्रत [4] जग्य [5] सतोमवर [6] अवधर [7] जग ।
(ब) [8] मुदन [9] कैरव - दळण ।

कवि 'हमीर' जसवास आस कर,
ताप पाप मेटै तुरत) ।।—१२५

धनुस नाम

धनुख कारमुख धनव चाप (धन),
करण पिनाक असत्र कोदड[1] ।
सकर इखु इखूवास[2] सरासण[3]
(पकडि भाजियो राम प्रचड) ।।—१२६

बाण नाम

प्रखतक[4] बाण कलब[5] ककपत्र,
पत्रवाह पत्री प्रदर ।
(ईख) तोमर चित्रपूख अजिव्रहमग,
सायक आसुग तीर सर ।।—१२७

ग्रीधपख नाराज मारगन,
रोपण वसख सिलीमुख रोप ।
(पण खग खुर पर राम सज कर,
काटण दस मस्तक करि कोप) ।।—१२८

करण नाम

सूततनय चपाधिप[6] रविसुत,
राधातनय करन अगराज ।
(तिण रौ पोहर सवार तवीजै,
कियो प्रभू दातार सकाज) ।।—१२९

दान नाम

प्रतिपायण निरवधण उछरजण,
जपि विसरारण[7] विसरजण ।
विलसण वगसण मौज विहाइति,
वितरण दत समपण त्रवण ।।—१३०

(अ) [1] कोमड [2] इखूवाम [3] सरासन [4] प्रकथक [5] कलवक [6] चपादिप [7] विमरारणण ।

आपण दान (लक उचित - पति,
भगत निवाजण वभीखण ।
रावण मरण खयण कुळ राकस,
तिको राम तारण - तरण) ॥—१३१

जाजिक नाम

ईहग भिखक जाचिग अरथी,
मनरख मागण मारगण ।
जग - आसगर (व) नीयक जाचण,
(तवि दातार दसरथ सुतण) ॥—१३२

दातार नाम

मनमोद मनऊच महामन,
उदभट त्यागी (प्रगट) उदार ।
अपल महेछू उदात उदीरण,
(देवा देव वडो दातार) ॥—१३३

पडित नाम

[प्रायतरु विविस्चति पाडिति,
विधिग धिखिग कोविद विद्वान ।
(गिन) प्रयागिनि वुधि-सुधि दोखगिन,
महाचतुर वेधी धीमान]* ॥—१३४

सूर ऋस्ट ऋतीलव धवरण - सिन,
विचखण सुलखण विसारद ।
विदुख धीर अभिरूप वागमो,
पात्र मनीखी पारखद ॥—१३५

(जाण) प्रवीण कुसळ आचिरज[1],
नैवांइक मतिधण निपुण ।
(सोइज कहाकवि सुकवि कवेसर,
गिरधारण कहे गुण) ॥—१३६

(अ) [1] आचारज [2] नइयाहिक । *[आतम - रूप विवसचित पंडित, विदग दखुणिक कविंद वुधिमान । गिन प्रागिन-वुधि-सुधि दोख-गिन, महाचतुर मेधावी मान ।]

जस नाम

जदाहरण सभगिना सुजस ,
वरणत सुसवद सबद वखाण ।
सधवाद असतूती सुपारिस ,
प्रिसिधि विरद सोभाग (प्रमाण) ।।—१३७

वाच प्रताप सिलोक गुणावळि ,
कीरति ख्यात (षिसेख कही ।
राम तणो भूले मत रूपक ,
सुर नर समरै नाम सही) ।।—१३८

सूरिमा नाम

कळि जूझार सुभट अहूकारी ,
विक्रा - अत तेजसी वीर ।
(सूर न कोई राम सरीखौ ।
साझण रावण रांण सधीर) ।।—१३९

तरवार नाम

असिवर मडळाग्र खाडौ असि ,
कोखियक निसत्रस क्रपाण ।
चद्रहास बाणस[1] घात (चव) ,
करताळीक घाव केवाण ।।—१४०

जडळग विजड अजड धारुजळ ,
तेग खडग भुजलग तरवार ।
किरमर सार रूक खग (हर कहि ,
समहर हार-जीत हर हार) ।।—१४१

घोडा नाम

घूरज भिडज गंधरव (अर) सिंधव ,
वाजी वाज पमग विडग ।
वाह अंव[2] चचळ वेगागळ ,
तारिख[3] ताजी तुरी तुरग ।।—१४२

(व) [1] बाणाम [2] अस्व [3] तारक ।

असि वरहास तुरगम अरवी ,
सपती वीती खेग सधीर[१] ।
हय केकाण वितड हर[२] हैमर ,
(गोविंद रूप कियो हय - ग्रीव) ॥—१४३

सत्र नाम

सत्र केवी सपतन विड सात्रव ,
दुखदायक[३] दोखी दुजण[४] ।
अभमानी अवजात[५] अराती ,
पथ - कुपथन खळ पिसण ॥—१४४

वेधी खेधी दुस्ट विरोधी ,
प्रतपख असहण विपख पर ।
अहिति अचित दसू[६] दुरत[७] अरि ,
हाणक यैरी वैरहर ॥—१४५

विघनकरण दोखी[८] अणवछक ,
रिसाधाती[९] घातीक[१०] रिप ।
(सिर ऊपर दोखी जम सिरखा ,
नाम सिमर रणछोड नृप) ॥—१४६

सेना नाम

पताकनी सेन[११] चळ प्रतनी[१२] ,
खरहन[१३] खूर कटक खधार ।
अनैकनी[१४] हैथाट आरहट ,
विकट अनीक सकधवार ॥—१४७

वरूथनी चक्र तात[१५] वाहनी ,
गरट फौज लसकर गैतूळ ।
घूस गडूस समोदनी[१६] धसनी[१७] ,
मोगर अखोहणी[१८] कळमूळ[१९] ॥—१४८

(व) [१] सुजीव [२] हर्रि [३] दुखदाइक [४] दूजण [५] अविजाती [६] दस्यु [७] दुरहित [८] द्वेखक [९] रिमि - घातू [१०] घातकी [११] सेन्या [१२] प्रतिना [१३] खरहड [१४] अनीकनी [१५] तत्र [१६] वादनी [१७] धजनी [१८] अखोहिणा [१९] कळिमूळ ।

साथ समूह चमू घड साधन ,
घासाहर घमसाण घण ।
(दळ सिसपाळ तणो देखता ,
हर कीधो रुकमणी हरण) ।।—१४६

जुध नाम

जुध समुदाय असागम सजुग ,
आहव (अन) अभ्यास अवदीक ।
द्वद्व आस कदन प्रव दारुण ,
सजुत समित सग्राम समीक ।।—१५०

समर सापरायक अघ समरक ,
प्रहरण आयोधन प्रधन ।
अभि सपाती महाहवि आजि ,
कळह राड़ि विग्रह कदन ।।—१५१

सप्रहार[1] सस्फोट सखि (सुजि) ,
ताई - प्रयात वेढि रणताळ ।
(जुत भारथ दसरथ सुत जीपण ,
खर दुखर असुरा खेगाळ) ।।—१५२

जम नाम, धरमराज नाम

क्रिताअत[2] अतक सीरणक्रम ,
काळिद्री - सोदर[3] अतु[4] काळ ।
समवरती कीनास सूरसुत ,
(जपि हरि - हरि काटै जमजाळ) ।।—१५३

मिनख नाम

नी[5] पुमान[6] अतिलोकी मानव ,
पचजन नर पुरुखा पुरख ।
धव आदमी गोध कायाधर ,
मनुज मरुत[7] मानुख[8] मिनख ।।—१५४

(अ) [2] क्रनअत [3] कालिदी - सोदर [4] जम [5] ना [6] पमान [7] मूरत [8] मानिख ।
(ब) [1] सपहार ।

(उवे आदमी भलाई अवतरिया ,
साख तिका री भरै ससार ।
सत भाखै राखै हरि सारै ,
उत्तिम लखण करै उपगार) ।।—१५५

जनम नाम

जनम उपजण जणण जणक[1] जिणि ,
उतपति[2] भव उदभव अवतार ।
(दस अवतार लिया दामोदर ,
भगवत भौमि उतारण भार) ।।—१५६

पिता नाम

प्रथम जनयता[3] सवितांव पिता ,
विरजा[4] तात जनक (जपि) वाप ।
(हरि वसुदेव पिता तिणि हूंता ,
अवतरिया जण तारण आप) ।।—१५७

माता नाम

अवा मा जननी[5] जनयती ,
सवती (नांम कहै ससार ।
देव कळा धन मात देवकी ,
कूख नीपना नदकुमार ।।—१५८

बालक नाम

अरभ कुमार खीरकंठ (उचरि) ,
(धारि नाम) सिसु स्तन-धय (कहाय) ।
पाक प्रथुक लघु - वेस डिभ पुत्र ,
साव पोत ऊतान सहाय ।।—१५९

(वाळमुकंद नद घरि वाळक ,
मात लडायौ जसोमती ।

(अ) . [1] मनुग्व - जण [2] उतपत [3] जनय [4] वीची ।
(ब) . [5] जणणी ।

भगतवछळ गोकळ मनभावन ,
पावन मूरति जगतपति) ।।—१६०

भाई नाम

भ्राता वधु[१] सहोदर भाई ,
सगरभ हिति सोदर सहज ।
समानोदरज वीर सोदरज ,
(सुजि वळिभद्र कान्हड सकज) ।।—१६१

वडा भाई नांम

जेसट पित्र-पूरवी[२] अग्रज ,
मोटो अग्रम (राम महि) ।।—१६२

छोटा भाई नाम

वळि कनिश्रान अनुज लघु अवरज ,
कनिस्ट[३] जवस्ट[४] (कस्ण कहि) ।।—१६३

वैंहन नाम

भगनी सिस वैंहन वाई (भणि) ,
भटू सोदरी वीरि (भणि) ।।—१६४

... . . .

पग नाम

चळण पाड गतिवत मचरण ,
(कहिजै) अंत्री ओण क्रम ।
पग पय गमन (मदा लग पालण
करि समरण श्रीरग) कदम ।।—१६५

कटि नाम

कलित्र[५] कटीर लक तनवीचि[६] कडि ,
मध्यभाग[७] काछनी (मुणि) ।

(प्र) . [५] कटीत्र [६] विच [७] त्रिछन्न ।
(च) . [१] बधव [२] पूरवज [३] कनिस्टि [४] जविस्टि ।

(मोर - मुगट राजै कर मुरली ,
तरह भामणै तास तणि) ।।—१६६

पेट नाम

पिचड कूख (गणि) उदर पेट (पिणि) ,
जठर त्वंत त्वदी ग्रभ (जाणि) ।
(अनत देवकी ग्रभ ऊपना ,
हिति देवा देता अति हाणि) ।।—१६७

पयोधर नाम

उरज उरोज पयोधर अचळ[1] ,
(तवि) उर - मडन कुच सतन[2] ।
(मुख ग्रही सोखी पूतना मारि ,
वडिमि वखाणै धिन विसन) ।।—१६८

हाथ नाम

करग आच हथ[3] हसत दोर कर ,
पच - साख[4] बाहू भुज पाण ।
(पाण जोड रिणछोड पूज जै ,
प्रथी चौगणै वधै प्रमाण) ।।—१६९

आगली नाम

(आखि) पलव करसाख आगळी ,
(उधरियो तिणि सिर अनड़ ।
व्रज राखियौ विगोयौ वासव ,
वडौ अवर कुण विसन वड) ।।—१७०

नख नाम

भुजा - कंट कर - सूक[5] पुनर - भव[6] ,
नखर पलव - सुव करज नख ।
(नख हरणख उधेडि नाखियौ ,
असुरा रिपि जुग - जुग अलख) ।।—१७१

(अ) [1] आचळ [2] सघन [3] हाथ [4] पच - साह [5] कर - सूर [6] पुर - भव ।

रोमावली नांम

रोम लोम गो पसम तनोरुह ,
(रोम - रोम हरि नाम रहाई ।
मेटि भरम मन तणो मानवी ,
क्रिमन तणो तू भगत कहाई) ॥—१७२

ग्रीवा (गळो) नाम

ग्रीव गळो सिरो - धरि[1] गावडि ,
(कध कियौ सरीखौ कैकाण ।
मधुकैटभ करि कोप मारियौ ,
देता दळण देव दीवाण) ॥—१७३

मुख नाम

आस्य लपन[2] रसनाग्रह आणण[3] ,
वक्र तुंड बोलण वदन ।
मुख (सुजि लीजै जिणि चरणाम्रति ,
कीजै जस राधाकिसन) ॥—१७४

जीभ नाम

वाया वाचा रसना[4] वकता ,
जीहा जीभ रसगना[5] जीह[6] ।
(इण सौं करतौ रहै आतमा ,
दसरथ - सुतन भजन निस - दीह) ॥—१७५

दांत नाम

दुज[7] रद[8] रदन दसन[9] मुख - दीपन ,
(दळियौ कस पकडि गज - दंत ।
वार - वार करतार वखांणौ ,
सुर सिणगार सुधारण संत) ॥—१७६

(अ) [1] सरो - धर [2] लपना [4] रसण [5] रसगिना [6] जीहा [7] दुजि [8] रद [9] दमण ।

(ब) . [3] आनन ।

अधर (होंठ) नाम

ओपवणात रदछदन मुखअग्र[१] ,
ओष्ठ होठ रदधर[२] अधर ।
(गोपि अधर खडम मुख गोविंद ,
पीयै महारस परसपर) ।।—१७७

नासिका नान

ग्रहण-सुगंध तिलक-मारग (गिण) ,
घ्रोण नास नासिका घ्राण ।
नाक (राम छेदन सुपनखा ,
रढ मेटण रामण रढराण) ।।—१७८

नेत्र नाम

लोचन चख द्रग आखि विलोचन ,
नैंण नैत्र अवुक निजरि ।
देखण दीठि[३] गो जोत मीट (दे ,
हेक मना मुख देख हरि) ।।—१७९

मस्तक नाम

मस्तक मूढ[४] मूरधन[५] मौली[६] ,
सीरख[७] वरग कमळ धू सीस ।
क उतबग (भ्रगुट दस - कापण ,
दान लक आयण जगदीश) ।।—१८०

केस नाम

सरळ वाळ सिरिमड सिरोरुह ,
कुतळ चिकुर चहर कच केस ।
(स्यामि केस राधा सिर सोहै ,
नाइक राधा किसन नरेस) ।।—१८१

(अ) [१] मुखाअग्र [२] मुस्टघर [३] द्रढ [४] मृड [५] मूरधा [६] मोली [७] सीरक ।
(ब) [३] दठि -

कान नाम

(चवि) श्रव श्रवण करण वाङकचर ,
सुरति धुनीग्रह साभळण ।
कान सुणण (भागवंत तणी कथ ,
वरणव करि अवरण वरण) ॥—१८२

सरीर नाम

काया गात सरीर कलेवर ,
वरखम देही डील वप ।
पिंड वथ मूरति पुर पुदगळ ,
(अवय विभू - वर तन अलप) ॥—१८४

वसत्र नाम

वसन दवूळ लूगडा[1] वसतर ,
सोभन तन - ढाकण[2] सिणगार ।
अश्रुग वास चीर पट अवर ,
(हरि द्रौपदी सपूरण हार) ॥—१८४

सेवा नाम

(अणआटै) सेवा (ग्रह आतग्र) ,
भजन जाप औळग भजत ।
(महाधनि आन) चाकरी खिजमत ,
(सिमरण कर हरि जाण सत) ॥—१८५

मन नाम

ऊचळ चचळ चेत अनिंद्री ,
पित मनमथ मन गूढ - पथ ।
मांनस अतहकरण हृदै (मभि ,
सदा समरि कानड समथ) ॥—१८६

(अ) [1] लूघडा ।
(ब) [2] तन ढाकण ।

चचल नाम

पारि पलव चळ लोळ पर पलव ,
चहुळ चळाचळ अति - चपळ ।
कप अथिरि अण - धीरजि कपन ,
(तवि हरि चित मन करि तरळ) ।।—१८७

कामदेव नाम

कळा केल मधूदीप कदरप ,
मार रमानदन मदन ।
अतन मनोज मनोद्रव[1] अणगज ,
काम मीनकेतन कमन ।।—१८८

मनमथ हरि प्रद्युमन आतमज ,
सबरारि[2] मनसिज[3] समर ।
दरपक पुसपचाप दिनदूलह ,
सु दर मनहर पचसर ।।—१८९

मधु स्वारथी (अनै) बिखमाजुध[4] ,
अनिनज[5] अवप अकाय अनग ।
सूरपकार[6] प्रसपधन्वा (सुजि) ,
रितपती जरा - भीर[7] नवरग ।।—१९०

(कोटि) मकरधज (रूप किसन कहि ,
पिता मकरधज क्रिसन पिणि ।
असुर सिघार किसन अतलीबळ ,
भगत सुधारण किसन भणि) ।।—१९१

स्त्री नाम

वनता[8] नारि[9] भारिज्या[10] वळभा ,
त्रिया प्रिया अगिना तरणि ।
माणणि[11] चळा ग्रेहणी महिळा ,
वाळा अवळा नितवणि[12] ।।—१९२

(अ) [1] मनोभव [2] समरारि [3] मनसेज [4] विखमयुद्ध [5] अवनिज [6] सूरपकारिपु [7] भीमम [8] वनिता [9] नार [11] भारज्या [12] नितबण ।

(ब) [10] माणचळ ।

जोखा जुवति जोखिता जोखित,
वामलोचना मुगधा[1] वांम।
सीमतनी तनूदरी सुंदरी,
भीरु तलप कांमकी भाम[2] ॥—१६३

प्रमदा दारा पतनी परध्री,
कामणि[3] (वळि) रगना कलित।
ललना रमणी (सिरोमणी लिखमी,
जास रमण जामी जगत) ॥—१६४

भरतार नाम

वर भरता भरतार वप्रौढा,
प्रिय प्राणेय प्रसिटि प्राणेस।
पीतम इस्टि भोगता (अरु) पति,
रमण वरयता नाह रिदेस ॥—१६५

कांमी वलभ धणी धव कामुक,
(कानड प्रिया राधिका कंत।
स्याम कोटि कंद्रप सुंदरता,
अकिळी ज्योति भगवंत अनंती) ॥—१६६

सुंदर नांम

सुलखण[4] कमन मनोगिन[5] सोभित,
रुचिर मनोहर मनोरम।
प्रीय कमनीय ललित[6] रुचि पेसळ[7],
सिधु[8] मंजु मजुळ सुखम ॥—१६७

सुभग सरूप समोभित सुंदर,
वांम[9] मधुर अभिराम वर।
(दरस)[10] रमण रमणीय (दीपतळ),
कांत[11] (अधिक कान्हड कवर) ॥—१६८

(अ) [1] मुग्धा [2] भामण [3] कामणी [4] सलखण [5] मनोगिण [6] श्रेस्ट [7] सुकलण [8] साधु [9] वामम [10] दमणीय [11] क्रांति।

नाम नाम

अभिखा[१] अक आह्वय[२] अविधा ।
नाम धेय सग्या[३] (हरि नाम ।
वेग टळे दुख दळिद्र विराम) ।।—१६६

मित्र स्याम वाइक[४] मन - मळग[५] ,
सहकृतवास सहचर सुहृद ।
प्राणइस्ट वलभतन प्रीतम ,
सनिगध सहकारी सुखद ।।—२००

सनेह नाम

हेत राग अनुराग नेह हिति ,
प्रीत सतोख मेळ सुख प्रेम ।
हारद प्रणय हेकमन दोहिद ,
(गोविंद निगम सू कर नेम) ।।—२०१

आणद नाम

मुद आणद महाहस सामुद ,
मोद परमसुख प्रमुद प्रमोद ।
रळी हुलास उमग उछरग रग ,
(विसन समरि करि) हरखि विनोद ।।—२०२

सुभाव नाम

अनिज विसव सानिज गुण - आतम ,
चळगति प्रगति रीति गति चावि ।
सहज सरग निसरग (सुजि) ससिधि ,
सतत रूप तक भाव सभाव ।।—२०३

स्वाद रूप (तव) लखण सील सच ,
तरह (राख भव समद तर ।

(अ) [१] असिख [२] आह्वीय [३] सगना [४] वायक [५] मन - मेळक ।

माधव सिमर देह कर निरमळ,
पाप न लागै येण पर) ।।—२०४

माण (नाम अहंकार)

मच्छर समय अहंकार दरप मद,
माण पाण पौरिसि अभिमांन ।
तव अभिमता गरूर रढ[1] (तजि,
धरि मत गरव धरि हरि ध्यांन) ।।—२०५

क्रिपा नांम

(कहि) अनुक्रोस[2] घ्रिणा[3] अनुकंपा,
हृतोगति [ε]किरपा महिरि[4] ।
मया दया (राखै जग-मडण),
करणा[5] (निधि हरि भजन करि) ।।—२०६

कपट नाम

परमकोस[6] परवाद[7] व्याज मिस,
छदंभ छेतरण दभ छळ ।
(नाम) लख्य विपदेस उपनिभ,
कैतव चितकरि कळह विकळ ।।—२०७

कूट कपट मनद्रोह तोत (कह,
राखण कथ ब्राघो बळि राउ ।
वाचि' हमीर वखाण क्रिसन रा,
पूजै पनग अमर नर पाउ) ।।—२०८

समूह नाम

समुदय व्यूह समूह प्रकर (सुणि).
निकर पटल संचय निकरव ।
पूर पूग व्रज वहुत (पणीजै),
कंदळ जाळ कळाप कदव ।।—२०९

(अ) [1] रढ [2] अनुकोन [3] ध्रणा [4] महर [5] करुणा ।
(ब) [6] परमक्रोस [7] परिवाद ।

वंछ्या नाम

ईहा चाहि वछ्रना इच्छा ,
(कहि) वसना चिकीरसव काम ।
(विमळ हुवै मन मिटै वासना ,
रहि एकत समरिये राम) ।।—२१०

पाप नाम

अधम[1] असुभ तम-व्रजन[2] अघ ,
पाप दुरिति[3] दुक्रिति[4] दुख पक ।
प्राचिति कलुल[5] कलुख दुखपालरण ,
कलमुख कसमल किलिविख कलक ।।—२११

धरम नाम

सत क्रित भागधेय व्रिख सुक्रति[6] ,
धरि-श्रेय (अर पुनि) धरम ।
(पूरण व्रह्म समरि परमातम ,
कर आतम उत्तम करम) ।।—२१२

कुसल नाम

[ससत सुश्रेय ससउ अधेय सिव ,
भव्यक भव्य भावक अभय ।
कुसळ खेम सुभ मद्र (मद्र कहि) ,
(माढव) मगळ (रूपमय)]* ।।—२१३

सभा नाम

[आसथान सदघटा आसता ,
ससत परखद समिति समाजि ।
समिजा गोठि छभा]† (सुजि सोहै ,
रोजि हुवै चरचा व्रज-राज) ।।—२१४

(अ) [1] अधम [2] तम-वीज [3] दुरित [4] दुक्रत [5] कलिल [6] सुखरथ ।
*[सुसेय कुमल आणद सुख , खेम खैर सासत सुखयाम ।
आनद उछव उछाह आखजै इसवर भज उयजै आराम ।।]
†[आसतन सता - घटा, परिखर ममत समाज, समया गोठ सभा ।]

सवद नाम

सुर निहृघोख (अनै) निहकु ण सुनि ,
निनद कुणत धुनि नाद निनाद ।
रू ंण आराव (न और) राव रव ,
सवद ध्रवान टेर कुण साद ॥—२१५

(वळि) निमिवान (हराद नाम वदि ,
की गजराज) आवाज पुकार ।
(हेदै ग्राह तुरत छोडवियो ,
अनत जुगा-जुग भगत उधार) ॥—२१६

सोभा नाम

भा आभा विभ्रमा[1] विभूखा ,
कोमळता राढा दुति क्राति ।
सुखमा छिवि परमा श्री सोभा ,
(भगवत) कळा अनोपम (भाति) ॥—२१७

दिन नाम

दिविदु दिवान[2] दिवस वासुर दिन ,
अह (इगियारसि) दिविसि[3] (अनूप ।
कीजै वरत भजन पिणि कीजै ,
भगत - वछळ रीझै व्रज - भूप) ॥—२१८

किरण नाम

रसमि[4] जोति[5] दुति गो छिवि सुचि रुचि ,
वसू दीधती असुग[6] विभा ।
किरण मयूख मरीच धाम कर ,
भानुभा प्रतीप दीपति प्रभा ॥—२१९

(गोविंद) तेज अवार (जगत-गुरु ,
घट-घट व्यापक वडिम घण ।
ताप पाप मेटण आतम तन ,
विसन तणा कहि जस वयण) ॥—२२०

(अ) [1] विभमा [2] दतिवान [3] दीह [4] रसम [5] वाति [6] असु ।

तेज नाम (उजास नाम)

तेज उदोत वरच तम - रिपि (तवि),
उजवाळो[1] आलोक उजास ।
ग्यान प्रकास (उर सग्रही,
समरि - समरि हरि सास उसास) ।।—२२१

सेत (स्वेत) नाम उजल नाम)

सेत विसद अविदात हिरिण सिति,
सुभ्रू (भळभद्र) अरजुन सुकळ ।
पाडूर पाड धवळ सुचि पाडू,
(उचरि हरि चित मन कर उजळ) ।।—२२२

रात्रि नाम

निसीथणी जामणि निसा निसि,
तमसी तमी तामसी (ताय) ।
जनया खिणदा[2] खिपा त्रिजामा[3],
विभावरी[4] सरवरी (बचाय) ।।—२२३

रात्रि रात्री[5] सिस - प्रिया[6] रंजनी,
(हुई अस्टमी जनम हरि ।
मुथरा माहि वरतिया मगळ,
घण कितूहळ घरोघरि) ।।—२२४

अधारो नाम

अध तंमस सतमस अव तमस,
तमस तिमिर भू - छाय तम ।
अधकार ध्वातस[7] (मेटण) अध,
(वरळ कोटि पूरण ब्रह्म) ।।—२२५

स्याम नाम

स्याम रांम मेछक (वळि) सामळ[8],
किरिठ[9] धूमरक[10] अश्रु भ्रू (वळि) काळ ।

(अ) · [2] खणदा [3] त्रजामा [4] विभरी [5] रात [6] रस-प्रिया [7] धा अत [8] स्यांमळि ।
(ब) : [1] अज - आळो [9] करठ [10] धूम ।

अलिप्रभ असित नील (आखीजै) ,
किसन-वरण (धिन क्रिसन-कृपाळ) ।।—२२६

दीपक नाम

कजळ - अक[1] तेज धज - कजळ ,
नेहप्रीय अहिमिणि तमनास ।
(उतम दसा करख दसय धण ,
आणद जोति सिखा ओजास) ।।—२२७

सारग दीप प्रदीप दसासुत ,
ओपण धार (दसा अवतार ।
दस अवतार लिया दामोदर ,
भगवत भौमि उतारण भार) ।।—२२८

चोर नाम

प्रतिरोधक मरमोख[2] पाटचर ,
निसचर दुस्टि[3] गूढचर (नाम) ।
तेय पार पथक दमु तसकर ,
एकागारक[4] नाळ[5] - अलाम ।।—२२९

कुवधमूळ मूळचप रासकदी ,
रामण चोर लकपती राण ।
(लेग्यौ सीत अेकली लाधी ,
कीधौ हति रघवर किल्याण) ।।—२३०

मूरखि नाम

मूरिख मुगध अजाण मीमीतमुख ,
मूढ मदमती हीण अमेध[6] ।
वाळस[7] जथाजात सठ कद (वदि) ,
नैड मूक वैधअण निखेद ।।—२३१

जालम वाळ अग्यान विवर जड ,
असन अवूज रहिति - इतिवार ।

(अ) [1] कजुळ - अक [6] अमेद [7] वालिस ।
(ब) [2] परमोख [3] दुमट [4] यकागारिका [5] नाळय ।

महाविकळ अगळज स्थानि - निमठ ,
(गोविंद भजै तिकै) गिमार[1] ।।—२३२

कूकर नाम

कूकर सारमेक कोयलेक ,
भुसण पुरोगति असतभुक ।
रितसाई रतिकील रितपरस ,
(दाखि) विरित वैणता सड्डुक ।।—२३३

लेखिराति जागर रसनालिटि ,
अगदस साला व्रकमडळ ।
वळितिपूछ ग्रहअग चक वाळध ,
खेतलरथ मजारखळ ।।—२३४

ग्रामसीह जीभय[2] स्वानि (गिणि ,
स्वान सुनर धर तास समान ।
कपटि कूर करम करे काळ-वसि ,
भगतवछळ न भजै भगवान) ।।—२३५

खर नाम

चक्रिवा[3] रासिबि[4] चिरमेही ,
पणि गरदभ[5] सीतल - पुहण ।
भारवहण[6] सखससदी भूकण ,
करणलब सकुकरण ।।—२३६

खुरदम खर वालेय सरीखत ,
(ओ) नर-मूढ-सरीख अजाण ।
(व्रजभूखण न जपै निसि वासुर ,
पुणै कुड न सुणै पुरांण) ।।—२३७

विस नाम

(तवा मार मारण रस तीखण ,
(गिणीजै) हाळाहळ[7] गरळ ।

(अ) [1] गीवार [3] चक्रिवान [4] रासभ [5] गरधभ [6] भारलदण [7] हळाहळ ।
(ब) [2] जिभाय ।

ससार जहर (दुख वारण,
केवळ हरि व्यापक सकळ) ॥—२३८

अम्रित नाम

अगदराज देवभख अम्रति,
मधु (कहि) रतन समदसुत मार।
मोभ पयूख सुधा जग-साचो,
(सुजि श्री राम नांम तज सार) ॥—२३९

चाकर नाम

चाकर परपिंडित पराचिति[1],
डिर[2] भ्रत्य[3] परपघत[4] दास।
किंकर परसकद परकरमण,
विवकर भट परजीत खवास ॥—२४०

चेट प्रईख भुजक परचाकर,
नफर निजोज[5] सेवगर (नाम)।
अनुचर अनुग (हमीर अनत रौ,
गोलो खानाजाद[6] गुलाम ॥—२४१

डर नाम

भीय वीय भय वास भीत भी,
(तवि) साधस डर दर अतक।
उद्रक चमक (वळै) आसक्या,
(समरि प्रभू मेटण जम-सक) ॥—२४२

आग्या नाम

आदम हुकम आगिना अग्या,
सानन जोग नियोग जुसोई।
(प्रेष देस) आदेस (जगतपति),
(हरि) फुरमाण (हुअै तिम होई) ॥—२४३

(प) : [1] पर्यांय [2] डगर [3] भ्रतीय [4] परदघत [5] निजोजि [6] खानैजाद।

वेला नाम

वरतमान अनिमिख खिण वेळा ,
वार वेर प्रसताव[1] वय ।
काळ अनीह प्रक्रमी अतर (कहि) ,
सोम[2] ताळ पौहरो समय ।।—२४४

अवसर (वुहौ जात आतमा ,
करि कारिमा फिटा सही काम ।
राघव तण जोडि गुण रूपक ,
मारण दळिद्र वधारण माम) ।।—२४५

पीडा नाम

रुज उपताप[3] व्यथा[4] पीडा रुग[5] ,
आभय आम माद आतक ।
व्याव[6] रोग असमाधि अपाटव ,
सगट[7] (गद मेटण हरि सक) ।।—२४६

कूड नाम

कूड व्रथा मिथा खोटीकथ ,
असिति अठीक अलोक[8] अणाळ ।
वितथ[9] विकळ अनिरित अनरथ (वळि ,
प्रभू समरि तजि) आळ - पपाळ ।।—२४७

साच नाम

तथि सचि समगि सचौक जथातथि ,
(वदि) सद भूति विसोवावीस ।
समीचीन[10] निसचौकरि[11] सन्नत ,
(जग पुडि साच रूप जगदीस) ।।—२४८

वलद नाम

वाडिभेय भद्र सौरभेय व्रख ,
हररथ द्रत हरनाथहर ।

(अ) [1] पिमताव [2] स्याम [3] उताप [4] विथा [5] रुघ [6] व्याधि [7] सकट
[8] अनीत [9] वेतत [10] समचन [11] चौकस ।

[घमळ वळघ धोरी सधुरघर]* ,
चौपग हळवाहण (उचरि) ।।—२४६

अनुडवान पसु वळि वळद उख ,
कुकुदवान शृंगी यळकार ।
तव व्रखभ (सुजि) रिखभ[1] वैल (तिण ,
भूधर हुकम लियो धर भार) ।।—२५०

गाय नाम

माहा गाइ[2] गऊ[3] माहेई[4] ,
सुरभी[5] सौंरभेई सुरिहि ।
अगिना[6] ऊश्रा शृंगणी उखा ,
कवळी[7] कपळा (नाम कहि) ।।—२५१

तपा (अनि) देवाघण तवा ,
(वळै अरजनी[8] दहावन[9] ।
(धरणीधर सुंदर गिरि धारण ,
धनी रोहणी ग्वाळ धिन) ।।—२५२

वाछडा नाम

तरण वांछडा वाछ ठोवडी ,
वाच सक्रतकर वाछा लवार ।
(वन मा आवि चोरिया व्रह्मा ,
त्रिकम नवा उपाया तार) ।।—२५३

दूध नाम

मधू गोरस उतमरस सोमिज[10] ,
[दुगध पुंसवन उवसि (पुनि) दूध]† ।
सतन खीर पय अम्रति[11] सवादक[12] ,
(मोंमि किसन पीधो मन सुध) ।।—२५४

(अ) [1] रखभ [2] गाय [3] गाउ [4] माहेवी [5] सुरह [6] अगना [7] कवनि [8] अरजुनी [9] महावन [10] सोमज [11] इम्रत [12] सवादिक ।
*[धवळ वळद धंघोरी धीगर] । †[दगव उदसि (पुनि) ओदसि दूव] ।

दही नाम

दही[1] (नाम) गोरस खीरज दध ,
(दधि पीतो हरि लेतो डाण) ।

छाछ नाम

मथिति उदश्वित काळसेम मही ,
(पीधी) छासि तक्र (पुरिख पुराण) ।।—२५५

मांखण नाम

तक्र-सार दधसार सारज (तवि) ,
नेगवी (ने) माखण नवनीत ।
(धिन कानड चोरतौ नवोघ्रति ,
पीतम गोकिळ पुरिख प्रवीत) ।।—२५६

घ्रत नाम

हय[2] अगवीन[3] नूप चौपड हवि ,
घिरत आजि आहिजि आहार[4] ।
सरपि खि हविखि तेजवत सवळौ ,
अभत जोतवत तेज अवार ।।—२५७

भोजन नाम

अमि[5] विहार[6] अहार अरोगण[7] ,
निधस लेह्य जीमण धिसनाद ।
भखण अनंद[8] खादण(वळि) वळभन[9] ,
सुखदवि खाण[10] प्रसाद सवाद ।।—२५८
(पति-वसाण अवसाण जगध पिण ,
तत करै भोजन खट त्रीस ।
जसुमंत मात जुगति जीमाडै ,
जीमै आप क्रिसन जगदीस) ।।—२५९

(अ) [1] महि [2] हई [3] यगुवन [4] आधार [5] हरभ [6] वहार [7] आरोगण
[8] अनदण [9] वलभण [10] खावण ।

सुमेर-गिर नाम

रतन-सान[१] गिरपति पचरूपी,
सुरगिर कचनगिर[२] सवळ ।
मेर सुमेर सुथानिक माहव,
(चवा) करिग्गा काचळ अचळ ।।—२६०

सरग नाम

ऊरधलोक नाक अमरालय,
भुव[३] दिवत सुर-रिखभ-वन ।
त्रिदिव[४]अवय(तवि तवि)खित्र-दस-तप,
(सुरगपति पति श्रीकिसन) ।।—२६१

इंद्र नाम

इद्र पाक-सासन आखडळ,
देवराज सक्र पुरदर[५] ।
विधश्रवा मघवास[६] अछरवर[७],
वरक्रित[८] सतक्रति[९] धरवजर[१०] ।।—२६२

दळभ व्रखा व्रतहा[११] सक्रदन[१२],
वासव मरुतवान मघवान ।
पूरवपति पुरहुति सचीपति,
जिसनु[१३] सुरेस सरगराजान ।।—२६३

हरिहय सहसनेत्र घणवाहण,
उग्रधन ऐरावण अधिप ।
सुनासीर क्रितमन सुत्रामा,
(नाम) रिखभ महानृप ।।—२६४

खिलेखा रिखभ जभभेदी,
विडऔजा प्राचिन विरह ।
तुराखाट दुचवन हर तखतखी[१४],
कौसिक मरुत सुराट (कह) ।।—२६५

(अ) [१] रतनसोत [२] कठनगिर [३] भुवि [४] अदव [५] पुलदर [६] मघव [७] अपछरवर [८] वरक्रितु [९] सतक्रतु [१०] वजरधर [११] व्रतहास [१२] सुक्रदन [१३] जिष्णु [१४] तपतखी ।

(इसडा अमर जास आराधै ,
सास - सास प्रति तास सभारि ।
वळि - बधण काटै क्रम - बधण ,
पूरणग्रह्म उतारै पारि) ।।—१६६

देव नाम

निरजर अमर धरहमुख नाकी ,
आदितसुत अभ्रतेस (उचार) ।
विवुध[1] - लेख त्रदसा त्रववेसा[2] ,
रिभु क्रतभुज सुमनस असुरारि ।।—२६४

अनिमिख अ दारका अनिंद्रा[3] ,
दिविओकस दिवखद सुर - देव ।
(देवा - देव देवकी नदन ,
सुध मवा हरि री कर सेव) ।।—२६८

अगनि नाम

क्रस्ण वरतमा अगनी अखा कपि ,
सिखावान[4] सिख[5] हुतासण[6] ।
पावक रोहितास स्वाहापति ,
दमुना दावानळ दहन ।।—२६९

वरहि सुक्र सुखम[7] उखर - बुध ,
आसुसुखण जगणी अनळ (जाणि) ।
मगळ सपतारची सुरामुख ,
जळण धनजय जाळिअळ[8] (जाणि) ।।—२७०

वीत्रहोत्र[9] वह्नी वैसनर ,
सोचीकेस (सुची) पवनसख ।
तनुनपात जातवेदा तप ,
चित्रभानु (अर) माहेसचख ।।—२७१

(अ) [3] अनिंदा [4] निखवान [5] सुख [6] दहण [7] सुखमा [8] जाळनणि [9] वीतीहोत
(ब) . [1] दिविध [2] अदवेसा ।

जगाळा आपित[1] जाग्रवी[2],
आश्रगाम उदर-चउ-मन ।
विभावसु[3] छागरथ विरोचन,
घ्रिति आहूतरण तमोघरण ।।—२७२

घोम समीरभव फुळ धूमधज,
वसु क्रसरण हुतभुक हविवाह ।
अरच खमत (हुव हरि आतम),
दुसह (व्रहद भवन भदाह) ।।—२७३

(जिम जागती विपन परजाळै,
वसु क्रसरण हुतमुक हविवाह ।
दुसह (व्रहद भवन भदाह) ।।—२७४

(जिम जागती विपन परजाळै,
परमेसर जाळै इम पाप ।
देवा देरणां देव दईता दव,
जादव-तिलक तरणो जपि जापु। ।।—२७५

वलभद्र नाम

वळिभद्र[4] ताळ लखरण निलावर,
अच्युताग्रज वळि हळायुध[5] ।
सीरपारण वळिदेव सतालक.
(भुरासिंध माँ करण जुव) ।।—२७६

कामपाळ भेदन - काळद्री,
रोहरणेय[6] सकरषरण-राम ।
पीय-मधु मूसळी-हळी (पिरिण),
(नांम अनत सीता सित नांम) ।।—२७७

(वधव तास तरणो वळि-वधरण ।
आदि पुरख ठाकुर अविरणास ।
सुरा सुधार संघारण असुरा,
उर अतर हरि री करि आस) ।।—२७८

वरुण नाम

पासोजळ कातर प्रचेता,
जळपति मछपति पुरंजन[7] ।

(अ) : [1] अपला [2] जागेवी [3] विनवमू [4] वळभद्र [5] हळआयघ [6] रोहणे [7] परजन ।

मेघनाद नीरोवर[१] मदर ,
वरुण वरणवै (जस किसन) ॥—२७८

कूबेर नाम

वसु (दरम) धनद[२] नरवाहण ,
किंपुर खैसर रतनकर ।
(कहि) कुह पिसाची कमलासी[३] ,
वैश्रवण[४] निधि-ईसवर ॥—२७९

जखाधीस हर-सखा त्रसर-जख ,
(पुनी) जघेसर उतरपती
एकपिंग पौलस्त एळविळी ,
श्री दसतोदर (नाम) मती ॥—२८०

राजराज किंनरेस (नर-धरम) ,
(जपि) जखराट धनाधिप (जांणि ।
भव थापियौ कमेर भडारि ,
मोटा धणी तणौ फुरमाण) ॥—२८१

असट सिधी नाम

अणमा महमा[५] (अनै) ईसता[६] ,
प्रापति[७] वसीकरण प्राकाम ।
(सुजि)गरिमा[८] लघिमा[९] (आठ अै सिधी ,
सुजि हरि आगळी करै सलाम) ॥—२८२

नव निधि नाम

कछप खरव सख[१०] नील नुकदक रिद[११] ,
कुंद महापदम पदमा मकर ।
(नर घर तास निवास नवै निध) ॥—२८३

द्रिव्य नाम

द्रिवण[१२] विभव वसु श्रवरै द्रिवि[१३] ,
आइतेयक सवर अरथ ।

(अ) [१] नीपेयण [२] धननदन [३] कविलासी [४] वहीवरण [६] इसमा [७] प्रापता [८] गिरमा [९] लगमा [१०] सखु, सघुख [११] रिध [१२] द्रवण [१३] द्रव ।

(ब) [५] महिमा ।

मनरंजण माया धन द्युमण,
ग्रहमडण सैंधव गरथ ॥—२८४

वुसत इरण[1]कु भरि(कथ कथ)विति,
निध रिध सरति माल निधान।
आधि खजांनी सार (अमारै,
भगतवछळ गोविंद भगवान) ॥—२८५

मोती नाम

मोताहळ मुक्ताफळ[2] मुकता,
(अरु) मुक्तज सुक्तज (उचरि)।
गुलकारस-उदभव[3] सिसिगोती[4],
हसभख मोती (कीध हरि) ॥—२८६

स्याम कार्तिकेय नाम

स्यामी महासेन सेनानी[5],
(कहि) [परभ्रति सिखडी सुकमार]*।
सुतन - उमा गगा-कृतिकासुत,
दखबारह खटमुख ब्रहमचार ॥—२८७

तारकारि क्रौंचार सगतभ्रति[6],
सरभू अगिभू[7] छमा सकद।
रुद्रातमाज[8] विसाख मोररथ,
(गिरधर मोरमुगटागोविंद) ॥—२८८

मोर नाम

केकी वरही[9] विरह[10] कळापी,
कुसळापाग[11] पनग - सघार।
(मजर मोर चद्र सिर माधव,
सोभा सहत प्रपित सिणगार) ॥—२८९

(अ) [1] हरिन [2] मुगतीक [3] गृलिकारस-उदभव [4] ससिगोती [6] सगतभ्रम [9] विरहण [10] सुकळी-माग।

*[माहातेज कारतिक कुमार ब्रनचारि]।

(ब) [5] सेनी [7] यग-भू [8] रुद्र- आतमज।

(नाम) मयूर मेघनादानुळ[१] ,
(तवा) नीलकठ प्राणव्रस्टोक[२] ।
[सिहुड सिखा सिखी सिखडी]* ,
कुभ सारग रथ-कारतीक ।।—२९०

गरुड नाम

सुपरणेय[३] सुपरण[४] सालमली[५] ,
गरुतमान ग्रीधल गरुड[६] ।
सोव्रनतन खखपख[७] कासिपी[८] ,
पखपती पखी प्रगड ।।—२९१

तारख ग्ररुणावरज[९] वजरतुड ,
वनितासुत खग-ईसवर[१०] ।
इद्रजीत मत्रपूत ग्रातमा ,
चत्रभुज - वाहख भुजगमचर ।।—२९२

उतावलि (शीघ्र) नाम

(जव) उतामळ[११] झटत[१२] ग्रजसा ,
तुरह[१३] वाज[१४] ग्रहनाय[१५] तर ।
सीघ्र रभ मतुरण रस सहसा[१६] ,
सपत द्राक मखू प्रसर ।।—२९३

ग्रश्रु तुरीस ग्रविलवत ग्रातुर ,
(भणि)द्रुति (ग्ररु) खिप्र चपळ(भणो) ।
गरुडवेग (मन हूति सतगुणो ,
तिको गरुड - रथ किसन तणौ) ।।—२९४

पवन नाम

वायु वात गधवाह गधवह ,
स्वसन सदागति सपरसन ।

---

[१] मेघनादानळ [३] सुपरण [४] ग्रासुपुर [५] सलमली [७] खकपक [९] ग्ररणावरज
[११] उतावळ [१२] झटति [१३] तुरत [१४] वाय [१५] ग्रनाघतर [१६] सहेसा ।
*[सिहुड मिख्या वल सेख सिखडी] ।
[२] प्रविसक [६] गुरड [८] कास्यपी [१०] पखन्ईसवर ।

मारत मारुत समीर समीरण ,
जगत - प्राण आसुग जवन ।।—२६५

मेघवाहण पवनमान महाबळ ,
प्रापक अघभखण पवन ।
नील अनीळ अहिवलभ[1] सासनभ ,
जळरिप चचळ प्रभजन ।।—२६६

(सुत तिण तणौं हण ंत तिर सायर ,
करि निज स्याम तणी सिध काम ।
लका जाळि सीत सुधि लायौ ,
रळीयाईती कीधी श्री स्याम) ।।—२६७

मेघ नाम

पावस मुदर वळाहक पाळग ,
धाराधर (वळि) जळधारण ।
मेघ जळद जळवह जळमडळ[2] ,
घण जगजीवन घणाघण ।।—२६८

तडितवान तोईद[3] तनयतू ,
नीरद वरसण भरण-निवाण ।
अभ्र परजन नभराट आकासी ,
कामुक जळभुक महत किलाण ।।—२६६

(कोटि सघण सोभा तन कान्हड ,
स्याम त्रेभुअण स्याम सरीर ।
लोक माहि जम जोर न लागै ,
हाथि जोडि हरि समर हमीर) ।।—३००

वीजला नाम

चपळा ऐरावता[4] चचळा ,
खिणका सौदामणी खिनणी[5] ।

(अ) [2] जळमंडण [3] तोयसद, तोयद [4] यैरावती [5] खिमण ।
(व) [1] अहिलभ ।

सिमरिव[1] तडित[2] सतरिदा[3] सपा ,
मिणजळ बाळा-जळ-रमणि[4]* ॥—३०१

अकाळकी[5] रादनी[6] असनी
[विदुति छटा सुवीजळी बीज][†] ।
(वीज जोती पीतावर बीठळ ,
रूप सपेख करै सुर रीझ) ॥—३०२

अकास नाम

ख असमान अनत अतरिखि[7] ,
वोम गिगन नभ अभ विअद[8] ।
पवन-मेघ-पथ[‡] उडप सूरपथ ,
पुहकर[9] अवर[10] विसनपद ॥—३०३

तारा नाम

जोति धिस्म[11] ग्रह रिखभ ज्योतिख ,
तारा नखत तारका[12] तास ।
उडगन उड दीपक-हरी-आगळी ,
(इधक चगमगै ज्योति आकास) ॥—३०४

नाव नाम

वोहिति नाव वहतिक वेडो ,
जानपात्र जळतरड जेहाज ।
वहण पोत (भव महण लघावण ,
तरण उदय हरि नाम तराज) ॥—३०५

सख नाम

सख कबू वारिज सिसि-सहोवर[13] ,
रतनखोड[14] सावरत त्रिरेख ।

(अ) [2] तडिति [3] सतरदा [4] जळरमण *बाळा-जळ-रमणि=बाळा-जळ, जळ-रमणि । [5] आकासकी [6] राम्रग्दनी [7] अतरिखण [8] वियद, वयद [9] पोहकर [10] अमर [11] घिमन [12] तारकस [13] समहुवर [14] रतनखोडि [†]विधुत छटी बीजळी बीजा] [‡]पवन-मेघ-पथ=पवन-पथ, मेघ-पथ ।

(ब) [1] समरिव ।

(अनत तणौ आवध कर अतर,
विधि-विधि सोभा वर्णौ विसेख),

(अनत अछेह छेहन आवै,
तास कमण पावै विसतार।
साभळि अरथ पराक्रत सासित्रि,
अकळि प्रमाणै कियो उचार) ।।—३०७

(जाडेजा सूरजि रख जळवट,
भुज भूपति लखपति कुळ-भाण।
त्रय ग्रथ कीध अजाची तिण रै,
जोतिख पिंगळ नाम अब जाण) ।।—३०८

(जोइ अनेकारथ धनजय,
'माण-मजरी' 'हेमी' 'अमर'।
नाम तिका माहै निसरिया,
उवै भेळा भेळाया आखर) ।।—३०९

(अत जगदीस तणौ जस आणौ,
विवरण करि कहिया वयण।
चिति निति हेत सही चिंतवियौ,
रीझवियौ रुखमण-रमण) ।।—३१०

(समत छहोतरै सतर मे,
मतो ऊपनी 'हमीर' मन।
कीधी पूरी नाम-माळिका,
दीपमाळिका तेण दिन) ।।—३११

●

अवधान - माला

वारहठ उदयराम विरचित

अथ अवधान - माला लिख्यते

दूहा

सिव सकती वंदी सदा, रमापति दिन - रात ।
पूजै दिनकर गणपति, उकती बुध उदात ।।—१
जोड गीत छदा जुगत, जोडै नाम सुजाण ।
नाम - माळ त्रिविधा निपुण, पढ करि कठ प्रमाण ।।—२
नाम - माळ मुर नाम, जुगती अवधा धुर जाणी ।
अेक सवद घण अरथ, वरण दवि खड वखाणी ।।
वरण एक विसतार, कळा लग वार उकती ।
पद - पद अरथ अपार, सुकव तत सार सकती ।।
अनेक ग्रंथ सूझै अरथ, कव कविता कायव कहण ।
अव जाण गुण भारासुतन, महाराव देसळ महण ।।—३

दूहो

पात प्रथम अवधा पढौ, नाम - माळ जग नाम ।
देसळ गुण दरियाव ज्यू, समझै स्यामा - साम ।।—४

गणेस नाम

गणपत रगण गजानन गुणवरदान गणेस,
सिवबुधदायक बुधसदन हेंरब पुत्र - महेस ।—५
द्वैमातर लबोदर निधगुण गवरीनद,
एकरदन अग्रेसुरं सुडाळौ सुभकद ।—६
विघनराज विनायक परसीपाण प्रचड,
(रूपो मागै राजरी अघ्री सेव अखंड) ।—७

सारदा नाम

वांणी बुधदा ब्राहमी निधवाणी (नवनीत),
सुरमात्रा हमासणी सारदा सरसत ।—८
भाखा गो वच भारथी ब्रह्मसुता वरदात,
गिरा रगी धमळागिरी देवी वरदउदात ।—९

कसमीरी कसमीरसौ उजळ रूपउदार,
(मागै देसळ महीपति देवी वर दातार) ।।—१०

सदासिव नाम

सकर हर श्रीकठ सिव उग्र गगवर ईंस,
प्रमथाध्रप कैलासपत गिरजापती गिरीस ।—११

भव भूतेंस कपाळभ्रत उमयायष्ट ईंसान,
धूरजटी म्रड व्रखभधज मरवरित सुद्धांन ।—१२

म्भू त्रवक ससिखर सध्यापत समसार,
परम पिनाकी पसुपती त्रिलोचन त्रपरार ।—१३

वोमकेस वाहणव्रखभ नीलकठ गणनाथ,
क्रसानरेता डमरूकर सूलपाण सममाथ ।—१४

क्रतधती विखयतक्रत म्रत्यु जय महादेव,
गिरीस कपरदी परमगुर सिधेसुर जगसेव ।—१५

अष्टमूरती अज अकळ उरधलिंग अहिग्रीव,
कपरदोस खळव्रधर जगतेसुर जगजीव ।—१६

दहनमनोज क्रसानद्रग भसम जटेस भवेस,
विस्वनाथ रुद्र वामसर परभ्रत तपम महेस ।—१७

विरूपाक्ष दईतेंद्रवर क्रतधुंसी अधकार,
भीम मदासिव तम भवी दिगवासा दातार ।—१८

लोहितभाळ विसाळद्रग अजसुत खड अनत,
(सुख मुकतीदाता सदा भव मुर लोक भुजत) ।।—१९

गिरिजा नाम

श्री गिरजा सकती सती पारवती भवप्रांण,
हेमवती दुरगा हरा रुद्रांणी मुरराण ।—२०

भवा भवानी भैंरवी चचरच चामड,
मातगी श्रव मगळा अवा जोत - अखड ।—२१

सिवा सकरी ईसरी माहेसुरी सुमात,
कतियाणी काळी उमा देवी (वरद उदात) ।।—२२

अडा नितजमा मैनका दख्याणी वरदान ,
सखांणी सिंघवाहणी अपरण (र) ईसान ।—२३

(जगदवा आरूढ जस, उदाकरौ उचार ,
काळी गुण भुजियां करग , चढ़ै पदारथ च्यार) ।।२४

श्रीकृष्ण नाम

स्याम मनोहर श्रीपती माधव वाळमुकद ,
कु जविहारी हरि क्रसन् गिरधारी गोविंद ।—२५

मधुसूदन मधुवनमधुप चक्रपाण व्रजचद ,
व्रजभूखण वसीधरण नारायण नदनद ।—२६

दामोदर दईतेंद्रवर मरदनमेछ मुरार ,
अघवकादिहता अनत कैटभ अजित कसार ।—२७

पदमनाभ त्रैळोकपत धनसखादिकधार ,
देवादेव जनारदन व्रज - वैकु ठ - विहार ।—२८

विखकसेन यद्रावरज सखधार सारग ,
गिरधारी धारीगदा भूधर पदत्रभग ।—२९

विसभर करता विसनु वासदेव (विसेस) ,
जादवपत अरजुनसखा रिखीकेस राकेस ।—३०

पु डरीकाक्ष पुराणपख पुरुसोतम उपयद्र ,
जगवदण जगमूरती चद्रवस - को - चद ।—३१

कान अच्युत नरकातक्रत जळक्रीडा जगनाथ ,
राधावलभ सवरित सकरखण गोसाथ ।—३२

द्वारकेस सुतदेवकी गोपीपत गोपाळ ,
प्रभा स्याम पीतवर जादववस - उजाळ ।—३३

श्रीधर श्रीवक्षस्थल गुरडासण गजतार ,
धजाखगेस अधोखज विस्वरूप - विस्तार ।—३४

भूधरभारउतारभू भगतवछळ भगवत ,
भवतारण भवभयहरण कारण कमलाकत ।—३५

गोपपती प्रभु परमगुर सेखसाय अधसाय ,
व्रष्टरसवा व्रखाकप (श्रवत मुनद्र सहाय) ।—३६

अवरणासी नित अजर अज दीनानाथ दयाळ ,
वनमाळी विठलेसवर गोकळेस पतग्वाळ ।
मधुवनसिंधु महमहण स्याम मय्यसामद ,
वलभजयन रुकमणवरण केवल आनदकद ।—३८

मुरलीमनोहर मधुवनी नाथ जसोदानद ,
कृपासिंधु (कीजै कृपा) अकलेसुर व्रजयद ।।—३९

दधजा नाम

दधजा पदमा यदरा विसनप्रिया हरिवाम ,
रिधी-सिधी-दाता मार मा(नरहर)लिछमी(नाम) ।—४०

कमला भूजापत करम लोकमाता श्री लच्छ ,
हरदासी लई हरिप्रिया स्यामा सुखदा (सुछ) ।।—४१

सूरज नाम

सूरज सविता सहसकर उसनरसम आदीत ,
दसदिनेस दिनकर दिनद पिंगळ वयळ पुनीत ।—४२

मारतड दणीयर महर भासकर चित्रभाण ,
हस प्रभाकर तरणहर वीरोचन विवसाण ।—४३

पूखात्र ईतन ग्रहपती पदमणपती पतग ,
अरण दिवाकर अजनमा अहिकर तेज उतग ।—४४

प्रद्योतन रानळपती तपन तिगम तमरार ,
मित्र सुमत द्रुतमूरती सप्रस प्रश्रग-द्वार ।—४५

रव नभमणि पगविण रतन भग भगती भासान ,
क्रमसाखी तीखसक्रम जगचख धरमजिहान ।—४६

सूर सुमाळी सीतहर अहिपत अरक सूवैन ,
दोमिण द्वादसआतमा* तमवर तिमरखतैन ।—४७

जमाकरन सनिजमपितां† धात दिवाकर धीर ,
सोमधात सुरकरिययष्ट विसवक्रमा चक्रवीर ।—४८

---

* बारह आदित्य माने गये हैं, इसलिए सूर्य को द्वादस आतमा कहा गया है ।
† देखो टिपणी पृ० १५४ का फुट नोट ।

अगारक हिरळवत अहि पकजवधु प्रकास ,
तेज कस्यपस्यातमज नरसुरधरमनिवास ।—४६

चंद्रमा नाम

सोम सुधासूती ससी ससि सीतसु ससक ,
ससहर सारग सीतहर कळानिधि सकळक ।—५०

चद्र निसाकर चद्रमा दुज यद्रू दुजराज ,
कुमदवधु श्रीवधु (कहि) औखधीस उडराज ।—५१

विध हिमकर मधुकर विधी ग्लौ अगवाह अगक ,
सुभ्रकरण निसनेत्र (सुण) अम्रतमई मयक ।—५२

सुधारसम सिंधूसुवण रोहणधव राकेस ,
सिवभाळी सुखमादसद निगदरतन नखत्रेस ।—५३

(दखण) जुग पदमणपती (ज्यू) चक्रवाह-विजोग ,
कजारी अपध्यान (कहि) सुभरासी-ग्रहिजोग ।।—५४

(ऋनातट गोपीकिसन सरद निसा) राकेस ,
(रचै रासमडळ रमै विलसे हसे विसेस) ।।—५५

कामदेव नाम

मार समर विखमायुध पप - घनवा सरपच ,
पुखैक मनमथ रतपती श्रीनदन तनसाच ।—५६

घातवीज हर मकरधज मदन समर समरार ,
कुसमायुध कद्रप कळ अनग काम ईसार ।—५७

मधुर करिछय प्रदुमन मीनकेत (कहि) मैन* ,
तपनासी सकळ-आतमा कमन सिंगारक सेन ।—५८

लीलज द्रपक मनोज (लख) अखकेतु सुतब्रम
अतन मनोभव अगगथ पिंड्डुपिंड (अरु) प्रभ ।—५६

आतम-भू उखापती मयण चपळ रितमान ,
जुराधीस जरजीत (कही सुर-नर देत समान) ।।—६०

---

* मीनकेत कहि मैन=मीनकेत, केतमेन ।

इन्द्र नाम

वासव वज्री व्रतहा मघवा हर मघवान ,
सक्रदन सक्र सूरपती मरुतसखा म्रतवान :—६१

दिवसत गोसक सहसद्रग परजापती पुरद ,
व्रखी विडूजा विधश्रवा आखडळ सुरयद ।—६२

दतीधावक वारदद्रू जभारात जळेस ,
प्रथमीपोख जिगवासपत सूरपुरनाथ सुरेस ।—६३

सतक्रत नाकीसुर रिखव सचीस्याम मुक्राम ,
सुनासीर भौजीसुधा उरधपिंड अभ्रस्याम ।—६४

(नाम) पाकसासन निधू पूरवपत प्राचीन ,
गोत्रभेदी पुरहूगण यद्र जळधआधीन ।—६५

अमवाहण रभापती व्यू वर क्रतत्रुखार ,
वभयद्री उग्रधन जिसुन पळमत्रखा दिवराट ।—६६

तुराखाट त्रदसाविभू पाराजातपत (पाट) ।—६७

(नाम) रिभूर्का महान्रप दसवन वन - दरसाव ,
सघणवाह उचीश्रवा वरही (नाम वताव) ।।—६८

कलपव्रछ नाम

सुरतर हरचनण (अवत) अवदायक सतान ,
तयद्रुम द्रुमपत कलपतर ददगअखैनिधदान ।—६९

अगसुखदा मुरसपती पारजात पत्रीस ,
(अवत) कामधेनू (सदा) जिसनु (व्रवै जगदीस) ।—७०

वज्र नाम

वज्र कुलिस यद्रावर्ध दधीचास्थी दनुपाळ ,
गोत्रभदी खयपत्रगिर सत्रकौटी खळसाल ।—७१

सोरह सिंभूनादनी मिदरसत दभोळ ,
जोतसुभ्र पुरहूतजय अदभुत-ससत्र-अतोळ ।।—७२

सरग नाम

अमरापुर अमरावती उरधलोक द्रिविअोक ,
सुरआलय त्रिदसासदन सरग नाक सुरलोक ।—७३

गऊ ग्यानसत उरधगत धरमफूल सुखधाम,
त्रदन त्रिनिष्टपथान (तव) विवधिस्याम-विश्राम ।।—७४

अपछरा नाम

अछर सुकेसी उरवसी परी घ्रताची (पथ),
मजूघोषा रभ मैनका त्रिलोचना निरतत ।।—७५

गध्रव नाम

गध्रव किनर सुरगण हाहा हूहू (हास),
अमर (परसपर) आदतिया विद्यावरा (विलास) ।। | ७६

इद्राणी, पुरी, गुर, नदी नाम

सची पुलमजा सक्रप्रिया यद्राणी अरधग,
यद्रपुरी अमरावती गुरु व्रहस्पत जळ-गग ।।—७७

छभा, सेना, घोडा, स्वारथी, हाथी, ददभी नाम

सुमत सुधरमा सेनसुर (वळ) उचैश्रववाज,
सुधरमा तुळ स्वारथी गज-अभ्र ददभ (गाज) ।।—७८

वन, रिखदरवान, वैद, विभुता, वाहण नाम

नदनवन नारदरिखी (देवनदी) दरवाण,
वैदक अस्नीकुमार विध विभुता वाहं विवाण ।।—७९

इद्र के पुत्र ग्रहमुख, सिलावटा, माया नाम

पुत्र-जयत प्रसाद गृहआनन अगन (अनूप),
सिलपी विसवक्रमा (सदा) रसघण माया (रूप) ।।—८०

रिख नाम

तपसी तापस उग्रतप मुनी मुनेस मुनद,
सुक्रती समदम सजमी उरध्यानी आनद ।।—८१
रिखीराज रिखव्र दरिख रिख रिखेस रिखराज,
काननचारी सतक्रती जपीतपी जगराज ।।—८२

---

* अमर-कोष मे देवताओ की जातियें मानी गई हैं जिनमे विद्याधर और गधर्व दो भिन्न जातियें हैं।

छनीछर नाम

क्रस्न रुद्र जम कोणस्त सनी छनीछर मद,
पिंगळ वभ्रु पिपळा अंतक सवरी - मुनद ।।—८३

सुद्रसणचक्र नाम

कुंडलीक सधारकर वज्रविसन तरवक्र,
सारज परछयजार सुरचक्र सुद्रसणचक्र ।।—८४

कुमेर नाम

राजराज मनखाधरम अलकापत उतरेस,
श्रीदत सिवसिख वैश्रवण निधपत धनद धनेस ।—८५
सक्रकोस कैलासपत किनरपती कुमेर,
अछयासपत एकपग जखराज जखन्वेर ।—८६
पुरखाश्रय गध्रवपति गौह् गौहकेसर (ग्यान),
(वल) नरवाहण एलवळ धनुद जजेसर (ध्यान) ।।—८७

जम नांम

भव अघडंडी डंडभ्रत धिष्टडड ध्रमराज,
विखभद्युज जम सक्ती जमनभ्रात जमराज ।—८८
सउरी रवसुत सतक्रमी अंतक अतकर अत,
साधदेव धरमी सुहृद्र काळ अतत क्रतत ।—८९
प्रेतराट हर प्राणहर सदर जमपुरस्यांम,
सीरण कममिस्यण (सदा नीति विचखण नाम) ।।—९०

दईत नाम

सुरदोखा दाणव असुर दनु दईतद्र अदेव,
अमराभुज त्रदसाअरी दतीसुत पूरवदेण ।—९१
सुरघाती वळ सुक्रसिख मेछ अप्रवळ (मड),
जवन (हिरणाकस्यप जिसा प्रथमी साल प्रचड) ।।—९२

राकस नाम

नईरत तमचर निसचरा जात्रधान खळ (जाण),
असुरा सुरद्रोही (उचा रामणादि रढराण) ।।—९३

रामचद्रजी नांम

दासरथी लकादती सियापती कपसाथ,
रामचद्र रुघवसरव (नाम) राम रुघनाथ ।—९४

कटकारी काकुस्थकुळ भरथाग्रज रुघभूप,
घणनामी (दुत स्यामघण सवता कोटी सरूप) ।।—९५

सीता नाम

महिजा सीता मैथली सती वामधणस्त्राम,
कुळवैदही जवकजा (रति कोटी अभिराम) ।।—९६

हडूमान नाम

मारुत हडमत राममन वज्रकटक वजरग,
लकदाह श्रीरामलय (राम भीड जय रग) ।।—९७

लछमण नाम

रामानुज रुघवसमिण बाळजती रुघवीर,
सुतदसरथ सुमत्रसुत लछमण लछ सधीर ।।—९८

रामण नाम

कटक खळ लकापती सुरद्रोही खळसाळ,
भूडवर पतमदोदरी (अर) कैलासउथाळ ।—९९
दहकन्धर दससीस (दिठ) वीसभुजा (वळवान),
रमाचोर (रामण रुळै दळवळ व्रथा निदान) ।।—१००

गगा नाम

जगपावन जाहरनवी गगा सुरसुरी गग,
देवनदी मदाकनी ईससीस अरधग ।—१०१
पापमोचन नदसुरपत्ती त्रपथा सेततरग,
सरगतरगण सुरनदी अघमोचन गतअग ।—१०२
मरतिवरा जटसंकरी हेमवती हरवाम,
खितग खापगा मोखदा (नित भागीरथ नाम) ।।—१०३

जमना नाम

जमभगनी कृष्णा जमा जमना रवजा (जाण,
कृष्णा तट की श्रकृष्ण विवध रास वाखांण) ।।—१०४

बुधी नाम

मेधा बुध धी अकल मत प्रग्यन सुध प्रबोध,
मिनखा धिखण धुन समझ (आश्रम जाण सबोध) ॥—१०५

दरियाव नाम

दध सागर सायर उदध गौडीरव गभीर,
रतनागर उदभवरतन अतर अथग अतीर ॥—१०६
जळरासी जळपत जळध सरसवान सांमद,
वारुध अवध वारनिध वेला-सवता-चद ।—१०७
अकूपार अरणव (अखै) महण मथण महराण,
पारावार मछपळ रैणयर जळराण ।—१०८
पदमापित पदमालय उदनमत दरियाव,
हदनीरोअर अवहर लहरीरव जळधाव ॥—१०९

नदी नाम

तटणी सरन तरगणी धुर्नी श्रोत जळधार,
नदी आपगा निमनगा वाह भूमविहार ।—११०
जळमाळा जंवाळणी (ळोता जग सतोख),
शुनी श्रृवती भवसुखा परवतजा तरपोख ।—१११
परवाहपय नद प्रसद नीझरणी वरनीर,
कुल्यकका सिंघकुल्या दीपवती दकसीर ।—११२
सरज्यु गंगा सरसुती जमना सफरा (जोय),
गया नरवदा गोमती तापी गिलका (तोय) ।—११३
भीम चद्रभागा (भुजौ) सिंधु अरक (सुनीर),
कावेरी काळीनदी साव्रती पयसीर ।—११४
(ज्या नदिया मजन करै धरै सदा हर ध्यान,
उर निरोध हर आसरै विसरै नह व्रहम ग्यान) ॥—११५

सपतपुरी नाम

माया मुथरा द्वारका अजुध्या (र) उजीण,
कासी कांची (मुकनदा पढ) दधपुरी (प्रवीण) ॥—११६

नव ग्रह नाम

रव सस मगळ (रटी) सुरसुर सक (सणाय),
सनी राह केतु (सदा नव ग्रह पूजो न्याय) ।।—११७

वन नाम

अटवी कानन वन अरण विपन गहन व्रिखवात,
रन कतारक झक दुरग खड कखत्रा रिख ख्यात ।।—११८

व्रिख नाम

व्रख सिखरी साखी विटप द्रुम खितरुह कळदात,
दरखत तर अदभुज सदळ पत्री द्रुम घणपात ।—११६

फळग्राही कुसमद फळी निंद्यावरत निनग,
कार सकर महिसुत कळी अग्री कूट असग ।—१२०

अद्री अध्रप ओकखग रूपक राळक (रीत),
झाड (अनोखह झुडमैं प्रीति राखै प्रीत) ।।—१२१

फूल नाम

पुसप सुगधक फळपिता कुसम प्रसून कलार,
रगत फूल सिघक घरम सुमन सून द्रुमसार ।—१२२

लताग्रत उदगम हलक सुभम सुना सुररग,
(चामडा पकज (चरण सुकवी मन सारग) ।—१२३

कुसवावळ चपाकळी गोटाजाय गुलाव,
कणी केवडा केतकी जुही हवास जवाव ।—१२४

मैंदी कणियर मोगरा निधनलियर गुळमड,
रायवेल रतनावली परी गुढेर (प्रचड) ।—१२५

करणफूल गोरखकळी जवक जाफरा (जाण),
ममद सोख गुल सेवती अरक हजारी (आण) ।—१२६

मुखमल खैरी मालती लजाळूर जटियाळ,
कज फिरग कमोदनी रतनमालती साल ।—१२७

दाडम नेजा दावदी (विवध फूल वरसाळ,
डवरिया खटरित डमर सीत उसन वरसाळ) ।।—१२८

सुरव्रख नाम

सुरतर गोरक सिंसपा देवदार मदार,
सिवाद्रळद केसर सुभग वट पीपळ (विसतार)।—१२६
आंबा चपा आंवली निगड नींब नाळेर,
फरणस विजौरा जामफल क्रष्णा साग करीर।। १३०
नींबू दाडम नारगी सीताफळ सहतूत,
काठ ठींवरु कदळी (यळ) अनास (अदभूत)।—१३१
वेलीदाखा पेमदी खारक ताड़ खिजूर,
(केता मेवा हरकिया हर हाजरी हजूर)।।—१३२

भमर नाम

मधुकर भकारी मधुप सोरभ भमर सारंग,
कसमलप्रिय भोगीकुसम भवर सिलीमुख भ्रंग।—१३३
मधुग्राहक मधुतरतमद चचरीक रोलंव,
कलालीक खटपद ऋसन अळियळ धूम-आलम।—१३४
दळ दुरेफ हरयंदुदर कुसमावळी मकरद,
ग्रहणगध अघाणगुण अघवाचर (आनद)।।—१३५

वदर नाम

कीस हरी वनउक कप पलवगम पलवग,
मरकट वदर वलीमुख सौसाखा सारग।—१३६
साखीवर वनचर (सदा) गो लगूळ (गणाय,
लका वाळी लागड़ै सीताराम सहाय)।।—१३७

म्रग नाम

हर वातायू म्रग हिरण सिघ्रधाव सारग,
अेण प्रख तरक्ष सुगधउर काननभखी कुरग।।—१३८

सूर नाम

सूर कौड लागड असत्र अेकल दातडियाळ,
घोणा घसटी परजघण दुगमी गिड दाढाळ।—१३९
भूविदार सूकर भयद वधगेमा वाराह,
कोळ डारपत कदचर सिरोरमा दलसाह।—१४०

(चवा) आखणक वाडचर दसटरीर भूदार,
थूळीनास दुदीथटा (वन गिरवरां विहार) ।।—१४१

सिंघ नाम

सिंघ वाघ केहर सरव कठीरव कठीर,
अष्टापद गजराजअर सेर अभग सधीर ।—१४२
पचायण हर वनपती पचानन पारद,
सूरसेत पिंग पचसिख अगमारण अगयद ।—१४३
मग नखीयुध अगमरद जीव जञ्र हरजक्ष,
सारदूळ नाहर सगह भिक्षणेस पळभक्ष । | १४४
महानाद जगी मयद नखी भूय नहराळ,
छटाघाव मजारछळ वाघ मयद विकराळ ।।—१४५

हंस नाम

सुगत हस धीरठ सुचळ मुगताभखी मराळ,
मानसूक चक्राम (मुण) अग लीलग उजाळ—१४६
रूपौ ग्यानी कवररस प्राणनाम परकास,
महतगुणा रिखमडळी जुऔ हस उजास ।।—१४७

सिंघजात नाम

वाबरैल बाजूपुरी सौनेरी सादूळ,
(और) केसर ऊठिया मिश्र पटैत (समूळ) ।।—१४८

हस्ती नाम

सिंधुर मदझर सिंघळी मैंगळ हर मदस्त,
द्विप दती मदझर दुरद हाथी हस्ती हस्त ।—१४९
कुजर गैमर पौहकरी व्यारण कुंभी व्याळ,
गय मातग मतगजा स्वामज गज सूडाळ ।—१५०
यभू धंधीगर तरअरी पटहथ नाग प्रचड,
भद्रजाती सारग मयद वैरक कब् वयड ।—१५१
गयद अनेकप ग्राहग्रहै (की) गजराज (पुकार,
धायै हर धखपख तज आया चक्र उधार) ।।—१५२

ऊट नाम

करहो ऊट सरढो करभ पांगळ जूंग सुपथ,
तोड जमाद दुरततक गय जाखोडो (ग्रथ) ॥—१५३

जमी नाम

थिरा रतनगरभा थिती धरणी धरा सधीर,
पहि पुहमी प्रथमी प्रथी सवरसहा जळसीर।—१५४

अवन चळा अचळा यळा भू भूमी धर भोम,
मही कुभनी मेदनी गऊगोत्रा यळ गोम।—१५५

वसूमतो धात्री गहवरा वसुधा तरविसतार,
रेणा खित धरती रसा समदमेखळा सार।—१५६

सागरनेमी रसवती विपळा विसव विख्यात,
जगती जगमनमोहणी खोणी खम्याख्यात।१५७

दुगधा खडी दीपदध मोहा उरवी मार,
कुळटा भारी कन्यका अनतापती अपार।—१५८

यळा इळा (नाम दे आदमै विधकर जुगतविवेक),
धर रुहपत (यत्पादिधर उकती नाम अनेक) ॥—१५९

पीपल् नाम

वोधीव्रख पीपळ सुव्रख चळदळ कुजरचार,
असवन श्रीव्रख (आप सम यो श्रीक्रमन उचार) ॥—१६०

बड़ नम

वट निग्रीध साखीव्रसी वडसाखी विसतार,
वैश्रवणालय धूजटी रतफळ (रुद्र उचार) ॥—१६१

वसो नाम

वैण वस जवफळ वळै त्रणधज मसकर (तास),
पौहमीवदण मतपरभ तुचीसार विसतार ॥—१६२

हरड़ै नाम

सुरभी सरवारी सिवा प्रभता अभिया-पोख,
हरडै जया हरितकी सुखदा प्राणसतोख।—१६३

प्रमथा चेतकी प्राणदा कायस्थ गदकाळ,
हेमवती हिमजा हरा परजीवती (पाळ)।—१६४

(कहि) अम्रत काकाळका श्रेय प्रेहसी (सार),
राम तुरजका पूतना अभया (नांम उचार)।।—१६५

केसर नाम

कसमीरज मगळकरण केसर कुकुमकाय,
वाहलीकजा गुडवरण वहनीसिखा (वताय)।—१६६

पीतरगत सकज पुसन लोहितचनण (लेख),
धरकाळेय सुगधधर देववल्लभा (देख)।।—१६७

चनण नाम

सीतरूख रूंखासिरै सोरभ-मूळ सुनग,
गधसार मळियागरी (सेत अरुणआद सग)।—१६८

सुरभी रोहण तरसुतर अहिप्रिय गधअपार,
सरीपाळ वल्लवसिवा श्रीखड चनण सार।।—१६९

पहाड नाम

अद्री गिर भूधर अचळ साननाम पतसार,
भाखर डुगर दरीभ्रत शृगी धात सुधार।—१७०

यष्टकुटी परवत अनड त्रकुकुत मरुत अतोल,
सिलोचय सिखरी सघण आहारज्र अडोल।—१७१

गोत्रगाव गिरपत गिरद धरनग धरधर धार,
(गिरधारी गिरधर धरै व्रखी कोप जिण वार)।।—१७२

पाखाण नाम

ग्राव धात गिर वदगण पाथर घण पाखाण,
उपळ सिला पाहण असप (नाम दिखद निरवाण)।।—१७३

कचन नाम

भूर असटपद अरभरम धातोप कळधोत,
कुनण हेम कचण कनक क चामीकर ओत।—१७४

हाटक लोहतम हिरन सोव्रन धातासार,
करवुर वसू भूतम रुकम अगनी (कीजउचार) ।—१७५
जाबूनद गैरक रजत सातकुंभ (अर) साळ,
गारु क तपनीय (गुण) पीतरग दुखपाळ ॥—१७६

तामा नाम

मरकट आस मलेछमुख धरज उदसर धृष्ट,
सावर व्रम वरधन सुरख तावो सुलव वरष्ट ।—१७७
रगत (नाम) कनियरसौ तावैं (त्रूटी तोल)[१],
(ज्यु कुनण ह्वैं जगत मे विरद हरि गुण वोल) ॥—१७८

रूपा नाम

जातरूप रूपौ रजत हेमसू हस तार,
दुरवरणक खरजूर द्रव सित कळधोत (सुधार) ॥—१७९

लोह नाम

कृष्णमुख आयुस सकसस्र सस्यगी अय सार,
घणकीळा यसुखाणधर सिलामार गिरसार ।—१८०
परवतसुत तरजणप्रथी रनक पारसवरोह,
तिक्षण रिणभिक्षण (तितै छटा रूप भड छोह) ॥—१८१

देस नाम

मडळ जनपदनी मुलक देस विदेश (दिगत),
विसख राष्ट उपवरतनी व्रत जनाद हदवत ॥—१८२

नगर नाम

निगम सैर नगरी नगर अदष्टाण आथाण,
पुटभेदण पट्टण पुरी पुर त्रपवास (प्रमाण) ।—१८३
पुरदर निवेसण पळप्रभा सपतपुरी सुखधाम,
(नटणी ज्यू मुगती नचै सदा वास सुर स्याम) ॥—१८४

तलव नाम

पदमाकर कासर पयद ताग तडाग तळाव,
कधर सरवर पोहकरण सरसी धरमसुभाव ।—१८५

नाडा जोडा नाडिया नीरनिवास निवारण,
पौहकर (नारण) सर (प्रभा मुगत रूप मडांप) ।।— १८६

अब नाम

अंब कुलीन सदक उदक जगजीवन जळवार,
(अर) पाथ पय विख अम्रत घणरस घणअप धार ।—१८७

सवर क पौहर सलिल पाणी पाणद पाथ,
मेघपुसप सरग्रह कमळ नीर खीर (पत नाथ ।—१८८

प्रवतक पीठ निवास पथ तोप अथर तर तात,
जाद निवास कवध जप वमुधा घोख विख्यात) ।।—१८६

पुडरीक नाम

पुडरीक पचन पदम सहसपत्र सतपत्र,
जळरुत जळरुह जळजनम जळज कुज जळछत्र ।—१६०

नळणी वारज कोकनद वसूप्रसूत अख्यद,
कुमलय मरसीरह कमल सरजनमा सरनंद ।—१६१

पितावरच्च महोतपल नीरज अवुज (नाम),
पके रौहनाळीज (पढ) पुहकर मैण (प्रणाम) ।—१६२

राजीव सरोज तामरस सुसार सख दड,
(नाम) कुसेसय हरनयण (प्रभा प्रकास प्रचड) ।।—१६३

मछ नाम

सफरी झख सवर सफर मछली सलकी मीन,
चचळ वारज वारचर प्रथरोमा पाठीन ।—१६४

जाद सकळ खय मकर (जप) अडज जळआधार,
कुसली अनमिख (नाम कही) वैसारण ग्रहवार ।—१६५

मछ आतमासी (मुणौ) वळखड खीणविसार,
(नांम) अलूकी पयनिरत सिघचीरी सुकसार ।।—१६६

कमठ नाम

गुपतअग पाचूप्रगट कूरम कमठ कलास,
(पण) जीवनद उक्रोडपग (वार हुलास विलास) ।।—१६७

देवल् नाम

देवळ देवालय दुरस सुरमडप प्रासाद,
द्रुमग्रह धजधर धामहर नितक्रत थानअनाद ।।—१९८

धजा नाम

केत धजा धज कदळी सतक्रत चहन (सुणाय),
वईजपती पुनवती (दरस) पताका (दाय) ।।—१९९

गढ़ नाम

गढ दुरग भुरजाळगही किलौ अगजी कोट,
परदसाल प्राकार (पढ चव) वप्रवरण अचोट ।।—२००

छड़ीदार नाम

द्वारपाळ दरवान दर हुसियारक प्रतहार,
दरवारी दडी दुरत छडीदार छकसार ।।—२०१

घर नम

ग्रेह ओक आराम ग्रहि निलय निवास निकेत,
नरण वास वेसम सुग्रही सदन भवन सकेत ।—२०२

मिंदर आलय माळया धमळ सोध घर धाम,
पदआश्रय निजआसपद वस्ती पुर विश्राम ।—२०३

रहण सुथानक धिसनु रुच आश्रय वसी आगार,
(वरणाम निरभय वसै तिकै सरण करतार) ।।—२०४

राजा नाम

नृपत नाथ नरनाथ न्रप नरपत भूप नरद,
धरपत भूभ्रत धरमधुज राजा प्रभू रजंद ।—२०५

प्रथीनाथ पौह पाटपत राव राट राजान,
परब्रढ स्यामी पारथव अरज ईस ईसान ।—२०६

अध भूभरता ईसवर ईसप अधप प्रजाप,
नरेन नेती नाह नरपळ लोकस अधाय ।।—२०७

जुजठल नाम

(सुज) सिल्लार अजातसत्र भरतान वयअभीत,
कउतेय अजमीढ कक पडवतिलक पुनीत ।—२०८

सोमवस, हस्तपुरपत* जुद्धस्थिर कुरजीत,
सतवाची जुजटळ (सदा किसन क्रीत सू प्रीत) ।।—२०९

जिग नाम

मनु समतन तत्र सप्तमुख सतक्रत ज्याग सनोय,
जिग धूरज अधवर जिगन (हद वितान घर) होम ।।—२१०

भीम नाम

भीम व्रकोदर वहुभखी गजवध सघणगाज,
कीचकार गजेकरु सत्राजीत (समाज) ।—२११

जुरासधखय गजभ्रमी बळी गदावळवान,
गधवाहसुत अगमगम अकवानद अमान ।।—२१२

अरजुण नाम

कपीधाय रिपकैरवा धनुजय सरधनुधार,
यद्रजीत अगनीसखा दानीरिप दैतार ।।—२१३

सबदवेध अरजुन जिसुन पंडवमध पाराथ,
पाथ किरीटी पडसुत हरीसखा जयहाथ ।—२१४

काळमूक वैंधीकरण सरअजीत सक्रनद,
सवसाची वीभव सुभट वहनट सगतिविलद।—२१५

महासूर नर कारमुख सूनर माक व्रखसोन,
गुडाकेस कलि फालगुन सेतअसनयसेन ।—२१६

सुभ्रदेस जयकरणसत्र राधावेधी (रग),
(सखा रूप श्रीकृष्ण रै सदा) धनजय (सग) ।।—२१७

पाताल नाम

वडवामुख थानकवळ प्रिथमीतळ पाताळ,
पनगलोक अधलोक (पढ) दनुपत (थाप दयाळ) ।।—२१८

---

* सोमवसपत=हस्तपुरपत ।

सरप नाम

आसीविख विखधर उरग भुजग भुजग भुयग,
सरप भुजगम अहि सिरी नाग दुजीह पनग ।—२१९

प्रदाक कुभी गूढपद काकोदर ऋतकाळ,
फकारी चक्री फणी वक्रगति (कहि) व्याल ।—२२०

चीळ कचकी चखश्रवा गरळस भोगी (ग्यान),
ददसूक दीरघपिष्ट जिह्वग जैहरी (ज्यान) ।—२२१

लेलहान बिलेसरी (ओरे) कु डळी (आण),
नसदरवी पवनासनी (ज्यू) धैंधीगर (जाण) ।—२२२

(काळी ध्रह काळी नथै ऋसना तीर ऋसन,
कालद्री निरविख करी श्रीजसवती सुतन) ।।—२२३

सेस नाम

सहसफणी चखधूसहस जिह्वादोयहजार,
सेस अनत खगेंसअर धरैंहारजटधार ।—२२४
भुयगेस भूभारधर वणआलुकविसतार,
कु डळ (एक) अहीस (कर करै तलप करतार) ।।—२२५

रज नाम

धूळ रजी रज धूसळी सिकता वेळू सद,
खेह पास (वलै) रेत खग रैंण सरकरा (व्र द) ।—२२६
सूतधर चर पतरुहसुता वसुधासिरविसतार,
(पत गैह धर जदनी पर उपजै नाम अपार) ।।—२२७

धनुख नाम

धनुख सरासण चाप धुन करण अस्त्र कोमड,
सकर आसय इषुआससिध प्रहा पिनाक (प्रचड) ।।—२२८

सायक नाम

सायक पत्री अदर सर विसिख सिलीमुख वाण,
ग्रीधपख यपु मारगण ककपत्र करपाण ।—२२९

खुर पपरी नाराज खग तिक्षण रोपण तीर,
कणक लव चित्रपूख (कहि) तोमर वसीतुनीर।—२३०
सस्त्रअज मघवळ असत्र पत्रवाह पारद,
(प्रखत करोप अगजपथ सरविद्या सामद)।।—२३१

सरजात नाम

नावक (कर) पावक नखी चावक चपळा (चग),
कटी (छिद्र) कळदरी खपरी परी (खतग)।—२३२
त्रुका त्रधार कटार (तव) चद्रकार चौधार,
अठास छिद्री आकडा किलकी (जंगीकार)।—२३३
(लेसग) जखाळी त्रुका (बाण) गिलोला (वध),
चुगा फील (पग चपणा नाम विदाम निमध)।।—२३४

करन 'नाम

रवसुत चपाधप करन सूतपाळ अरसाळ,
अगराज राधातनय नेमप्रात दनचाल।।—२३५

दातार नाम

मौजी त्याग मोटमस उदभट प्रगट उदार,
महातमा सुदता मुदन दानअयन दातार।—२३६
द्रवउभेळ दानेसरी (ओर) उदीरण (आण,
कहि महेम दाता करण वरतन प्रात वाखाण)।—२३७
विलसण तद बगसण व्रवण समपण मौज सुदात,
रीझ विहायत विसरजण वितरणदान (विख्यात)।—२३८
प्रतपायण निरवयण (पढ तवा) उछरजणत्याग,
विसरायण उदक (वळै भूप व्रवै वड भाग)।।—२३९

याचक नाम

ईहग जाचक आसकर रेणव दूथी (राह),
मनरख मागण मारगण अरथी भिखग अचाह।—२४०
लोभी नीपक लेणरित दवागीर (दिनरात),
जाचक (माग दसूत जिण वदीजण विख्यात)।।—२४१

कव नाम

कोविद पिंडत कव सुकव मेधादध धीमान,
दोखविधूसी खुणविदुख विद्याधर विदवान ।—२४२

चतुर निपुण विचखण सुचत (प्रापत रूप) सुपात,
प्रायग्न विध गिद विपसचित वेता धीर विख्यात ।—२४३

सुबधी गिन ग्याता सुधी आचारण अभभूत,
सुरक्रसट क्रत लवधसुण सम्रतीयद (रूप) ।—२४४

सुलखण मेधी वरनसन विवधा (जाण) प्रवीण,
गुणी मनीखी वागमी लोभीगुणरसलीण ।—२४५

(कुसळ विसार धक वद कवि कवराजा कवराज,
नायक मन निध पारखद काव्य कवेसर काज) ।।—२४६

जस नाम

सुसवद कीरत सुजस जस वरण ववयण वखाण,
साधवाध असतूत प्रसध (पढ) सोभाग (प्रमाण) ।—२४७

वरद विसेख गुणावळी कीरत ख्यात सुकाज,
(सुनत) सुपारस (समगिना जदा हरण जय ज्याज ।—२४८

लिसद प्रताप सलोक यळ रट रूपग रुधनाथ,
सोभा खीरसमद सी गुण जस ऊजळ गाथ) ।।—२४९

जूझार नाम

सूर वीर विक्रम सुभट (कळ) जूझार सुक्रीत,
तेजस्वी अहकारतन (पढ) विक्रमात (पुनीत) ।।—२५०

तरवार नाम

असमर खाडो खडग असि किरमर विजड क्रपाण,
चद्रहास वाणास (चव) कग्ठालग केवाण ।—२५१

जडळग धारुजळ दुजड मडलाग किरमाळ,
रूक सार तरवार खग तिजड जीतरिणताल ।—२५२

लोह धात धजवड लपट काखैयक खळकाळ,
निसतेयम आभानरा प्रभावक (भूपाळ) ।।—२५३

घोडा नाम

हर हेमर वेंगाल हय वाजी खेंग विडग,
रेवत गाजी गघरव ताजी तुरी तुरग ।—२५४

अस धूरज सिंधव असप वाह तुरगम वाज,
चचळ तारख भिडज (चव रच) पवग धजराज ।—२५५

कव वीती (धजराज कही) अरवा सपती (आण),
तेज सजीव वितंड तन कह्या नांम) केकाण ॥—२५६

द्रोपदी नाम

द्रोपदजा (कहि) द्रोपदी जग्यासेनी (जाण),
पंचाळी पंडवप्रिया (वेर) वेदजा (वखांण) ।—२५७

सरअगना ऋसना सती वेदवती सिखवान,
(पोखण सोखण द्रोपदी देवी रूप निदान) ॥—२५८

सत्रू नाम

हाणक दोखी वैरहर वैधी अरी विपख,
सत्र सपतन सात्रव सत्रु केवी अहित कुरख ।—२५९

दुखदायक दुनड दुयण असहण प्रसण अभीत,
विघनकरण अणवछकी अमभाती अवजीत ।—२६०

पथकपथक, प्रतपखी दुष्ट विरोधी (दाख),
खेघी दसू अमत्र खळ रिम घेखी रिप (राख) ।—२६१

दुरहित विडघातू दुरी अरद घातक (आट),
दुरत दुसंह दुसमण दुखी विखम कुवादीवाट ॥—२६२

सेन्या नाम

प्रतना सेन प्रताकनी खूर कटक खधार,
वीरथाट दळ वाहनी अनी कनी कळियार ।—२६३

चक्र तत चतुरगणी घोढाघटा घडूस,
रेणाविखमी आहरट धराविघूसण अरघूस ।—२६४

विखम वादवी वाहणी गरट फौज गैतूळ,
सकदवार अरसाधनी मौगर घड़ कडमूळ ।—२६५

चकर सकळ धजनी चमू घासाहार घमसारण,
थटहय थाट वरूथनी खरहडभड सुरसाण ।—२६६

साथ समूह सबधंनी गरट दमगळ गोळ,
(गजण रामण लक गढ चढै रांम चखचोळ) ।।—२६७

जुध नाम

सजुग भारथ जुध समर समहर दुद समीक,
कळह आसकदन कदन अभ्यामरद अनीक ।—२६८

प्रहरण आयुधन प्रधुन तेगझाट रिणताळ,
जग जुध कळ जन्यवत वाड राड विकराळ ।—२६९

मधू समरद सग्राम (मुण) सप्रहार सखात,
कळि आजी ससफोट (कहि) प्ररहा वेढ प्रघात—२७०

महाहव्य रिणसाल (मुख) सपरापक खळसाळ,
सारझकोळा सपसुज प्राणदान अरपाळ ।।—२७१

मनुख नाम

म्रतलोकी मानव मनुख धव नर कायाधार,
देहतती (जग) आदमी सुग्यानी तनसार ।—२७२

पुरख (गोद) पचीक्रनी (नाम मान) गुणनीत,
मनुज (देह भुज मुगत कै पूरण राम प्रतीत) ।।—२७३

जनम नाम

जनम उपजण जनुख जण उपत भव अवतार,
सञ्रत उदभव जगअजत (करै पाळ करतार) ।।—२७४

बाप नाम

पित प्रपिता सविता पिता बीजाकारण बाप,
तात जनयता जनक (तव) वितदाता (विख्यात) ।।—२७५

माता नाम

अवा जणणी सवयती सवती मात (नसार),
कूखधारण रछाकरण माता (गुण मदार) ।।—२७६

बालक नाम

अरभं पुत्र वाळक असुध सिसु लघुवेस कुमार,
पाक प्रथुक अपकठ (पढि नाम) वाळ (निरधार) ।—२७७

डिमतनु थप डमरू साव पोत ततसार,
सुंदर ललत उतान सहि कोमळ नंदकुमार) ।।—२७८

भाई नाम

सगरव हित सोदर सह भाई वधव भ्रात,
समानोदरज वीर (सिव वल) मोदरज (विख्यात) ।।—२७९

वड़ा भाई नाम

जेठी पित्र पूरवज अग्रज मोटा अग्रम (मांन) ।।—२८०

छोटा भाई नाम

कनसट जवमट अवरकज अनुज लवू कनियान ।।—२८१

पद नाम

कदम ओयण पग गवण क्रम विचरण पद गतवत,
चलण पाव अघ्री चरण पय (परक्रमा पुरत) ।।—२८२

कडि नाम

कड कटीर तनमध कटी कळनलक कट (कीव) ।।—२८३

पेट नाम

पेट कूख तूदी (पढौ) उदर गरभ (भव दीध) ।।—२८४

पयोधर नाम

उरज कुच स्तन पयधरा उरदुत उरज उरग ।।—२८५

हाथ नाम

हाच आच कर भुज हसत पाचू साख (प्रसग),
करग जुधजयदौर कर पाण वाह (परचड) ।।—२८६

आगली नाम

(यो) करसाखा अगुळी (खळ दल सार विखड) ।।—२८७

नख नाम

भुजकट नख पुनरभव नखर पुनरनव (नाम),
करज नखी करसूक (कहि) विखदाती (वेकांम) ।।—२८८

रोमावली नांम

रोम पसम गो तनरुह लोम वख सथळ (लेख) ।।—२८९

ग्रीवा नाम

ग्रीवा गावड कध गळो सिस्सथम (सपेख) ।।—२९०

मुख नाम

वकत्र तुंड वोलण वदन रसनाग्रह सुररास,
आस लपन आनन अखण मुख (हर नांम मिठास) —।।२९१

जीभ नाम

रटण वाच वाया रसण जिभ्या वगता जीह,
(जिकै)रसग(नाहर जपै नित "ऊदा" निस दीह) ।।—२९२

दात नाम

दत रदन रद डसण दुज मुखदत वाणीमंड ।।—२९३

होठ नाम

ओट होट रदधर अधर रदरछ अवर (सुखड) ।—२९४
होट ओट रदधर अधर रदनसदन मुखरूप,
दत रदन रदडसण (दुज अेमुख रूप अनूप) ।—२९५
(रसण जिभ्या स्वादरस वाया वगता वाच,
रसण रसगना जीह रट समरण जीहा साच)† ।।—२९६

श्रवण नाम

सुरत धुनीग्रह साभळण करण श्रवण श्रव कान,
वायकचकर श्रोता (वणै दिस जासू दुनिदान) ।।—२९७

नाक नाम

ग्रहणगध सुरतग्रहि घ्रोणा नासा घ्राण,
नाग तिलकमग नासका नक (नाकी निरवाण) ।।—२९८

---

† छंद २९२ मे आये हुए जीभ के पर्यायवाची शब्दो की पुनरुक्ति यहाँ की गई है ।

नेत्र नाम

देखण द्रठा चख आख द्रग नेत्र विलोचन (नाम),
नैंण नयण अवक निजर रार निरख गो (राम) ।।—२९९

माथा नाम

कं मसतक माथौ कमळ मड रुड उतमग,
मऊळी सीरख मूरधा (वळ) सिर सीस वरग ।—३००
उरध मूळ (यौ) भ्रकट (अस दळै राम दससीस,
पाट वभीषण थापियो दान लक जगदीस) ।।—३०१

केस नाम

कु तळ सिरोरुह् चिहुर कच सरळ बाळ सिरमड,
चिकुर केस मोहितचखा (प्रभता) स्याम (प्रचड) ।।—३०२

सरीर नांम

वरखभ देही डील वय पुदगळ काया पिंड,
अग कलेवर आतमज मूरत अप घण मड ।—३०३
तन वध गात सरीर (तव) पयगुण देहीपच,
अगी (सूत अळूझियौ परखै सत प्रपच) ।।—३०४

सेवा नांम

भुजन जप सेव भगत पाठीवेदपुराण,
नवधागुण इरनांम(ल्यौ) ग्यान घ्यान(गुण जाण) ।।—३०५

वसत्र नाम

वसत्र वाज पिधन वसन चितहर अवर चीर,
लजरख वसतर लूगड़ा सोसन ढकणसरीर ।—३०६
तनसणगार दकूळ (तव) पैरावणि पौसाक,
(भूप व्रवै सिरपाव भण तेज रूप तमचाक) ।।—३०७

आभूखण नाम

आभूखण दुतअगमै (सुख) भूखण सिणगार,
(जडत घाट विधविध जकै तवा कमक गततार ।।—३०८

(कं) भूखण मोती कडा पना (जडत) सिरपेच,
कठी नग माळा मुगत वीटी वेळ वरणेच।—३०९

लुदरी चाडम रुळ (सै) कुंडळ मुरकी (कान),
(वाहा) वाजूवंध (विहू) पूंची (जड़त प्रमाण)।—३१०

(पग) लगर वेडी प्रभा (जुडत) जनोई (जाण,
मुर आभूखण मरद का ससत्र छतीस वखाण)॥—३११

छतीस सस्त्रों के नाम

(चौरासी) वदूक (चल चौसट चोट) कवाण,
(वाक) पटा खग सेल (वहि विध चौईस वखाण)।—३१२

(च्यार) कटारी (हाथ चढ पाच मार) पिसतोल,
चुगा (तीन विध सू चलै) खंजर (वसू गुण खोल)।—३१३

(पाण)गुरज (गजण)(प्रसण)वलम मोगर (वीस),
भिडरपाळ (भूखडिया) तोमरार (खट तीस)।—३१४

चावक अकुस चक्र (चढ़े) गुपती गदा (गणाय),
छुरी नखा फूळता (छटा) नेजम खाखर (न्याय)—३१५

(दावपेच) फरसी (दरस) साग ढाल तिरसूळ,
(कठण) मूठ (वाना करग) करपत्री काघार।—३१६

तेग दुधारी करतरी (यौ जग) झफ (उचार)॥—३१७

चचल नाम

चटळ चळाचळ कप चपळ चचळ तरळ (उचार),
(पार) पळव अथर पलव लोल अधीरज (लार)॥—३१८

स्त्री नाम

वनता नारी वलभा भामण कामण भाम,
दारा इस्त्री सुदरी वामलोचना वाम।—३१९

वाला त्रिया नितवणी अवळा तरुणी (अग),
महळा ग्रेहणि माणणि प्रमदा प्रिया (प्रसंग)।—३२०

जुवती जुअती जोखता अगना ललना (आंण),
मुगधा कलत सपूतनी जोखा पतनी (जांण)।—३२१

रमण तनूदर पुरध्री तलय (काम मन तार),
गजगवणी वारगना (व) सती (नाम विचार) ।।—३२२

भरतार नाम

स्याम प्रणय वर मनयष्ट भरता पत भरतार,
प्रीतम प्रिय प्राणेम (पर) वलभ विभौंडा (वार) ।—३२३
प्रेष्ट भोगता असू पती रमण धणी धव (रग),
कामख नाह (र) देसकत (सुख) वरयता (सग) ।।—३२४

सुदर नाम

वाम मधुर अभिरामवर सुदर मनहर (सार),
साध मजु मजुल सुखम पेसल सोभन (प्यार) ।—३२५
रुच सुलखण दीपत रुचर कमन ललित कमनीय,
सुभग सरूप (र) दरसणी रम सोभत रमणीय ।—३२६
तनकाती अनुपम (तवा) अदभूत रूप (उदार),
जोत तेज (गुण जगत मैं सही रीझै ससार) ।।—३२७

नाम नाम

अवधा सगना आहवै नामधेय (निरधार),
अवखा अक सकेत (उड ज्यासू नाम जमार) ।।—३२८

मित्र नाम

सहऋतवा सहचर सुहृद्र प्रीतम सुखदा प्राण,
मेळग मित्रू मनहितू वलभ यप्ट (वखाण) ।३२६
सवय स्याम वायकसदा वयच सहायक (वेस),
प्रेमीगुण सध्री (चपढ) हारद (जाण हमेस) ।।—३३०

स्नेह नाम

हेत राग अनुराग हित प्रेम मेळ सुख प्रीत,
हेकमन हारद प्रणय नेह सतोख (पुनीत) ।।—३३१

आणंद नाम

मृद आणद (र) हरखमन मोद (र) रळी प्रमोद,
रळी महारस प्रमदरस (विलकुल) उमग विनोद ।—३३२

समंदहुलास (र) परमसुख रसवतमन उछरग,
ब्रमग्यान (चरचावरौ उर पूरण सुख अग) ।।—३३३

अहंकार नाम

मछर गरव अहंकार मद माण ताण अभमान,
मनी रंढ पौरस समय दरप गरूर (निदान) ।—३३४

तव अभम तामग (जतन) गुमर बडाई गाढ,
तेख (अरुच उपजै तठै वाका वचना वाढ) ।।—३३५

सभाव नाम

आतम मानुज (गुण अनुज) सासिध (सहज) सुभाव,
(सतत रूप) निसरग सरग चलगत प्रगती चाव ।।—३३६

कृपा नाम

मया दया करुणा महर कृपा घ्रणा अनुकोस,
(पढ़) हतोगत प्रसनता (प्रभू) अनुकपा पोस ।—३३७

कपट नाम

छद छेतरण द्रोह छळ कपट तोत ठग कूड,
मरम कोस परवाद मिस व्याज यम विधचूड ।—३३८
कैतव वितरक कळ विकळ (दाखो नभ उपदेस),
विपद (लखत) चातुरज (विध विवधा जुगत विसेस) ।।—३३९

पाप नाम

अध्रम पाप दुख दुक्रत अघ कळमुख कलुख कलक,
अेनकुळल कमख असुभ प्राचत वरजत पक ।।—३४०

धरम नाम

वेग्रभाग सतक्रत धरम सुक्रत सेयव्रख (सार),
पुन पुनीत सतगुण (प्रभा सुरव्रख सौ संसार) ।।—३४१

कुसलखेम नाम

भव्रक भव्य भावक अभय सुसत सेव भद्रसेव,
कुसळखेम सुभद्र (कही) अभय मंगळ सिव (अेव) ।।—३४२

छभा नांम

ससत परखद आसता समत छभा समाज,
आसथान समजायता सासद (घटा सकाज) ।।—३४३

सबद नाम

सबद घोख निहघोख (सुद) निनद कुणद धुन नाद,
रिण आरव निरावर (सुणत टेर कर साद) ।—३४४
निहकुण राव धुकार नद सोर घोर श्रवसार,
(ग्रहै ग्राह दध गयद नै घर हर कियो उधार) ।।—३४५

सोभा नाम

भा आभा दुत विभ्रभा कोमळता छिव कात,
परभा (कुण) सोभा प्रभा सुखमा (राधा सात) ।—३४६
(कहै) विभूखा ककला श्री (सकर तनसार,
सारे सार वस्तु सिरै "ऊदा" प्रभा उचार) ।।—३४७

दिन नाम

दिन वासर दिव दुदिवा दिनद (तेत) अहिदीह,
(आठ पौहर निस दिन उचर "ऊदा" भजन अबीह) ।।—३४८

किरण नाम

रुच सुच गो छिव दुत रसम जोतर तेज उजास,
किरण मयूख मरीचिका भानुभा करभास ।—३४९
प्रभा विधा वसू दीपती किरणावळि (सुखकद,
सुखद धाम) कर असु (रव यळा पोख आनद) ।।—३५०

तेज नाम

तेज उहासत द्योत तप जगचख वरच उजास,
तमरिप निसचरत्रास उजवाळो "ऊदा" अरक ।
(यौ उर ग्यान उजास) ।।—३५१

उजल नांम

सेत सुभ्र पडरु सुकळ अरजुन सिव अवदात,
विसद वळख पडरु धमळ सुच उजळ पिंड स्यात ।।—३५२

अंधारी नाम

अंधकार तम अवत मम अंधारौ (या) अंध,
तिमर तम सवळस तमम अंध (भूमधा अंध) ।।—३५३

रात नाम

निसीथिणी रात्रि निसा निस रजनी तमनीत,
तमसा खणदा तामसी विभावरी (वदनीत) ।—३५४
जणिया सखरी जामणी रात त्रजमा (रीत,
नाम) खिया पखनी निसा (पठ) ससप्रिया (पुनीत) ।।—३५५

स्याम नाम

किरट धूम धूमर् कसण स्यामल मेचक स्याम,
अस्त नील प्रभू अळअळी स्याम राम घणस्याम ।—६५६

जोत नाम

दीपक दीप प्रदीप दुत सिखाजोत सारंग,
कजळअंक ग्रहमणि कळा ताईतिमर पतंग ।—३५७
नेहानेह सिखजनम उत्तमदसा उदोत,
(थांम) उजासी कळधन (प्रगट दसा भव पोत) ।—३५८

चोर नाम

चोर निसाचर गूढचर प्रतरोधक परमोख,
मेधा कुवधी मलमुलच तसकर परसतोख ।—३५९
परास कंधी पाटचर अेकागार अलाम;
दसू पथुकनाळ दुष्ट (तेन पारख हित ताम) ।।—३६०

मूरख नाम

मूरख जड सठ स्यानमठ मूढ कुंठ मतमद,
मात्रीमुख कदवद मुगध (दुयण सयणघर दुंद) ।—३६१
(जथा जात) जालम निलज मद अजाण अमेध,
अगन विकळ अगळज असन खळ वेधेअ निखेध ।—३६२
नैड मूक विवरण निलज वाळ गिंवार अवूझ,
वैतवार डोंडो विमुखगुण विणवाट अगूझ ।।—३६३

स्वान नाम

कौळयक कूकर कुतौ रतसाई रतकील,
रातजगरण लटरत (परस) वळतपूछ रतवीळ।—३६४
खेतळअस मजारखळ सारमेय असुन स्वान,
भुसरण पुरोगत अस्तमुख गहिचक्र वाळध (ग्यान)।—३६५
ग्रामसीह जिम्याप (गरण) ग्रहमृग मडळगाढ,
साला व्रख अगदेस सठ (और) तदुख (आढ)॥—३६६

खर नाम

खुरदम खर गरदभ खुरप भूकरण लादणभार,
करणलव सकूकरण अवापौहरण (उचार)।—३६७
(चिरमो हीरा सव चळै चव वाळै अन च्यार),
सखमवदी (राखै सदा भरै माटी कुंभार)॥—३६८

विख नाम

गरळ हाळाहळ जैहर (गरण) मारण तीखरण मार,
विख रस (दुख ससार विध कर रिछ्या करतार)।—३६९

अम्रत नाम

सोम पियूख मधु सुधा अम्रत मार (उचार),
अगद (राज भोजन) अमर दधसुत रतन (उदार)॥—३७०

चाकर नाम

किंकर चाकर सेवकर दास नफर भ्रत (दाख),
चैडौ परभ्रत परमचित अनुचर डिगर (आख)।—३७१
परसक दपरजात (पय) विधकर अनुग खवास,
परपिंडा दिनि जोज (पढ) चेर प्रईक चरास।—३७२
भुजग सेवगर हुकममय परचाकर क्पतप्रीत,
(स्याम धरम साचौ सदा चाकर जिकै नचीत)॥—३७३

हुकम नाम

अग्या आयस आगना (मुरगै) हुकम फुरमारण,
सासन जोग निजोग (सुरण ज्यू) आदेस (सुजारण)॥—३७४

शातग नाम

भीय वीह डर भीत भय उद्रक चमक आतक,
(साधक) असक भ्रमक (सो हर मेटण) संक ।।—३७५

वेला नाम

वार वयण प्रसपार वय (कहि) अक्रम गत काळ,
वरतमान अतग वहण (यो) अनमख हरियाळ ।—३७६
(स्याम) ताळ पौहर समय खण अनी (विख्यात
देखत भूली जगतदळ जीव सरवत वहिजात) ।।—३७७

पीड़ा नाम

वपरोगी पीडा विथा आमय गद आतक,
रुग उताप दुख असह रुज सकट माद ससक ।—३७८
(हरी अपाटव) कष्ट (हर मेट) व्याध असमाधि,
(हरहर सिमर हराहरा सिवसिव भुज्या समाधि) ।—३७९

कूड नाम

कूड वृथा मिथ्याकथन असत अठीक अणाळ,
विथत विकळ अनरत विरत अलीक आळपपाळ ।—३८०
(वचन) झूठ विपरीतविध (स्वारथ कज ससार,
परमारथ पद पूज गुर "ऊदा" राम उचार) ।—३८१

साच नाम

साच सयग चौकस सुसत जथा तथा सिव जौक,
वीसविसा (दसभूतत्र) समीचीन सत (चौक) ।—३८२

वलध नाम

तव्र व्रखभ वळ रिखभ (तव) ककुदमान वळकार,
वाडभेय व्रखसेन (वळ) श्रगी भेड व्रखसार ।।—३८३

गाय नाम

सुरभेई सुरभी सुरह गऊ अगना गाय,
घेनु रोहणी देवधन गत उखा महागाय ।—३८४

उसा दहवन अरजुनी तमा त्रवा तार ,
निघमहेई निलयका (सो) अगरणी (जग सार) ।—३८५

वछ नाम

वछा केरडा वाछडा तरण टोगडा (तोल) ,
सकृत करजा वाछ (मुर यो) नलवार (अमोल) ।।—३८६

दूध नाम

मधू दूध पय खीर (मुण) गोरस बळमयगात ,
उत्तमरस ऊधस अम्रत सतन पुसर ससात ।।—३८७

दही छाछ नाम

दही खीरज गोरस दही मथन छास तक्र (मड) ,
कालसेय उदस्त (कहि पाचू स्वाद प्रचड) ।।—३८८

माखण नाम

तक्र-सार दघसार (तव) नैंगवीन नवनीत ,
मेळसरुज माखण मधुर परघ्रत (साद पुनीत) ।।—३८९

घी नाम

हई यगवन तूप हवि घिरत आज आधार ।
आहिज चौपड अगवळ सरप खह विखसुधार ।।—३९०

भोजन नाम

भख जीमण भोजन भखण अभवहार आहार ,
आरोगण खादन असन निगस लेह अनसार ।—३९१
पतवसान अवसान (पढ सुखदा) साण (सवाद) ,
(गहि)बळवधरा वखाणगुण नित्यासी यस(नाद) ।।—६९२

मेरगिर नाम

सुरथानक कचन सिखर सुरगिर गिरद सुमेर ,
पचरूप नगमिणप्रभा (महि) सुरथानक मेर ।।—३९३

देवता नाम

विवुध अमर व्रदारक दईत्यारी सुर देव ,
देव वरद दिवोकसा आदत्या अदतेव ।—३९४

नीका त्रदशा निरजरा वहिनमुख गिरवाण,
त्रदवसा सुमना त्रदस सुधाभुजीस (प्रमाण) ।—३९५

सुमन अनद्री असपरा (रट) रिभूक्रत असरार,
अनमुखाद अगनीभुखा "ऊदा" (नाम उचार) ॥—३९६

अगन नाम

दावानळ अगनी दहण सिखा हुतासण (सार),
मगळ सपती अमरमुख पावक तेज (अपार) ।—३९७

जळण धनजय जाळियल दवना दार विदार,
कृस्नवरतमा त्रखाकप सिखवान सिखसार ।—३९८

आसल पन जाळण अनळ स्वाहापती सतेज,
वरहीमुज सुचवन दहन ज्वाळाजीह जगेज ।—३९९

उखर विध सुखमा अपत दुसह विरोचन दाह,
चित्रभाण माहेसख सोचकेस सुरचाह ।—४००

आसउदर वहनी उसन वेदपित त्रित्रहोत,
विभा विहद भानू विखम सखासमीर (उदोत) ।—४०१

रोहतास वसू छागरत प्रजळत तनूनपात,
घोम समीग्रभ धूमधज हर हय (कहिपात) ।—४०२

आसआस आतस असह (वळ) हुतभख हववाह,
(सोख पोख ससार मे समता जगत सराह) ॥—४०३

वलभद्र नाम

सकरखण वळ सितामित भेद जमा वळभद्र,
कामपाळ वळराम (कहि) मुसळि हणि प्रियभद्र ।—४०४

नीलंवर अश्वानिका दळअभग वळदेव,
कृष्णआग्रज (रु) अनत (कहि रोहणेय रस सेव) ॥—४०५

वरण नाम

प्रासी जळकतार (पढ) जळविभू वरण जळेस,
मेघवरण दधवाम (मुण) पयग प्रचेता (पेस) ।—४०६

(नमा) परजण नीरपत वारसार वार्यांर,
जळज (जितारछक जवर) वरणपास (विसतार) ॥—४०७

देवता जात नाम

किनर गध्रब सिधकर जख रिख तूमर (जाण) ,
विद्याधर चारण वसू पितर प्रसाच (प्रमाण ।—४०८

सध्याभ्रत अपसर सुरज नाकी धरम (पुनीत) ,
गँहूक भ्रत मुरलोकगत (पूजों साच प्रतीत) ।।—४०६

अष्ट सिध नाम

अणिमा महिमा ईसता प्रापत (नै) प्राकाम ,
वसीकरण गिरमी (वळै) लघुमा (वसू नाम) ।।—४१०

नवनिधि नाम

कछप खरव मुकद (कहि) नील पदम (निरधार) ,
महापदम सखर मकर (यौ) निधकद (उचार) ।।—४११

धन नाम

आय तेयक सवर अरथ माया धन धरमड ,
द्रवणवसू लखमी दिरव (खित) निध रिध (नवखड) ।—४१२

सपत माल निधान (मुण) आथ खजांनौ (आख ,
वण कु भ रखत प्रखत विध भव किरपा सू भाख) ।।—३१३

मोती नाम

मोती मुगता मुगतफळ गुलका रस समगोत ,
मुकतज मुगतज सीपसुत उदकज स्वात (उदोत) ।।—४१४

स्यामकारतक नाम

सिवकुमार वाहणसिखी कतका उमाकुमार ,
प्रखतवाह विसाख (पढ) सेनानी व्रमचार ।—४१५

तारकार कतार (तव) सगभू छमा सकद ,
खटमातुर खटवदन (कहि) अगभू (दे आनद) ।।—४१६

मोर नाम

केकी वरही मोर (कहि) सिखी प्रखत सारग ,
नीलकठ घणनाद नळ प्रकुच्छ प्रसणपनग ।।—४१७

अखक सिखडी सिहड (वळ) सेनानीरथ (सार),
सुखलापग सिखावळी कु भ कळापी (सार) ।।—४१८

गुरड़ नाम

पखीपत तारख सुप्रसण गुरड सेस खगराज,
अरुणानुज व्यालारि अळि हरिवाहण गिरराज ।—४१६

सालमिली सुपरण सजव वैनतेय मनवाह,
सुधाचरण सकतीधरण गरतमान अहिगाह ।—४२०

सोव्रनत कस्यपसुतन पखीपती धखपख,
ग्रीवळ खग पखी प्रगड सुपरणेय अणसख ।—४२१

वजरतु ड अरुणावरज यद्रजीत अणभग,
मत्रपूत तारक (मुदै) पूतातमा (प्रसग) ।।—४२२

वेग नाम

सप्रद (दाख) मकृ प्रसर सिघ्र वेग जव (सार),
तुरत वाज अधायतर अजुसार वस (उचार) ।—४२३

तरस आस आतुर सतुर चचळ दाप चलाक,
तूरण अवलवत झट तर वरय चपल रमाक ।—४२४

सहस उतावळ दुत (सरस) अवगत रसा अरोड,
(अस) सतेज धोडैय धक(जळद पवन मन जोड) ।।—४२५

पवन नाम

जगतप्राण आसक जवन वाय वात गधवाह,
अगवाहण मारुत मरुत अहिभख पवन असाह ।—४२६

सुपरस दागत सुपरसन अहिवळ भख ऊमान,
अनळ नील नभसास (यळ) जळरिप प्राणजिहान ।—४२७

वायू चचळ गधवह सबळ प्रभजण (साख),
सोझ समीर समीरण (औज) प्रकवण (आख) ।—४२८

वाएरौ आंधी विखम घणवह चक्र वघुळ,
(सीत मद गत उसन मै गिगन) धू ध गैतुळ ।।—४२६

घण नाम

धाराधर घण जळधरण मेघ जळद जळमंड,
नीरद वरसण भरणनद पावस घटा (प्रचंड) ।—४३०
तडितवान तोयद तरज निरझर भरणनिवाण,
मुदर वळाहक पाळमहि जळद(घणा) घण(जाण) ।—४३१
जगजीवन अभ्रय रजन (हू) काम कमहृत किलाण,
तनयतू नभराट (तव) जळमुक गयणी (जाण) ।—४३२

वीजली नाम

चपळा तड़िता चचळा विद्युत असनी वीज,
(मुण) जळवाळा जळरमण खिणका कासैखीज ।—४३३
सपा समरव सतरदा छटा रासनी (छेक),
आकाळकी अैरावती विजळी खिण (विवेक) ।।—४३४

आकास नाम

वोम गयण अभ नभ वयद अतरीख आकास,
ख असमान अनत खह पीहकर अमर प्रकास ।—४३५
मेघ, खगपथ* पवनमग (सुर उडपत ततसार),
पूरण आभौ विसनपद सुन्य पौल (दुत सार) ।।—४३६

तारा नाम

जोत धिसन ग्रह जोतकी तारा उड रिखतेज,
(रि) तेज रूपमणि तारका नखत्र दीपनभ (सेज) ।।—४३७

सख नाम

संख कव अधव सखी दधसुत वारज (देख),
विसद खौड सावरत (विध) रतना मध्यत्ररेख ।।—४३८

नाव नाम

वैडी वैडौ पोत वळ जळतर नाव जिहाज,
वाणवहण वोहि (वळै) तरण (नाम सिरताज) ।।—४३९

---

* मेघ, खगपथ=मेघपथ, खगपथ ।

खेवटिया नाम

वाणी माळम दधविधी खेवटिया (जळ ख्यात),
दधभेदी दूरतेरी (निपुण) नाकवा (न्यात)।—४४०

खारीवा नीखाखा ओरेभ डाळाअग,
नावाहाकण (गुण निपुण पारावार प्रसग)।।—४४१

चौईस अवतार नाम

राम क्रसन नरहर रिखभ व्रखम हरी वाराह,
मछ कछ (मीन) मनतर नारायण (मुरनाह)।—४४२

ध्रूवरदाम धनतर कपलदेव निकळक,
सनकादिक हसादि दत प्रथू व्यास (परियक)।—४४३

वामण बुध दुजराम (वळ यौं) हयग्रीव (उचार,
वपधारै चत्रविसती यळकज भार उतार)।।—४४४

सीता नाम

जगदवा श्री जानकी वैदेही हरवाम,
सीता भूजा सिया मती जनकजा (स्याम)।—४४५

महामाया मा मडथळी (ककट करण अकाज,
जिकै कोप लका जळी राकस विगडै राज)।—४४६

ऐरापत नाम

हस्ती ऐरपत हसत मघवावाहन मतग,
रामणभ्रम सुरनाथरथ (और) वलभउतग।।—४४७

सताईस नक्षत्र नाम

असनी भरणी (आददे) क्रतका रोहणी (काज),
अगसर आद्रा पुनरवसू पुस असलेखा (पाज)।—४४८

मघा (नाम दसमौ मुणौ) पुरवाफालगुणी (पेख),
उतराफालगुणी हस्तउड चित्रा स्वात (विसेख)।—४४९

वैसाखा अनुराधा (वळ) जेष्टा मूळ (जणाय),
पूरवाखाडा उतर* (पढ) श्रवण धनेष्टा (पाय)।—४५०

* उतराखाडा।

सतभिख पूरवाभाद्र (सुणि) उतरा* रेवती (अग,
नाम सताईस सू नखत्र सुण कवियण परसग) ।।—४५१

बारै रासा रा नाम

मीन मेख व्रख मिथन करक सिंघ कन्याह,
तुल व्रसचक धन मकर (तव रास्वा) कु भ (सराह) ।।—४५२

नग नाम

मिण माणक मुगताहळ पना लाल पुखराज,
चद्रमिणी चिंतामिणी अहिमिण पारस (आज) ।—४५३
नीलमिणी सैलान नग चूनी हीरा चूंप,
(ले) पीरोजा लसणिया पारस फटक (अनुप) ।—४५४
गोमोदक . मू गा (गणौ) पदमराग परवाळ,
(निघ)मरकतमिणी नीलवी (अत दुत तेज उजाळ) ।—४५५

सात धात रा नाम

कचण तार जसोद (कहि) सीसौ लोह (सुणाय),
तावौ (वळै) कथीर (तव सात धात दरसाय) ।।—४५६

सात उपधात रा नाम

(हद) पारौ विख हीगळू (त्यू) अभ्रक हरताळ,
रसकपूर मू गा (रटौ विध उपधात विसाळ) ।।—४५७

हस नाम

मानसूक धीरठ (मुणौ) मुगताचाळ मराळ,
चक्रगी अवदातचळ लीलग हस वलाल ।।—४५८

मूसा नाम

मू सा ऊदर सूचिमुख मूखक भखमजार,
वजरदत आखू (वळै) ऊदर (नाम उचार) ।।—४५९

खट भाखा नाम

प्राकृत (नरभाखा पढौ नागा) मागध (नीत,
सुरभाखा सो) ससक्रत (रकस) पिसाची (रीत) ।—४६०

---

* उत्तराभाद्रपद ।

अप्रभिसी (पसीउकत दनुज) हुसैनी (दाख,
प्रभता काव्य प्रकासमै अै भाखा खट आख) ।—४६१

च्यार पदारथ नाम

(धार प्रथम सुक्रत)धरम (द्रव)गुणअरथ(दिखाय),
काम (सपूरण कामना प्रभूपद) मौख (उपाय) ।।—४६२

सखी नाम

सखी सहेली सहचरी हितु सुवछक (हेत),
वयसा सद्रीची (वळै सुखदा) सयण सचैत ।।—४६३

च्यार प्रकार री मुगती रा नाम*

निश्रेयस निरवाणपद अम्रत मुगत अपवरग,
गतनिरभयआवागमण सुखाधीस वरस्वरग ।—४६४
ग्यानमुगत केवळगत महामुगत नरमोख,
पुरीवास सामीप (पढ समस जोत सतोख) ।।—४६५

दासी नाम

दासी भ्रत्या दिलरखी गोली चेडी (गात),
कळचाळी (गुण) किंकरी विदरी (चळ विख्यात) ।।—४६६

काजल नाम

(मुण) कज्जळ पाटणमुखी नागदीय-सुत नेह,
(गज) अजण मोहण गती सुख-त्रिय नैणसनेह ।।—४६७

हीरा नाम

कुमख वज्र हीराकणी (अै) दधीचरिखअस्त,
निकख पदकभरणा निधी(सिरहर) नगा(समस्त) ।।—४६८

मंगल नाम

अगारक कुज यळसुवन लोहिताग दुतलाल,
मगळ भौम कुमारमहि चत्रभुज वृखी (सुचाल) ।।—४६९

सुक्र नाम

भारगव उसना सुक्रमण कायव कवि चखअेक,
हिरणगरभ दनुप्रोहिता विद्या सँजीवन (नेक) ।।—४७०

*चार प्रकार की मुक्ति—सालोक्य, सारूप्य, सामिप्य, सायुज्य—मानी गई हैं। उन्ही के पर्यायवाची यहा दिए गये हैं, जिनमे से पाच का उल्लेख 'अमर कोष' मे भी है।

नमसकार नाम

प्रणत प्रधन वदत (पढी) नमो नमसकृत (नाम,
विध)सिलाम(वसू) डडवत नमसकार(नित नमि) ।।—४७१

सीढी नाम

नीश्रेण (सा) सोपान (कनिज) आरोहण आरोह,
सेढी नीसरणी (सदा मोहण भुजन समोह) ।।—४७२

पुत्री नाम

तनिया तनुजा पुत्रका दुहिता सुता (वदत),
कुळजा वेटी कन्यका कुळस्वासणी (कहत) ।।—४७३

सेज नाम

सेज तलप सज्या सयन सवेसण सयनीय,
कस्यप दुगध दधफीण (कृत) कतहुरख(कमनी) ।।—४७४

तकिया नाम

गिदुक तकिया (हरु) गिलम उथबर (वर उपधान,
(म्रदुल)उसीस उठग(मुण वद)उसीर(विदवान) ।।—४७५

भाल नाम

भाळ निलाड लिलाट (भण) अलकमध्य विधअक,
भागधाम अछरभवन (नर घर साच निसक) ।।—४७६

टेढ़ा नाम

वाम्म कुटिल टेढो विखम वक असुध विरुध,
वक्र (नाम) कुंचत (मिमर राम मन सुध) ।।—४७७

वंसी नाम

मतस्या धानी मीनहा कुंढ़ी वनसी (कांम),
विडस कुंभ निभख वधक (रह न्यारो भुज राम) ।।—४७८

चिवक विंदी नाम

चिवक (स्याम) विंदी (चढै असित नील दुत आख,
स्याम राम)मेचक(असत सस लछण)छिव(साख) ।।—४७९

ब्रहस्पत नाम

सुराचारज सुरगुरु (सदा) ब्रसपत (जीव वखाण)
रिखी मुनेसर वेदरस (जात) सिखडी (जाण) ।—४८०

धिखण सुखडज सुरधरम वाचसपति कव (वाच),
रगपीत दुज अंगिरस सरगपूज सुरसाज ।।—४८१

छुद्रघटिका नाम

कांची रसना किंकणी (सूत्र) मेखळा विसाळ),
छिद्रघटिका छिद्रावळी (जुगत अनुपम जाळ) ।।—४८२

तरकस नाम

भार्थो भाथ निखग (भण) तरकस तून तूनीर,
उपसाग यखूधीसता विसखधाम (रितवीर) ।।—४८३

धनुख नाम

पिसकस आयदा (पढौ) बॉणासणी कवाण,
सारगी वधसत्रवा तूजी धनुख (ताण) ।।—४८४

नूपर नाम

पादा अंगद नूपर (प्रभा मिलय) घूमर मजीर,
तुलाकोट भ्यकारतन (संजण हरख सरीर) ।।—४८५

पान बीड़ा नाम

दुजमुख - मडण पान दळ तिग्र विफळ तबोळ,
नागलता मुखवास (निज) रदछदरगण बोळ ।।—४८६

आरसी नाम

प्रतबिंबी आदरस (पढ) मुकर आरसी (मड),
दरपण काच (रु) मुखदरस खुखदावती (अखड) ।।—४८७

वीणा नांम

वीणा तत्री वळकी जत्री जंत्र (मुजांण),
गुमी (प्रपची) सुरग्राह (पारावर प्रमाण) ।।—४८८

सुवा नाम

सुक तोता मुरगह सुवा किमुक मुखमा कीर,
रगतचूंच लीलगरित (रस बहु रग सरीर) ॥—४८९

गुपत नाम

(तवा) तिरोहित अतरित गुपत लुक गूढ,
दुरत निलीह अताक दब मुगध प्रछन लुक (मूढ) ॥—४९०

हलद नाम

पीडा रजनी हळद (पढ) पीता गवरी (पाळ),
गुणदा हरदी मगळा (मो) कचनी (रसाळ) ॥—४९१

क्रोध नाम

(दुरत) रोख अमरख दुसह कोप रोस रुट क्रोध,
रोख मन्यू तम रीस (रुख) विखमी प्रजुळ विरोध ॥—४९२

दीरघ नाम

प्रथुल प्रासु परणाह प्रयु व्रधु गुर दीरध विसाळ,
आयुत स्यूढ उत्तग (कहि स्याम) बडौ सिखराळ ॥—४९३

वेद नाम

आमनाय श्रुत वेद अंग निगम अगोचर (नाम),
वरममूळ श्रवकामधुनि व्र मरुप (विश्राम) ।—४९४

स्याम जु जर रुघदेव (सुर असुर) अथरवा (अग,
वेदा च्यार पुराण वरण सो अढार परसग) ॥—४९५

रुधिर नाम

श्रोण रुधर रगत जोस असुक (खित जात),
रत लोहू जीवन रुचावप पुसरी (विख्यात) ॥—४९६

समीप नाम

तट नजीक ढिग निकट (तव) उप समीप (अभ्यास,
यू) पारसव अवदूर (अत) पासै नैडौ पास ॥—४९७

सध्या नाम

निसमुख सध्या पित्रीप्रसू संझ्या सायंकाल,
साझ त्रसझा आसुरी प्रदोखत मचर (पाल) ।।—४६८

पपीहा नाम

कळतकठ हरस्वात (हर) पपिया चातुक पीव,
(पीव-पीव सारग (पट चळधरा तडपत जीव) ।।—४६६

गिनका नाम

वारवधू जगवलभा निलजा पुंसचली (नाम),
दासी दारी द्रवत्रिया (यों) लझिका (अलाम) ।—५००

(ज्यू) खाला धनजोखता कुळटा (पीत निकांम,
कहत) सभली कामकी वैस्या गिनका (वाम) ।—५०१

प्रेमास्वारथ परप्रिया रूपजीवा (रग),
चातुर भगतरा कंचरगी त्रती (चाह अनग) ।।—५०२

पतव्रता नाम

साध्वी सती मनस्विनी पतपरताप पतप्रेम,
सुचहिय सुचरुच मनसमी (निपुरा चाल) उरनेम ।।—५०३

नीचा नाम

नमरा नीच अध तळ नमत खरात वितळ (जल ख्यात),
उरधलोक (आसा करो भुज हर-चररा विख्यात) ।।—५०४

सुछम नाम

तुछ अल्प लव सुखम तनु निपट त्रसोदर (नाम),
ओछो कम थोडो अरगू वारबुद (विश्राम) ।।—५०५

मकरी नाम

मकरी सूत्रा मरकटी ऊररानाभ (भख आस,
कहि) लूतार कुळायतो कोळीवाड (प्रकास) ।।—५०६

दिसा नाम

कन्या काष्टा ककुभ (दिस) गो आसा दिस (गात),
पूरब पछम उत्तर (पड़ तव) दिखरा (दिस तात) ।—५०७

वायव (अरु) नईरत (वळै) अगन (दिसा) ईसान,
(दोय दिसा विचमे दिसा वरणी सवरा विधान) ।।—५०८

पत्र नाम

पत्र परण दळ पान (कहि) पत्रा वरह छद पात,
(जब खरकत कूपळ जरत भ्रंग खग छांह लुभात) ।।—५०९

दुख नाम

कदन विधुर सकट कष्ट गहन अजन दुख (गात,
माधव दुख जामण मरण प्रभू टाळो) उतपात ।।—५१०

लाज नाम

लाज लज व्रीडा लज्या (कर) सकुचन (विनु काज,
लख ह्री कपा मुलायजौ सुधरै काज समाज) ।।—५११

मदरा नाम

मद आसव मदरा मधू वारा वारणी (वार),
सुरा (पान) हाला सुरा सिधूप्रसूत दधसार ।—५१२
मयकामा ह्री मयमिरा कादवदी चिकाळ,
प्रसना बुधहा मुगधप्रिय मदनी मदवामाळ ।।—५१३

समूह नाम

घरणा जूथ जूथप सघरा समुदय व्यूह समूह,
पूरपूग विधचय पटळ फौजा कटक फतूह ।—५१४
वहुत कुरभ कदंव वहू औघ अनत अपार,
कलाप कुल प्रकरण करण विसरण (चय विसतार)।—५१५
झूल चक्र सदोह झड तोम समाज सघात,
कदळ जाळ कनिचय(कहि) ग्राम वौहळ (जळगात) ।।—५१६

अत नाम

अतसय अ्रत अत वेळ अलि यवक नितत अनत,
अत अनत (रजकण यळा रचना राम रचत) ।।—५१७

तनक नाम

दर स्तोक ईखद अलप मद तुछ मदाक,
औछ तुछ रचक अगू (श्री सुख विखिया श्राख) ।।—५१८

पगरखी नाम

पायत्राण पदपीठ (पढ) पह्नी खलो उपान,
जोड़ी पानह जूतिया काटारखी कुद्दान ।—५१६
पगसुख पनिया पगरखी पापपोस पैंजार,
मौजा मोचा मोचडा पगपाखर पयचार ।।—५२०

अटा नाम

उरधश्रीक मैंडी अटा सीध हरम सुखमार,
(मुर जुग भूमी) माळिया (धरम पुसप निरधार) ।।—५२१

गली नाम

तुरती प्रणा प्रतोलका वीथी सेरी वाट,
मग डाडी (सूधी मिळै उपजै नही उचाट) ।।—५२२

उपवन नाम

वाग वगीचा उपवना (सीत रूख तर सार,
अबादिक केता अनत लता सुगध लसत) ।।—५२३

पंखी नाम

पछी खग सुकनी पत्री दुज अडज परदरप,
विहग विहगम हरिव्रती सजव पत्ररथ सरप ।—५२४
विपत पत्रती नभवटी पंखी पतग पतग,
कळकठी (अत) आकृती (सदा तपी) तरसग ।।—५२५

रगसाल नाम

लोहित राता पातलख अरुण साल आरक्त,
(उत्पम तर विवधा अरथ अरथी जन आसक्त) ।।—५२६

वसत नाम

कुसमाक रितराज (कहि) वर द्रुमभूप वसत,
मध सुरभी कुसमावळत (लता सुगध लसंत) ।।—५२७

पाडल् नाम

पाडळ थाळी पलकही वामासार मवक्ष,
दवु वसामध दूधका (पखी चाहत प्रतक्ष) ॥—५२८

आवा नाम

पिकवलभ कामाग (पढ) सखमदरा, सहकार*,
नूतर साळ अनूपतर अवा (व्रक्ष उदार) ॥—५२९

चंपा नाम

चापेयक सुभेय (चव) कुसमाहिम सुकुमार,
चपक चपौ (भमर चित अडै न वास अपार) ॥—५३०

दाडम नाम

(पीतरग) दाडम (पढौ लाल फूल कण लाल),
सुकप्रिय हालमकर (सुण) पिंगपुष्ट गदपाळ ॥—५३१

नालेर नाम

सुरभी सिलूप सदाफला नीला म्रदुल नाळेर,
ताळविलव मालूर (तव विविध चढै वर वेर) ॥—५३२

तमालपत्र नाम

कालकधता पिछक (कहि) तडुळ ताळ तमाळ,
(गंध पत्रता मेट गद मधुता भोज तमाळ) ॥—५३३

पलास नाम

त्रप तक परण पलास (तव) वात पोत (विध त्रख,
एक श्रुकज निसू अस्त्र हळदी नाहर-नख) ॥—५३४

कदम नाम

मदरा गध सुवासमद हरप्रिय कदम (कहत),
नीप तूल देवानिनग (सुरगण सेवग सत) ॥—५३५

---

*सखमदरा, सहकार=सखमदरा, मदरासहकार ।

वेडा नाम

अक्षक रखफळ कटूकफळ भूतावास वभीत,
समर कळि व्रख नुध पिंड वहेडा (प्रीत) ।।—५३६

सोपारी नाम

घोटक मुखछूवा कफळ पुग सुपारी (प्रीत),
पुगीफळ फौफळ (पढौ नरमुख वास पुनीत) ।।—५३७

नारेल् नाम

वानरमुख सुभकामयर कठणकाचळी केर,
अमर भेट फळ नाळियर नाळेकेर नाळेर ।।—५३८

कनछ नाम

कोळ कळका कडुकर कैवत्र खणक (निकाम),
कऊळफळी कपटुयण (कहि विन तावा वेकाम) ।।—५३९

मिरच नाम

मिरच तीख तिखता मिरी कसनाफळ सिधकाम,
(कहि)उखणा(अर)कौलका सुधकर(गोलो स्याम) ।।—५४०

पीपर नाम

तिगम मगधी तदुळा सु डी कसना (सार),
कौळा वैदेही कणा पीपर स्यामाधार ।।—५४१

सूठ नाम

विस्वा नागर सूठ (वळ) महाऊखधी मड),
श्रीपाळी सतवी (सिरै चमतकार परचड) ।।—५४२

प्रवाल् नाम

विद्रुम प्रवाळ रगत दधसुत मू गा (दाख),
सुखरा नगीन लीवमिण (कपोता हिकव भाख) ।।—५४३

दाख नाम

अदुका स्वादी मधूरसा दाख गुडा (दरसाय),
काळमोख काष्टफळ छुद्रा गोस्तनी (छाय) ।—५४४
वेदाणी दांणी दुविधमेटण (रोग मलाम),

सोनजुही नाम

सोनजुही (२) सुगंधका जूही जूथका (जाय),
गिनका हिरणी (नाम गिण देव पुष्पका दाय) ॥—५४५

मालती नाम

मधुमई सुमना मालती उत्तमगंधा (आख),
अवष्टा प्रियवादनी सुगंधमल्यका (साख) ॥—५४६

रामवेलि नांम

राजध्रनीका रसवती रायवेल मितरंग,
अवजस (पुन) प्रियवलका (मधुकर भ्रमत मतंग) ॥—५४७

सजीवनी नाम

सार मजीवन मधुश्रवा जीवा जीवण (जाण,
वळ) जीवती वलका (उर हर भगती आण) ॥—५४८

माधवी नाम

कुंदलता माध्री (कहि) ललितलता (यक लेख,
मधुप उछव अत मुगतमद कछुतइक वसती पेख) ॥—५४९

बधूक नांम

जीवबधू वधूक (जप) जपा (कहत घण जाण,
परखौ) दुपहडपीरिया (पुसपा जात प्रमाण) ॥—५५०

गुंजा नाम

रंगलाल चिरमी रती (सो) गुंजा मुखस्याम,
काकवचुका कृष्णला तुला चिणोठी (ताम) ॥—५५१

खिजूर नाम

पिचकिच जायती पडद त्रणद्रुम ताळ खिजूर,
परपत्रावळि खीडिया जगमख (स्वाद जरूर) ॥—५५२

लवंग नम

देवकुसम जायक (दखै) श्रीसंग तीक्षणसंग,
तीव्रतेज तीक्षण (वळी लघु नर अंग लवंग) ॥—५५३

अेलची नाम

त्रकुट वाळका तत्रलता एळा एळची (अंग),
चंद्र कन्यका मुखवास (चव पद निखकुटी प्रसंग) ॥—५५४

नागरवेल नाम

तांबूळी अदीवेळ (तव) दुजपानदळ (दाख),
नागरवेल तंबोळनित (अरुण अधर मुख आख) ॥—५५५

तट नाम

तीर रोध अन्यास तट कूल पुलिन उपकंठ,
कांठौ पाज अजाद (कहि चल) थिर पाळ चमठ ॥—५५६

कुंज नाम

विजुळ सीत विदुळरथी विटपतटी लुकवेस,
कुंजभवन तरकुंज (कहि दंपती-कृष्ण सुदेस) ॥—५५७

कोकल नाम

परभ्रत पिक कोकल(पढौ) अदुधुनि कोयल (मंड),
दुतसुर भरव्रत रतगद्रग (खुल वसंत अखंड) ॥—५५८

इन्द्रिय नाम

इद्री विखई यद्रीया गोवेंता गुणग्यांन,
गुणआकर खणकरणगत (धरण विखै जुग ध्यान) ॥—५६६

मकरंद नाम

कुसमसार मकरंद (कहि) सौरभवास सुगंध,
रसमय मधूपन पुसपरस (धखि अळि-मोह प्रबंध) ॥—५६०

• •

नाम-माला

रचयिता अज्ञात

नांम - माला

चोईस अवतार नाम

मीन कमठ, नरसींघ मनुतर,
नारायण हरि हंस धनतर।
व्यास प्रथु सनिकादिक वामण,
दत्तित जिग बुध रघुनदण।—१

कपिल काह* रिछ निकलकी,
धूवरदन दुजराम (धनकी)।
रिखभदेव हयग्रीवा (रूप,
सत सुरा कज किया सरूप)।—२

राम नाम

रुघकुळतिलक राम रुघराजा,
सीतापति रुघवर सुरपाजा।
भाणभाणकुळ रुघनदन (भणि),
मकराक्षा रिखरारिवसमिण।—३

कुभकदन कुकुस्त मित्रकपी,
(ज्यानकी सु) रुघुनाथ राम(जपी)।
रामचद्र भरथाग्रज (राजै),
दासरथी (अवतार सदा जै)।—४

ईसअजोध्या (अकळ अनूप),
रामणारि (द्वादस रवि रूप)।
लकादती विघूसीलका,
सेतवध रुघवस (असका)।—५

लछमणभ्रात अजादालगर,
भगतापति राकसा-भयकर।

सीता नाम

सीया सती ज्यानकी सीता,
वैदही मैथली (वदीता)।—६

---

* 'काह' शब्द का अर्थ स्पष्ट नही है।

रामप्रिया (भुजा) रुघराणी,
(वेद पुराण कीत वखाणी)।

लछमण नाम

रामानुज लछमण असुरारि,
वाळजती सेखा-अवतारी।—७

सौमंत्रेय लखमण दसरथसुत,
जसरुघवसी इद्रीजीतजेत।

हणमत नाम

वज्रकटक वंकट वजरगी,
हणमत हणुमान हणुअगी।—८

रामभीच एकादसरुद्र,
सुसरनद कपि झफसमुद्रं।
मारुति जती महाबळ (मडिति),
(राम ध्यांन उर ग्यान अखडिति)।—९

ईश्वर नांम

अंतरजामी निगम अगोचर,
गोपिरासिरमण गो-गोचर।
त्रिगुणनाथ त्रीकम गजतारण,
अमर अजर धरभारउतारण।—१०

हरि माधव कमलापति नरहर,
जगदाधार वसीधर गिरधर।
धूतारण भूधर धरणीधर,
केसव रांम क्रस्ण करणाकर।—११

गोपीजनवलभ गोविंद,
चक्रपाणि श्रीधर व्रजचन्द।
गोवरधनधारी गोपाळ,
दासरथी रुघनाथ दयाळ।—१२

द्वारकेस वीठळ मधुसूदन,
देतादुयण देवकीनदन।

प्रभु जसोदानद व्रजपती,
वाळमुकद मुकद (सब रिती)।—१३

वासदेव विसनु जगवंदण,
· .... कसनिकंदण।
नद-नद निरगुण नारायण,
रामणारि वेता-रामायण।—१४

इद्रावरज उपिंद्रश्रवत अज,
धणी विसभर अलख गरुडधज।
आणदकद अच्युत अवणासी,
पतितउधारण जोतिप्रकासी।—१५

पदमनाभ चत्रभुज परमेसर,
पुरसपुराण धरणपीतवर।
स्याम मुरारि मनोहर सुन्दर,
देवादेव अनत दमोदर।—१६

मधुवनमधुप अकळ वनमाळी,
कैटभकदन मरद्दन-काळी।
भगतवछळ भगवान त्रिभगी,
सीतापति रुघवर सारगी।—१७

व्रद्रावनपति कुजबिहारी,
विखकसेन तारकअसवारी।
मधुवनसिंधु व्रखाकपि मोहण,
व्रजभूखण वामण बलिबधण।—१८

असुरवहण भगवत अधोखिज,
गोकळेस करता भरताग्रज।
विस्वरूप वैकुंटविलासी,
राधारवण रचणव्रजरासी।—१९

गोपी, गोप ग्वाळपति* सरगुण,
निरविकार निरलेप निरजण। -

---

* गोपी, गोप ग्वाळपति=गोपीपति, गोपपति, ग्वाळपति।

निकळक रिसीकेस वहुनामी,
सकटहर प्रम गुर सुरस्यामी।—२०

पुंडरीकाक्ष जनारदन जदुपति,
मोचनग्रघ केवल जगमूरति।
श्रीवखस्थळ सज्या-सेसू,
लकादइग व्रवग-लोकेसू।—२१

धनुख, सख, चक्र, गदा, पदम-धर,
वळभुज अघसाय रमावर।
गरुडारूढ अगम गरुड़ासण,
घगमाया-सव्रत आगदघग।—२२

रामचंद्र भयहर भवतारग,
कूंभकदन अविगति जगकारग।
जळक्रीडा (नैं) सिघ जळज-चख,
सतापाळ व्रम दातासुख।—२३

आदिपुरख निरकार अरूपं,
सुखसागर नितजोग सरूपं।
पतराखग जगदास परमपद,
हरग-भरग-पोखग हद अगहद।—२४

जगहरता करता जगजांमी,
भयहरता भवतारग (भामी)।
चिदानद घगस्याम अघोचर,
भाग-भाग-कुळ खळा-भयकर।—२५

असरगसरग अज्योध्यानायक,
सेतवध द्रौपदीसहायक।
नरक-अत-क्रत राम निरोत्तम,
त्रई विक्रम मोहग पुरसोत्तम।—२६

जळसाई दधिमथ ताताजन,
रामाम्रत तारग रघुनदन।
पारअपार परम अरपम्पर,
अेक अनेक अमछ अनतर।—२७

वारिविरोळण दैतविडारण,
आदिवराह धराउद्धारण।
रुघराजा काकुस्थ खरारि,
व्रस्टर-सवा अखितविहारी।—२८

ब्रह्मा नाम

क ब्रह्मा वेदग कुलाळ,
परजापति अज पतिमराळ।
विध वेधा सुरजेठ विधाता,
भवपित दुहिन (नाम) भूधाता।—२९

सिष्टा ध्रुव विरज सुरजेष्ट,
पदमनाभ चत्रमुख परमिष्ट।
सूयभू कज - जोनि - सरवेस,
कजासण कजज लोकेस।—३०

सेसर जगतपिता महसद्द,
हिरणगरभ आतम - भू (हद्द)।
हसगर जोगुणी जगहेत,
(खाणि - च्यार-उतपति-खित-खेत)।—३१

सिव नाम

सिव श्रीकठ महेस्वर सकर,
गिरिस गिरीस रुद्र गगाधर।
जोगेसुर जटधर जागेस्वर,
ऋतधुसी त्रवक कोटेसर।—३२

सिंभू चंद्रसिखर अचलेस्वर,
वोमकेस ईसान वरद हर।
वामदेव पसुपति ऋतवासा,
विरुपाखि पुरअ्रत दिग्वासा।—३३

महादेव तापस समरारि,
प्रमथाध्रप सूळी त्रिपुरारि।
भव भूतेस उग्र म्रिड भीवं,
उरधलिंग भडग अहिग्राव।—३४

ईस त्रिलोचन खड उमावर,
गगसीस करडमरू परमगुर।
धूरजटी अधकार अखमधुज,
अ्सान-रेता म्रत्यु जय कज।—३५

वाहनवखभ सुछांन वामसुर,
अष्टमूरति परमध्यानउर।
नीलकंठ अद्रमूळ पिनाकी,
खडपरस पचमुद्रा खाकी।—३६

कै कपाळभ्रत लोहितभाळ क्रत,
सध्यापति द्रपजार सरवरित।
लोहित नील विख्यात लदी,
कपरदोस ग्लौ-भाळ कपरदी।—३७

इद्र नाम

मघवा व्रखी यद्र मघवान,
मरुतराट सतक्रत श्रतवान।
सहसनैण दिवराज सुरेसुर,
परजापति व्रत्रहा पुरिंदर।—३८

दिवसत गोत्रभिदी सक्रदन,
दसवन नाकपति नदन।
पूरवपति प्राचीन सचीपति,
कोसक सक्र श्राखढळ वरक्रत।—३९

वज्रायुधी विधश्रवा वासव,
सुनोसीर वैळरित सुररखव।
अह सतमन पुरहूत विडूजा,
दलमव्रखा भ्रमवाहण (दूजा)।—४०

पूहमीपोख (नांम) प्रतवासत,
जभराति पाकसासन (जुत)।
सुत्राम स सतमनू सत्रामा,
हर हप अ्रतुत सखाहर (नांमा)।—४१

धरि-गज-ध्याय तुखाट उग्रधन,
उरपिड पुलमजापति (अन)।

इंद्र री राणी, पुत्र, पुरी, छभा, सदन,
रिख, दुंदुभ वाज, रथ, गुर, वन, वैंद,

गज, दल आदि नाम—क्रमश·

यळा पुलमजा सची इद्राणी,
सुतजयत सुरपुरी (सुहाणी)।—४२

समति सुधरमा मदन प्रसाद(प्रासाद),
नारदरिख दुदभ घणनाद।

वाज उचीश्रव रथ विवाण,
जीव विप्र वन नदन (जाण)।—४३

अस्वनीकुमार वैंद गज उजळ,
मोगर मेघ स्वारथी मातुळ।

विस्वकरमा सुरथान सिलपवर,
देव नदी दरबान पुरिंदर।—४४

इद्रजाळ आवध वज्रायुध,
(सनमुख वदन जिगा) भोज सिध।

वज्र नाम

कूल्यस वज्र भिदुर सतकाट,
इद्रावध अ*····· ·· अतोट।—४५

खटकूणी दभोळ रिखस्तं,
सोरहंसिभो कादनी सुस्त।

एरापती नाम

इद्रहस्वरावण ऐरापति,
भ्रम वळ भ मातग सुभ्रदुति।—४६

सक्रवाह गजराज (असकत),
भीगोरारि पटाभ्रर भूभ्रत।

* मूल प्रति में स्पष्ट नहीं हैं।

परी नाम

अछर अताची परी उरवसी,
मजघोसा मैनका सुकेसी।—४७
रंभा त्रिलोतमा वारंगा,
सारिका मुरति सारंगा।

गंध्रव नाम

अमर परस किनर आदत्या,
गंध्रव हाहा हूहू गत्या।—४८
व्यघाधर सुरगण (वखाणैं,
जिका राग इंद्रादिक जांणैं)।

कलपव्रछ नाम

द्रुमपति पारजाति अवदायक,
सुरतर हरिचंदण सुखस्यायक।—४९
द्रवण (अखैं) मदार कलपद्रुम,
(कहि संतान वरदान शुभ क्रम)।

सरग नांम

सुरआलय सुरलोक सरग्गं,
उघरलोक नाक अपवरग्ग।—५०
त्रिदव त्रिवष्ट पंतावख त्रिदख,
अमरापुरी अवयदिव (अख)।

वैकूंठ नाम

परमधाँम सुखकरण परमपद,
अखित स्वरग वैकूंठ अमरपद।—५१

इन्द्रपाट नाम

सुरपतिपाट निकटक नाकासण,
सुक्रत अक्षर सुरासण।

मेघ नाम

मेघ जळद नीरद जळमंडण,
घण वरसण नभराट घणाघण।—५२

महत किलाण अकासी जळभुक,
मुदर बळाहक पाळग कामुक।

धाराधर पावस अभ्र जळधर,
परजन तडितवांन तोयद (पर)।—५३

सघण तनय (तू) स्यामघटा (सजि),
गजणरोर निवाणभर गजि।

चपला नाम

विद्युति तडित वीज जळबाळा,
दामणि खिवण छटा दुतिमाळा।—५४

चचळा सपा ममर (व) चपळा,
आकाळकी वीजळा अकळा।

ऐरावती रादनी असनी,
कसविधु सी खणका ऋसनी।—५५

देवता नाम

अदतीसुत ऋतभुज अमर,
नाकी देव अनिंद्रा निरझर।

अदारक अनमिख त्रिदवेस,
दिवउखद दिवखद रिभु त्रिदस।—५६

अम्रतेस सुमनस असुरारि,
विवध अपसरा, अग विहारी*।

सुपरवाण गिरवाण सुधाभुज,
अम्रताभख दिवाकैसा अज।—५७

देवता जाति नाम

विद्याधर चारण रिख तुवर,
सध्या गुहिक पिसाचा अपसर।

किनर भ्रत गधरव जख राखस,
(जाति देव जपै नित विसन जस)।—५८

*अपसरा, अग-विहारी=अपसरा-विहारी, अग-विहारी।

आदीत नाम

भाण दिनद, हंस भासंकर,
कस्यपसुत आदीत ग्रहसकर।
पदमणिपति सूरज प्रद्योतन,
विसक्रमा भगवांन विरोचन।—५६

क्रमसाखी रवि महिर दिवाकर,
पदमबंध चक्रबंध प्रभाकर।
तिगम प्रवीत मित्र रातबर,
वरळ पतंग अचळ रानळ वर।—६०

सविता सूर अरक खग सीरख,
चित्रभाण पिंगळ हर जगचख।
मारतंड विवमान गयणमिण,
तरण तीखअंस तिमरंत तपधण।—६१

धव द्वादसआतम अगद्वार,
तपन पुखात्र इतन तिमरारं।
सप्रस प्रदोमन भासान,
विद्योतन तप तेज वितान।—६२

अरुण अरजमा अहिपति (एता),
विभावसू विखरतन सुवेता।
कंजविकास सुमाळी दिनकर,
सोमधात अंगारक सरकर।—६३

सहसकिरण भगदसू दिनेसर,
जमा, सनी, अस्वनी, भव, क्रन, जम-।
तात* (यता रवि नाम वधे तिम)।—६४

रिख ग्रहपति सुऐंन निसारिप,
उष्णरस्म कंक रखणआतप।
भकत चक्रधर (नाम) चत्रभुज,
हरिहंसळ वतधात हितवारस।—६५

*जमातात, सनीतात, अस्वनीतात, भवतात, क्रनतात, जमतात।

किरण नाम

किर प्रभा दुति जोति रस्म कर,
तेज-अवार-धाम अरितिमर।

असु मरीची विभा मयूखा,
दीपति भानू भा छवि (दखा)।—६६

सुचि रुचि वसू दीधती गो सित,
(नभ मिण दिन ससि निसा प्रकासित)।

दिन नाम

दिवस दिवा दिव दीह अयन दिन,
वासर द्व अहि (व्रथा भजन विन)।—६७

सोभा नाम

श्री आभा भा दुति विव सुखमा,
राढा कळा विभूखा परमा।

कोमळता (रू) विभ्रमा काति,
सोभा रूप विमळ (सरसती)।—६८

उजास नाम

भास प्रकास उजास तेज (भव),
तमरिप वरच उद्योत करज (तव)।

जगभासक आलोक उजाळो,
तरण ग्यान (माया तम टाळौ)।—६९

उजल नाम

अरजुण धवळ वलख सुचि उजळ,
सुभ्र स्वेत सित पुंडर सुकळ।

विसद हरण पडु अवदातं,
विसद (कीत हरि उचरि विख्यात)।—७०

चंद्रमा नाम

ससि ससक अगअक सुधाधर,
कळा मयक सकळक सुधाकर।

हितचकोर पदमणीपति ससिहर,
कुवयवधु श्रीबंधु छिपाकर।—७१

हिमहित चद हिमस हिमकर,
विधु दविसुत यंदु रोहिणवर।
सीतअसु दुजराज निसाकर,
अखनिस सोम चद्रमा चद्दर।—७२

ओखधीस उडपति अम्रतभव,
सुभ्रकिरण नखत्रेस सुधाश्रव।
वरपणजगत ग्लौ जगवदक,
छदनाच गुणरासि सुखाछक।—७३

सुभरासि पहसाच सुसीरं,
तनकळानिध विसदसरीरं।
उदैभौर अपघातम गुणयळ,
चकवाविरह विचविवभू चचळ।—७४

पानपखीण मलीण* पुहकर,
(सागरभरत रतना मिणश्रीकर)।

नखत्र नाम

तारिक नछत्र ल्लग्रह तारा,
जोति रिखभ उड जोति खेयारा।—७५

सताईस नखत्र नाम

अस्वनी भरणी क्रतका रोहिणि,
म्रगसिर आद्रा पुनरवसू (मुणि)।
पुख असलेखा मघा (पवत्रा),
पूख उत्रा हस्त (स) चित्रा।—७६

स्वांति विसाखा अनुराधा (सम),
जेष्टा मूळ पूरव उत्रा (जिम)।
श्रवण धनेष्टा सतभिख (सारं),
पूरवा उत्रा रेवती (मार)।—७७

---

* पानपखीण, मलीण=पानपखीण, पानपमलीण।

नव ग्रह नाम

सूर सोम कुज बुध गुरु भ्रगसुत,
सनी(र) राह केतु (ग्रह विहसत) ।

बारै रासी नाम

मीन मेख व्रख मिथन करक(मुणी),
म्रिघ कन्यातुल व्रस्चक धन(सुणी) ।—७८
मकर कुंभ (ऐ रासि लगन मत,
कडण रासि ग्रह पूजा दत क्रत) ।

निसा नाम

सोमप्रिया रजनी निस स्यामा,
तमी तामसी निसा त्रिजामा ।—७९
रेणा जामणी जनया रात्री,
तमसा नोसीथणी तममात्री ।
खिपा (रू) राति सरवरी खणदा,
विभावरी तमचारी प्रमदा ।—८०

अंधकार नाम

तिमर तमस अंधकार सतमस,
अध तमस तम धात अवतमस ।

स्याम नाम

स्याम धूम धूमर प्रभस्यांमळ,
असति नील मेचक किरठ अळि ।—८१
क्रस्ण राम अल प्रभ (कहि) काळं,
अध तम (मेटि ग्यान उजवाळ) ।

दिवा नाम

(आणद)ज्योति सिखादसई(घण),
मेटणतम रिपपतग धवळमिण ।—८२
दीप प्रदीप दसासुत दीपक,
नेहप्रीय सारग निसातक ।

कजळग्र क दसाभव (कीजै,
दसा) करखधज (कजल दीजै)।—८३

उत्यमउजाम तेजग्रह (ग्रोपरण,
उर ग्रह नाम दीप ग्रारोपरण)।

गुरड़ नाम

गुरड़ सेस ग्रलमित्र खगेसर,
चपळवाम धखपख भुयगचर।—८४

विखहर इंद्रजीत हरिवाहण,
सोव्रनतन सक्तीधर सुपरण।
वैंनतेग्र ग्रीधळ वळवतं,
वजरतुंड तारक दिढवत।—८५

ग्रहिरिप ग्रम्रतचरण ग्ररुणानुज,
पत्रीराज गिरराज कस्यपातमज।
पूतग्रातमा गरतमान (पढि),
दुजपती सालमली (भक्ती दिढि)।—८६

सुदरसण चक्र नाम

सारज वज्र चक्र सधारण,
ज्वाळामुख दभी खळ—जारण।
सुदरसेण परवय विस्णतर,
कुंडळीक दुतीतेज सहसकर।—८७

वलभद्र नांम

वळभद्र कामपाळ नीलवर,
धरिप्रिय मधूमूग्रळी हळधर।
रोहिणेय सकरखण राम,
सूर सितासित ग्रग्रजस्याम।—८८

ग्रस्वान (कहय) मुगध ग्रनत,
विरहीवीर प्रलव वळवत।
ताळलखण वळ सीरपाण (तत),
विघनप्राण वळदेव सातवत।—८९

रवण - जमा - भेदण मधुरगी ,
भ्रातविजेसर अमरअभगी ।

वरण नाम

जळपति मछपति वरण परजन ,
जळकतार पिसाचागजन ।—६०

पकजग्रह प्राचोप प्रचेता ,
(नीर समीप पास भ्रत नेता) ।

धनेस नाम

धनद कुवेर निधेस धनाधिप ,
राजराज जखराज उचारिप ।—६१

जेखाधीस जखराट, जजेस्वर ,
सक्रकोस धिक्ष ग्रहकेस्वर ।

श्रीद रमाद वसू दसतोदर ,
कविलासी सिवसखा रतनकर ।—६२

भिवभंडारी गुहरु वैश्रवण ,
हर प्रि किनरेस नरवाहण ।

अळकापुरीपती पतिउत्तर ,
सुभ्रम त्रिसर जख कि पुरिखेसर ।—६३

पिसाचकी पौलस्त एलविल ,
मनखाध्रम जखचेर (नाम यळ) ।

अष्ट सिद्धि नाम

अणमा महमा गिरमा ईसति ,
प्राकाम (रू) लघुमा वसि प्रापति ।—६४

नव निध नाम

मकर नील खूव सख मुकद ,
कछप पदम महापदम कुंद ।

द्रव नाम

माया आयतेय ग्रहमडण ,
राद्रव विभव वसू मनरजण ।—६५

रैवस संपति मा अरथ रिध,
नूतनसुख धन गरथ द्रवख निध।
सार निधान हिरण द्रव सेवध,
जळ कसवर चूमन खजाना।
(विद्या मान दान जस वाना)।—६६

मोती नाम

सुक्ताहळ मुक्ताफळ मोती,
गुळका दधि जळज ससिगोती।
धीरठभख मुक्ता मुक्तज (घरि),
सुक्त(वळे)आथिकुभ रखत.प्रखत(विध)।-६७

अगनी नाम

गरथव्रत आहुतन ... . ,
मारुतसखा कृसान तमोघन।
जातवेद जागवी जागतौ,
रोहिताम सयना रुचिरातौ।—६८
अपति धूमधज व्रहदभाण (उर),
आमआस उदरच द्रव अतर।
वीतहोत (कहि) अरुचिख महवर,
घोर समीग्रव कुळमड (घर)।—६६

स्यामी कारतिक नाम

खटमाता सेनांनी खटमुख,
स्यांम महासेन द्वादसचख।
रुद्रातमज विसाख मोररथ,
कृतका गगा, उमा नद* (कथ)।—१००
दिहक छखदेव भूरख गुह (दखौ),
प्रकवाहण व्रमचार (परेखौ)।
तारकारं कैनार सकतीभू,
(आखनरौ) सुरअगभू अगभू।—१०१

* गगा, उमा नद=गगानंद, उमानद।

बहुळातमज बहुलकौचिरित,
(भाखि) सक देसाखकुल दुहुभ्रत।
स्यामकारितिक महतिजसुर,
बरहीवाह विसाख (देरा वर)।—१०२

मोर नाम

सिखी सिखावळी सिहड सिखडी,
मोर मयूर कळान्नतमडी।
नीलकंठ नीरद नादानुळ,
खग दुति सारंग कुभ व्याळखळ।—१०३

विरही वरहरा घरामुठ (व्यापी),
केकी तुकळा पग कळापी।
रथकुमार प्रकवि खकर (चाया),
विविघेसुर खग (नाम बताया)।—१०४

हस नाम

मानसूक घीरठ मुक्ताचर,
हस मराळ चक्रग जळहर।
उग्रगती लीलंग अवदात,
विमळरूप कळहस (विख्यात)।—१०५

मूसा नाम

आखू खराक सूचीमुख ऊंदर,
वजरदत मुख्य यतिदेवर।

बुधी नाम

धी बुद्धी मेधा मति धिखरा,
अकल प्रागना मनखा (अखरा)।—१०६

आसय समभि चातुरी (आराौ,
विवुध करी हरि क्रीत वखाराौ)।

जमराज नाम

काळ डंडभ्रत सुमन कृतत,
अंतक जमनभ्रात जम अत।—१०७

प्राणहरण सीरण क्रमपासी,
धरमराज जमराज विधासी।
साधदेव कीनास भाणसुत,
जमहर सुमन प्रतिपति गजत।—१०८

अखभधुजी म्रतकर समवत्री,
प्रेतराट सजमनी पत्री।

दैत नाम

देवानुज दइत्यद्र अदेव,
दाणव सुररिप पूरवदेव।—१०६

दतीसुत असुर सुक्रासिख (दखौ),
मेछ जवन सुरभ्रमरिम (अखौ)।

राकस नाम

नइति राकस असुर निसाचर,
तमचर जातधान उच्चातुर।—११०

रांमरा नाम

कटक दैतपति दहकधर,
सुरध्रोही रामण लकेसुर।
सीताहरण दससीस पौलसित,
ग्रहाग्रहण त्रिकराचळथितगति।—१११

मेरगिर नाम

गिरपति मेर सुमेरगिर,
गिरद सुथानक अचळ कनकगिर।
पचरूपी कनकाचळ (पावा),
रतनसान सुरगिर गिरराका।—११२

आकास नाम

आभ अनत अतरिख अबर,
पवनधिस्रण सुर, घणपथ* पुहकर।

---

* सुर, घणपथ=सुरपथ, घणपथ।

व्यद विसनपद ख नभ वोम,
गिगन गयरण मडगछत्र गोम।—११३

अरस अकास गैण असमान,
विहग परीगम* ससि, विवसानु।

खट भाखा नाम

(वाणीमानव)मागधनागर(विलासा,
भेद) ससक्रत (निरभ्रर-भासा।—११४

विद्या) प्राक्रत (मानव वाणी),
अपभ्र सी (पखी उर आणी।
दैता भाख) हुसैनी (दखी,
राकस वाणी) पिसाची (रखी)।—११५

(अहि सुर नर मुर वाणी उक्ती,
सिस जीवन व्रह्मा सरसती।
वेद हरित दिग मूढत वाणी,
यू सुर भाख व्रम मुख आणी)।—११६

च्यार पदारथ नाम

धरम अरथ (सुभ)काम मोक्ष(ध्रत,
साधी च्यार पदारथ सुक्रत)।

धरती नाम

वसुधा विसव वसुमता विपळा,
उरबी यळा अनता अचळा।—११७

जमी रतनगरभा छित जगती,
रेणा रसा धरा धर धरती।
समदमेखळा रजत श्रोणी,
क्षिमा प्रिथी भूमि भू म्ही क्षोणी।—११८

धात्री गऊ रसवती धरणी,
हेळा सरवस मनहरणी।

---

* परीमग, ससि, विवसानु=परीमग, मग ववस

थिरा कुंभनी विसभरा थित,
खोणि खेत गहवरी वसुह खित।—११९
वसुधरा वसुमती कु वामा,
सागरनेमी श्रीदत स्यांमा।
महि गोत्रा पहि मही मेदनी,
अमळा अकळ कुमारी अवनी।—१२०

गिरद नाम

ग्राव गिरद अनड नगा गिरवर,
गोत्र पहाड अद्री गिर डूंगर।
धर सिलोचय अचळ धराधर,
भूधर मरुत दरीभ्रत भाखर।—१२१
सिखरी सानमान अग्र श्रगी,
परवत कूट त्रिकूट उपलगी।
अस्टकुळी पर्व्वै आहारज,
घातहेत द्रुमपाळ तुंगधज।—१२२

वन नाम

कतारक अटवी झख कानन,
विपुन दुरग खंड अरण्य गहन वन।
कखवा रिखतर मधूप्रकासी,
(विंद्रावन धिन रासि-विलासी)।—१२३

ब्रख नांम

ब्रख सिखरी फळग्राही तरवर,
घणपत्र अदभुज निनग खगाधर।
साखी कुसमद फळद महीसुत,
द्रुम खितरूह पत्री तर दरखत।—१२४
कूठ फळी अध्रप कारसकर,
विटप रूख अद्र व्रस्टर।
निंद्यावरत सुझाड़ (अनोखह),
सुवरण कराळक पतीवसंतह।—१२५

फूल नाम

सुमना सुमन कल्हार सुगधक,
सून प्रसून कुसम सुम संधक।
प्रसव- फूल फळपति पुस्पावळि,
उदगमनरम रक्त हलकावळि।—१२६

लताश्रंत मरणी वक (लेखौ),
पूफ धनुवासर तरभत्र (पेखौ)।

भमर नाम

चचरीक खटपद सौरभचर,
कुसमळप्रिय झकारी मधुकर।—१२७

मधुग्राहक मधुवरत सिलीमुख,
सारग मधुप दुरेफ गधसुख।
अलिश्रळ कळाप यदुदर,
भ्रग रोळव अलीहर भमर।—१२८

मरकट नाम

साखाम्रग मरकट साखीचर,
वनर कीस हरि कपी वनचर।
मो लगूळ पलवग पलवगम,
पलवग ऊक वलीमुख प्रीडुम।—१२९

पीपल नाम

दतीभ्रख वोधीव्रख चळदळ,
श्रीव्रख सुव्रख असीव्रख पीपळ।

वड़ नाम

वट निग्रोध रतफळ साखीव्रख,
वैश्रवणाय जटी सूवड रिख।—१३०

वस नाम

जवफळ वेण वस त्रिणधज (जिण),
तुचीसार मसकर तप्तरवण।

चंदरण नाम

सुरभी सीतळरू`ख मुगधक,
रोहिणीद्रुम चदरण अहि········ क ।
व्याळपाळ श्रीखड रूपवन,
मळयातर उत्यमतर अहिमन ।—१३१

सौरभमूळ सुनग गधसार,
वाससुद्रुम मलयुजविसतार ।

केसर नाम

कु`कम केसर मगळकरणी,
वह्निसिख दीपन गुडवरणी ।—१३२

देववल्लभा लोहितचदण,
पीतन रकत संकोचप्रसरण (पुण) ।
घरकाळेयर बाह्लीक (धरी),
कसमीरज(हरि सेवत तिलक करि) ।—१३३

हरड़ै नाम

अभया जया सिवा अमरतका,
कायस्था चेतकी काळका ।
प्रयथा हिमजा पथ्या प्रेयसी,
सरवारी पूतना श्रेयसी ।—१३४

मुरभी (राम) तुरजका (सुखदा,
पढि) हरड़ै जीवती प्रांणदा ।
स्यामा हेमवती सकरणी,
हरीतकी (काया गदहरणी) ।—१३५

• •

पर्यायवाची कोष—६

डिंगल-कोष

कविराजा मुरारीदान विरचित

सक्षेपतो शब्द निर्णय.

दोहा

रूढ'र जोगिक मिसर रा, नामा रो कर नेम,
सुकव रचूं इण कोस मैं, प्रणमि सारदा प्रेम।—१
वर्णं नही जिण सबद री, व्युतपति रु वखाण,
रूढ नाम तिण रो कहो, आखडळ ज्यू आण।—२

अथ दोहा-सोरठा का लक्षण

सोरठा

दोहा तुक दूजीह, सो पहली धरण सुकव,
परगट तुक पहलीह, इण रै आगै-आणणी।—३
आगै चौथी आण, इण आगळ तीजी अखो,
जिका सोरठा जाण, नागराज रो मत नरख।—४

सोरठा का उदाहरण

जोगिक अनवय जाण, सो क्रिय गुण सवध सू,
वेखो एह वखाण, कहै पूर्व सवध कवी।—५
क्रिया स्रजादिक आण, गुण सुनीलकठादि गण,
सो सवध सुजाण, स्वामी सेवक आदि सव।—६
जोवो नाम जमीन, पत आदिक आगै पढो,
पाल रु मान प्रवीन, धण नेता इण आदि धर।—७
जन्यागळ इम जाण, करता जनक विधात कर,
वळे जनक वाखाण, जै भव जोनी जाणजै।—८

दोहा

विश्वक करता विश्वकर, विश्व मधात विख्यात,
विश्व जनक इम नाम वद, ऐ कारण रा आत।—९
आतम जोनी आतमज, आतम भव इम आण,
आतम सूती आत्म सू, जनक नाम सू जाण।—१०

सोरठा

जळ वाचक जो नाम, सो पहली धरणा सुकव,
केवल धीरो काम, याद राख करणु अठै।—११

वेखो मवद वळेह, धुर केवल वडवा धरो,
अगनी अगवाणेह, व्है जो नाम हुतास रा ।–१२

भूपांदिका भरणत, सुकव सूणू इण कोस मैं,
पलट दुनाम पढत, रिघू सरव इण रीत सू ।–१३

पढ्यो जाय पलटाण, सवद जिको इण मैं सदा,
जिण नू जोगिक जाण, कह इण रीत मुरार कवि ।–१४

सवद सिमर इम सोध, जोवण मैं जोगिक जिसो
वर्णै न जिण रो वोध, गीरवाण जिसडो गिणू ।–१५

कवि रूढी हि कहत, मिसर रूढ़ जोगिक मही,
मन मत्तै न मुणत, कहियो ज्यू पूरव कव्या ।–१६

गणेश नाम

गवरीनद गणेश गणपत गजआनन गणप,
(ऊडो अरथ असेस आपो उकति नवीन अब) ।—१७

गजानंद गणराज लम्वोदर कालीसुतन,
(मेटण विघन समाज) उमाकवर गणवै (अवै) ।—१८

मूसावहण (माण दाख) विनायक इकरदन,
(जेम) हुडवी (जाण) परसीतस हेरव (पढ) ।।—१९

सरस्वती नाम

ब्रह्मसुता वाणी (ह) वरदायणी वागेसुरी,
(गूढन करणाणीह चीताणी मैं मूढ चित) ।—२०

हसवाहणी (होय) गिरा वाकवाणी (गवै).
सुरसत सारद (सोय) वेधाघी भारित (वर्णै) ।—२१

(विसनू ब्रहम वळेह, महादेव महमाय रा,
इद चद रवि एह, अतन आग देवा तणा ।—२२

परथी राजा पेख, वळे समद तरवार रा,
अस हाथी अवरेख, नाम रीत इण नरखणा ।—२३

जो-जो जिण-जिण जाग ऊपर लखिया नाम जो,
वेखो करे विभाग, धरणा था राखे धरम ।—२४

जुवा-जुवा जपताह, तो नह टावर समजता,
रिघू यहा राख्या ह; इण कारण थी एखठा) ।।—२५

अथ संक्षेपतो गीत लक्षणानि

दोहा

परथम दोहा तुक पहल, अट्ठारह- कळ आण ,
तुक दूजी पनरा तणी, जुग अठ तीजी जाण ।—२६

सोरठा

चौथी झड चवुदाह, जोडण वाळा जाणज्यो ,
निसचै माई नाह, इण दोहा मैं ईहगा ।—२७
परथम तुक सोळा पढो, मुहरा चवुदा मेळ ,
दोहा दूजा री दुग्म, इण ही रीत उजेळ ।—२८
चौथा तीजा पाचवा, दोहा मैं इण दाय ,
पहली तीजी झड प्रगट, सोळह मत्त सुणाय ।—२६
दूजी चोथी झड दुरस, दस चो पनरै दाख ,
तीजा दोहा री दुतुक, ऐण रीत सू आख ।—३०
चौथा दोहा री चवा, साकळ दू चां सोध ,
तेहर-तेरह कळ तुलै, वोलै ऐम प्रबोध ।—३१
पचम दोहा कळ प्रगट, दसचवु दूजी दाख ,
चोथी झड तेरह चवो रीत ऐरसी राख ।—३२
कहु गुर मोहरा लघु कहू, आणै नेम न ओर,
जपै कव इण रीत जो, सो छोटो साणोर ।—३३

गीता छोटा साणोर

महादेव नाम

गरजापत महादेव गगाधर भव हर सिव जोगी भूतेस ,
भाळचद्र सकर भूतेसर मनमथहरण रुद्र महेस ।—३४
मुडमाळ इकलिंग कमाळी पचानन कैळासपती ,
जटधर ईस व्रखभधुज सभू ससमाथै वरबीसहती ।—३५
भगअहारी जटी भूतपत त्रिचख गौरपती त्रपुरार ,
पनगहार सघराव पानकी धूरजटी ईसर व्रखधार ।—३६
वाणपती काशीरावासी व्रहम सूळहथ ईसवर ,
भोळानाथ कपाळी भैरव जोगिंद धूजट जहरजर ।—३७

ब्रहमसुतन गहीर डगवर दाळदहरण दताळद्रप ,
भूतनाथ भगवतीभरता नीळकठ कैळासन्नप ।।—३८

दोहा

अड्ढारह कळ आद तुक, दूजी पनरह देख ,
तीजी तुक सोळा तणी, पनरह चौथी पेख ।—३९

दोहा दूजा सू डुरस, सहक्रम जाण सु जाण ,
सोळह पनरह कळस कळ, एम बेलियो आण ।—४०

मुहरावाळी तुक मह, मुहरा माहि मुणन्त ,
वर्णं गीत इम वेलियो, आद गुरू लघु अन्त ।—४१

गीत वेलियो

विष्णु नाम

अवधेसर विसन प्रभू व्रजनायक केसव हरि परभू करतार ,
पूरणब्रहम गदाधर श्रीपत मधुसूदन रघुवीर मुरार ।—४२

लखमीवर सायी गोपाळक भगवत गिरधारी भगवाण ,
सारगधरण विसभर ईसर लोयणकमळ किसन कलियाण ।—४३

त्रिभुवणनाथ त्रिलोकीतारण राधावर भूधर रघुराज ,
अलख अजोणीनाथ ईसवर सदगतनाथ निरजन (साज) ।—४४

पीतावर श्रीरग रमापत नारायण गोपीवर नाथ ,
बासुदेव दामोदर बीठळ परमेसर मत्रीपाराथ ।—४५

अवधईस महमहण नारियण दीनानाथ कसन जगदीस ,
गोपीनाथ गरडधज गामी आदपुरख कान्हू सुरईस ।—४६

सीतानाथ लाछवर सावळ रघुवर जगनायक बळवीर ,
चक्रधरण जगनाथ सुचेतन राघो भगतवछल रणधीर ।।—४७

दोहा

धुर अड्ढारह कळ धरो, सम पर चउदह सोय ,
विखम सरब सोळह वर्णं, जिको सोहणू जोय ।—४८

मोहरारी झड माहिनै, अवस लघू गुर आण ,
नेम सोहणं इम निपट, वीदग करै बखाण ।—४९

गीत सोहणो

पारवती नाम

जोगण महमाय सिवा जगदवा सगत अद्रजा गोर सती,
आठाभुजा ईसरो अवा सकरघरणी वीसहती।—५०

रुद्राणी लंबोदरआई भगवती भैरवी भवा,
गवरी उमा चडका गौरी सिंहवाहणी वाहसवा।—५१

जोगमाय गिरजा जगजणणी बाघवाहणी पारवती,
ककाळी काळी महकाळी हरा भावनी सूळहती।—५२

देवी खडगधारणी दुरगा माहेसुरी सकरी (मुणा,
मु भनिसु भभाजणी सगती (गीता) अवक (नाव गुणा) ॥—५३

दोहा

कळा पहल दस आठ कर, जुग दस दूजी जोय,
सोळह वाहर तुक सरव, दखा मेळ गुर दोय।—५४

इण दोहा मैं त्रप अवस, राखी जो यह रीत,
सो छोटा साणोर रो, गणै जागडो गीत।—५५

गीत जागडो साणोर

पृथ्वी नाम

धरती धर चास यळा खत धरणी गोरभ अचळा गोमी,
वसू गोम प्रथमी वाराही भोम सुचाळी भोमी।—५६

अळ भूमड मेदनी अवनी भूयण रैण भडारी,
रतनागरभ रेणका रेणा धरण मही धूतारी।—५७

वसु धरा पुहमी पुह वसुधा छित तू गी खित छोणी,
रसा भरतरी सु दर मूळा हिरणनैण बधहोणी।—५८

प्रथी खाख पुहवी भू पोमी सथर अचळ सोलाळी,
रणमडा भूगोळ दरदरी जमी कसपरजवाळी॥—५६

दोहा

प्रथम कळा नव दूण पढ, दूजी तेरह दाख,
सोळह तेरह तुक सरब, अत दोय लघु आख।—६०

भेटिरी तुक भाणवा, उभै लघू आणोर,
रखै नेम इण रीत रो, सोहि खुडद साणोर ।—६१

गीत खुडद - साणोर

तरवार नाम

खाडहळ खाग दुधारो खाडो खडग त्रिजड ऐराक खग,
जडळग धूप असम्मर भुजळग करम्माळ बाणास क्रग ।—६२
तेग रूक धाराळा तेगो वाढाळी सारग विजड़,
बीजूजळ पाधर असि वीजळ सार दुजड करमर सुजड ।—६३
हैजम डोढहती चद्रहासा केवाण (र) पाती करद,
धजवड करमचडी धारूजळ सत्राटाकरणीसरद ।—६४
वाक जनेव प्रहास (वखाणू) पाडीस (र) नाराज (पढ),
मूठाळी समसेर भुठाणी किरमाळ (र इम) वाढकढ ।।—६५

दोहा

धुरपद कळ तेवीस धर, दुतिय अढारह देख,
बीस कळा तीजी वणै, बळे अठारा वेख ।—६६
विखम वीस कळ तुक वणै, अड्ढारह सम आण
मोहरै गुरु लघु नेम कर, वड साणोर वखाण ।—६७

गीत वडो साणोर

राजा नाम

नरानाथ नरपाळ भोपाळ महपत न्रपत भूपती धरपती यळापति भूप,
प्रथीपत छत्रधर नरेसुर महीपत अवपती रसापत तेजआनूप ।—६८
महीरानाथ छत्रधार राजा महिप गढपती वेसपत पाळदुजगाय,
राण दैसोत नरनाह राजानिया राजइद नरांइद महीइद राय ।—६९
धराराथभ भूपत छतरधारण पोहमीईस यळधीस प्रजपाल,
नरप न्रप राज भोगणजमी नरेस (ह) महीवर सुपह यळनाथ महपाळ ।—७०
ईसवरनरा भूपग अधिप यळाइद नाहदुनियाणरा छतप अवनीस,
रजवळी रोरहर प्रथीरापुरदर राजसुर नरानायक धराधीस ।।—७१

दोहा

कला प्रथम तेवीस कर, दूजी सतरा दाख,
इण ही झड रै अन्त गुरु, रीत मेळ री राख ।—७२

बीस कळा सतरा वळे सरब गीत इण सोय ,
भेद बडा सारणोर भव, हृद परिहास जु होय ।—७३

गीत प्रहास

हाथी नांम

दुपी गैंद गजराज सूंडाळ दंती द्विरद मदाभ्कर फीळ पैनाग मसती ,
गैंवरा व्याळ सामज मतंग मैंगळा सूंडधर करी गैं नाग हसती ।—७४

वड्जावाहू दताळ कुंजर वयंड हस्त सारंग गज गयंद हाती ,
पदम्मी तंबेरण करिंद वारणपती दंताहळ मढ, अग, भद्र, जाती* ।—७५

अरापत अनेकप सिंधुर रेवाउतन वनकजळऊपना दंतवाळा ,
सूंडंड वितुंड वारण कळभ भूंडहळ कर हरी मदाळा कुंभि काळा ।—७६

करेणपती दुरदाळ पीलू (कहा) अनळपखचार छछाळ (आखा ,
गीत परिहास सारणोर इण रीत ग्रह भेव सारणोर वड दोय भाखा) ।।—७७

दोहा

अखर अठारै आद तुक, बीजी चवुदह वेख ,
विखम अखर सोळह वळे, सम चवुदह सपेख ।—७८

मेळ तणी भड माहिनैं, गुरु लघु अन्त गिणाय ,
पैंखो गीत सुपखरी, वीदग ऐम वणाय ।—७९

गीत सुपखरो

घोडा नाम

वाजी तोखार तुराट तुरी ऐराक वैंडूर वाहू वैंडाक केसरी हरी काछी खेंग वाज ,
होत्रास ब्रहास घांटी वडगी निहग हंस वाजिंद तारखी प्रोथी घोडो वाजराज ।–८०

उडंड चामरी ताजी हैराव सारंग अस्व भिडज्जा काठियावाड हीसी बाहुभाण ,
पमगाण हैजमा हैंवरा लच्छीवाळापूत कुंडी हयाराज तुरा घुडल्ला केकाण ।–८१

अलल्ला वितडा हया सपत्तासवाळाअसी रेवता साकुरा अस्सा जगमा तुरंग ,
क्रमणका पमगा हैंवरा सिंहविक्रमांका चंचळा तुरंग्गा धजाराज है सुचंग ।–८२

मासासी पकल्ल देव सिंधुजात वासू मुणा वगळी जगळी रूमी अरब्बी कवोज ,
(जोवो पांच दोय नाव खेत सूं उपाया जिके नामी पात तुरीनाम वखाणैं हनोज)।।–८३

---

* मढ, अग, भद्र, जाती=मढजाती, अगजाती, भद्रजाती ।

दोहा

धुर मात्रा तेवीस धर, बाकी वीस वखाण ,
मुहरा सम च्यारू मिळै, सावभ्फडो सुभियाण ।—८४

गीत वडो साणोर सावभ्फडो
सूर्य नाम

हरा बिंब करनाळ आदीत पकजहती पतग डुडियद दनइस रानापती ,
तरण भरळाटतन मेटतवरतती रवी कासवसुतन सूर (चढती रती) ।—८५
धीर महचक्र रवि हस घरधूपरा (उगणा) दिवाकर (मेर गर ऊपरा) ,
प्रभाकर विरोचन अरक बहुरूपरा भाण गगनापती प्रकासतभूपरा ।—८६
करण, जमना, जनक* दीत सूरज कपी पीथ मणगयण जगदीप दनकर पपी ,
तपण दनमण किरण सपतसपती तपी अरुण खग वयळ जमजनक वनकर अपी ।—८७
छतरपत वरसरथ मित्र मेटणछपा अरीअधार जनगैण चोरणअपा ,
तिगमअस विभाकर(जगत राखण कृपा)करमसाखी प्रभू(करण भगता कृपा)।—८८

पुन सूर्य नाम

भासकर दुनियण भण जगसाखी (घणजाण) ,
मितश्रवता ग्रहपत (मुणा) मारतड अप्रमाण ।—८९
वौमतलक गग्गनवटी वेदउदय व्रहमाण ,
पदमनाभ तापण (पढो आखो) धुजअसमाण ।—९०
तेजपुंज (अर) विकरतन लोकवधु लखवान ,
(कह) रातंवर सहसकर भासवान भगवान ।—९१

दोहा

कळा अक दूणी कर'र, आद विखम भ्फड आण ,
सोळह सोळह तुक सकळ, मुहरा च्यार मिलाण ।—९२
सीखो वाचा जो सुकव, धारो एम घडोह ,
सो छोटा साणोररो, जाणू सावभ्फडोह ।—९३

गीत सावभ्फडो
चद्र नाम

रजनीपत चंद छपाकर राजा विधू भपत अगअक (विराजा) ,
सेतकर दुजपत सस साजा मोम चदमा नखतसमाजा ।—९४

---

* करण, जमना, जनक=करणजनक, जमनाजनक ।

सेतवाह सोळहकळस्वामी नेमी सुधाधरण ससि (नामी),
जगनराय दधसुत बुधजामी गोधर रातरतन नभगामी।—९५

पतउड इद ससीहर पीतू हिमकर तपस कमोदणहीतू,
जरण सेतदुत रोहण (जीतू) आतालछी कमळतन भीतू।—९६

राजाराज रयणपत राका पतओखद सद एणपताका,
छायावाळ (अमी रस छाका) निसकर मयक विधातनताका।।—९७

दोहा

सरव भेद साणोर री, राखी सोही रीत,
तवा दुवाळा तीनरो, गणू पखाळो गीत।—९८

गीत पंखालो

समुद्र नाम

सायर महराण स्रोतपत सागर दध रतनागर महण दधी,
समद पयोधर वारध सिंधू नदीईसवर वानरधी।—९९

सर दरियाव पयोनध समदर लखमीतात जळध लवणोद,
हीलोहळ जळपती वारहर पारावार उदध पायोद।—१००

सरतअधीस मगरघर सरवर अरणव महाकच्छ अकुपार,
कळग्रच्छपता पयध मकराकर (भाखा फिर) सफरीभडार।।—१०१

दोहा

अरध सावझड़ मैं अवस, मुहरा ह्वै सम मेळ,
पहली जो मात्रा* पढी, वैही अठै उजेळ।—१०२

गीत अर्द्ध सावझडो

अग्नि नाम

जोनक्रपीट छागरथ ज्वाला मंगळ आग अगन झळमाळा,
जातवेद आतस झळजीहा अगनी सुक्र पवनधणईहा।—१०३

परळैकरण धुवाधुज पावक वडवाअगन खडीवनखावक,
घासदेव वन्ही वैसदर हिरणरेत सम्हा वितिहोतर।—१०४

---

* १८, १६, १६

वायूसखा दहण हवबाहण हुतभुक अनळ हुतास हुतासण,
वहुल चित्रभानू हवि बरही हुतवह समीगरभ तमहर (ही) ।—१०५

वीरोचन सुचि रोहितवाहा सुसमा सखो जळण पतस्वाहा,
विभावसू (रु) कसानु (वखाणू) आस्रयआस घनजै (आणू) ।।—१०६

दोहा

आद अढारह तुक अखो, सोळह सब सपेख,
पहल दुवै चोथे पदै, दुरस मोहरा देख ।—१०७

तुका मिळै नह तीसरी, मोहरा सू इण माय,
रूपग जो इण रीत सू, सो झडलुपत सुहाय ।—१०८

गीत झडलुप्त

इंद्र नाम

देवापत सक्र सुरेस पुरदर अरजनपता बड़जा अदर,
ऊचीश्रवावाह आखडळ मघवा इद सुरगपत मदर ।—१०९

माघवान जभासुरमारण धन्वा उग्रवज्रराधारण,
वासव पाकरिपू वळवैरी वाहणमेह चढणमितवारण ।—११०

नैणहजार निरजरानायक देवसची - अपछर - सुखदायक,
परवतअरी नाहदिसपूरव सुनासीर सूरियद (सुहायक) ।—१११

अरीपुलोम अम्मराईसर देवाराज धारघर (दीसर),
जनकजयत जामनेमी जय सुरप (रोसघर) ब्रत्रअरी (सर) ।।—११२

दोहा

मात अठारा प्रथम तुक, आगै सोळह आण,
सोळह सोळह तुक सकळ, मीत त्रवंकडै गण ।—११३

गीत त्रबकडो

ब्रह्मा नाम

वेदोघर कमळसुतन विघ विधना अज चतुरानन जगतउपाता,
सतानद कमळासन सभू ध्रुव लोकेस पतामह धाता ।—११४

परजापत ब्रहमण पुराणग ब्रहमा ब्रहम वेह कवि बेघा,
सनत हमवाहण सुरजेठो मुखचवु आठद्रगन बडमेधा ।—११५

सुरसतजनक स्वयभू सतध्रत बेदगरभ अठश्रवण विधाता,
आतमभू सावत्रीईसर नाभीसभव कमन सुहाता।—११६

सत्यलोक गायत्री ईस क वेधस लोकपता (विख्याता),
हिरणगरभ विरची द्रूहिण द्रुघण विश्वरेतस (वरदाता)॥—११७

दोहा

आद कळा दसआठ री, तेरह मुहरा तोल,
रगण इणीमें राखजे, मोळह विसम सुबोल।—११८

रिधू नाम इण गीतरो, सीहचलो सपेख,
उदाहरण माहें अवस, दल नसचै कर देख।—११९

गीत सिंहचलो

देवता नाम

देवत गिरवाण सुधाभुज (दाखा) दाणववैरी देवता,
विवुध (वळे आखो) व्रंदारक सुरगी पुरियदसेवता।—१२०

निरजर कामरूप सुर नाकी अमर पूज (जग आखजे),
चरहीमुख अम्रतास विमाणग देव चिरायुस (दाखजे)।—१२१

स्वाहाग्रसण मरुत अदतीसुत वाससुमेर (वखाणजे),
सुपरवाण ऋतुभखण अस्वपन अनमिख समनस (आणजे)।—१२२

(आखो) लेख रिभू दिवओकस त्रिदस नलंप (तवाजजे,
रूड़ो देव नाम रो रूपग कवि निस दीह कहीजजे)॥—१२३

दोहा

पहल अठारा कळ पढो, दाख वळे खटदूण,
सोळह बारह तुक सकळ, राखीजै इण रूण।—१२४

मेळ पहल चोथी मिळै, मुहरा दु तिय मिलत,
अधक गीत सालूर इम, गुणियण नाम गिणत)।—१२५

गीत सालूर

कामदेव नाम

धानर्काफूल पचसरधारी नाथपूत रतिनायक,
सवरारि श्रीसुत सुमसायक अतन मच्छअसवारी।—१२६

दरपक कामदेव ह्रदोखी अगज मार अनगी,
अनिरुधपता मनोज अढगी अवळासेन (अनोखी)।—१२७
मधूसारथी आतम जोणी काम मदन झककेतू,
(है) प्रदुमन कद्रप मधुहेतू (सुरग गीत सब छोणी)।—१२८
कमन वळेसरणगारज (कहणू) मनमथ मैण (मुणीजै),
सुमनसधुज मककेत (सुणीजै) रागरज्जु (मनहरणू)॥—१२९

दोहा

पहली गण खटकळऽऽऽ०पढो; च्यार बखत कळच्यारऽऽ०,
मुणू बळे दुव मातरा, पुण चव तुका सुप्यार।—१३०
चवो उलाळा छदरी, दुरस अन्त तुक दोय,
अट्ठावी मात्रा अवस, इम क्रम छप्पय होय।—१३१

छप्पय

यमराज नाम

धरमराज जज्राट काळ जमराण महिखधुज,
मारतडसुत जज्र हरी अतक जमुनानुज।
सजमनीपत प्रेतपती जम विस्वकसहर,
धूमोरण दवखण (प* बळे) जमराज दडधर।
कीनास पितरपति अतकर समबरती (रु) कृतान्त (सह,
वावीस नाम सुकव्या सुणू जेम) मीच (जम नाम कह)॥—१३२

दोहा

धुग खट कळ दुव दोय धर, लघू एक कळ दाय,
कळ खट दो कळ गुरु कहो, हिक लघु दोहा होय।—१३३

दोहा

लक्ष्मी नाम

छीरोदधजा लाछ लछ दधसुतनी पदमा (ह),
रमा ई आ नारायणी लखमी मा कमळा (ह)॥—१३४

कुबेर नाम

नरवाहण जच्छप धनद अलकापत धनईस,
श्रीद सितोदर तीनसिर नरधरमा रनधीस।—१३५

---

* धूमोरणप, दवखणप

कुह वैसरवण रतनकर किंपुरुसेस कुवेर,
उत्तरदिकपति ईससख (घर कैलास सु घेर) ।।—१३६

स्वर्ग नांम

ऊरधलोक (र) पुरअमर सरग नाक सुरलोक,
देवलोक सुरथान दिव इदलोक सुरओक ।।—१३७

किरण नाम

रसमी सुचि असू किरण जोती गो दुति (जाण),
वसु प्रभा दीपति विभा भा मरीचि छवि (भाण) ।।—१३८

धूप-४, चंद्रिका-३ नाम

तावडो (सु) परकास (तिम) आतप ताव (अखंड),
चद्रापत (अर) चादणी हिमप्रकास (ब्रहमड) ।।—१३९

गरुड़ नाम

गुरड राजपत्री गरड़ वैनतेय विहगेस,
सरपअरी विनतासुतन खगराजा (र) खगेस ।—१४०
खगपत विखहा पखपत वज्रतुंड हरिबाह,
सुपरण अहिभुक कासपी तारख उनतीनाह ।।—१४१

दैत्य नाम

दैत असुर दाणव दनुज इन्दअरी सुर (एव),
सरवधू (अर) सुक्रसिस दतिसुत पूरवदेव ।।—१४२

राक्षस नाम

सभावळ दाणू असुर निकसासुत नसचार,
राकस कोणप रात्रिवळ करबुर नरखयकार ।।—१४३

वरुण नाम

जळपत संव्रत पुरजन अरणव मदिर (आख),
परचेतस जादसपती (वळे) वरुण (अव भाख) ।।—१४४

यक्ष-४, किन्नर-४ नाम

जक्ष पुण्यजन (फेर) जख वडवासी (विख्यात),
किन्नर मयु (अर) किंपुरुख तुरगवदन (कहतात) ।।—१४५

द्रव्य-८, सामान्यनिधि-५ नाम

विभव वित्त द्रव सार वसु हेम अरथ धरण (होय),
नधी कुनाभि निधान नव जवर सेवधी (जोय) ।।—१४६

नवनिधि नाम

महापदम चरचा मकर पदम कुंद (पहचारण),
कच्छप संख मुकंद (कह) नीला (नवनिधि जाण) ।।—१४७

अष्ट सिद्धि नाम

अणिमा लघिमा ईसिता प्रापति वसति प्रकाम,
(यत्र काम) अवसायिता ईसरता (अठ नाम) ।।—१४८

स्वामी कार्तिक नाम

गंगा, कृतिका, गोरि, सुत* सेनानी शिखिवाह,
महासेन खटमुख (वळे) गुह (अरु) तारकगाह ।।—१४९

आकास नाम

गैण वोम अंबर गगन आसमान आयास,
अंतरीक गैणाग (अर) आभ अभ्र आकास ।—१५०
निहग गयण खं वियत नभ गंगापथ ग्रहनेम,
पथछाया दिव विसनपथ उडपथ मारुत (एम) ।।—१५१

तारा नाम

उडगण तारा नखत उड तारायण भैं (तात),
उडू तारका (एम अख) नखतर (जिम नरखात) ।।—१५२

मेघ नाम

मेघ घनाघन घण मुदिर जीमूत (र) जळवाह,
अभ्र वळाहक जळद (अख) नभधुज (नाह) ।।—१५३

मेघमाला-२, अतिवृष्टि-२, मेघतिमिर-२, वर्षा-२ नाम

मेघमाळा कादंविनी अतिवरसण आसार,
दुरदिन वीकासी (दखो) व्रष्टी बरसण (बार) ।।—१५४

---

* गंगा, कृतिका, गोरि, सुत=गंगासुत, कृतिकासुत, गोरिसुत ।

ओळा-४, बादल-६ नाम

अमरा गडा ओळा करक धूमज वादळ (धार),
अभ्र वादळौ आभ (घर कहो वळे) जळकार ।।—१५५

बिजली-६, गर्जना-४, उल्कापात-१ नाम

बीज दामणी बीजळी तडता छटा तडाळ,
गाज कडक धूहड गरज उलकापात (अचाळ) ।।—१५६

सामन्य दिशा-४, पूर्व-१, दक्षिण-१, उत्तर-२, पश्चिम-२ नाम

दिक आसा चक्का दिसा पूरब दक्खरा (पाय),
उत्तर (वरो) उदीची (अथ) अपरा पच्छम (आय) ।।—१५७

अष्टदिकपाल नाम

इंद अगन जम असुर (अर) वरुण (बळे कह) बात,
अलकापत (इम) ईसवर (आठ दसा पत आत) ।।—१५८

पंच देव-वृक्ष नाम

पारजात मदार (पढ तत) कळव्रछ सतान,
हरिचन्दन (ए देव हरि पांच रूख पहिचान) ।।—१५९

दिन-६, रात्रि-१७ नाम

दीह दिवस परभात दन वासर अह (बुलवात),
निसा छपा जामनि उखा रजनी छरादा रात ।—१६०
रात्रि रातरी सरवरी त्रीजामार त्रिजाम,
तमवाली दोसा तमी बिभावरी ससिबाम ।।—१६१

सामान्य समय-७, अच्छा समय-५ नाम

समे काळ वेळा समय वखत अनेह बार,
आछी रूडी आसती चोखी भली (उचार) ।।—१६२

बुरा समय-११, जोरावरी-६ नाम

अवखी बुरी अनासती विखमी खोटी (बार),
जळावोल कूड़ी (जवर) माठि नमामी (धार) ।—१६३
नहरूडी (अर) नासती माडै जोरी मारा,
वरजोरी जोरावरी (ज्यू ही) जवरी (जारा) ।।—१६४

निमेष, काष्ठा, लव, कला, लेस, घड़ी वर्णन

मान अढार निमेसरो काष्ठा नामक जाण,
काष्ठा द्वै रो एक लव पनरा कळा पिछाण ।।—१६५
कळा दोय रो लेस ह पनरा खण मैं पेख,
निसचै छै खण नाडिका इद घडी घटि देख ।।—१६६

सायकाल-४, सध्या-४नाम

सवली उतसूर (सु कहो) साय (र) दिनअवसाण,
सझा सध्या साझ (कह) सभया (सरवस माण) ।।—१६७

रात्रिप्रारभ-३ पहर-४ नाम

रजनीमुख परदोस (है फेर) प्रदोस (पछाण),
पहर पैर (फेरू) प्रहर जाम (नाम एजाण) ।।—१६८

अंधकार नाम

तमर अधारो सतमस अध्कार अधार,
धरछाया अधातमस निसाचरम (नीहार) ।।—१६९

महीना-१, संवत-९ नाम

(पखवाडा दो ए प्रगट मुणू सदा हिक) मास,
(वारै मासा से वळे जाणू सवत जास) ।—१७०
सवत हायन वरस सम वच्छ सरत (वाखाण),
वच्छर संवच्छर (वले) जुगअसक (तू जाण) ।।—१७१

मार्गशिर-४, पौष-१, माघ-२, फाल्गुण-२, चैत्र ३, वैशाख-३,

जेष्ठ-१, आषाढ़-२ नाम

आगण सवतआद सह मंगसर (मास मुणत),
पोस माघ तप फालगुण फागण (फेर पुणत) ।।—१७२
(तत) चैत्रक मधु चैत (अख ज्यू) वैसाख (सुजाण),
माधव राध (र) जेठ (मुण अर) असाढ़ सुचि (आण) ।।—१७३

श्रावण-३, भाद्रपद-५, आश्विन-२ नाम

सांवण नभ (जिम) सावणिक भाद्रव भाद्र (भणोज),
भाद्रू भादव भाद्रपद इस कुवार आसोज ।।—१७४

कार्तिक-४, मार्गशिर-पौष-१, माघ-फाल्गुन-१, चैत्र-वैशाख-२, जेष्ठ-आषाढ-८, श्रावण-भाद्रपद-१ नाम

कार्तिक काती कारतिक बाहुल (वळे वखाण,
रत) हेमत (र) ससर (है) इष्य बसत (सु आण) ।—१७५
ऊन्हाळागम ऊसमक दाह (रु) तपत निदाघ,
ग्रीखम तप उसणागम (क वाखाणू) वरखा (घ) ॥—१७६

आश्विन-कार्तिक-२, प्रलय-१० नाम

सरद घणात्यय प्रळय खय सवरत्तक सहार,
परिवरत ख परळै प्रळै अंत कळप (उच्चार ॥—१७७

अमी-३, नित्य-७ नाम

(अखो) हनोज अवार अव नत प्रत सदा हनोज,
(वळे कहो इम) सरवदा (रख) हमेस नत रोज ॥—१७८

वचन नाम

वैण वयण कहवत वचन ब्रवै वोलडा वोल,
चवै जप ऊचरै मुणै गोय रट (मोल) ।—१७९
पुणै पयपै कथ पढ़ै वरण बकै भण (वाण),
कहै कहण प्रारथ कथन आखै भाखै (आण) ॥—१८०

वेद-५, चारवेद ४, षट्वेदाग-६ नाम

आमनाय श्रुति वेद (अर) निगम ब्रहम (निरधार),
रग जजु साम अथर्व (ए च्यार वेद उच्चार) ।—१८१
कलप निरुकती व्याकरण जोतिस सिकसा (जाण),
छद (नाम अ सब छ रो एम षडगी आण) ॥—१८२

चौदहविद्या नाम

अ गी खट आन्वीक्षिकी च्यारु वेद विचार,
धरमसास्त्र मीमास (धर और) पुराण अढार ॥—१८३

सामान्य वात नाम

वात उदत प्रव्रति (अर) समाचार समचार,
समाचरण व्रत्तात (सह) वार्ता (वळै विचार) ॥—१८४

बुलाना-५, शपथ-४, व्यवहार-२ नाम

हक्कारक हव हूति (कह) आकारण आकार,
सोगन सपन (रु) सपथ सप (है) बुहार व्यवहार ।।—१८५

प्रश्नवचन-३, सत्यवचन-६, मिथ्यावचन-२, स्तुति-८, निंदा-२ नाम

प्रच्छा अनुयोजन प्रसन समीचीन सत साच,
(आख) जथातथ लीक ऋत वितथ अलीक (सुवाच) ।—१८६

असतूती असतूत (अर) वरणन नुती वखाण,
सतवन परससा स्तुती निंदा नदा (जाण) ।।—१८७

कीर्ति नाम

पगी कीरत पागळी सेतरगी सोभाह,
सुसवद सतरगी सुजस प्रभा कीत प्रभात (ह) ।।—१८८

आज्ञा नाम

सासण (ओर) निदेस (कह सुणू) हुकम फुरमाण,
वासक निरदेसक (वळे इम) आदेश (सु आण) ।।—१८९

अगीकार-५, गान-६, नाच-७, बाजा-४, नाम

सवित सधा आसथा आश्रव अगीकार,
गीत गाण गधर्व (अर) गावण गेय सुगार ।—१९०

नाटक ताडव न्रत न्रत नरतन नटन सुनाच,
बाजो तूर वादत्र (है वळे) मैणधुज (वाच) ।।—१९१

फूंक के बाजे-१, तार के बाजे-१, ताल-मजीरा आदि १, चमडे से मढे बाजे-१, बीणा-४, बीणा अंग-२, वीणा दड-१, वीणा की खूंटी-१ नाम

(वसादिकरो) सुसिर (वक) तत घन (आदिक ताल),
(आद) मुरजआनद्ध (अव जोवो) वीणा (जाळ) ।—१९२

वेण बीण (अर) वल्लकी कोलवक (तिण) काय,
(वीणा दड) प्रवाळ (है) उपनह (वधण आय) ।।—१९३

नगारा नाम

त्रंबागळ त्रमाळ (है) भेरी दुदुभि (भाख),
जागी बव दुजीह (अर इम) नीसाण (सुआख) ।—१९४
त्रामागळ त्रामाळ (त्रिम) त्रबक (अर) त्रवाळ,
टामक (रु) त्रंमाट (है) डडाहड डडाळ ।—१९५
ईडक धूंसो (अख बळे दाखो ओर) दमाम,
(एम) त्रमाट (वखाण अर नरख) नगारो (नाम) ।।—१९६

नागरे का बजना नाम

त्रहत्रहिया गरहर त्रहक वज रुडवो रुड वाज
घुरियो घुरवो घोकियो नीधस डहक निहाज ।—१९७
जप धीह घुर वाजवो (फेर) रणाक (पढाव),
वाजण विजयौ वाजियो (निसचै कहो निवाह) ।।—१९८

शृंगारादि नवरस नाम

(रस) सणगार (रु) हस करुण वीर रुद्र (बाखाण),
भयानक (रु) वीभत्स (है) अदभुत सात (सु आण) ।।—१९९

अनुराग-४, हास्य-४, बहुत हसना-१, उपहास-१, शोच-३ नाम

राग प्रीत रति अनुरती हास्य हसन हस हास,
अट्टहास अपहास (अर) सोच सोक सुक (तास) ।।—२००

कोप नाम

क्रोध छोह रुट मच्छर कुप जाजुळ तायळ जोस,
धोम ताव क्रुध रीस धुव रोख (रु) अमरख रोस ।।—२०१

उत्साह नाम

उद्यम (और) उछाव (अख) उच्छव (बळे) उछाह,
आभियोग उद्योग (है एम) उमाव उमाह ।।—२०२

भय-९, भयकर-१३ नाम

भै डर भी अतक भय त्रास भीत सी त्राप,
भीम भयकर भीसम (रु) भीषण भैरव (भाप) ।।—२०३

भयाणंक दारुण (भणू) अध्यामण अकराळ,
घोर कराळअघोरघर विडरूप (रु) विकराळ ॥—२०४

आश्चर्य नाम

आसचरज अचरज अच्चरज अदभुत विसमै (आण),
फुल्ल अचभो (फेर पढ) विसमय (और वखाण) ॥—२०५

सतोष ३, स्मरण-६ नाम

धीरज सतोख (रु) भ्रती समरति (वळे सु) आद,
सुमिरण समरण (अर) समर (यू ही भाखो) याद ॥—२०६

बुद्धि नाम

बुद्धि चित धिसणा सुबुध धी मेधा मति धीय,
उपलवधी उकती उकत (जाणू) प्रतिभा जीय ॥—२०७

लज्जा नाम

लज्या लज्जा लाज लज व्रीड त्रपा विख्यात,
सकुचण (अर) सकोच (है) सरम (सदा सरसात) ॥—२०८

अप्रसन्न नाम

उणमण अणमण (आख अव) अप्रसन (अर) अवसाद,
वराजा वेराज (वद) वेदल दुमन (विखाद) ॥—२०९

निद्रा नाम

सवेसर निद्रा सयन सलय तद्रा स्वाप,
विनजागण (अर) नीद (वद) जुरा निदडली (जाप) ॥—२१०

याद करना नाम

अवळूडी (दाखो अवस आखो) रणक (उमाह),
ओळू डी अतलाग (अख) ओळू उतकठा (ह) ॥—२११

आलस्य-४, प्रसन्नता-४ नाम

कोसीद (रु) तंद्रा (कहो) आळस (अर) असळाक,
संमद चितपरसन्नता अणद प्रमोद (सु आक) ॥—२१२

गर्व नाम

मुठठ मजांज मरोड (मुण) गरवर गुमर गुमान,
गुररो मुरड गरूर (गिण) अहकार अभिमान ।—२१३

मनऊचो ममता (मुणू) मान दरप मगरूर,
मूवनही मद (अरु) टसक (पुणा) मगज छकपूर ।।—२१४

निर्वन्न-५, दीनता-२, परिश्रम-१० नाम

अवळ नवळ वळहीण (अख) दुरबळ निरबळ (दाख),
करपणता (जिम) दीन (कह) आयास (रु) श्रम (आख) ।—२१५

परीसरम तकलीव (पढ) खेचल मैंनत खेद,
प्रीश्रम (और) प्रयास (है भाख) कलेस (सुभेद) ।।—२१६

मृत्यु नाम

मोत काळ अन्तू मरण निधन समावण नास,
अमत मीच अवसाण (अर) जोखम वीसम (जास) ।।—२१७

मनुष्य नाम

मानव माणस नर मरद आदम मनख (सुआंण),
मानुस ना मनुज (रु) मनुस पूरख पुरुख (प्रमाण) ।।—२१८

बालक नाम

पोत पाक छीरप (पढो) बाळक टावर बाळ,
गीगो कूको गीगल्यो अरभक साव (उताळ) ।।—२१९

वृद्ध नाम

जीरण जरठ (रु) जावरो वूढो वूढळ (वाण),
डोकरडो (अर) डोकरो जरण वृद्ध (तू जाण) ।।—२२०

कवि नाम

पात व्रवण कवि नीपणा ईहग बीदग (आख),
गुणियण सुकवी मागणा भाणव हेतव (भाख) ।—२२१

कवराजा ताकव (कहो) रेणव (ज्यू) क्यवराज,
(दाखो) चाडव दूथिया जोडागुण जसजाज ।।—२२२

शासन नांम

आगाहट (अर) उदक (अख) सासण नेस (सुणात),
गढवाड़ा (फेरू गिणू) तावापतर (तुलात) ।।—२२३

पंडित नांम

पंडित अभिरूप (र) मुधी विचछन मेधावाळ,
कोविद क्रति क्रप्टी वळे (जपणवाणी जाळ) ।।—२२४

चतुर नाम

परवीण (र) सिच्छित निपुण नागर पटु निसणात,
कुसल चतुर क्रतमुख (कहो) अभिजाणण (तिमआत्) ।—२२५

मूर्ख नाम

मद मूढ (अर) मातमुख जड सठ बाळ अजाण,
जथाजात मूरख (जपो) अबुध (रु) जालम (आण) ।।—२२६

स्वाधीन४, पराधीन-४ नांम

सुतंतर (रु) स्वच्छंद (है) सुरुचि (वळे) स्वाधीन,
नाथवाळ निघनक (कहो) आयत्तर आधीन ।।—२२७

धनवान-४, संपत्ति-४ नाम

लछमीवाळ (रु) लच्छमण धणी ईसवर (धार),
लछमी श्री संपत (लखो) संपत्ती (सुविचार) ।।—२२८

दरिद्र नांम

रोर दळिद्र कुरिंद (अर) टोटो घाटो (आख),
कसालो (र) दाळीद (कह) दुरगत कीकट (दाख) ।।—२२९

स्वामी नांम

अधिप ईस प्रभू ईसवर इंद पती विभु (एम),
नायक स्वामी नाथ इन (जंपो) भरता (जेम) ।।—२३०

दास नाम

चाकर वेली चेट (चव) परिचारक परजात,
किंकर भ्रत (रु) करमकर अनचर दास (सु आत) ।।—२३१

शूरवीर नाम

सूर वीर सांवत सुभड जोरावर जोधार,
जोरावार (रु) जोमरद भिडज अरोडा (भार) ॥—२३२

भड़ खीवर रावत (भरण) मरद मुहड घडमोड,
घडामोड जंगजूट (घड) क्रोधगी (नहकोड) ॥—२३३

जंगसारधारण (जपो) सेनावेध (समाळ),
रिमादाट जोमंग (रट) जोसगी (रमजाळ) ॥—२३४

कायर नाम

कायर काचा कातर (क) पसकण डरपण पोच,
कादर (ज्यू) भीरू चकित (सुण अर) करणसोच ॥—२३५

कृपण-२०, दयावान-५ नाम

करपर करपण सूम (कह) नाटवाळ नाकार,
माठा दमजोडा (मुण) अदेवाळ अदतार।—२३६

करमठ्ठा लोभी (कहो) दलमाठा (र) अदात,
चठमठ्ठा (अर) सचगर अदावान कुच (आत।—२३७

पुण) चतमाठा (ओ) क्रपण द्रढमूठी (रु) दयाळ;
करुणाकर सूरत (कहो) कोमळचीत क्रपाळ ॥—२३८

दया नाम

करुणा अनुकपा क्रपा दया मया (तिम दाख),
महरवानगी महर (मुण) सुनजर करपा (साख)।—२३६

सुधानजर सुद्रष्ट (सुण भाणव इण विध भाख),

मारना-३२, काटना-६ नाम

मारण गजण मारिया अत (र) हृचतो (आख)।—२४०

भाज विहडण भाजियो घातक जोखम घात,
खडण हणै सिंहार खप आलभन वध (आत)।—२४१

पेलै नास खपावण भूभ पछाडै भाड,
मार (रु) हिंसा मारतो भागण दळै विभाड।—२४२

वाढरण चरजरण वाढ़ियो काटरण कटियो काट,
वढियो वेहर वाढियो त्राछरण मूछरण त्राट ॥—२४३

तोड़ना-३, मारने को तैयार-१, मृतक-५, कपटी-४ सरल-२, धूर्त-५ नाम

भागरण तोडरण भाजियो (अखो) आततायी (ह),
प्रेत परेत परासु (पढ) उपगत मुरदो (ईह)।—२४४
कपटी सठ अन्नजु निकृत सुधो सरळ (सुहात,
धूरत सठ वचक (घरो) कुहक (रु) जालिक (आत) ॥—२४५

ठगई-३ कपट-६ नाम

कुसृती माया सठ कपट छदम कूट छळ (आत),
उपधा व्याज (रु) मिस (अखो) कैतव दभ (कुहात) ॥—२४६

सज्जन-३, चुगलखोर-७, नाम

सज्जन साधू (है) सजन दोयजीह खळ (दाख),
करणेजप सूचक पिसुन नीच मच्छरिन (आख) ॥—२४७

चोर-३, दाता-२, दान-२६ नाम

चोर मोस (अर) चोरडो दाता (अर) दातार,
वगसै क्यावर (अर) अवै आलर दत आचार।—२४८
रीझ सुमोज वरीस (कह) समपीजै (रु) समाप,
त्याग समापरण दान (तिम) आलै मोजै आप।—२४९
करतव अपवरजन (कहो) वितरण देण प्रवाह,
उतसरजन अहति (अखो वोल) नवाज विदाह ॥—२५०

क्षमा-३, भरखपन-३, जोरावर-३६ नाम

खिचता धीरज (है) खमा भारीखवू (सुभाख),
खूदालम (अर) भरखव्र् (एम) अमावड (आख।—२५१
जपो) जोरावर जवर वामराड विकराळ,
जोरदार अखडैत (जिम कहो) सवळ लकाळ।—२५२
साड कराळ भ्रलीग (अर) अडीखभ अरडीग,
खागडा अनड ताखडा (जपो) जाजुळ धींग।—२५३

माझी (अर) वेढीमरण अतळीबळ ओनाड,
अनमीखध पू चाळ (अख) वका अनम विभाड।—२५४
नाटसाल अनमी (नरख आख) अरोड़ अठेल,
आपायत ऊवावरा एढा (खळा उथेल)।—२५५
अनडर डाकी (फेर अख) अडपायत अजरळ,
वडाळा (र वरियामरा भाणव सारा भाळ)॥—२५६

निर्भय नाम

अडर नडर अणभै अभै नरभै न्रभै नसक,
अभग अवीह अभंग (अर) अजरायल अणसक॥—२५७

ईर्षालु-२, ईर्षा-१, क्रोधी-४ नाम

कुह्न ईरखावाळ (कह एम) ईरखा (आख),
कोपवाळ क्रोधी (कहो) रोखरण (रोखी) (भाख)॥—२५८

भूख-४, प्यास ४ प्यासा-२, सोखना-२ नाम

रोचक भूख (रु) छुध रुची तस तरखा त्रट पान,
तरसित तरखावाळ (तिम) सुसवो सोसण (मान)॥—२५९

दाल-२, व्यजन-१, गुलगुला-१, मालपुवा-१, पतला लगावरा-१
सेव-१, बडा-१, गुड-६ नाम

दाळ सूप व्यजन (दखा) पूवा मालपुवा (ह),
तेवरा चमसी (तिम) वडा गोळ इच्छु गुड (गाह)॥—२६०

श्रीखड-१, दाल का रस-२, मिश्री-बूरा-२,
शक्कर-२, दूध-१२ नाम

सखरण रस्सो जोस (कह) मसरी सिता (मुणाय),
मधूधूळ (अर) खाड (मुण) दूध दुगध (दरसाय)।—२६१
पै गोरस जळमित पय जीवनीय सर (जाण),
रसउत्तम (ज्यो) छीर (कह) ऊधस अम्रत (आण)॥—२६२

दही-४, घृत-३, मक्खन-४ नाम

दध गोरस छीरज दही घरत हवी आधार,
माखरण (अर) नवनीत (मुण) सरज और दधसार॥—२६३

गुज्जी-रावड़ी-६, मठा-३ नाम

(वोलो) गुज्जी राव़डी काज़ी काजिक (आह),
कुजळ (वळे) (सुधीर) (कह) छाछ (रु) गोरस छाह ।।—२६४

तेल-३, राई-२, धनिया-१, सोंठ-२, हल्दी-२ नाम

तेल अभजन स्नेह (तव) असुरी रायी (आख),
धणु सूठ नागर (धरो) हळद (र) हळदी (दाख) ।।—२६५

मिर्च-३, जीरा-२, पीपर-२, हींग-२ नाम

कोलक़ बेलज मरच्च (कह) जीरक जीरो (आत),
पीपळ (अर) पीपर (कंहो) हिंगू हींग (सुहात) ।।—२६६

भोजन नाम

भोजन जीमण अद भखण असण ग्रसण आहार,
लेहण खादन-भख गलण अदन जखण घसि (आर) ।।—२६७

ग्रास नाम

कुवा पिंड ग्रासण कबळ- गाळा गुड (अर) ग्रास,
अदनचीज टुकडो (अखो) कवक गुडरेक गास ।।—२६८

लोभी नाम

लोभी अभिलाखुक लुबघ (व्रिखो) त्रष्णावाळ,
आसा अछा वाळ (अख)- लोलुप (अर) लोभाळ ।।—२६९

लोभ नाम

त्रष्णा काछा लोभ त्रट अभिलाखा आसा (ह),
काम मनोरथ ईह (अख) अछया व्रस इच्छा (ह)—।। २७०

कामी-३, हर्षित-२, दुचिता-५ नाम

कामवाळ कामी कमन हरखमाण हरख्याह,
वीचेतस दुरमन विमन (मुण) दुमनू -दुमना (ह) ।।—२७१

मतवाला-५, उत्कंठित ७, अभिशाप-४ नाम

मतवाळो उतकट (मुणु) छीव मत्त मदचाह,
ओळूवाळ (रु) उतक (अख) उतकठित (कह) आह ।—२७२

उतसुक ऊमरा (फेर अव चवो वळे) अतिचाह,
आक्षारित दूसित (अखो) अभिशप्त वाच्या (ह) ।।—२७३

बंधा हुआ नाम

वंधित वाध्यो बद्ध सित सयंत नद्ध सुहात,
निगडित अर संदानिकत कीलित (वळे कुहात) ।।—२७४

बधन-२, अनमना-२, तंगडाया हुआ-२, निकाला हुआ-१ नाम

वधरा (अर) उद्दान (वद) मनहत प्रतिहत (मारा),
प्रतीछिपत अधिछिपत भरा (जिम) निसकासित (जारा) ।।—२७५

हारना नाम

विप्रकार परिभाव (भरा वळे) पराभाव हार,
अभिभव अत्याकार (इम निसचै आख) निकार ।।—२७६

सुवक्कड-५, जागरण-२, वहमी-२, पूजा-२,
दडित-२, पूजित-५ नाम

सुपनक सयआळू सुपन नीदाळू नीदाळ,
जागरया (अर) जागररा वहमी सदेहाळ ।—२७७

अरचा पूजा अरहरा दड्यो दडित (देख),
अरहित अपचित अचित (ह) पूजित अरचित (पेख) ।।—२७८

नमस्कार नाम

नमस्कार वदन नमो प्ररगाम वद प्ररगाम,
अभिवादन आदेस (इम पढ) दंडोत प्रराम ।।—२७९

शरमिंदा-१, सिटपटाया हुआ-२, पूजा की सामग्री-२, पुष्ट-६ नाम

विक्लव विह्वल विकल (वद) वलि उपहार वखान,
पीवर पीवा पीन (पढ) पुसट थूळ पळवान ।।—२८०

दुबला-८, थोंदवाला-८ नाम

दुरबळ पेलव दूबळा अस (अर) करस (कुहात),
तलिन अमाम (र) छीरातन दूदवाळ (दरमात) ।—२८१

दूंदाळो (अर) दूंदळो उदरी उदरिळ (आत),
तुंदी तुंदिक तुंदिभ (र अहत कूंख विख्यात) ।।—२८२

नकटा-२, पगु-२, काना-३, कूवड़ा-२ नाम

नाकविहीण अनासिक (र) पगू श्रोण (पुणात),
काण कनन (अर) एकचख कुवज (र) गडुल (कहत) ।।—२८३

नाटा-३, वहरा-२, लगडा-३, कुवड़ा-२ नाम

खग्वसाख बावन खरव वहरो वधिर (वुलात),
खोडो खजक खोर (कह) अध आधळो (आत) ।।—२८४

रोगी-४, रोग ६ नाम

रोगवाळ आतुर (अपटु) रोगित रोगी (जाण),
रोग रुजा आतक रुग गद (अरु) अपाटव (गाण) ।।—२८५

घाव-४, खुरंट-२, शोय-३, औषध-६, वैद्य-८ नाम

व्रण छ्त चगदा घाव (कह) किण व्रणपद (सु कहात .
सोथ सोफ सोजो (कहो) भेसज तत्र (भणात) ।—२८६

अगद आयु औषध (अखो) वैद (नाम विख्यात),
भिसज रोगहारी (प्रभण) दोसजाण (दरसात) ।—२८७

(फेर) हकीम तवीव (पढ) जुररो नायत (जाण),
विसद नांव वैदाण रा एण रीत सू आण) ।।—२८८

विपत्तिवाला-२, विपत्ति-६ नाम

आपदथित आपन्न (अग) वपत विपत्ति (वखाँण),
आपद विपदा आपदा (जिम) आपत्ति (सुजाण) ।।—२८९

स्नेहवाला-२, सभासद-३, सभा-६, ज्योतिषी-२ नाम

नेहवाळ वच्छळ (नरख) सभावाळ (सूजाण),
समातार सामाजिका (अवै नाम) सद (आण) ।—२९०

आसथान परसत (अखो) ससत सभा समाज,
मूरतजाणणहार (मुण तेम) गणक (सिरताज) ।।—२९१

वंश नाम

अभिजण कुळ संतान (अख) गोतर गोत (गणात),
अनववाय अनवय इर्मांहि जनन कडंव (जणात) ।।—२९२

स्त्री नाम

तरिया तिरिया असतरी वाळा गोरी वाम,
अवळा बाळी अगना भामण सुंदर भांम।—२६३

जुवती प्रमदा जोखता जोसा रमणी (जोय),
महळी पदमण पदमणी रामा नारी (होय)।—२६४

भीरू जोसित भामणी अगनैणी तिय (मान,
तेम) कामणी (अर) त्रिया (जेम) महळ (सू जान ।।—२६५

बलैया-२, बलैया लेना-५ नांम

(मुण) वारणा भामणा भामी वारी (भाख),
वळ मरू (ओरू अखो) वारीजावण (आख) ।।—२६६

पत्नी नाम

प्यारी जोडायत प्रिया घण (सु) सुधारणधाम,
लाडी काता लाडली वधू वल्लभा वाम ।।—२६७

पति नांम

पत साहिब पीतम पती रमण कत भरतार,
धव साजन वालम वणी ढोलो पीव (सुढार)।—२६८

कथा खावद कथ (कह) नायक सैण (र) नाह,
वर भरता माटी वळे वरियत करणविवाह ।।—२६९

दुलह नाम

वीद दुलह बनडो बनू बर लाडो (विख्यात),
मोडवध (फेरू मुण) दुलह (नाम दरसात) ।।—३००

दुलहिन नाम

दुलहण दुलही दुलहणी बनडी बनी (वखाण,
देखो) लाडी वीदणी (जेम) लाडली (जाण) ।।—३०१

बराती-५, बरात-२ नाम

जानो जान्या जानियां (वळे) वराती (वाण,
ज्यू हि) जनेती (जाण ज्यो) जान वरात (सुजाण) ।।—३०२

विवाह नाम

जगन सुयवर त्यांग जग (मुग्ग) स्वयव विमाह ,
उपयम माडो (फेर अख वळि) उदवाह विवाह ॥—३०३

दामाद-६, जार-२ नाम

जमाता धीपत (जपो) धीप जमाई (धार ,
पत) दुखतर दुहितापति (जपो) उपपत जार ॥—३०४

पतिव्रता-३, व्यभिचारिणी-७, सखी-३, वेश्या-६ नाम

पतबरता (अर) एकपत इकपतनी (इम आख) ,
सुभचरिता साध्वी सती भामण कुळटा (भाख) ।—३०५
असती धरसण इतवरी वधकि अवनीता (ह) ,
सध्रीची आली सखी कचनी (र) कुलटा (ह) ।—३०६
गनका भगतण गायणी वेसा पातर (वाम) ,
रूपजीवणी (फेर पढ) नगरनायका नाम ॥—३०७

माता नाम

जणणी अवा मा जर्णी माता मादर माय ,
मायड मायी मावड़ी आई अमा आय (आय) ॥—३०८

बेटी नाम

कवरी लड़की डीकरी तनया पुत्रि सुता (ह) ,
वेटी धी (अर) डावडी (जिम) दुखतर तनुजा (ह) ।—३०९
समरधुका (अर) सारधू पुतरी (फेर पढाव ,
तात नाव आगळ तणी वेटी नाँव वणाव) ॥—३१०

पिता नाम

जणो जनेता जनीया वाप जनक (वखाण) ,
पिता तात वपता जामी (नाम सुजाण) ॥—३११

पुत्र नाम

पूत जोध नदन पुतर जायो सुतन सुजाव ,
छावो वेटो छोकरो धोटो नन्द (धराव) ।—३१२
(वळे) सिवाई डावडो सुत (र) डीकरो साव ,
तात सूनु कुळधर तनय अगज पुत्र (अणाव) ।—३१३

(वाळा तण ये दुव सबद[1] अगा नाम पित आत,
ईखो नाव दु ईहगा बेटा रा बणजात)* ।।—३१४

सामान्य संतति नाम

तुक प्रसूत सतति प्रजा तोक अपत सतान,
(आवै जो इण विध अवस सो सतति सामान) ।—३१५

पोता नाम

मोतो पोत्रो पोतरो दूजो बीजो (दाख),
वीयो दुवो (जांण बळे एम) अभनवा (आख) ।—३१६
हरा कळी घर (फेर) हरै (ओर) समोभ्रम (आण,
सुकव कळो घर रा सरब बारह नाम वखाण) ।।—३१७

पोती-३, सगा भाई-४, छोटा भाई-४, वडा भाई-६ नाम

पोती पोत्री पोतरी बंधव बधू (वेखू),
भ्रात सहोदर (फेर भण दुरस) करोठी (देख) ।—३१८
बधव लघुबधव अनुज जेठी जेठळ (जाण),
पहली भव (अर) पूरवज अग्रज जेठो (आण) ।—३१६

वहिन-३, देवर-२, ननद-३, सबधी-६, स्वजन-६ नाम

जामि सुसा भगनी (जपो) देवा देवर (दाख),
नणद (रु) नणदल नणदली बधव बधू (भाख) ।—३२०
स्वै सगोत्र जाती सुजन स्वै निज सुकिय (सुजाण),
आतमीय (जिम) आपणू (ओर) अप्पण (आण) ।।—३२१

देह नाम

तन पिंजर घड डील तनु करण कलेवर काय,
अग गात अग आतमा मूरत देह (पुणाय) ।—३२२
विग्रह घट वपु पिंड वप संचर तनू सरीर,
पुर पुदगळ (अर) पीजरो घूघर वेर (सुधीर) ।।—३२३

---

*पिता के नाम के आगे तण, वाळा आदि शब्द लगाने से पुत्र का अर्थ व्यजित होता है। जैसे—गुमनेसवाळो, गुमनेसतण अर्थात् गुमानसिंह का पुत्र।

मृतक-२, रुंड-धड़-२ नाम

(वनाजीव विग्रह वळै) कुणप (रु) म्रतक (कुहात),
(बिण माथा रो देह वद) रुंड कवध (रहात) ।।—३२४

अंग-४, मस्तक-१४ नाम

अवयव अपधन अंग (अख) सर भरकुट धू सीस,
करण त्राण माथो कमळ मसतक मुंड (मुणीस) ।।—३२५
मोली मूंड (रु) मूरधा उतवंग भ्रकुटक (आख),

मुख-१२, ललाट-भाग्य-१३, कान-१२ नाम

मूळो आनन लयन मुख दंतालय घण (दाख) ।—३२६
मूह घनोत्तम वदन मुंह वकतर तुंड (वखाण,
भाळ ललाड (रु) भोवरो अलिक ललाट (सु आण) ।—३२७
तालो गोधि नसीव (तिम) करम भाग तकदीर,
चाचर (वळै) अळीक (चव) श्रुती (नाम सुण धीर ।—३२८
कान गोस (अर) कानडा सरवण श्रवण (सुहात),
सवद, धुनि, ग्रह* श्रोत्र श्रव करण पिंजूस (कुहात) ।—३२९

भोंह-३, नेत्र-१३ नाम

भ्रूकुट भुंहारा भूंह (भण) द्रष्टि विलोचन (दाख),
नेत्र नैण लोचण नयण अवक लोयण (आख) ।—३३०
आख रूपग्रह चख (अखो) द्रग रोहज (दरसाव,
आखा रा कवियण अवस तेरह नाव तणाव ।—३३१

देखना नाम

जोवै भाळै जोयिजै लखै विलोकै देख,
सूझै ईखो सूजवै वेखो न्हाळै वेख ।—३३२
पेखै सपेखै (पढो) दीठो दरसण (दाख)
निरखरणन भासै नरख अवलोकन (इम आख) ।।—३३३

नाक नाम

नाक नासका नासिका नरकुट नासा (जाण),
गधजाण (अर) गधवह घोण गधहर घ्राण ।।—३३४

---

*सवद, धुनि, ग्रह=सवदग्रह, धुनिग्रह ।

होठ नाम

दातबसन (अर) रदनछद होठ अधर (इम होई ,
ओठ नाम ऐ ईहगा मुख रा मडरा जोइ) ॥—३३५

दात नाम

दात डसरा खादन रदन दुज रद दसरा (दिखात) ,
दंस दत दोलू (दखो एह नाम रद आत) ॥—३३६

जीभ नाम

रसरणा रसजारणरण रसन जीहा जीहा जबान ,
लोला रसमाता (लखो) जीभ (नाम ए जान) ॥—३३७

डाढ-४, गाल-३, मूछ-४ नाम

डाढ़ जभ दाढा डसा गल्ल (रु) स्रकवरण गाल ,
मूछ मुछारा मौंसरा (जोवो) मूछा (जाल) ॥—३३८

डाढ़ी-४, गरदन-६ नाम

खत डाढो डाढी खता ग्रीवा गावड ग्रीव ,
गळो नाडकी गावडी नाड वळे नस (नीव) ॥—३३९

हाथ नाम

करग आच भुज सुकर कर हसत पारण तस हात ,
पचसाख सय बांह (पढ) हाथ (रु) भुजा (कुहात) ॥—३४०

कधा-३, कक्षा-कखुरी ५, अगुली-२ नाम

अस खध भुजसीस (अख) ककसा खडिक काख ,
भुजकोटर भुजमूळ (भारण कह) अंगुळि करसाख ॥—३४१

पहुंचा-३, मुक्की-४ नाम

(इरण आगै)पूची (अखो) मरिण मरिणबध (मुरणाह) ,
ओडडी मूठी (अखो सुरण) मूकी सग्राह ॥—३४२

कुहनी-३, नख-७ नाम

कफरिण भुजाविच कूरपर माराकुस महाराज ,
नखर करज नाखून नख भुजकाटा (तस आज) ॥—३४३

छाती नांम

उर उराट छाती उरस मनघर वच्छ (मुणात),
भुजअंतर (फेर प्रभण) कोड (र) वकस (कुहात) ।।—३४४

हृदय-५, स्तन-५ नाम

हरदो थणअंतर ह्रिया असह मरमचर (आख),
उरमांडण थण कुच उरज (फेर) पयोधर (भख) ।।—३४५

पेट नाम

उद्र पेट तुंदी उदर जठर पिचंड (सुजाण),
गरभकूंख जाठर (गिणू फेरू) कूंख (पिछाण) ।।—३४६

कलेजा-३, आंत-४ नांम

जगर कळेजो काळजो आंत आंतडा अंत,
अंत्रावळ (रा नाम ए कवियण च्यार कहंत) ।।—३४७

फेंफड़ा-३, मन-६ नाम

कलो फेफरो फूकणूं चित चेतन दिल चेत,
मन माणस मनडो (मुणू) रदो दिलड़ो (हेत) ।।३४८

रोमावली-२, नाभी-३, कमर-३, मेरुदण्ड
रीढ़, नितंब-२, योनी-५ नाम

रोमलता रोमावली नाभी नाही नाह,
काचीपद कड़ कट कमर (त्रिक वसाव तथा ह) ।।—३४९
पूठवस रींढक (पढ़ो) पुत कडप्रोथ (प्रमाण),
भग मततिपथ जोणि (भण)वुलि वरअग (वखांण) ।।—३५०

लिंग-४, गुदा-३, जांघ-३ नाम

लिंग शिशनु लांगुल लगुल पायू गुदा अपान,
ऊरु साथल जांघ (अख) जानू गोडा (जान) ।।—३५१

घुटना-२, पिंडली-३, टखना-५ नाम

पीडी नळकीनी प्रसत चरणगाठ (पहचांण),
मुरच्या टक्कूण्या (जेम) गुलफ घुट (जांण) ।।—३५२

पैर नाम

चलण पाव ओयण चरण पै पग पद पय पाय ,
कदम अघ्र नग क्रम क्रमण (चउदह नाव चवाय) ।।—३५३

तलुआ-३, एधो, रुधिर-१६, मास-११ नाम

तळ ओयणतळ एडी घुटअध (घुटअध आण) ,
रगत रुद्र लोही रुधिर खून घतंज (बाखाण) ।—३५४

प्राणद आसुर रत्र (पढ) सोणत श्रोण (सुणात) ,
मासकरण नारग (मुण) अस्त्र विस्त्र रत (आत) ।—३५५

स्रोणित स्रोयण रुधिर(सुण) जगळ मास (जणात) ,
पलल मेदकर क्रव्य पळ कासप कीन (कुहात) ।
रगत, तेज, भव*(अर)तरस आमिख पिसित(अणात)।।—३५६

जीव-४, मेद-४, हड्डी-७, मास की हड्डी-१, मास की बोटी-२ नाम

वायहस (जिम) हस (वद) जीवक जीव जपत ,
मेद गूद गोतम वसा कीसक हाड कहत ।—३५७

असथी मेदज सार (इम) करकर मीजीका (र ,
घूरोहाड) करोटि (घर) बोटी बडी (वुलार) ।।—३५८

अस्थि-पजर-३, खोपडी-२ नाम

(असथी सारा अगरा कहो) करक ककाळ ,
(असथी) पंजर (फेर अख) करपर (अवर) कपाळ ।।—३५९

मज्जा-५, वीर्य-६, बाल-१५ नाम

कोसिक मीजी सुक्रकर असथन मज्जा (आख) ,
वीरज रेतस वीज वळ इद्री सुक्र (इमाख) ।—३६०

आणद, मीजी, उदभवन† पोरस धातु-प्रधान ,
रोम लोभ (अर) रूगटा वाळ केस विग्यान ।—३६१

वल्लिताग्र कुतल व्रजिन तीर्तवाक कच (तेम) ,
तुचामैल तनरुह (तवो) अस्र चिकुर कज (एम) ।।—३६२

---

* रगत, तेज, भव=रगतभव, तेजभव ।

† आणद, मीजी, उदभवन=आणउदभवन, मीजीउदभवन ।

वालों का जूडा-२, अलक-१, चमड़ी-७,
नस-२ नाम

जूडो मोळी अलक (जप) चरम चामडी चाम,
खाल तुचा छवि खालडो नस (अर) वसनस (नाम) ।।—३६३

छोटी नस-४, मैल-२, गीजड़-१, लार-२ नाम

नाड़ि धमनी नाडी सिरा मैल (रु) कीट (मुणात),
आखजटूसीका (अखो) स्रणिका लाळ (सुणात) ।।—३६४

मूत्र-४ मल-६ नाम

मेह मूत स्रव वस्तिमळ विड पुरीस विसटा,
मळ वरचस असुची समळ (भणू) गूह भिसटा ।।—३६५

स्नान-३, चंदन-५ नाम

झूलण गोळ सनान (जप) मलयज चनण (मुणात),
चदन रोहणद्रुम (चवो) गधसार (गधगात) ।।—३६६

जायफल-२, कपूर-४, कस्तूरी-१ नाम

जातीफळ (जिम) जायफळ सोमनाम घणसार,
करपूरक करपूर (कह) म्रगमद कहै (मुरार) ।।—३६७

केशर-५, पघडी-५ नाम

कसमीरज केसर रकत कूकूं कुकुम (धीर),
मुकुट पाघ मोळी (मुणू कह) करीट काटीर ।।—३६८

जेवर-४, गूंयना-५ नाम

अलंकार आभरण (अख) भूषण गहणूं (भाख),
गूथण ग्रथण गुंफ (गिण) रचना सद्रभ (राख) ।।—३६९

भुजबद-३, हाथ का गहना-५ नाम

भुजभूषण अगद (भणूं कहो वळे) केयूर,
करभूषण कटक (रु) कडा वलय अवाप (वहूर) ।।—३७०

करधनी-४, नूपुर-६ नाम

कम्मरसूत कलाप (कह) रसण मेखळा (राख,
ओयण आगै) कटक अख डण विध) अगद (आख) ।—३७१

तुलाकोटि रमछोळ (तिम) नेवुर नूपुर (नाव),
मजीरक मजीर (मरग) हसक (फेर सुहाव) ।।—३७२

कपड़े नाम

चैल वसरग अबर सिचय (अवर) पूंगरग (आग),
पट दुकूळ करपट पकड बसतर चीर (वखाग) ।।—३७३

अचल-४, ओढनी-२ नाम

(चव) अचल (इम) छेहडो पलो पटोली (पेख),
प्रच्छादन प्रावरग (पढ दुरस अनाहत देख) ।।—३७४

स्त्री का अधोवस्त्र-४, लहगा-३
नाडा-नीवी-२ नाम

अतरीय अधवसन (इम) निवसन उपसख्यान,
चडातक लहगो चलग उच्चय नीवी (जान) ।।—३७५

अगिया नाम

चोल कचुवै काचली आगी अगिया (आख),
कचुक काचू कचुळी (आठ नाम ये भाख) ।।—३७६

साड़ी-६, घूघट-४ नाम

साडी चोटी साटिका साडी साळू चीर,
घूघट छेडो घूघटी पल्लो (कहत पहीर) ।।—३७७

गठजोडा नाम

(चव) गठजोडो छेहडो वरजोडग वरजोड,
अचलबध (सु जाग इम जपै सायर जोड) ।।—३७८

कमरबद-२, गिलाफ-खोली-३, परदा-४ नाम

परिकर कमरदुकूळ (पढ) कुथ परितोम कहाग,
प्रतिसीरा (अर) काडपट जवनी अपटी (जाग) ।।—३७९

चदवा-४, रावटी-२, डेरा-खेमा-६ नाम

चद्रोदय उच्चोल (चव) कदय वितान (कुहात,
कहो) केगिका पटकुटी दूसय थूळ (दिखात ।।—३८०

गूडर डेरो (ग्रोर निग वेखो) सायीवान ,
(ज्योंही फेरू) सिविर (जप) तम्बू कदक वितान ।।—३८१

तृण-शैया-३, मेज-शैया-८ नाम

स्रसतर प्रसतर साथरो कसिपू तलप (कुहाय) ,
सैन सेभ्ह सय्या सयन सज्जा तलिम (सुहाय) ।।—३८२

पलंग-७, सिरहाना-२ नाम

पलग ढोलियो मच (पढ) माचो मचक (मान) ।
चोपायी परजक (चव) ग्रोसीसी ग्रपधान ।।—३८३

काच नाम

काच विमासी मकुर (कह) ग्रातमदरस (इखात) ,
सारगक ग्रादरस (ग्रख) दरपण (वळै दिखात) ।।—३८४

कंघा-३, ग्रासन-३, लाख-६ नाम

केसमारजन ककतक (फेर) प्रसाधान (पात) ,
ग्रासण त्रिसटर पीठ (ग्रख) लाखा (लखात) ।।—३८५

खतमेटण क्रमिजा (ग्रखहु) पलकसा जतु (पेख) ,
रगजननि राक्षा (रखो वळै) द्रुमामय (वेख) ।।— ३८६

ग्रलता, महाउर ४, कज्जल-३ नाम

ग्रालकतक ग्रालकत (ग्रख) जावक जाव (जपत) ,
दीपकसुत ग्र जन (दखो) काजळ (एम कहत) ।।—३८७

दीपक नाम

दीपक दीवो दीवलो दीप प्रदीप (दिखात ,
मुण) काजलकर घरमणी काजळधुजा (कुहात ।।—३८८

गेंद, खिलोना नाम

(क्रीडा बाळक कारणै) गेंदा गिरिगुड (गाय) ,
गिरिक गिरीयक गुड गिरि(सु) कदुक गेंद (कुहाय) ।।—३८९

पंखा-३, खस ग्रादि का पखा-४ नाम

वीजण व्यजणक वीभ्हणू ग्रालावरत (ग्रखात) ,
पखा पखी (फेर पढ) वावकरण (विख्यात) ।।—३९०

मंडलेश्वर राजा-२ चक्रवर्ती राजा-२, राजा पृथु-२ नाम

मंढम मंडळाधीस (मुण) सावरभोम (सुहात),
चक्करवरती (फेर चव) प्रथू वेणसुत (पात) ॥—३६१

श्रीरामचंद्र नाम

कोसल्यानंदन (कहों) दासरथी (कुळदीत),
अधमउधारण (जग अखै) रिधूराम (री रीत) ॥—३६२

सीता नाम

सतवती सिय धरसुता मिथलापतजा माण,
जेम) जनकजा जानकी (इम) विदेहधी (आण) ॥—३६३

लक्ष्मण नाम

रामानुज सोमित्रि (जप सुभ) लछमण (सूजाण),
सेस सुमित्रासुतन सुण बळे अनन्त (वखाण) ॥—३६४

भरत-२, सत्रुघ्न-४ नाम

भरत केकयीसुत (भणू) सत्रुघण (तिकण) सुजाव,
भरतअनुज सत्रुहण (प्रभण च्यार दासरथि चाव) ॥—३६५

वाली-वानर-२, सुग्रीव-२, हनुमान-२० नाम

इंदपूत वाली (अखो) सूरजसुत सुग्रीव,
पवननंद वजरंग (पढ) जपणरामपदजीव ।—३६६

हणूमान वकट हणू हडूमान हणवंत,
वजअंग (अर) वांकडो महाबीर हणमंत ।—३६७

(ललित) कीसवर लांगडो केसरिपूत कपीस,
वायनंद मारुत (वळे) अंजनीज जति-ईस ॥—३६८

रावण-१०, मेघनाद-५, कुंभकरण-३, विभीषण-१ नाम

दस्सकंधर दसमुख (दखो द्रढ) दसकंध (दिखाय),
रिखिपूलस्तसुत असुरपत रावण राकससराय ।—३६९

लकापत (अर) लकपत बीसभुजा (वाखारण) ,
मेघनाद घरणनाद (मुरण) अंद्रजीत (इम आरण) ।—४००

रावरिण मदोदरिसुतन कृभो कुभ (कहात) ,
कुंभकरण (फेरू कहो वळे) बिभीषरण (बात) ।।—४०१

लका नाम

कुनरणपुर लकापुरी लका लक (लखाय ,
पुरट नाम आगळपुरी नाम लंक वरण जाय) ।।—४०२

भीष्म-१२, युधिष्ठिर-११ नाम

गगकाज गागेय (गिरण) गगिकाज गगेव ,
सातनव (रु) सतनसुतन कुरुईस कुरुदेव ।—४०३

भीसम भीखम भीष्म (भरण) द्रढव्रत्ती (दरसाय) ,
धरमपूत जेठळ (धरो) सल्यअरी (सरसाय) ।—४०४

(फेर) जुजीठळ पडुसुत पडवेस पडीस ,
पाडवेय पाडव (पढो) कुतीसुत कुरुईस ।।—४०५

भीमसेन-६, अर्जुन-१७ नाम

भीमसेरण भीमेरण (भरण) जेठीपाथ (जरणात) ,
कीचक, वक, माररण* (कहो) भीमू भीम भरणात ।—४०६

(वळे) व्रकोदर बायसुत पारथ अरजरण पाथ ,
गुडाकेस पथ फालगुरण पारथ्थी पाराथ ।—४०७

सेतवाह जय बासवी व्रहनट बिजय (वखारण) ,
धनजै सुनर कपिधुजा (जेम) करीटी (जारण) ।।—४०८

सहदेव-२, नकुल-२, द्रोपदी-३ नाम

सहदेव सुमाद्रेय (मुरण) नकुळ माद्रिसुत (नाम) ,
पाचाळी (अर), द्रोपदी (वळे) पडुसुतबाम ।।—४०९

कर्ण-५, विक्रम-२ नाम

अगराज अरकज (अखो) चपापुरत (चवात) ,
भारणसुतन राधेय (भरण) वीकम वीक (वुलात) ।।—४१०

---

* कीचक, वक, माररण=कीचकमाररण वकमाररण ।

सहस्रबाहु-४, परीक्षित-३ नाम

कारतवीरज सहसकर हैहय अजण (सुहात),
परीछत (सु) प्रीछत (पढो) अभिमनपूत (अखात) ।।—४११

भोज-२, बलि ५ नाम

भोज उजैणीपत (प्रभण) इदसेन बळ (आत),
बली विरोचनसुत (वळे) वैरोचन (विख्यात) ।।—४१२

राज्य के सात अग नाम

स्वामी कामेती सुहृत देस दुर्ग बळ (दाख,
इण विध फेरु) कोस (अख राज अग ऐ राख) ।।—४१३

छत्र २, चवर-५ नाम

आतपवारण छत्र (अख) बाळव्यजण (वाखाण),
रोमगुच्छ चामर चवर (जिम) चम्मर (सू जाण) ।।—४१४

कामदार नाम

कामदार कामेति (कह) सचिव प्रधान (सुजांण),
मत्री मूसायव (मुणूं) व्याप्रत (अर) दीवाण ।।—४१५

चोबदार नाम

द्वारपाळ दडी (दखो धरो) वेतधर धार,
वैत्री उतसारक (बळे) प्रतीहार प्रतिहार ।।—४१६

रसोई का दरोगा-२, रसोईदार-६ नाम

सूद रसोयीईस (अख) आरालिक गुण (आत),
भुक्तकार ओदनिक (भण) सूप सूद (दरसात) ।।—४१७

अवरोध-६, शत्रु-२८, बैर-३, मित्र १२, मित्रता-४ नाम

अन्तेवर सुद्धान्त (इम) अवरोधन अवरोध,
भीतर अतेउर (प्रभण) सत्रू सात्रव (सोध) ।—४१८

अरियण वैरी अरि अरी दोयण दुसमण (दाख),
पिसण सत्र सात्रय (पढो) अरहर रिमहर (आख) ।—४१९

सत्राटा केवी दुमह अमुहर विया अयार ,
वैरीहर खळ (अर) विपख रिपु अरिंद रिम (धार) ।—४२०

असहन दोखी अहित (इम) वैर विदोख विरोध ,
मीत मित्र मत्री सुमन सवय सनेही (सोध) ।—४२१

साथी हेतू (जिम) सखा सज्जन नेही सैंण ,
सोहारद सोह्रद (सुगु सगत वळे) सुवैंण ।।—४२२

गुप्तदूत-५ दूत-८, पत्रदूत-३, दोहाई-२ नाम

मत्रजाण अवनरप (मुण) चर हेरिक (इम) चार ,
चर हलकारो दूत (चव) कहणससेनो कार ।—४२३

धावण खवरी चार (धर) पत्रपुगावण (पेख) ,
कासीदक कासीद (कह) आण दुहाई (एख) ।।—४२४

पराक्रम-४, गुप्तमत्र-सलाह ४ नाम

पराकरम प्राक्रम (प्रभण) पोरस विक्रम (पेख) ,
आळोचण आलोच (इम) रहसि मत्र (अवरेख) ।।—४२५

रजपूती नाम

माटीपण छत्रीधरम रजवट रजपूती (ह) ,
खत्रीवाट (र) खत्रवट खत्रवाट (अखणीह) ।।—४२६

एकान्त-४, न्याय-४, मर्यादा-२,
अपराध-६, राजकर-४ नाम

केवल छत्र इकत रह न्याय कलप नय न्याव ,
मरजादा मरजाद (मुण) आगस हेलन (आख) ।—४२७

अपराधक अपराध (अख) बिप्रिय मतु (विचार) ,
भागधेय बलि कर (प्रभण) हासल (द्रव्य विहार) ।।—४२८

फोज-१७, सेना का पडाव-१, सेनापति-६ नाम

घैसाहर हेजम घड़ा कटक अनीक (कुहात) ,
तंत्र चाक चतुरगणी सेना सेन (सुहात) ।—४२६

वळ दळ प्रतना वाहणी फोज दड चमु (फेर ,
डण री थिति हू) सिविर (अख) कटकईस वळ (किर) ।।—४३०

फोजमुसायब्र सेनपत सेनानायक (सोय),
फोजदार चतुरगपत हैजम, चमू, प* (होय) ।।—४३१

सेना का अगला भाग-४, सेना का पिछला भाग-१ नाम

(अणी चमू री आगली) हरवळ मोर हरोळ,
मोहर (जिणनू फेर मुण चव पाछै) चदौळ ।।—४३२

सेना का दाहना भाग-१, सेना का बाया भाग-१ नाम

(जप वगल वळ जीवणी) रोसन (नाम रहात,
वळे फौज वाई वगल) चपक (सु नाव चवात) ।।—४३३

सेना की चढाई-४ ध्वजा पताका-५
झडा-३, पालकी-४ नाम

सज्जण उपरच्छण सजण सझण (अवर सुहात),
धुजा पताका (फेर) धुज केतन केत (कुहात) ।—४३४

(धुजाडड) झडा (धरो) नेजा (अर) नीसाण,
(पढ) चोपालो पालकी सिविका पिन्नस (जाण) ।।—४३५

गाडा-३, गाडी २, पहिया-५ नाम

अन गाडो (जिम)सकट (अख) सकटी गाडी (सार),
पहियो पैडो चक्र (पढ) अरि रथाग (उपचार) ।।—४३६

पहिया की नेमी पूठी-३, धुरी-२,
पहिया की नाह-४, जुआ-२ नाम

धारा पूठी नेमि (धर) अणी धुराई (आत),
नाही नाहू नाभि ना जूडो जुगक (जणात) ।।—४३७

जुआ का निम्न भाग-२, यान मुख-२,
झूला-३, झूलने वाला-२ नाम

परजूडी प्रासग (पढ) धरसूडो धुर (धार),
हीडो झूलो हीचणू हीडण झूलणहार ।।—४३८

वाहन-सवारी-३, गाडीवान-२, सवार-४ नाम

धोरण वाहण यान (धर) यत सागडी (आख),
अस्ववार असवार (इम) सादी तुरगि (समाख) ।।—४३९

*हैजम, चमू, प=हैजमप, चमूप ।

घोडा उठाना-३, घोडे की अयाल-२, तवेला-१, जीन-४ नाम

(अख) कोमखी ऊपड़ी (फेर) उपाडी (पेख),
याल केसवाळी (अखो) असमाला (अवरेख) ।—४४०
(फेर) तवेलो पायगा जीण छेवटी (जाण),
काठी (इण सवध कह पढज्यो फेर) पलाण ।।—४४१

लगाम-४, घोड़ों का झुंड-२, साईस-२ नाम

लवच्छेपणी वांग (अख गावो) कुसा लगाम,
कारवान (अर) हेड (कह) पाडू सइस (प्रकाम) ।।—४४२

हाथी का सवार-१, हाथी का सेवक-३, अंकुश-३, सांकल-२ नाम

(हाथी रा असघार हूं नरख) निसादी (नांम),
मावत आधोरण (मुण) कुंभीपाळक (कांम) ।—४४३
आंकस (अर) गजवाग (अख) मावतससतर (मान),
आंई डगवेडी (अखो थिर गज राखण थान) ।।—४४४

सुभट नाम

मोहड खोवर भड सुहड़ भट रणमल्ल भड़ाळ,
सुभड़ वीर सावत सुभट भीच (र) जोधा (भाळ) ।।—४४५

कवच-१६, टोप-३ नाम

कोच जरद कंकट कवच कुंगळ कंग (कुहात),
वरंगोळ कडियाळ (वद) माठी दस (मुणात) ।—४४६
वरंग जगर वगतर वरम (सुण) वरम्म सनाह,
सिरत्राण (अर) सीरसक (पढ़) उतवंगपनाह ।।—४४७

पेट का बंधक-२, करस्ताना-२, लोहे की जाली ३-नांम

उदरत्राण नागोद (अख) वाहुल वांहूत्राण,
(जपो) जाळी जालिका (फेर) राखणीप्राण ।।—४४८

शस्त्र-६ नांम

ससतर असतर (इम) ससत्र आवध आयुध (आंण),
प्रहरण लोह हथ्यार (पढ जिम) हथियार(सु जाण) ।।—४४९

सिपाही-३, धनुर्धर-४ नाम

आवधवाळो आवधी (और) सिपाही (आख) ,
धानकी धनुधर (धरो) धनुभ्रत धन्वी (भाख) ।।—४५०

धनुष नाम

धनु पिनाक कोडड (धर) कोडडीस कुवाण ,
चाप सरामन वाण (चव जेम) सरासण (जाण) ।।—४५१

(अर) अढारटकी (अखो) धेनु तुजीह (धरात) ,
पैनाक (रु) सारग (पढ) कोमड धनख (कुहात) ।।—४५२

पणच-७, तीर-१४ नाम

मुरवी जीवा गुण (मुण) वाणासण (वाखाण) ,
पणच द्रुणी सजनि(पढो)विसिख तीर सर (वाण) ।—४५३

पत्रवाह पत्री प्रदर तुक्को सायक (तिम) ,
ककपत्र खग काड (कह) जिम्हग आसुग (जेम) ।।—४५४

पख-५, वाण का टाटवा-२, भाथा-२ नाम

पंख वाज (अर) पांखडा पाखा पक्ष (पढाव ,
तवो) पुंख (अर) करतरी सरधि निखग (सुवाण) ।।—४५५

म्यान नाम

परीवार इमकोस (पढ धर) तरवारपिधान ,
चद्रहासघर (फेर चव मुण) सस्त्रघर म्यान ।।—४५६

ढाल-५, ढाल पकडने का-२, छुरी-२ नाम

आडण खेटक आवरण ढाल चरम (पढ एम) ,
हथवासो सग्राह (मुण) जडळगधी छुरि (जेम) ।।—४५७

कटारी नाम

(आख) त्रिजड अधियामणी वादळी वाढाळ ,
(जिम) सुजडी विजडी (जपो मुण) पट्टिस प्रतिमाळ ।—४५८

प्रतिमाळी जमडाढ (पढ जेम) जडाळी (जाण) ,
दुजडी दुवधारी (देखो एम) दुवारी (आण) ।—४५९

भोगळियाळी (फेर भरण) भोगळियाळ (भरणेह),
धाराळी कट्टार (धर) अणियाळी (आणेह) ।।—४६०

भाला नाम

कूंत त्रिभागो सेल (कह) नेजो (अर) नेजाळ,
साबळ गाजो सागडो छडवाळो छडियाळ ।—४६१
वरछो वास दुधार (वद चव) भालो चोधार,
प्रास छडाळ (रु) नेत (पढ) दुवधारो दोधार ।।—४६२

वरछी-५, चक्र ३, त्रिशूल-२, बज्र-६ नाम

वरछी सकती साग (वद) सावळ कासू (धार),
चक्र चकर चक्कर (चवो) सूल त्रिसीस (सुहार) ।—४६३
वज्र इदससतर वजर अद्रससत्र (क आख),
पवी सक्रधरण भिदुर (पढ) असनी असनि (इमाख) ।।—४६४

तोप-४, वदूक-४, युद्ध-३६ नाम

सोरभखी नाळी (सुण) आगजत्र (इम आख),
तोप तुपक वदूक (तिम) सोरभखी (जग साख) ।—४६५
अगनजत्र (ओरूं अखो) आरण आहव (आख),
कळहण भारत जुध कळह रोळो कजियो (राख) ।—४६६
सामरात राडो समर रण समहर आराण,
(जम) धकचाळा घमगजर प्रहरण रिण पीठाण ।—४६७
आहर द्रोमज वेध (इम भण) दमगळ भारात,
लडबो आहुड जग लड हूचक आजि (कुहात) ।—४६८
सगर विग्रह कळि (सुण) सपराय सग्राम,
आकारीठ (र) जुद्ध (इम) झगड़ो रीठ (जुधाम) ।।—४६९

डाकू नाम

धाडी डाकू धाडवी (पढो) धाटि परपात,
झोकायत अवकद (जप) धाडायत (धरात) ।।—४७०

डाका-३, रात का डाका-३, युद्ध मे से मागना-५ नाम

धाड़ो डाक (रु) धाड (धर रातमाहि) रत्याव,
रातावाह सुपतिक (रखो) समुद्राव सद्राव ।—४७१

मूर्छा-२, हारना-३, जीतना-३ नांम

द्राव पलायन द्रव (दखो) मोह मूरछा (मान)
हार पराजै अजय (हव) जै यज विजय (सु जान) ।।—४७२

बदला लेना-४, दगा छल-३ कारागृह-२ नाम

वैरवहोडण वैरसुध आटो आटल (आत),
चूक दगो (प्रच्छन्न) छळ कारा चार (कुहात) ।।—४७३

खैंचना-४ घुसना-८ नाम

ताण खैंच अंचण तमक परठै पँस (पढाता),
घसे पैठ पैसण धसण उळै वडै (इम आत) ।।—४७४

दबाना-३, बराबर-६, बराबर वाला-१३,
छोडना-६, ओसान-४ नाम

भीचण दावै भीच (भण) सरभर सरवर (सोहि),
ईढ वरोवर मीढ (अख मुण) समवड मम (जोहि) ।।—४७५
(वळे) तडोवड (एम वद ओर) समोवड (आख),
समवडिया समवड समी (जाडी) जोडा (भाख) ।।—४७६
समोवडया (अर) सारसा वरोवर्या (वाखाण),
सारीसा सरखा (सूण जेम) जोरडा (जाण) ।।—४७७
सारीखा (अर) सारखा तडोवड्या (कब तेम),
मोखण पहडै मोख (मुण) छोडण छूटो जेम ।—४७८
छूट वछूटो छोडियो खूटो (फेर वखाख),
उरजस वख ओसाण (इक वोल वळे) अवसाण ।।—४७९

कैदी ५, कैद करना-६ नाम

प्रग्रह उपग्रह बद्य ग्रह ग्रहक (सु पाच गणान्न),
कैद जेर रोकण रुकत वध अटक (वरणाव) ।।—४८०

हठ-७, शक्ति३ स्थिर-६ यत्न-३, मानना-२ नाम

आट टेक अडवी असण हट हठ पसभ (सुहात),
समरथ पूछ (रु) सामरथ अडग रिधू थिर (आत) ।—४८१
(चव) अडोल नहचळ अचळ ध्रुव अवचळ घू (धार),
जतन सुरच्छा जावती समजण मानण (सार) ।।—४८२

तय्यार-३ ललकारना-६ नाम

भीड तयार (रु) सझ (प्रभरण) वातळव वतळाव ,
(एम) हकाल वकार (अख जप) छेडै (रु) खजाव ॥—४८३

जोड़ना-३, प्रमाण-२, मिलना-३, आना-जाना-१ नाम

जोडरण साधरण जोड (जप पढ़) प्रमारण परमारण ,
मिळरण (ओर) भेटै मिळै (वोल विहारण) विहारण ॥—४८४

दोनो ओर-३, जलना-४, मुरदे को आग में फेरने की लकडी-१ नाम

(वदो आवरत) सावरत दोयराह दहु राह ,
वळरण जळरण बळवो वळै चीघरण (चाळवियाह) ॥—४८५

पकडना-पकडाना नाम

झालै झेलै झालिया ढाबै गहै ढवाव ,
(लखो) झलाया झेलिया साहै (फेर) सहाव ॥—४८६

शस्त्र चलाना नाम

पछटी वाही पाछटी जडकी (मारव) जाड ,
एमजड़ी (अर) आछटी धींवी बही (सुघाड) ॥—४८७

साथ-३, समूह-१० नाम

साथे साथ (रु) लार (सुरण) सहित (वळै) समूह ,
प्रकर थाट गरण थोक (पढ) जूथ भूल व्रज जूह ॥—४८८

उलटना-४, खडा रहना-४, चलना दौडना-१४ नाम

सालुळिया (अर) सालुळै उलटै उलटरण (आरण) ,
ऊभो ठाढो (इम) खड़ो भटकै भाजरण भाख ॥—४८९

चालै हालै गमरण (चव) हीडै वहै विहार ,
चलरण न्हाम्रण खडरण (चव सुरण) अट खडै सिधार ॥४९०

पागल नाम

वेडा गहला वावळा काला मसत (कुहात) ,
चळचत वावळ विकळचत गहलो उनमत (गात) ॥—४९१

पछताना-२, संपूर्ण-७ नाम

पछतावरण पछताव (पढ मुणूं) सरव तम्माम,
सगळो सपूरण सकळ पूरण सारो (पाम) ।।—४६२

चहु ओर नाम

चोगडदा चोफेर (चव) चोतरफां चहु कोर,
चहूकूट चोमेर चव चहुकानी चहु ओर ।।—४६३

उमर-५, अच्छा-१३ नाम

आवरदा आयुस (अखो) आयू ऊमर आव,
आछ्यो उत्तम ऊमदा सुंदर सैर (सुहाव) ।—४६४
वर तोफा श्रेसट (बळे) रूडो रूपाळो (ह),
ठाळो सखरो पूठरो (आखो इम) आछो (ह) ।।—४६५

अप्सरा नाम

अच्छर अपछर अपछरा अछरा अछर (अखात),
पुरी सुरगबेसा (प्रभण) बारग हूर (विख्यात) ।।—४६६

हिन्दू नाम

वेदक आरज देव (अख) हीदू हिंद (सुणात,
सुकबी हीदू रा सरव पचक नाम पुणात) ।।—४६७

ब्राह्मण-१३, जितेंद्रिय-४ नाम

मुखसभव जोसी मिसर दुज भूदेव दुज्जात,
(पढो) गोरजी पाडियो बाडव विप्र (वुलात) ।—४६८
वेदगरभ बामण (बळे अवर) बरामण (आण),
सात समन(अर)श्रात (सुण)जितइद्रिय (जिम जाण) ।।—४६६

शुद्ध आचरण-४ जनेऊ लेना-३ नाम

अवदान (रु) आचरण (अख) करमक सुद्ध (कुहात),
उपनाय (र) उपनय (अखो) वटूकरण (वुलवात) ।।—५००

जटा-३, यज्ञ-११ नाम

जटा सटा जपता (जपो) जगन सत्र सव जाग,
तोम सपततंतू ऋतू यग्य मन्यु मख याग ।।—५०१

समिध-ईंधन-५, भस्म-५ नाम

समित भेध एधस (अखो) इन्धण तरपण (आख),
भूती वानी राख (भण) भसम छार (इम भाख) ।।—५०२

परशुराम नाम

फरसवरण भ्रगुपत फरस दुजराजा दुजरांम,
फरसरांम दुजराज (पढ़) राम (रु) परसूराम ।।—५०३

नारद नाम

रिखीराज नारद रिखी देवरिसी (दरसात),
कलिकारक पिसुनी (कहो) सतभ्रसुत (सरसात) ।।—५०४

विश्वामित्रनांम

गांधिपूत कोसक (गिणू) विसवामत्र (वुलात,
कहो) त्रिसकूजगनकर (तिम) गाधेय (तुलात) ।।—५०५

वेदव्यास नाम

वेदव्यास माठर (वदो) पारासरय (पढात),
ल्या वादरायण (वळे) जोगनगधाजात ।।—५०६

सत्यवती-३, वाल्मीकि-४ नाम

सत्तवती (अर) वासवी जोजनगधा (जाण),
वालमीक वलमीक (वद) आदकवी कवि (आण) ।।—५०७

वसिष्ठ-३, वसिष्ठ की पत्नी-२ नाम

अरुंधतीस बसिष्ट (अख) ब्रह्मापूत (वखाण),
अखमाळा (रु) अरुधती (जिण री महळा जाण) ।।—५०८

व्रत-४, उपवास-२, आचार-३ नाम

वरत नेम (अर) नियम व्रत उपवसत (रु) उपवास,
चरण चरित आचार (चव तीन नाम कह तास) ।।—५०९

जनेऊ नाम

जग्यसूत उपवीत (जप वळे जयन) उपवीत,
ब्रह्मसूत (फेरूं वदो राख) पवित्र (सुरीत) ।।—५१०

क्षत्रिय नाम

छत्री षत्रिय छत्र (चव) खत्रिय खत्री (आख),
आचप्रभव रजपूत (अख) राजपूत (इम राख) ।।—५११

वैश्य-१३, वाणिज्य-४ नाम

विस वाण्यू (अर) वाणियो वणक कराड वकाल,
आरज साहूकार (अख) ऊरुज साह (उताल) ।—५१२

सेठ महाजन भारसह (पढ इणरो) वोपार,
वाणिज (ज्यूंही) वणज (बद) साचभू टकर (सार) ।।—५१३

मोल-३, मूलधन-४, ब्याज कावन-३नाम

मोल अरघ मूलय (मुणू) परिपण पडपण (पेख,
दोखो) मूळ (रमूळ) द्रव लाभ कळा फळ (लेख) ।।—५१४

वेचना-३, एक-६ दो-६, तीन-७, चार ७ नाम

विक्रय विपणक वेचवो हैकण एकण (होय),
एक हेक इक पहल (अल) दो दुव वे जुग दोय ।—५१५

उभै तीन त्रण (अखो) त्रि मुर त्रहू गुण (तेम),
च्यार चतुर चत्रु चत्र चव (जप) चो चारू (जेम) ।।—५१६

पाच-४, छ-४, सात-३ नाम

पाच पच सर तत्व (पढ) तीनदूण खट (तात),
छै रस (इम फेरू चवो सपत सत्त (जिम) सात ।।—५१७

आठ-४, नौ-१० नाम

आठ वसू चउदूण अठ नाडी नव निधि नोय,
नौ ग्रह अक (सु) नाग (अख जेम) खड गो (जोय) ।।—५१८

जहाज-५, नाव-७ नाम

पोत जिहाज वहित्र (पढ) महानाव महनाव,
तरणी तरि बेडा तरी नोका तूगी नाव ।।—५१६

डोंगी-४, भारवाही-१ नाम

वेडो (अनै) वहित्र (वद) भेळो डूडो (भाख,
काठ नीरवहणी सुकव) द्रोणी (जिणनू दाख) ।—५२०

डाड-२, घडनाव-२, नाव की उतराई-१ नाम

(वदो खेपणी खेवणी कोल तरड (कुहात ,
उतरायी रा आथरो) आतर (नाम सुहात) ।।—५२१

व्याज-३, ऋण-३, भरणा-२, ऋणी-२ नाम

व्रद्धि कलातर व्याज (वद) रण रिण (अर) उद्धार ,
आपमितय भरणू (अखो) धुरियो ग्राहक (धार) ।।—५२२

वोहरा-१, जामिन-२, साक्षी-३, रहन-बंधक-२ नाम

(उत्तम) रणदायक (अखो) प्रतिभू जामन (पेख) ,
साखी थेयक सायदी वधक धरणू (वेख) ।।—५२३

माशा-१, कर्ष (तोल)-२ नाम

(पचम गुंजा रो प्रगट) मासा (मान गणात ,
सोळह मासा रो सदा) करस (र) अक्ष (कुहात) ।।—५२४

पल-१, अक्ष-१ विलत-१ नाम

(करस च्यार) पळ (मान कह) सुवरण (मान सुणात ,
हिक पळ मान सु हेमरो मतकुरु) विसत (मुणात) ।।—५२५

तुला-१, भार-२ नाम

(पळ सत फेर प्रमाण रो) तुळा (नाम तोलात ,
तुळा बीस रा तोल रो) भार सलाट (भणात) ।।—५२६

आचित-१,हाथ-१ नाम

(रिधू अवै दस भार रो) आचित (नाम उचार ,
आगळ च्यार रु वीस अव वेख) हसत विसतार) ।।—५२७

दड-१, कोस-१ नाम

(मुणू च्यार कर मानरो) दंड (नाम दरसात ,
दोय हजारक दड जो सको) कोस (सुर सात) ।।—५२८

दो कोस-२, योजन-१ नाम

व्व्यूती गोरुत (गिणू मान दुकोस प्रमाण ,
च्यार कोस चा मान रो) जोजन (नाम सजाण) ।।—५२९

गायों का स्वामी-२, ग्वाल-७ नाम

गोमान (रु) गोमी (कहो) गोदुह गोप गुवाळ,
(अख) अहीर आभीर (इम) गोपाळक गोपाळ ॥—५३०

किसान नाम

खेत—जीव खेती हळी करसो करसक (जाण),
करसुक खेतीवळ (कहो) कडुववाळ करसाण ॥—५३१

हल-३, चऊ-१, हाल-१ नाम

लागल चासविदार हळ कुटक (निरीस कुहात),
ईसा (हलरी हाल इम सीता पथ सुहात) ॥—५३२

फाल-कुश्या ४, दराती-२, मूठ-बेंटा-४ नाम

फाल कुम्फिक (अर) कसिक फळ दात्र दातळी (देख),
मुदं जिकारी मूठ रो) वेंसो वंटक (वेख) ॥—५३३

खानत्र-खणीत्य-२, कुदाली-२ बैलहाकने का-३ जोत-२ नाम

अवदारणक खनित्र (अख) कूदारण कुद्दाळ,
प्रवयण तोत्र प्रतोद (पढ) जोता ऽऽवध (सुजाळ) ॥—५३४

मोगरी-३ मेध्य-ढेले फोड़ने का-४ नाम

मेधि मेढ मेही (मुणू) भेदक—डगळ (भणात),
चावर कोटिम (फेर चव जेम) मे दडो (जात) ॥—५३५

शुद्र नाम

अतवरण सूद्रक (अखो) व्रसल (क) पद्य (वुलात),
मूदर (फेरू) पज्ज (सुण) जघन ज ओयण (जात) ॥—५३६

कारीगर-४ कारीगरी-३, माली-४, मालिन-१ नाम

कारीगर कारी (कहो) सिलपी कारु (सुणाय),
सिलप कळा विप्यान (सुण) माळाकार (मुणाय) ॥—५३७
फूलजीव (आंरू प्रभण) माळी माळिक (माण,
पुसप चूट लावै प्रमद) पुसपलावि (परमाण) ॥—५३८

दरजी-रफूगर नाम

तूनवाय सवचक (तथा) सोचथ सूयोवार,
महीदोत गजधर (मुणू) दरजी कपडविदार ॥—५३९

सुई-३, कैंची-५ नाम

सूची सूई सीवणी कातर कत्तरणी (ह,
कहो) कपाणी कलपनी अवर करतरी (ईह) ।।—५४०

कुंभार नाम

कोलाळी (रु) कुलाल (कह) कुंभकार घटकार,
चक्करजीवत (फेर चव) परजापत कूंभार ।।—५४१

नाई-हज्जाम नाम

नापित नाई नेवगी मूंडवाळ मूंडाळ,
केसकाट नेगी (कहो वळो) वणावणवाळ ।।—५४२

हजामत-६, निहानी-२ नाम

परिवापण खिजमत वपन भद्राकरण (भणात,
तिम) मुंडण (अर)कातर्‌या नखहरणी नखघात ।।—५४३

बढ़ई नाम

रथकरता खाती (रखौं) काठकाट रथकार,
(घर) वाढी (अर) वरधकी थपती तट सूथार ।।—५४४

आरा-५, वसूला-२ टाकी-१ नाम

करपत्रक वहरार (कह) करवत क्रकच करोत,
वासी तच्छणि ब्रच्छभित पत्थरफाडी (होत) ।।—५४५

हलवाई-३, तेली-४ नाम

कदोई खाणूकरण हलवायी (जिम होय),
धूसर तेली चोघरी (जिम ही) घाची (जोय) ।।—५४६

सकलीगर-६, सान-२ लोहार-३ नाम

असिधावण (आखो अवै) आवधमाजण (आण),
साणजीव भरमासतक सगलोगर (सू जाण) ।।—५४७
असिधावक (ओरू अखो) साण निकस (खरसाण),
लोहकार लोहार (लख) वेदाणी (वाखाण) ।।—५४८

अहरन-२, हतोडा-२, घोकनी-३, वर्मा-२ नाम

(वद) अहरण (अर) भाचरो हतोडो घण (होय),
घवणी घूण (र) धूकणी सार वेधणी (सोय) ।।—५४६

सोनार नांम

नाडीधमण सुनार (कह) सोनी सोव्रणकार,
मुस्टिक (ओर) कलाद (मुण मुण) घडियो सोनार ।।—५५०

मनिहार-४, चितेरा-३ नाम

लक्खारो मणियार (लख) मणिकारक मणिहार,
रगजीव चतरामकर (हमकै) चतरणहार ।।—५५१

धोबी-४, रगरेज-३ नाम

गजी रजक धोवी (गिणूं) धावक (फेर धरात,
लख) नरणेजक लीलगर रगरेज (दरसात) ।।—५५२

पींजनी-४, जुलाहा-३ नाम

पीनण पीजण पीजणी विहननतूल (वुलात),
जुल्लावो वणकर (जपो) ततूवाय (तुलात) ।।—५५३

कलार नाम

मदजीवण ध्रुज सेठ (मुण पान) कराड (पढात),
आसवकरण कलाळ (इम) दारूकार (दढात) ।।—५५४

मद्य नाम

दारू मद कादवरी मदिरा इरा (मुणात),
आसो मधु अैराक (इम) समदरसुतन (सुणात) ।—५५५
हारहूर (अर) हलिप्रिया सुरा वारुणी (सोय),
आसव महुवावाळ (अख) हाला सुडा (होय) ।।—५५६

खारभजना-गजक नाम

(खार) भजण चखण (अख वळे) नुकळ (वाखाण),
मदपअसण अवदस (मुण जिम) उपदस (सु जाण) ।।—५५७

आसव-३, प्याला चुसकी-५ नाम

आसव अभिसव आसुती चसक (रु) सरक (चवात),
प्यालो चुसकी (फेर पढ़) दारूपात्र दिखात) ।।५५८

अफीम नाम

नागभाग कसनागरा काळी अमल (कुहात) ,
नागफेण पोसत (नरख) आफू कैफ (अखात) ।—५५९
(आख) अफीम अफीण (इम) काळागर (कह तात ,
वळे) सावळो दाणवत काळो (फेर कुहात) ।।—५६०

भंग नाम

सबजी मातगी (सुण) विजया (अर) बूटी (ह) ,
भाग बीजभव (तिम प्रभण लखो फेर) लीली (ह) ।।—५६१

मल्लाह-धीवर-३, ओद-३, मछली पकडने का काटा-१ नाम

धीवर खेवट कीर (धर) वडिस ओद (वाखाण) ,
मच्छवेधणी (फेर मुण जेम) कुवेणी (जाण) ।।—५६२

मदारी-३, बाजीगरी-२, इन्द्रजाल-४, कौतुक-खेल-४ नाम

वादगिर जाळी (वळे) मायाकार (मुणाय) ,
माया सावरि (करम तस सोही ओर सुणाय) ।—५६३
इन्द्रजाळ (अर) जाळ (अख)कुस्त्रती कुहक(कुहात) ,
कोतूहळ कोतुक कुतुक (और) कुतूहळ (आत) ।।—५६४

आहेडी-शिकारी-६, शिकार-५ नाम

आहेडी थोरी (अखो) लुबधक लुबध (लखात ,
वळे) पारधी सावळा नायक व्याध (मुणात) ।।—५६५
म्रगवधजीवण (फेर मुण सुण) आखेट सिकार ,
आछोटण म्रगया (अखो) पापकरण (अणपार) ।।—५६६

भालू-वनरक्षक नाम

भालू टूक्यो भाळवी (कहज्यो फेर) करोल ,
(सुकवी भालू रा सरव विसद नाम ऐ बोल) ।।—५६७

जालवाला-३, जाल-४ नाम

जाळकार जाळिक (जपो ओर) वागर्यो (एख) ,
जाळी जाळ (रु) जाळिका (वळे) वागुरा (वेख) ।।—५६८

वामला-२, फंदा-२, मृगपाश-४ नाम

अवट (अनै) अवपात (अख) पासी फंद (पढात,
वेखो) रज्जू गुण वटी (और) वटारक (आत) ॥—५६९

कसाई नाम

कोड़िक खटिक खटीक (कह एम) कसायी (आत),
कोटिक सोनिक मासकर वैतंसिक (विख्यात) ॥—५७०

चमार-मोची नाम

चरमकार भाभी (चवो) मोची (और) चमार,
पावरच्छणीकरण (पढ कहो) मोचडीकार ॥—५७१

जूता नाम

पावरच्छणी पादुका जूती जरबो (जाण,
चवो) उपानत मोचडी प्राणहिता (पहचाण) ॥—५७२

मुसलमान नाम

रोद रवद खदडो तुरक मीर मेछ कलमाण,
मुगल असुर वीवा मिया रोजायत खुरसाण ।—५७३
कलम जवन तणमीट (कह) खुरासाण (अर) खान,
चगथा आसुर (फेर चव मानहु) मूसलमान ॥—५७४

फिरंगी नाम

अगरेज अग्रेज (अख) गोरा मेछ गुरड,
भूरा टोपीवाळ (भण) वदसाहव (बळवड) ॥—५७५

बादशाह नाम

पातसाह पतसाह (पढ) साह दलेस (सुणात,
फेर) ढेलडीपत (पुण एम) दलेसुर (आत) ॥—५७६

अंत्यज नाम

विवरण प्राकृत नीच (वद) पामर इतर (पढात,
परथक) जन (फेरू पढो) वरबर (एम बुलात) ॥—५७७

भंगी नाम

चूडो महतर चूहडो भंगी सुपच (भणेह,
वरो) जनगम धाणको वुकस निसाद (बणेह),—५७८

खाकरेज गडसूरखज अंतेवासी (आण) ,
पुक्कस (इम) चाडाळ (कइ) प्लव चडाळ (पिछाण) ।।—५७९

म्लेच्छ-भेद नाम

निमठ्या सवरा नाहला (ओर) पुलिदा (आण) ,
भिल्ला माला अरभटा (जात मेछ सब जाण) ।।—५८०

•

पृथ्वीकाय प्रारंभः

दोहा

दुतिय खड माहे दुरस, भू रा नाम भणेह ।
इणथी भूमि कायिका, पहली अठै पढेह ।।

उपजाऊ भूमि-१, ऊसर-२, टीला-२ नाम

(रख धान होवै सरस जिको) उरवरा (जाण) ,
इरिण (बळे) ऊसर (अखो एम) थळी थळ (आण) ।।—१

निर्जल देश-२, विना जुती भूमि-२ मिट्टी ५ नाम

निरजळ जगळ (नाम धर) वीडो खिल (वाखाण) ,
माटी मटी अतिका गार (र) लछमी (गाण) ।।—२

नमक की खान-१, नमक ३, सेंधा-३'
सचर-२, धूल-६ नाम

(नरख लवण री खान रो) रुमा (नाम दरसात) ,
लवण लूण मीठो (लखो) सिंधूभव (सरसात) ।।—४
सिंधुदेसव सीतसिव सचल (सूळ) नसात ,
धूळ गरद रेणू (धरो) रेत खेह रज (आत) ।।—५

देश नाम

देस मुलक जनपद (दखो) मडळ खड (मुणात) ,
विसयक उपवरतन (वळे सातहि नाम सुणात) ।।—६

आर्यावर्त नाम

(विंभ हिमाजळ बीच मैं) आरजवरत (अखात,
सो) अचारवेदी (सुण) धरमधरा (सुधरात) ॥—७

अन्तर्वेद-१, कुरुक्षेत्र-२ नाम

(जमुना गंगा बिच्च जमी) अन्तरवेदी (आख),
धरमखेत कुरुखेत (धर दुवदस जोजन दाख) ॥—८

कामरूप-२, बंगाल-१, मालवा-१, मारवाड़-३, साल्व-१, अंग देश-१ नाम

कामरूप (अर) कामरु वंग माळवो (वेख),
मारवाड़ मुरधर मरू साल्व अंग (सपेख) ॥—९

त्रिगर्त-१, कश्मीर-१, मेवाड-२, केरल-१, मगध-२, ढूंडाड़-२ नाम

जालंधर कसमीर (जप) मेदपाट मेवाड,
केरल कीकट मगध (कह) ढुंडदेस ढूंढाड ॥—१०

गाव-३, सीमा-६ खलियान-३ ढेला-४, चूर्ण-२ नाम

ग्राम गाव निवसथ (गिण) अंत सीम अवसाण,
सीमा मरजादा (सुण जिम) सीवाडो (जाण) ॥—११
कार हद्द अवधी (कहो) खळो (खळ) धान खळा (ह),
लोठ ढगळ (डम) दलि डगळ चूरण खोद (चवाह) ॥—१२

वामला नाम

वामलूर (अर) वामलो वम्रीकूट (बुलात,
कीडापरवत नाकु (कह तिम) बलमीक (तुलात) ॥—१३

नगर नाम

नयर नैर नगरी नगर पट्टण पुर (प्रकटाय),
पुटभेदन पत्तन पुरी सहर नग्र (दरसाय) ॥—१४

गढ-२, किला-६, कोट-४, बुर्ज-२, गली-४ नाम

गढ (अर) कोट दुरग द्रुग (भण) दुरग भुरजाळ,
कल्लो (जिम) आसेर (कह सुण) वरण अरसाळ ॥—१५

कोट (अनै) प्राकार (कह) खोम अटाळ (अखात),
परतोली विसिखा (पढो) गळी प्रतोली (गात) ।।—१६

गया-२, काशी-४, अयोध्य-४, मिथिलापुरी-३, पटना-१ नाम

(पढो) गया गयनृपपुरी कासी कामि (कुहात),
वाणारसि सिवपुर (वळे) अवध कोसला (आत । —१७
इम) साकेत अजोधिया मिथिलापुरी (मुणात,
पढो) विदेहा जनकपुर पाटलिपुत्र (पुणात ।।—१८

द्वारका-२, मथुरा-२, उज्जैन-३ नाम

द्वारवती (र) दुवारका मथरा मथुरा (माण),
उज्जयणी (र) उजीण (अख जेम) अवती (जाण ।।—१९

कन्नोज-२, दिल्ली-७, नरवर-२, चपापुरी-२, चदेरी-२ नाम

कानकुवज कन्याकुवज पाडवनगर (पढात),
ढल्ली दल्ली ढेलडी गजपुर (वळे गिणात । —२०
(गिण) हतणापुर (र) रवदगढ नळपुर निसवा (नाम),
करणपुरी चपा (कहो) त्रिपुर चदेरी (ताम) ।।—२१

मार्ग नाम

पदवी मारग इकपदी मग गैलो पवि माग,
पद्धति सरणी पथ पथ अयनक बाट (अथाग) ।।—२२

सुमार्ग-२, अमार्ग-२, कुमार्ग-३ सूनामार्ग-२ नाम

आछोमारग पथ (अख) ऊबट अपथ (अखाड),
कदधव कापथ विपथ (कह अख) प्रातर उज्जाड़ ।।—२३

चोराहा-३, राजमार्ग-३ नाम

चोहट्टो (अर) चोहटो (वळे) चोवटो (बोल),
राजपथ ससरण (कह तिम) घटापथ (तोल) ।।—२४

बाजार-३, हताई-३ मरघट-७ नाम

वणजपथ बाजार (वद) विपणी (वळे वखाण),
पद (र) हतायी आसपद (सुण) मसाण समसाण । —२५

(पढ) करबीरक पितरबन (बद) खेत्रा (वरणाव) ,
प्रेतगेह (फेरू प्रभण जेम) मसाण (जणाव) ।।—२६

घर-२६, राजघर-३, कुटी-२, घास की झोपडी-१ नांम

आलय निलय अगार (अख) थानक मदर थान ,
गेह ओक आगार ग्रह कुट ऐवास मकान ।—२७
सदन झूंपडो घर सदम धिसण खोलडो धाम ,
भोण निकेतन कुळ भवन वसति निवास—सुवाम ।—२८
जाग ऐण आथाण (जप) सोध महल प्रासाद ,
उटज परणसाळा (अखो) कायमान (त्रणकाद) ।।—२६

शयन-गृह-२, मडप-२ सूतिका गृह-३ नाम

पडवो सोवणघर (पढो) मडप जनघर (माण) ,
सूतकगेह अरिष्ट (जिम जापा रो घर जाण) ।।—३०

रसोई का घर-३, भडार-१० नाम

सूदकसाळा रसवती (एम) महानस (आत) ,
पाकथान (फेरू पढो) भाडागार (भणात) ।—३१
(वेख) खजानू द्रव्वघर कोस (वळे) कोठार ,
रोकट मोहर रूप घर (मुण) भडार (अमार) ।।—३२

हाट-५ चबूतरी-४ नाम

अट्ट हट्ट आपण (अखो) विपणी हाट (वखाण)
वेदी बेदि वितर्दिका (जेम) जूतरी (जाण) ।।—३३

आंगन-३, दर्वाजा-४ नाम

अगण अगन आगण नोरण पोळ (तुलात) ,
दरवाजो (ओरू दखो वळे) दुवार (वुलात) ।।—३४

द्वार-५, भुजागल-४ नाम

बलज दुवारो बारण द्वार वार (दरसात) ,
आगळ परिघ (र) अरगळा भागळ (फेर भखात) ।।—३५

किवाड नाम

अरर पट्ट फार्टक (अखो कहो) कुवाट कमाड ,
अररि कपाट कवाड (इम कहो) कु वाड कवाड ।।—३६

देहली-५, झोपडी कच्चा घर-२, छत-१ नाम

देहळ डेहळ देहळी उवर उंबुर (आत),
वलभी गोपानसि (बदो) पटळ (ऊपली छात) ।।—३७

गज-१, कोना-७ नाम

कुटिम (तैलीछात कह) खूण कूट (अखात),
कोण अस्र पाली (कहो) कोटी अणी (कुहात) ।।—३८

सीढी-४, निसैनी-३ नाम

आरोहण अवरोह (अख सुण) सीढी सोपान,
नीसरणी निश्रैणिका (जिम) अधिरोहणि (जान) ।।—३९

पेटी-४, झाडू-६, कूड़ा-३ नाम

मजूसा मजुस (मुण) पेटी पेयी (पेख),
सजवारी (अर) सोवणी (वळे बुवारी (वेख) ।—४०

समारजनी सोधणी वहूकरी (वाखाण),
कूडो कचरो अवकर (क जेम) कजोडो (जाण) ।।—४१

ओखल-३, मूसल-४ नाम

(आखो) ऊखळ ऊखळी (एम) उदूखळ (आख),
खाडणियो (अर) खाडण्यू मूहळ मुसळ (इमाख) ।।—४२

चालणी-३, सूप-२, चूल्हा-४, हडिया-२, कुम्हार का चाक-३, घड़ा-बेहड़ा-८ नाम

(लखो) खेरणी चाळणी तितऊ (फेर तुलात,
जप) सूपडो छाजळो चूल्हो चुल्लि (चवात) ।—४३

अधिश्रयणी असमत (इम) कुंभी चरू (कुडात),
चाक चक्क चक्कर (चवो) वे बेहडो (बुलात) ।
कुंभ घड़ो घट निप कळम (तेम) बेवडो (तात) ।।—४४

मटकी-६, अगीठी-४, भाड-२, पीने का पात्र-२ नाम

मटकी गागर माथणी काहेली (प्रकटाय,
तेम) कायभी पातळी सिगडी हसनि (सुहाय) ।।—४५

गाडी (इम अगाररी ओर) अगीठी (आण),
भाड अबरीसक (मण) पारा चसक (पछाण) ।।—४६

रुई-५, रुई का थंवा-२, पात्र २ नाम

मथ खजक मथान (मुण) रयी भेरण (आत),
विसकभक मजीर (बद) भाजन पात्र (भणात) ।।—४७

पर्वत नाम

डूगर पवै पहाड गर भाखर परवत (भाख),
अग गरिंद मूधर अचळ अद्री मगरो (आख) । —४८
गरवर नग सखरी गिरी सानूमान (सुहात),
सैल कदराकर (मुण) सानूवाळ (सुणात) ।।—४९

उदयाचक-३, अस्ताचल-२, हिमालय-३ नाम

(चवो) उदय पूरव अचळ असत चरमनग (आण,
उदक) अद्रि हिमवान (अख जेम) हिंवाळो (जाण) ।।—५०

कैलाश-२, विंध्याचल-२, बिमलाचल-१ नाम

रजताचळ कैळास (रख) वीभाचळ (वाखाण),
जळवाळक (तिणनू जपो) सत्रु जय (सूजाण) ।।—५१

सुमेरु नाम

रतनसानु गरमेर (धर) मेरू मेर सुमेर,
गरापती (अर) हेमगर (पढो) देवगर (फेर) ।।—५२

शिखर-४, कराड़ा-२, पर्वत का मध्य भाग-२ नाम

शृंभ कूट सानू सिखर (कहो) प्रपात कराय,
(भाखर विचला भाग हू) कटक नितव (कुहाय) ।।—५३

गुफा-३, पत्थर-८ नाम

दरी गुफा गुद कदरा पत्थर सिल पाखाण,
पूण भाटो उपल (पढ) पाहण (जिम) पासाण ।।—५४

खान-३, गेरू-२, खड़िया मिट्टी-५ नाम

आकर गजा खान (अख) गेरू धातु (गुणाय),
खटणी कठणी खडी पाडू (वळे पुणाय) ।।—५५

लोहा नाम

लोह् पारसव लोहडो अय कालायस आत,
सिलासार घरा पिंड (सुरा) ससतर धीन (सुरात) ॥—५६

तावा-४, सीसा-७ कलई रागा-७ नाम

मुरगू उदुंबर मेछमुख तावो ताम्र (तुलात),
सीसपत्र सीसो सियो (गडूपद) भव (गात)।—५७

नाग (हेम) अरि सिस (नरख) त्रपु कथीर सठ (तिम),
वग (नाग) जीवन (वळे) आलीनक गुरु (एम) ॥—५८

चादी नाम

रूपो चादी वसु रजत जीवन तार (जरगात),
जीवनीय खरजूर (जप) भीरुक सुभ्र (भरगात) ॥—५९

सोना नाम

कचन कुनरा बसु कनक सोनू सुवररा (सोय),
चामीकर चामीर (चव) हाटक अरजुरा (होय)।—६०

सोन्नन (अर) हेमग (मुरा तेम) भरम तपनीय,
जातरूप गारुड (जपो) रजत हेम रमरगीय ॥—६१

पीतल-५, कासा-४ नाम

पीतलोह पीतळ (पढो) आरकूट गिरि आर,
रवरा चोस कासी (रटी प्रकट वीजळीप्यार ॥—६२

पारा-६, अभ्रक-२ नाम

पारद पारत सूत (पढ) चळ रस चपळ (चवात,
मेह नाम इरा रा मुरगू) अभ्रक भोडळ (आत) ॥—६३

कसीस-५, गन्धक-६, हरताल-६ नाम

काससक खेचर कसक कस (र वळे) कसीस,
पावकोढ सात्रव (पढो) गधक मुलव (गुरगीस)।—६४

सुकपिच्छक दयितेन्द्र (सुरा) हरितालक हरताळ,
नटमडरा पीतन (नरख इम) वगारी आळ ॥—६५

मंनसिल-५, सिन्दूर-३ नाम

सिला रोचणी मैणसल नेपाळी कुनटी (ह),
नागरगत नागज (नरख इम) सिदूर (सुईह) ।।—६६

इगुर-२, शिलाजित-४, वीजावेल-६ दूरबीन-चश्मा-३ नाम

हूसपाद (अर) हीगलू गिरिज सिलाजतु (गेय)
सिलाजीत असमज (सुण) वीजावोळ (विधेय) ।—६७
वोळ गधरस सस (वळे) पिंड गोपरस (प्राण),
चसमू (अर) दुरबीन (चव जेम) कुलाली (जाण) ।।—६८

रत्न-४, वैदूर्य मणि-१, पन्ना-४ नाम

माणक वसु (अर) रतन मणि वैदूरय (वाखाण),
मरकत पन्ना हरितमणि (जिम) गरुतमत (जाण) ।।—६९

लाल-४, हीरा-३, मूगा-३ नाम

पदमराग लछमीपुसप माणिक लाल (मुणात,
जतरी अभिधा वजररी सो अव अठै सुणात) ।—७०
सूचीमुख हीरक (सुण वळे) वरारक (वोल),
रकतकद रकताग (रख तिम) परवाळो (तोल) ।।—७१

सूर्यकान्त मणि-२, चद्रकान्त मणि २ मोती ७, भूषण-६, शृंगार २, राजावर्त हीरा-३ नाम

सूरकात सूरजअसम चदकात मणि (चेत),
मोताहळ सारग (मुण) सुकतिज मुत्ति (समेत) ।—७२
मुकताफळ मुकता (मुण) मोती (रसभव माण,
रट) आभूपण आभरण गहण भूखण (गाण) ।—७३
गैण (ओरु) (साज गिण वद) सणगार वणात,
राजपट्ट वैराट (अख) राजावरत (रखात) ।।—७४

समाप्तोऽय पृथ्वीकाय

अप्काय प्रारंभः

दोहा

पानी नाम

अब तोय दक पै उदक अभ सलल (अर) नीर ,
पाणी जळ सारग पय वार आप वन छीर ।।—७५

अथाह पानी-२, गहरा पानी-२ नाम

(जेम) अगाव अथाह (जळ) गहर निमन गभीर ,
ऊंडो (फेर) असेवता गैरो वळे) गभीर ।।—७६

साफ पानी-३, पानी का सोता-२, गदला पानी-५ नाम

सुच्छ अच्छ परसन्नता (अख) सेवो उत्तान ,
अप्रसन्न कलुस (रु) अनछ आविल गुघळो (आन) ।।—७७

बर्फ नाम

अवसयाय प्रालेय (अख) हिम मिहिका नीहार ,
पाळो हिंव (अर) वरफ (पढ) तूहिन (बळे) तुसार ।।—७८

लहर नाम

लहरी उतकालिका लहर उरमी वेळ (अखात) ,
उझल उझेल उझल्ल (इम) भग हिलोळ (भणात) ।।—७९

भवर-४, झाग-५ नाम

(भण)आवरत (रु)जळभमण बोलक भूण(वखाण) ,
फेण समदकप फेन (पढ) झाग डिडीर (सुजाण) ।।—८०

किनारा नाम

कूळ कच्छ रोधस (कहो) तठ (अर) तीर प्रतीर .
पुलिन (अनै) परताप (पढ धरो) कनारो (धीर) ।।—८१

नदी नाम

सरित तरंगाळी सलत सरता नदी (सुणात) ,
निरझरणी तटनी धुनी परवतजा (सु पुणात) ।—८२
नै सेवळनी निमनगा (सिंधु) वाहणी (सोय ,
वरो) आपगा जळधिया (जिम) जवालनि (जोय) ।।—८३

गंगा नाम

भीसमसू भागीरथी गगा गग (गिणाय),
सिद्धआपगा सुरसरी देवनदी (दससाय) ।—८४

भीसमआयी (फेर भण) मदाकणी (सुणात),
सरितवरा हरसेखरा सुरगीनदी (सुणात) ।।—८५

यमुना नाम

जमना जमुना यमि जमि सूरजसुता (मुणाय),
जगभगनी (ओरू जपो) कालदी (मु कुहाय) ।।—८६

नर्वदा-४ तापी-२ नाम

मेकलाद्रिजा नरमदा (ओर) इदुजा (आत),
पूरवगगा (फेर पढ) तापी तपती (तात) ।।—८७

चम्बल-३, गोदावरी-२ कावेरी-१ नाम

चरमवती चामळ (चवो) रतिनदी (जिम राख,
दख) गोदा गोदावरी अरधसुरसरी (आख) ।।—८८

अटक-३, बनास-२, बैतरणी-१ नाम

करतोया (अर) अटक (कह) सदानीर (सरसात),
वासिसठी (रु) बनास (वद) बैतरणी (विख्यात) ।।—८९

प्रवाह-३, घाट-३, नाला-२, बूद-२ नाम

वेणी ओघ प्रवाह (बक) तीरथ घाट वतार,
नाळो जळनिरगम (नरख) विदू प्रसत (विचार) ।।—९०

मोरी-३, रेत २, घोरा-२ नाम

परीवाह परिवाह (पढ) मोरी (फेर मुणात),
वालू भिकता वालुका सारण पान (सुणात) ।।—९१

कीचड-७, दाह-४ नाम

कादो गारो पक (कह जप) करदम जवाळ,
चीखिल्लक (अर) चीखलो (अख अगाध) जळवाल ।।—९२

[दाह—क्रमश] कुआ-६, तालाव-९ नाम

द्रह दह ह्रद (ओरू दवो) अधु ढीमडो (आत),
कूओ वेरो (अर) कवो कोर तळाव (कुहात) ।—९३
सरवर ताळ तडाग सर सरसी (अर) कासार,
(एम) सरोवर (फेर अख) पदमाकर (अणपार) ।।—९४

वावडी ३, खेल-२, तलाई-२, रेंहट २ नाम

वापी वाय (रु) वावडी उपकूपक आवाह,
पुसकरणी खातक (पढो) रेंट (रु) अरट (अणाव) ।।—९५

खाई-३, थावला-२, झरना-४, कुंड-२ नाम

खाई परिखा खातिका आलवाल आवाप,
निरझर कर समि स्रव (नरख) कुड जळासी (काप) ।।—९६

समाप्तोऽय अप्‌काय.

•

अथ तेजस्कायमाह

दोहा

वडवानल-२, दावानल ३, मेघज्योति-२, तुषानल-२ नाम

वडवानळ वाडव (कहो) दावानळ दव दाव,
मेघवन्हि (अख) इरमद कुकुल तुसाग (कुहाव) ।।—९७

उपलों की आग-२, तापना-२, ज्वाला-४ नाम

करीसाग छागण (कहो) ताप (वळे) सताप.
झाळ (रु) झळपट (फेर जप) ज्वाळा कीला(जाप) ।।—९८

अगीरा-५, अगीरे की ज्वाला-१, धुआ-८, चिनगारी-१ नाम

उलमुक (अनै) मटीट (अख) अगीरो अगार,
(इम) अलात उतका (अखो) धूम धुवा धू (धार) ।—९९
वायुबाह खतमाल (वद) भभ आगवह (भाख),
दहनकेत (ओरू दखो) अगनीकण (इम आख) ।।—१००

समाप्तोऽय तेजस्काय

अथ वायुकायमाह

दोहा

पवन नाम

वाय समीरण वायरो मरुत वाव पवमाण ,
अनिळ महाबळ मेघअरि पवन प्रभजण (आण) ।—१०१
पच्छिम, उत्तर, दिसपती* गधवहण जनप्राण ,
सुचि समीर सामीर (सुण) बात हवा पवनाण ।।—१०२

वृष्टियुक्त पवन-१, प्राण-वायु-१, अपान-वायु-१, समान-वायु-१ नाम

जाभ (विृष्टिजुत वाव जप) प्राण (हिया मे पेख ,
नरखो पवन) अपान (गुद नाभि) समान (मु देख)—।।—१०३

उदान-वायु-१, व्यान-वायु-१ नाम

(कठदेस माहे प्रकट आखो • सदा) उदान ,
(सरव देह वरती सदा बोल समीरण) व्यान ।।—१०४

आधी-४, लू-४ नाम

आधी वावळ डूज (अख अर) अधारी (आत) ,
दवनतपत (इम) भकड (पढ) लू (अर) भकर (लखात) ।।—१०५

समाप्तोऽय वायुकाय.

•

अथ वनस्पतिकाय माह

दोहा

वन नाम

अटवि विपिन कातार (अख) दव कानन वन दाव ,
गहन कक्ष अटवी (गण बळे) अरण्य (वणाव) ।।—१०६

---

* पच्छिम, उत्तर, दिसपनि=पच्छिमपति, उत्तरपति ।

बाग-६, बाहर का बगीचा-१ नाम

अपवन उपवन वेल (अख) बाग बगीचो (वेख,
कृत्रिमवन) आराम (कह) पोरक (वारै पेख) ।।—१०७

प्रमदा-वन१, स्थानिक बाग-२, वाडी-१ नाम

(महिप जनाना माहिलो) प्रमदावन (पहचाण,
ग्रहाराम निसकुट (नरख) वाढी (फूल वखाण) ।।—१०८

वृक्ष नाम

तर साखी तरवर तरू द्रुम द्रुमंग (दरसात),
रुख फळद अग रुखडो साळ व्रच्छ (सरसात) ।—१०९
पादप विटपी विटप (पढ) चरणप अगम (चवत),
फूलद छितरुह नग (प्रकट) परणी वसू (पढन्त) ।।— ११०

वेल-६, अकुर-४ नाम

लता वेल वलि वेलडी वेली व्रतति (वखाण),
अकुर रोह प्ररोह (अख जिम) अकूर सुजाण ।।—१११

शाखा-४, जड-३, छाल-३, मजरी २ नाम

साख सिखा साखा लता जटा सिफा जड (जोय),
छाल चोच वलकल (चवो), मजरि मजा (होय) ।।—११२

पत्र-११, पत्र की नस-२ नाम

पत्र छदन छद पानडो परण पात दळ पान,
वरह पलास (रु) वरग (वद) माढी छदन (समान) ।।—११३

पुष्प-१०, गुच्छा-२ नाम

सुमनस कुसुम प्रसून सुम फूल मणीवक (पात),
प्रसव सून गुल (अर) पुसप गुच्छो गुच्छ (गिणात) ।।—११४

पराग-३, पुष्प-रस-५ नाम

रज पराग (अर) फूलरज मधु रस (ओर) मरद,
सुमनसरम (सुकवी सुण मुण वळे) मकरद ।।—११५

फूले हुए पुष्प नाम

प्रफुलित उतफुल फूल (पढ) विकसत दलित (वुलात),
विकच फुल्ल व्याकोम्म (वद तेम) विमुद्र (तुलात) ॥—११६

सुगन्ध नाम

गंध डमर सूगंध (गिरण) वास महक कसबोय,
वगर (वळे) वासावळी (जेम) बासना (जोय) ॥—११७

कली नाम

(चव) मुद्रित (अर) सकुचित (नरख वळे) निद्राण,
मीलत नहफूलण (मुण वळो) अफुल्ल (वखाण) ॥—११८

कच्चा फल-२, फल-१, गाठ-२ फलो-५ नाम

आम सलाटू फळ (अखो) ग्रथी गांठ (गिणात),
कोम्नि बीज सिवा (कहो) सवी समी (सुहात) ॥—११६

पीपल नाम

पीपळ कुंजरअसन (पढ) वोधितरू (वाखाण),
कसनावास अस्वत्थ (कह जिम) चळदळ (कवि जाण) ॥—१२०

बरगद-४, गूलर-२, आम-४, मोलसरी-२ अशोक-२, विल्व-२ नाम

वैश्रवणालय वड (रु) वट वहूपाव (वरणाव),
जतूफळ मसकी (जपो) आव रसाळ (अणाव) ।—१२१

माकदक सहकार (मुण) केसर वकुल (कुहात),
ककेली (रु) असोक (कह) श्रीफळ बील (सुहात) ॥—१२२

ढाक-४, ताड-३, बेंत-२ नाम

त्रीपत्रक किंसुक (तवो पळ) पलास पालास,
त्रणराजक तल ताल (तव) वेतस व्रिदुल (विकास) ॥ -१२३

केला-४, बेरी-३, झाऊ-२ नाम

रंभा मोचा केळ (रख) कजळी (फेर कुहात),
बदरी कुवली वोरडी झावू पिचुल (सुझात) ॥—१२४

नीम-३, कपास-३, रूई-२, अडूसा-३ नाम

नीम निंव (अर) नीमडो पिचवय (अर) करपास ,
वादर तूलक तूल (वक) व्रस अरडूसो वास ।।—१२५

अमलतास-२, वरण-२, थूहर-सेहुंड-२, पीलू-२ नाम

आरगवध गरमाल (अख वद) मदार वकारण ,
महातरू थूहर (मुणू) सिन गुडफळ (मूजाण) ।।—१२६

महुवा-३, चिरोंजी-२, गूगल-२, कदव-२ नाम

महूवो मुवो मधूक (मुण) चार पियाळ (चवत) ,
पलकसा गूगळ (पढो) हळिप्रिय नीप (कहत) ।।—१२७

इमली-२ नारंगी-२, हिंगोट-२, ल्हिसोडा-२ नाम

अम्लीका (अरु) आमली नागरग नारग ,
तापसद्रुम इगुदि (तवो) सेलू स्लेसम (अग) ।।—१२८

बीजा-३ भोजपत्रका वृक्ष-२, पाटल-३, तू बी-२ नाम

पीतमाल वीजो प्रियक वहुतुच भूरज (वाल) ,
पाडळ पाटलि पाटला तुंवि अलावू (तोल) ।।—१२९

आवला-२, बहेडा-२, हरड-२, हरड-वहेडा-आवला-१ नाम

धात्री आमलकी (धरो) अक्ष विभीतक (आत) ,
हरडै (और) हरीतकी त्रिफळा (तास तुलात) ।।—१३०

वेला-३, चमेली-३, जासूल-३, सोनकुही-१ नाम

पल्ली मलिका मोगरो जाति चमेली (जोय) ,
जपा जवा जासूल (जन) हेमफूलिका (होय) ।।—१३१

चंपा-२, जुही-२, दुपहरिया-२, करना-२ नाम

हेमपुसप चपक (हुवै) जुही जूथिका (जात) ,
वधुजीव वधूक (वद) करणा करुण (कुहात) ।।—१३२

जमीरी-३, कनीर-२, विजोरा-२, करीर-२ नाम

जभ जह्मेरी जभलक करणिकार कनीर ,
वीजपूर वीजोर (वक) करकर (वळे) करीर ।।—१३३

एरंड-२, नारियल का वृक्ष-२, कैथ-३, इलायची२- नाम

पचागुळ एरड (पढ) नारिकर नारेळ,
दधिफळ कैत कपित्थ (दख आख) अमायचि एळ ॥—१३४

बांस-४, सुपारी-३ नागरबेल-६ नाम

मसकर सतपरवा (मुण) वेण त्रणधुज (बोल),
पूग क्रमुक गूवाक (पढ) तावुलवेली (तोल) ॥—१३५
(नाग नाव आगे निपुण) वल्ली वेल वुलात,
नागरबेल तवोळ (नत) तांवूली (सुतुलात) ॥—१३६

केवड़ा-केतकी-२, कचनार-२ मदार-धतूरा-३ नाम

ककचच्छद केतक (कहो) कोविदार कचनार,
धत्तूरो धत्तूर (धर वळे) धतूर (विचार) ॥—१३७

गुंजा-घुंगची नाम

(कहो नाम जो कनक रा सो इण रा सू जाण,
रख) चरू गुंजा घती (ओर) कृष्णला (आण) ॥—१३८

दाख ३, खस की घास २, खस-२ नाम

दाख हारहूरा (दखी ओर) गोथणी (आख,
बोलो) गाडर वीरणी कस (रु) उसीरक (भाख) ॥—१३९

नेत्रवाला-३, लोध-२, पुवाड-३ नाम

बालक जळ ह्रीवेर (वद) गालव लोद (गणात),
प्रपुन्नाट पव्वाड (पढ ओर) एडगज (आत) ॥—१४०

कमल की वेल-३, कमल-२२, श्वेत कमल-१,
लाल कमल-२, गडूल-२ नाम

नलिनी पकजिनी (नरख ओर) मृणाली (आत),
कमळ कवळ पकज (कहो) विसप्रसून (विख्यात) ।—१४१
(पंक सवद आगे प्रकट, जनम, ज, रुट, रुह, जाण)* ,
सहपात सतपत्र (सुण) पोयण कज (प्रमाण) ।—१४२
अवज पदम अरविंद (इम रख) पुसकार राजीव,
तामरस (रु) सारग (तव सुण) सरोज (जळसीव) ।—१४३

---

*पंकजनम, पकज, पकरुट, पंकरुह ।

सरसीरुह (अर) जळज (सुण) पुंडरीक सितपात,
कवळलाल (रु) कोकनद उतपळ कुवलय (आत) ॥—१४४

कमल की नाली-३, अन्न-३, चावल-५ नाम

तंतुल विम (रु) मरणाल (तव घरो) नाज अन धान,
चोखा चावळ साळ (चय) तंदुळ अखसत (तान) ॥—१४५

जो-३, चने-२, उर्द ३, जवार-२ नाम

जव तुरगप्रिय जो (जपो) हरिमथक चण (होय),
माम मदन नदी (मुणू) जोनळ जीरण (जोय) ॥—१४६

गेहू-३, मूंग-२, कुलत्थ २, सावा-२ नाम

सुमन गहू गोधूम (सुण) मुदग वलाट (मुणाय),
कुळथ काळव्रतक (कहो) साऊ श्याम (सुणाय) ॥—१४७

अलसी-३, सरसों-२, वाल-भुट्टा-४ नाम

अळस उमा अलसी (अखो) सरस्यू तुंतुभ (सोय),
दागी ऊमी वाल (दख जेम) कणीसक (जोय) ॥—१४८

लहसुन-३, प्याज-४, सूरन-२ नाम

ल्हसण अरिष्ट रसोन (लख) दीररपत्र (दिखात),
ग्रजन कांदो प्याज (गिण) सूरण कंद (सुहात) ॥—१४९

कुम्हड़ा-२, तुरई-१ ककडी २, मूली-२ नाम

कूम्मांड करकारु (कह) कोसातकी (कुहात),
करकटिका (अर) करकटी सेकिम मूळ (सुहाय) ॥—१५०

अदरक-४, सरकंडा-५ नाम

अद्रक आदो आरद्रक शृंगवेर (सरसात,
कहो) गुंद्र सर सरकना तेजन मूंज (तुसाय) ॥—१५१

कुशा, दुर्भा-४, दूब ६ नाम

दरब डाभ कुस कुथ (दखो) हरिताली रुह (होय),
दोभ अनंता दूरवा सतपरबीका (सोय) ॥—१५२

गन्ना-५, गन्ने की जड़-१, कास-२ नाम

ईख ऊख इच्छू (अखो सो) असिपात रसाळ,
मोरट (जिण रो मूळ है) कांस इसीका (भाळ) ॥—१५३

घास-५, नागरमोथा-२, उपल (घास)-२ नाम

जवस घास त्रण खड (जपो) अरजुण (ओरू आत ,
मेघनाम मुसता (सुणू) बलवळ उपल (बणात) ।।—१५४

समाप्तोऽय पृथिव्याद्योकेन्द्रियादौ वनस्पतिकाय.

•

अथ द्वीन्द्रिया नाह

कीड़ा-४, सूक्ष्म कीडा-१, शरीर के कीडे-१,
वाहर के कीडे-१ नाम

क्रमी कीट कीडो किरम (मुच्छम) कीकस (जाण ,
वेरमांहि) नीलगु (वद बारे) छुद्र (वखाण) ।।—१५५

लकडी के कीडे-१, कंचुवा-२, गिजाई-२,
जोक-८, सीप-२ नाम

(कह) घुण (कीडो काटरो) किंचुल कुसू (कुहात) ,
गज्जायी गडूपदी असृपीवणी (आत) ।—१५६
जळसपणी जळओक (जप) जळालोक जळजात ,
जोख जळूक जळोक (जिम) सुक्ती सीप (सुहात) ।।—१५७

शख-५ घोघा-२, कौडी २, नाम

वारिज कवू सख (वक) तीनरेख दर (तोल) ,
साखूल्या सवूक (सुण) कोडि बराटक (वोल) ।।—१५८

उक्ता द्विन्द्रियाः

•

त्रीन्द्रियानाह

चीटा-३, चींटी-१, दीमक-४ नाम

चीटो पील मकोट (चव) चीटी (नाव चवात) ,
उपजीहा उपदेहिका दीमक दीम (दिखात) ।।—१५९

लीक-३, जूं-२, गोवड़ी-२, गोवड़ा-१ नाम

लिकसा रिकसा ल्हीक (लख) जू खटपदी (जरणात),
गीगोडी गोपालिका गोमयजात (गरणात) ।।-१६०

खटमल-३ बीरवहूटी-४ नाम

माकरण मतकुरण किटिभ (मुरण, वीर वहोडी) (वेख),
वुढ्ढन मामूल्यो (वळे) इदगोप (अवरेख) ।।—१६१

उक्तास्त्रीन्द्रिया.

•

चतुरिन्द्रियानाह

मकड़ी नाम

जाळकार जाळिक (जपो) ऊरणनाभ (अखात),
मरकट लूता माकडी लालासाव (लखात) ।।—१६२

बिच्छू-३, डक-१, भौंरा-बर्र-१०, जुगनू-३ नाम

वीछू द्रुरण आली (वदो) अलि (तिरण पूछ अरणात),
भंवर भसळ अलि भ्रमर (भरण) भूरो भमर (भरणात) ।—१६३
चचरीक सारग (चव) मधुकर मधुप (मुरणाय),
जोयिरिंगरण जोरिंगरण (मो) खद्योत (सुरणाय) ।।—१६४

मधुमक्खी-२, शहद-३, भोम ३, झींगर-४, टिड्डी-१,
पतग-१, तितली-२, डास-२ नाम

मरधा मधुमाखी (सुरण) सहत सैत मधु (सोय),
मदन मैरण मधुऊठ (मुरण) झीगर झिल्ली (होय) ।—१६५
चीरी भ्रगारी (चवो) सलभ पतग (सुरणाय,
तवो) पुत्तिका तीतरी दसक डास (दिखाय ।।—१६६

मक्खी-१, मच्छर-२, पशु-२, हथिनी-५ नाम

माखी माछर ममक (सुरण) ढाढो पसू (पढाय),

उक्ताश्चतुरिंद्रिया.

पंचेन्द्रिया नाह

वसा गजी हथरणी (वळे) इभी करेरण (आय) ।।—१६७

षट्पात

मकना हाथी-१, पाच वरस का हाथी-१, दस वरस का-१,
वीस बरस का-१, तीस वरस का-१, मस्त हाथी-३,
मतवाला हाथी-२, तिरछी चोट करने वाला हाथी-१ नाम

(दुरद समँ पर दत वळे नह ऊचा अगरो),
मतकुरण (नाम मुरणात) बाळ (गज पच वरसरो)।
वोत (बरस वढहु) बिक्क (गज वीस वरस वर),
कलभ (नाम करटी सु तीस जारण संबच्छर)।
मत्त(रु)प्रभिन्न गर्जित (मसत)मदउतकट मदकल(मुरण,
तिरछी मु चोट करवै तिकरण परिरणत) दतावळ(पुरण)।।—१६८

छद पद्धतिका

मद्र उतरा हुआ-३, यूथपति हाथी-३ नाम

उदवात अमद निरमद(अखात उतर्या मद इभरा नाम आन),
जूथप मतगपति जूहनाह (तबेरम टोळापति तथाह) ।।—१६९

युद्ध के लिये सज्जित हाथी-२, दृष्ट हाथी-१ नाम

(इभ जुद्ध निमित्तक किय तयार) सज्जित (अर)
कल्पित (नाम सार,
मानै नह अकुस जो मतग गभीर) वेदि (नामक अभग) ।।—१७०

दुष्ट हाथी-१ जवान हाथी के लाल दाग-१ युद्ध योग्य
हाथी-१, राजा की सवारी का-२ नाम

(वारण जो होवै दुसट)व्याल(जो)पद्म(करी व्है विंदुजाल,
समरोचित गज जो व्है)सनाह्य उपवाह्य भूपगजराजवाह्य ।।-१७१

(लबे दातवाला-२, हाथी कामद-३, हाथियों की
रचना-१ नाम

(दती)उदग्र(ईसा) सुदत (जिरण रै रद लवा सो भजत),
मद दान प्रवृत्ति (क गमद जारण अरणपार) घडा
(गज नाम आरण) ।।—१७२

हाथी की सूंड-५, सूंड की नोक-२ नाम

हसतोनासा कर हसत सुंडा सूंड (सुणात,
इण रो अग्रक आख इम) पोगर पुसकर (पात) ।।—१७३

नोक के आगे की अंगुली-१, हाथी का कंधा-२, हाथी का
दांत-१, कान का मूल-१, हाथी का ललाट-१, सूंड
का पानी-१, आंखों के ऊपर का भाग-१ नाम

(गै पोगर री आंगळी एक) करणिका (आत),
आसण (गै असक अखो दंत) विसाण (दिखात) ।—१७४

(लख कन मूळक) चूलिका (गै ललाट) अवगाह,
(करसीकर) वमथू कहो आखकूट (इसिकाह) ।।—१७५

मस्तक कुंभ-१, कुंभ के बीच का भाग-१ कुंभ के नीचे का
भाग-१, विंदु के नीचे का भाग-१ नाम

(पिंड दुगै धू) कुंभ (पट बीच कुंभ) विंदु (तोल),
आक्षरक (दुव कुंभ अध) वातकुंभ (अधवोल) ।।—१७६

वातकुंभ के नीचे का भाग-१, वाहित्य के नीचे का भाग-१
आंख का कोया-१, हाथी बांधने का स्तंभ-१ नाम

इण रै अध) वाहित्थ (अख तिण हेठै) प्रतिमान,
(इभ) निरयाण (अपांग अख इभ बंध थंभ) आलान ।।—१७७

पूंछ का मूल-१, अंकुश से रोकना-१, महावत का पैर
हिलाना-२ नाम

(पूंछ मूल) पेचक (पढो अंकुस रोकण) यात,
(अखपैकरम) निसादियत वीत (नाम दुव आत) ।।—१७८

अंकुश की नोक-१, होद कसने का रस्सा-२ फंधे का
रस्सा-२ नाम

(अंकुस अग्र) अपष्ठ (अख) वरत वरत्रा (वोल),
कठवधण कठवध (कह तेम) कलापक (तोल) ।।—१७९

श्वेत घोड़ा-२, श्वेत पिंगल-१ नाम

(हय धोळो सब होय तो कहो) करक काका (ह),
धोळो पिंगळ रंग धरै गूढ असन) खोगा (ह) ।।—१८०

पीला घोड़ा-१, दूधिया घोडा-१, काला घोड़ा-१ लाल घोडा-१ नाम

(पीत रग हय) हरिय (पढ रग दूध) सेराह ,
(कसनरग) खु गाह (कह यू रग) लालकियाह ।।—१८१

काली पिंडलियों का स्वेत घोडा-१, कावरा घोडा-१ नाम

(जघ कसन सित व्है जरा उण रो नाम) उराह ,
(गिण कावरो रग मव हय रो नाम) हलाह ।।—१८२

षट्पात्

कपिल रग का घोडा-१, अयाल व बालछा श्वेत रग वाला त्रियूह-१, काले घुटने वाला पीले रग का-१, पीत रक्त व कृष्ण रक्त-१, नीला-२, गुलाबी-१ नाम

(रग कपिल रो वाज होय तिणनू) त्रियूह (कह ,
(याल पूछ अवदात जपो) वोल्लाह (नाम जह ।
पढ) कुलाह (रग पीत जरा जानू सित जिणरै ,
पीतरगत) उकनाह (तुच्छरग धूमर तिणरै ।
सव देय रग नीलो सरस) आनील (मु) नीलक अखो ,
रेवत रग) पाटल (सरव वो रु खान नामक रखो) ।।—१८३

दोहा

पीत हरित-२, काच जैसा श्वेत-१ नाम

(हरित पीत रग होय जो) हालक हरिक (सुहात ,
श्वेत काच रा रग सम) पिंगुल (नाम पढात) ।।—१८४

घोड़ों के खेत नाम

(धरू देस सवध सूं साकुर नाम सुणात) ,
वनायुज (रु) वाल्हीक (वलि) पारशीक (सु पुरणात) ।—१८५
सिंधूभव कावोज (सुण) खुरासाण तोखार ,
गोजिकाण केकाण (गिण घर) भाडेज (सुधार) ।।—१८६

बछेरा-३, वेगवाला-२ नाम

(अलप) अवसथा वाळ (अस प्रकट) किसोर पढात ,
जव जिणमें घणव्है जिको) जवन जवाधिक (जात) ।।—१८७

जातवंत घोड़ा-१, अच्छा चलने वाला-१ नाम

(जात) खेत जो व्है तुरी) आजानेह (अखात,
साधु फिरै चालै सदा सो) विनीत (सरसात) ।।—१८८

बुरा चलने वाला १, अष्ट-मंगल-१ नाम

(बुरो फिरै चालै विरस) सूकल (नाम सुणात,
उर खुर मुख कच पुच्छ सित) मंगलअष्ट (मुणात) ।।—१८९

पंचभद्र नाम

(पूठ हियो मूंढो प्रगट दो पसवाडा देख,
जिण हयरै धोळा जिको) पंचभद्र (तू पेख) ।।—१९०

हाथी की सकल-४, हाथी का कपोल-४
बांधने व पकड़ने का स्थान-१ नाम

अंदुक (अर) हिंजीर (अख) सांकळ निगड (सम्हारि),
करट कपोल (रु) गंड कट (वंधणगज) भू वारि ।।—१९१

हाथी की चार जात-४ घोडी-५ नाम

भद्र मंद म्रग मिश्र (भण जात चार गज जोय),
घोडी वडवा घोटकी हयी तुरंगी (होय) ।।—१९२

पूंछ-५, खच्चर-३, खुर-२ नाम

पूंछ मुराला पुच्छ (पढ) लूम (अनै) लंगूल,
वेसर खच्चर वेगसर सफ खुर (पांव सुमूल) ।।—१९३

गधा नाम

गधो गधैडो खर (गिणू) रोडीराव (रखाह),
लंबकरण रासभ (लखो वळे) सीतळावाह ।—१९४

ऊंट नाम

सढ्ढो पागळ सांढियो ऊंट टोड गध (आण)
मुणकमळो पाकेट सल जाखोड़ो सल (जाण) ।—१९५
करहो जूंग करेलडो नसलवड कुळनास,
कटकअसण गडंग (कह लघण) दुरंग (हुलास) ।—१९६

भोळि क्रमेलक भूतहन दोयककुल दासेर,
महाअंग बीसंत (मुरा) प्रियमरू रवराक (फेर) ।।—१६७

बैल नाम

वैल व्रखभ व्रस गो वळद धोरी धवळ (धरेह,
गराू) साकवर डागरो अनडुह भद्र (अरोह) ।।—१६८

साड-३, बछड़ा-६ नाम

आकल नोपत मदक (अख) तरण जेंगडो (तोल),
वच्छो वतसर वाछडो (वळे) टोगडो (वोल) ।।—१६६

बैल का कुब्बड-२, सींग-२, गाय-१०, भैंस-४ नाम

असकूट कुकुदक (अखो) सीग बिसारा (सुहात),
सीगाळी सुरभी सुरै तवा धेन (तुलात) ।—२००
(पढ) तपा (रु) नलपिका गो माहेयी गाय,
लालचखी महखी (लखो) भैंस हिडवी (भाय) ।।—२०१

भैंसा नाम

भैंसा जमवाहरा (भरा) महखो महिख (मुराय),
वाहराअरी जरत (जप लखो) हिडव लुलाय ।।—२०२

बकरी नाम

(कहो) वाकरी वोकडी छाळी छागी (होय),
अजा टाट मंजा (अखो ज्यू ही) वुज्जी (जोय) ।।—२०३

बकरा नाम

छाळो वुज्जो अज छगळ छग वकरो पसु छाग,
वोक वसत तभ वोकडो वरकर वक्कर (वाग) ।।—२०४

भेड नाम

गाडर लरडी गाडरी मेसी भेड (मुरोय),
रुजा रूगटाळी कुररि हुडी घटोरी (होय) ।।—२०५

मेंढा नाम

ऊरण मीढो हुड अवी घेटो मेस घटोर,
(गिराू) रुवाळो गाडरो एडक भेडो (ओर) ।।—२०६

गोवर-४, उपला-कडा-४ नाम

गोबर गोमय गायविट भूमोलेप (भणेह),
छाणा कडा (अर) छगण (एम) करीस (अणेह) ॥—२०७

कुत्ता नाम

कुत्तो लट्टो कूकरो स्वान भसण सुन (मोय),
कुरकुर मडळ कूतरो (जेम) टेगडो (जोय) ॥—२०८

सिंह-३१, भूखा सिंह-६ नाम

करीमार हरि केहरी नखआवध बनराव,
वाघ सेर लकाळ (वद राख) दुछर अगराव ।—२०९
महानाद नाहर मयद अगराजा (रु) अगेस,
सारदूळ (अर) सीघळी नखि भाखरानरेस ।—२१०
सीह सिंघ सारंग (सुण) कंठीरव कंठीर,
मरगराज अगराज (मुण) केहर नार कंठीर ।—२११
सादूळो अगयद (सुण) अधप डाखियो (आख,
वळे) अधायो वाघलो भूखो बेगळ (भाख) ॥—२१२

तंदुआ, चीता-४, अष्टापद सिंह-४ नाम

राखदुपी (अर) वरगडो चित्रक चीतो (होय),
अष्टापद कुंजरअरी सरभ आठपग (सोय) ॥—२१३

भालू-४, जरख-४ नाम

अच्छभल्ल भालूक (अर) भल्लक भाल (भणेह,
डाकण-बाहण अगडचण जरख तरच्छु (जणेह) ॥—२१४

रोझ-३, गैंडा हाथी-२, सूअर-२० नाम

रोझ गवय वनगव (रखो) खडगी खडग (अखाह),
कोडी कोलो गिड कवल (रख) वराह वाराह ।—२१५
(भण) भाकररोभोमियो टूंडाहळ टूंडाळ,
दातळैल जेखल (दखा) डाढवाळ डाढाळ ।—२१६
भूदारक गिडराज (भण) सूकर सूर (सुणाय),
थूळनास बहुप्रज (तथा) मुखलांगळक (मुणाय) ॥—२१७

गीदड नाम

गीदड जवुक गादडो स्याल्यो भरूज सियाळ,
भूरिमायु गोमायु (भरण गण) फेरड स्रगाळ ॥—२१८

भेडिया-३, लोमड़ी-४, खरगोस-७, सेही-३, लगूर-१२ नाम

वरी भेडियो वरगडो लूगती (रु) लूका (ह,
लखो) लूकडी नूमडी मुसल्यो दात्यो (साह)।—२१६
सुसो मुभकल्यो मम (वळे गरा) सूळिक खरगोम,
सेही हेडी सेयली प्लवग प्लवगम (पोस)।—२२०
साखाम्रग कप कीस (सुग) माकड कपी मुणात,
वनचर मरकट वांदरो हरि लगूर (कुहात) ॥—२२१

हिरण-८, गोहरा-४, छिपकली-६ नाम

म्रग कुरग (अर) मरगलो (कह) सारग छकार,
हिरण (वळे) आहू हरण गोवेरक गोधार।—२२२
(इम) विसखपरो गोहिरो पल्ली मुमली (पेख),
छावक विसमर छिपकळी (दुरस) गरोळी (देख)॥—२२३

गिर्गट-४, भाऊ-३ नाम

करणगेट्यो किरकाट (कह) सरट मयानक (मोहि,
गिण) संकोची गातरो जाहक भावू (जोहि) ॥—२२४

चूहा-५, छछूदर-२, नोल्या-५ नाम

आखू मूसक ऊदरो मूसो खणक (मुणात),
छछूदरी चम्चूदरी सरपाऽऽहार (सुणात)।—२२५
(अह) नोल्यो पिंगळ नकुल बभ्रू (और विचार),
ओतु विडाळ विलाव (अख) मारजार मजार ॥—२२६

सर्प-२२, जहर-११, नशा २ नाम

साप उरग विखहर सरप पनग दुजीह पनग,
अही फणी सारग अह भमग भुजग भुयग।—२२७
काळदार अहि व्याळ (कह) काकोदर (जिम) काळ,
चाल्ह भुजगम भुजग (जव) गरळ हळाहळ गाळ ॥—२२८

बखम कुटक (जिम) जहर विख काळकूट (कह तात),
विरसन गर रससार (वद) मादक गहळ (मनात) ।।—२२६

दुमुही सर्प-२, अजगर-२, डिंडिभ-२, निर्विष सर्प-२ नाम

राजसरप दम्मी (रखो) अजगर वाहस (आख),
जळव्याळ अलगरद (अख) दूदुह दुदुह (दाख) ।।—२३०

नाग-२, नागपुरी-१ वासुकी नाग-२ वासुकी रंग २ नाम

काद्रवेय (अर) नाग (कह) भोगावति (पुरिभाख),
सरपराज वासुकि (सुगू इण रो रंग) सित (आख) ।।—२३१

सर्पिणी नाम

(पढो) फुणाळी सरपणी काकोदरी (कुहात,
गिणू) भुजगी नागणी सपणी (वळे सुहात) ।।—२३२

फन-३, सर्प की देह-२, सर्प की डाढ-१, कृत्रिम विष-३ नाम

भोग फटा दरवी (प्रभण कहो) भोग अहिकाय,
आसी (इणरी डाढ अख) विस गर चार (वताय) ।।—२३३

शेषनाग नाम

पन्नगीस अहपत फणी अनत तखग अहराव,
-सेस फुणाळी बासक (रु) नागराज (घण आव) ।—२३४
धराधार पुहवीधरण बखधर नाग (वखाण),
संहसदोयचख (अर) श्रवण आलुक भोगी (आण) ।।—२३५

उक्तास्थलचरा पचेन्द्रियाः

◆

खचरान्पंचेन्द्रियानाह

पक्षी नाम

विहग विहगम खग वि वय सुकुनी सकुन (सुणात),
दुज पतग (पर) पतग द्विज अडज पछी (आत) ।।—२३६

चोंच-५, पख-४, पखों का मूल-१ नाम

चांच चंचु चचू (तवो) त्रोटि स्रपाटी (तेम),
पिच्छ पच्छ छद पत्र (पढ जपो) पच्छति (जेम) ।।—२३७

अंडा-३, घोसला-२, मोर-१२ नाम

अड पेसिका कोस (अख सुण ज्यो) आळ घुसाळ ,
मोरयो मोर मयूर (मुण) अहिभक वरही (आळ) ।—२३८
(रखो) कलापी मोरडो सिखी मिखडी (सोय) ,
नीलकंठ केकी (नरख जिम) सारग (क जोय) ॥—२३९

कोयल नाम

कोयल कोकिल पिक (कहो) वनप्रिय परभ्रत (बोल) ,
काकपुसट सारग (कह) तावालोयण (तोल) ॥—२४०

तोता नाम

लालचाच फळअदन (लख) तोतो कीर (तुलाट) ,
सुवो सूंवटो सुक (सुणू) सूडो (वळे सुणात) ॥— २४१

मैना-३, कलिंग-२, हूका-२, जीवजीव-१ नाम

सारू मैणा सारिका भृंग कलिंग (भणात ,
कोलाली) कुक्कुट कुहक जीवजीव (जणात) ॥—२४२

हस नाम

सितछद मानसओक (सुण) धीरट (अर) धवलग ,
(लखो) मुराल मराल (है रखो) हस सारंग ॥—२४३

पपीहा नाम

नभनीरप चात्रग (नरख) चातक (फेर चवात) ,
पपीहो (रु) सारग (पढ) वावव्यो (विख्यात) ॥—२४४

कौआ नाम

काक काग द्विक कागलो वायस करट (वुलात) ,
इकलोयण वलिभुक (अखो तिम) घूकारि (तुलात) ॥—२४५

जलकौआ-१, उल्लू-६, मुर्गा-४ नाम

(जळवायस) मदगू (जपो) वायससात्रव (बोल ,
दिवसअध घूघू (दखो तेम) अलूक (सुतोल) ।—२४६
घूक रातराजा (घडो) ताम्रचूड (कह तात) ,
कृकवाकू (अर) कूकडो चरणायुधक (चवात) ॥—२४७

चकवा-४, टिटहरी-३, चिड़िया नर-२ नाम

कोक रथागाभिध (कहो) चक्रावक चक्रावक चकवाह्,
टीटोडी टिट्टिभ टिटिभ चटक कुलिगक (चाह) ।।—२४८

बुगला-२, ककपक्षी-२, चील-६, शेनपक्षी-३, गिद्धिनी-७
चिमगादर-२, बडी चिमगादर-२, आड़-२ नाम

वक बुगलो (रु) वटोक (वद) कक (रु) ढीच (कुहात,
बदो) कावळी सावळी समळी चील (सुहात) ।।—२४९
आतापी सुनखी (अखो) सेन ससाद सिचारण,
ग्रीधरण खग दुज गीधरणी पखरण (फेर पढारण) ।।—२५०
दूरनैरण रातग (दख) चरमचडी चमचेड,
वागळ मुखविमटा (वदो) आटी आड (सुएड) ।।—२५१

कबूतर-३, कमेडी व पडुकी-२, छोटी पडुकी-३
कावर, गुरगल-२, चिड़िया मादा-३, चकोर-३
रूपारेल-१, तीतर-२, वया-२ नाम

पारावत (रु) परेवडो कलरव (फेरू कोप),
आखालाल कपोत (अख) होलड डूंकड (होप) ।।—२५२
कम्मेडी गुरगळ (कहो) कावर (फेर कुहाय),
चडी चुडकली (अह) चटी बिखसूचक (पुलवाय) ।।—२५३
चळचचू (रु) चकोर (चव) भारद्वाज (भरणेह),
तीतर (अर) खरकोरण (तव) बीयो सुघर (वरणेह) ।।—२५४

उक्ता खचरा पचेन्द्रिया

•

जलचरान् पंचेन्द्रिया नाह

मच्छली नाम

मच्छ मीन झख तिम (कहो) सवर सळकी (सोय),
प्रथुरोमा थिरजीह (पढ जिम) वैसारिरण (जोय) ।।—२५५

मगर-३, जलमानस-२, मगर-४ नाम

मकर नक्र(अर) मक्र (मुरण) मारणस (जळ) सिसुमार,
ततुनाग ततुरण (तवो) वरुरणपास अवहार ।।—२५६

कंकडा-४, कछुआ-४ नाम

मोळपगो करकट (मुणू) कुरचिल (और) कुलीर ,
कच्छप कूरम कमठ (कह वरो) डुलीसुत (धीर) ।।—२५७

मेंडक नाम

भेक डेडरो हरि (भणू) प्लवग डेडको (पेख) ,
वरसाभू मडूक (वद) दादुर दग्दुर (देख) ।।—२५८

उक्ता जलचरा पचेन्द्रियाः

◆

नरक मे गिरे हुए-४, पीडा-२, वेगार-२ नाम

नारक अतिवाहिक (नरख) प्रेत परेत (पिछाण) ,
अतपीडा (अर) यातना आजू विसटी (आण) ।।—२५९

नरक-४, पाताल-७ नाम

निरय नरक नारक (नरख) दुरगत (ओरू दाख) ,
वडवामुख वळसदन (वक) अधोभुवन (इम आख) ।।—२६०
नागलोक (फेरू नरख पढो वळे) पाताळ ,
(राख) रसातळ (इम रिधू परगट पढो) पयाळ ।।—२६१

छिद्र-६, गढ़ा-४ नाम

रोप रध्र विल विवर (पढ) छेद छिद्र (उच्चार) ,
अवट गरत दर सुम्र (अख विल भू रो विसतार) ।।—२६२

जगत-१५, जन्म-७ नाम

लोक भुवन जगती खलक आलम भव दुनियाण ,
जग जिहान दुनिया जगत (जिम) समार (सुजाण) ।।—२६३
विस्व दुनि संसार (वद) उतपत पैदा (आख) ,
जनम जणी उतपन जणण भव उतपत्ती (भाख) ।।—२६४

सास-३, उसास-१, निसास-४ नाम

सांस सुवास (रु) स्वास-(सुण मुणज्यो फेर) उस्मास .
वहिरमूह रातन (वको) निस्वास (रु) नीसास ।।—२६५

सुख-४, दुःख-६ नाम

सात निरव्रती सरम सुख आरति दुख आमीन ,
कछर प्रसूतिज दुख कसट असुख वेदना (ईल) ॥—२६६

आधि-१, व्याधि-१, संदेह-७, दोष-३ नाम

आधी (मनरी आरती) व्याधी (तनरी वेख) ,
ससय (इम) सदेह (सुण) द्वापर ससै (देख) ।—२६७
आरेक (रु) सासै (अखो) विचिकितना (आखाण) ,
दोस (अनै) आश्रव (दखो जिम आदी) नव (जांण) ॥—२६८

स्वभाव-८, स्नेह-५, समाधि-४, धर्म-२, पूर्व कर्म व प्रारब्ध-३ पाप-१२, अभिप्राय-५ नाम

प्रकृत रीत लच्छण (पढो) सरज सरूप सुभाव ,
शील (वळै) ससिद्धि (सुण) हारद प्रेम (सुहाव) ।—२६९
प्रीती प्रीत सनेह (पढ अख) समाधि अवधान ,
समाधांन प्रणिधान (सुण) सुकृत धरम (सुजान) ।—२७०
श्रेय पुण्य व्रस (फेर सुण) दैव भाग विधि देख) ,
कलक पाप अघ पंक (अख) पातक दुसकृत (पेख) ।—२७१
(लखो) दुरित कळमस कळुस असभ अह तम (आख) ,
अभिप्राय आसय (अखो) भाव छद मत (भाख) ॥—२७२

शीत-१२ नाम

जड़(जिम) सीतळ सिसिर(जप)सीत ठड सी (सोहि) ।
हेम तुखार सुसीम हिम जाडो पाळो (जोहि) ॥—२७३

उष्ण-७, कडा-६, नर्म-२, मधुर-४ नाम

उन्हू तीछण खर उसण तीव्र चड पटु (तेम) ,
कक्खट करकस क्रूर (कह जप) कठोर द्रढ (जैम) ।—२७४
कठण जरठ खर परुस (कह) कोमल म्रदु (कुहात) ,
रसजेठो (अर) मधुर (मुण) स्वादू स्वाद (सुहात) ॥—२७५

खट्टा-३, खारा-२, कड़वा-४ नाम

पाचन (खाटो अमल (पढ) लवण सरवरस (लेख) ,
मुखधोवण कडवो (मुण) ओसण कटु (अवरेख) ॥—२७६

कसेला-३, चरपरा-२, सफेद-१२ धूसररंग-१ नाम

तोरो तुवर कसाय (तव) चरको तिकत (चवात),
धवल सेत सित विसद (धर) अरजुण सुचि अवदात।—२७७
धोळ सुकळ पाडू (धरो) पांडुर गोर (पढात,
कचित धोळा) रगनू धूसर (नाम धरात)।।—२७८

पीला-३, हरा-५, कबरा-६ लाल-५ नाम

पीतळ पीळो पीत (पढ लखो) सवज पालास,
(राख) हर्‍यो हरियो हरित (मुण)करवुर कळमास।—२७९
सवळ चित्र चित्रक (सुण अवर) कावरो (आख),
लाल रगत लोहित (लखो) रोहित सोणक (राख)।।—२८०

नीला-काला-६, लाल-पीला मिला हुआ-४ नाम

(सुण) नील काळो असित सावळ मेचक स्याम,
(पीत रगत) पिंजर (पढो) पिंग कपिल हरि (पाम)।।—२८१

शब्द नाम

सवद धुनी सुर रव (सुण) निनद घोस रुत नाद,
आरव ध्वान विराव (इम) ह्राद स्वान निर्ह्राद।।—२८२

सप्तस्वर नाम

सडज रखभ गधार (सुण) मद्धम पचम (मान),
धैवत (निखध) निखाद (ये सातू सुर·सूजान)।।—२८३

कोलाहल-२, हिनहिनाना-२, रभाना-३, चहचहाना-२ नाम

कोलाहल कळकळ (कहो) हेसा हीस (सुहात),
रभा हभा गायरव कूजित विवर (कुहात)।।—२८४

पंक्ति-४ जोडा-७ नाम

माळा तति राजी (मुण लेखा) वीथि (लखाय),
जुगल द्वितिय द्वै दुद जुग यामल जुगम (अखाय)।।—२८५

बहुत-१०, थोडा-८, सूक्ष्म-२, लेश-३, लवा-२ नाम

भोत प्रचुर पुसकळ वहुत वोत घणा (वाखाण),
भूरी भूय अदभ्र वहु तोक तुच्छ तनु (जाण)।—२८६

अलप छुद्र क्रस दभ्र अणु पेलव सुच्छम (पेख),
लेस (अनै) तुट कण (लखो) दीरघ आयत (देख) ।।—२८७

ऊ चा ५, नीचा-४, छोटा-२ नाम

तु ग उच्च उन्नत (अखो) ऊचो उच्छित (आत),
नीच कुवज वावन खरव लघु (अर) ह्रस्व (लखात) ।।—२८८

चौडा-७, विस्तार-३ नाम

व्यूढ विपुल गुरू महत वहु प्रथुळ विसाल (पढाव),
व्यास (वळे) विसतार (वक इम) आभोग (अढाव) ।।—२८९

सक्षेप-४, टुकडा-६ नाम

समाहार सछेप (सुण) सग्रह (वळे) समास,
अघर खड खडळ (अखो) भित्त विहुड दळ (भास) ।।—२९०

विभाग-६, पवित्र-५ नाम

वाटो भाग विभाग वट वट अस (िख्यात),
पावन पुण्य पवित्र (पढ) पूत पवित्तर (पात) ।।—२९१

मैला-५, निर्मल-११, साम्हने-३, धुला हुआ-२ नाम

मैलो कळमम मळीमस कच्चर मलिन (कुहात),
उजवळ ऊजळ ऊजळो सुचि सुच बिमळ (सुहात) ।—२९२
सुघ विसुद्ध निरमळ (सुण आख) विसद) अवदात,
समुखीन अभिमुख समुह साधित धौत (सुणात) ।।—२९३

खाली-५, सघन-५ नाम

रिकतक रीतो रिकत (रख) सूनू तुच्छ (सुणेह),
निविड निरतर घन प्रभण अविरळ गाढ (अखेह) ।।—२९४

नया-४ पुराना-५, जंगम-१, थावर-१ नाम

नूतन नवो नवीन नव प्रतन (र) जरत पुराण,
(रखो) पुरातन जीरण (क) जगम थावर (जाण) ।।—२९५

निकट-७, वाका-टेढा-७, चचल-६ नाम

नीडो निकट सनीड (इम) सन्निध समीप (सुहात),
सनिधान आमन्न (मुण) कु चित कुटिळ (कुहात) ।—२९६

बक्र बाक (अर) बाकडो बेल्लित नमत (सुबोल),
चळ चचळ अणथिर चपळ तरळ चळाचळ (तोल) ॥—२९७

अकेला-५, पहिला-७, पिछला-५, विचला-२ नाम

एकाकी एकक (कहो) अवगुण हेकल एक,
पहलो आदिम आद (पढ बळे) प्रथम (सविवेक) ।—२९८

पूरब परथम अग्र (पुण) अंतिम अंत (सु आख),
चरम (रु) पच्छिम पाछलो माझर मद्धम (भाख) ॥—२९९

बीच-४ सादृस्य-६ नाम

विच विचाळ (अर) बीच मझ (कह) उपमा अनुकार,
ककसा (अर) उपमान (कह) उणियारो उणिहार ॥—३००

प्रतिबिंब-५, प्रतिकूल-४ नाम

बिंब च्छद प्रतिबिंब (वद) प्रतिनिधि प्रतिमा (पेख),
प्रतिलोमिक प्रतिकूळ (पढ) वाम प्रतीप (बिसेख) ॥—३०१

निरकुश-३, प्रकट-३, गोल-३ नाम

उच्छृंखळ उद्दाम (अख एम) अनरगळ (आख),
प्रकट व्यक्त उलवण (पढो) बरतुल गोळ (विभाग) ॥—३०२

भिन्न-३, मिला हुआ २, अंगीकार-३ नाम

जुदो भिन्न इतरत (जपो) मिश्रित मिसिर (मुणात),
अंगीकृत प्रतिश्रुत (अखो) सश्रुत (वळे सुणात) ।—३०३

रक्षित-५, काम-३, रहना-२ नाम

गोपायित त्राता गुपत रच्छित त्राण (रखेह),
क्रिया विधा (अर) करम (कह) असना तिथि (अखेह) ॥—३०४

अनुक्रम-४, आलिंगन-३ नाम

अनुपूरवी अनुक्रम परिपाटी क्रम (पेख),
आलिंगन परिष्वग (अख) उपगूहन (अवरेख) ॥—३०५

विघ्न-४, आरम्भ-४ नाम

अतराय प्रत्यूह (अख) विघन बिवाय (विख्यात),
क्रम प्रक्रम उपक्रम (कहो इम) आरभ अणात ॥—३०६

वियोग-३, कारण-७ नाम

विरह वियोग विजोग (बक) कारण नमत (कुहात)
कारण बीज हेतू (कहो) निमित निदान (सुहात) ।।—३०७

कार्य-३, विश्वास-२, रक्षा-२ नाम

अरथ प्रयोजन (एम अख) कारज (वळे कहाय),
विखभक विसवास (बद) रच्छा त्राण (रहाय) ।।—३०८

चिन्ह नाम

लाछण लच्छण (अर) लछण अहनाण (र) ऐनाण,
चहन चिन्ह (ओरू चवो) सहनाणक सैनाण ।।—३०९

भैरव नाम

(चव) चावडाराचेलका भैरव भैरू (भाख),
भैं वाण (अर) भैरवा (एम) खेतळा (आख) ।—३१०
चामु डानदन (चवो जेम) कमाळी जोध,
खेतपाळ (आखो बळे) सभु लागडा (सोध) ।।—३११

करनीदेवी नाम

करनल कनियाणी (कहो ईखो) धावळियाळ,
(सुण) करनी महियासधू आयी लोवड़ियाळ ।—३१२
धावळयाळी (ओर धर) देसणोकपत (दाख,
अक नाम सव ईहगा आयी रा ऐ आख) ।।—३१३

अक्षर नाम

अखर अक्खर अक्र (इम) अच्छर आक (अखात),
अखर वरण अच्छर (अखो) दसकत (वले दिखात) ।।—३१४

डाकिनी नाम

डाकण डायण डायणी कहो डाकणी (एम),
आखरढायीआखणी जरखवाहणी (जेम) ।।—३१५

भूत नाम

भूत परेत पिसाच (भण) प्रेत (र) जद (पढात),
सगस गलीच मळीच (सव आठू नाम अखात) ।।—३१६

स्याहरी-२, चुड़ैल-४ नाम

सकोतरी (अर) स्याहरी चुडावण चूडेल,
पिसाचण (अर) प्रेतणी (गण अतरा सिव गैल) ॥—३१७

इति श्री चारण मिश्रण सूर्य्यमल्लात्मज मुरारिदान
बिरचिते डिगल भाषा कोषे तृतीय खण्ड समाप्त.

• • •

अनेकारथी-कोष

कवि उदैराम विरचित

अथ अनेकारथी लिख्यते

दोहा

एक सबद पद मे उठे अरथ अनेक उपाय ,
अनेकारथ 'उदा' उकत विवधा नाम वणाय ॥—१

माल् नाम

माळा समक्रत सुमरणा नांम (दाम) हरनेह ,
गुणाणी सूक श्रृज गुणवळी ('उदा') सिमर (अछेह ॥—२

जुगल नाम

जमळ जुगळ यम दु द जुग उभय मिथुन द्वय (आण) ,
दोय करग चख दपती (जुगळ) जाम ऐ जाण) ॥—३

सुरभी नाम

चदण गऊ म्रग भ्रत (चढै) सुमनावळी वसंत ,
अंतरादि म्रगमद यसा गांधीहाट (गणत) ॥—४

मधू नाम

सुजळ दूध मदरा सुधा (सुण) नभ चैत वसंत ,
विपन मधू मकरद (वळ) मधूसूदन माकत ॥—५

कल नाम

कळ सूरार निखग (कहि कळ) कळजुग कळेस ,
कळचाळा (कळ) जुध (कहि विलसै देस - विदेस) ॥—६

आतम नाम

मन वुध चित अहकार (मुण) करम जीत निरधार ,
(त्यु) सुभाव (जग) आतमा परमातमा (पसार) ॥—७

धनजय नाम

पवन धनजय (नाम पढ) अगनि (धनजय आख) ,
पथ (धनजय की प्रभा भुजा कृष्ण वळ भाख) ॥—८

अरजुण नाम

ससारजुण अरजुन (सुणौ) द्रुमणारजुन तर (दाख,
पथ अरजुन हरि प्रिय सखा सो भारथ जय साख) ।।—९

पग नाम

परण पत्र रथ (पत्र पढ) वाह (पत्र वळ) वित्त,
(पत्र) विहगम (पख सू चचळ पौहचै) चित्त ।।—१०

पत्री नाम

(पत्री) खग (पत्री) विटप (पत्री) कमळ (प्रकास,
पत्री) सर (जुध पथ के जीतो भारथ जास) ।।—११

बरही नाम

(बरही) सिखि (बरही) विरख (बरही)कुरकट (वेस,
बरही) मोरचद्रावळी (हर सिर मुगट हमेस) ।।—१२

काम नाम

काम काज (सब जग करै काम) मदन (को नांम,
काम) भोग अभलाख (कहि सो सारै घणस्याम) ।।—१३

धाम नाम

तेज धाम (अरु धाम) तन (धाम) जोत ग्रह (धाम),
किरण (धाम कोटक कळा सो सुन्दर घणस्याम) ।।—१४

वाम नाम

(वाम) मनोहर (वाम) भव कुटळ (वाम कहि) काम,
(वाम हाथ आगै वधै सवादौ सग्राम) ।।—१५

भव नाम

(भव) महेस जग जनम (भव भव) कल्याण (भणात,
भव भव भज भगवत नै कारण) कमलाकत ।।—१६

कलप नाम

(कळप) कपट द्वि (कळप कहि कळप) बुध परकास,
(कळप) समर रथ कलपवृख (जगनाथ भुज सास) ।।—१७

कर नाम

(कर) भुज हस्तीसु ड कर (कर लागै कर वाम,
कर) विखिया (रस दूर कर नित सिमरौ हर नाम) ।।—१८

दर नाम

(दर) जीवादक भूमदर (दर) बळ हर दरवान,
(दर) प्रखत (दर) सख (दर भज 'उदा' भरवान) ।।—१६

वर नाम

बर दाता सिव सेप्ट (वर वर) सु दर (वाखाण,
वर) दूलह श्रीकृष्ण (वर जग गोपीयत जाण) ।।—२०

व्रख नाम

(व्रख रास मघवांन (वृख) करुण (वृख वृख) काम,
(वृख)धोरी तर धरम(वृख)सुरतर(वृख घणस्याम) ।।—२१

पतग नाम

रग (पतग पतग) रव (त्यौ) मिख कीट (पतग),
केता गुडि (पतग कहि) तर जगरग (पतग) ।।—२२

पल नाम

(पल) आमख (भाखै प्रथी)खट उमास (पल ख्यात,
पल) भारपत कव पलक (नं) विपळ (साथ विख्यात) ।।—२३

दल नाम

(दळ) तरपत्रा (दाखजै दळ) नृपफौजदुगम,
(दळ) लाडू (दळ) पक प्रक (सो हर मुगट सनम) ।।—२४

बल नाम

धीर वीरज (वळ) धरम नृपदळ बळ (निरधार,
वळ) हासौ दईतद्र (वळ) सु दर (बळ) ततसार ।।—२५

अल् नाम

(अळ) पूरण समरछ(अळ अळ) समरथ (कथ आख,
अळ) भूखण गुण भूठ (अळ राम सरण गुण राख) ।।—२६

वय, जीव नाम

(वय) विहग (वय काळ (वळ वय वय) क्रम विसतार,
ससुर गुर आतम (सदा एता जीव उचार) ॥—२७

मार, सार नांम

सुधा (मार) विख (मार सुण मार) काम अत (मार),
धीरज वीरज वळ धरम सत (कोटी) घृत (सार) ॥—२८

कलभ नाम

करी उतावळ कलुख (कहि एता कलभ उचार),
आश्रय सावण गयण नभ (वळ) भाद्रवौ (विचार) ॥—२९

वसु, पटु नाम

सुर अगनी दुत जळ सद्रव (ए वसू नाम उचार),
तीखण निपुण निरोग (तव विध पटू नाम विचार) ॥—३०

तुरंग, कुरग नाम

मन तुरग धखपख (मुण) वाज तुरग (वखाण),
रग (कुरग कुरंग) म्रग जग पतग (रग जाण) ॥—३१

आतमज, कवंध नाम

काम रुधर सुत (कु कहै नांम आतमज न्याह),
सिरविणसुभट (कवध सुण सर) आसुर (दरसाय) ॥—३२

हंस, वाण नाम

रव अस धीरट जीव (रट) छद (हस) छिव ग्यान,
सरग तीर वळ सुत (सदा वदै वाण विदवान) ॥—३३

पयोधर, भूधर नांम

तरण मेघ कुच सेततर (नाम पयोधर नीत),
गिर नृप आदवराह (गण भूधर कहो अभीत) ॥—३४

वरुन, गोत्र नाम

सार च्यार जळपत (सदा) विखवर वरण (विख्यात),
सईल सिखर कुळ (नाम सध गोत्र तीन संग न्यात) ॥—३५

तनु नाम

तात सुछम विसतार (तनु) विरला (तनु विधान,
(कव सिस मूरख वाळ कहि विण भगती भगवांन) ।।—३६

जाल काल नाम

जाळ झरोखा (जाळ गण) मद दभ ग्रहमीन,
काळ असत वयजम (कहां रहो राम रस लीन) ।।—३७

ताल, व्याल नाम

(ताळ) ताळ हरताळ सर (ताळ) राग तर (ताळ),
दुष्ट नाग गज अतदिन (व्याळ नाम विकराळ) ।।—३८

जलज, तम नाम

मीन कमळ मोती मयक सख (जळज तत सार),
तमस क्रोध राहू तिमर (विध तम नाम विचार) ।।—३९

गुण, श्रव नाम

त्रगुण सूत तूजी (तणा कर गुण) हरगुण क्रीत,
गिरधण सवता ख क (गुण) पढ श्रवनाम पुनीत) ।।—४०

बन, घण नाम

वन वारद पाती (वळै) वन (वन नांम वताय),
घणा वादळ विसतार (घण) घण (सू लोह घडाय) ।।—४१

वरण नाम

वरण श्रुती च्यारू-वरण अछर (वरण उचार),
वरुण-दुजादिक रग-वरण (अवरण ब्रह्म उचार) ।।—४२

पौत, बुध नाम

पौत सिसू नौका (पढौ पोत पौत वरठाय),
पडत हरि-अवतार (पढ) ससिसुत बुध (सुणाय) ।।—४३

अनत, क्षय नाम

गिगन सेस अनेक (गण यक) हर-रूप (अनत),
रोग (र) प्रळै विनास (रट पद क्षय नाम पढत) ।।—४४

राजीव-लोचन नाम

जळ सस मुकता मीन (जप) रांम (नाम राजीव),
रस देही जन व्यापारण (दुत मुरलोक रईव) ।।—४५

सुक्र, खग नाम

जेठमास वारज अगन सुक्राचारज सुक्र,
ससर वप वन विहंग सुर वारद मग खग वक्र ।।—४६

कलाप, ब्रह्म नाम

गण तुनीर विकळपगती केकी पत्र कलाप,
(देह) जीव विध ब्रह्म दुज एक (ब्रह्म) जग आप ।।—४७

उडप, मद नाम

रिख विहग कवरत ससि नाव उडुप निरधार,
अलप सनी खग मूढ अघ एता मद (उचार) ।।—४८

वारन, स्यदन नाम

वरणजण वगतर गयद (वळ) वारण (नाम वताय),
चितुरगथ जळ (चढै सिंदन नाम सुणाय) ।।—४९

पंथी, कौसक नाम

राह ग्राह ससि मदन (रट) वटवी पथी (वेस),
विसवामित्र गुगळवृखी अळूक कौसक (अेस) ।।—५०

पौहकर, अवर नाम

जळ नभ तीरथ सु डगज मारज पौहकर वाण,
आवृत नभ असुकाददै (जुगती अवर जाण) ।।—५१

सवर, कंवल नाम

जळ आमु गिर गाठ (जप) सगना सवर (साख),
गोगळ तनजळ वाहगत ऊनीकावळ (आख) ।।—५२

नग, नाग नाम

गिरतर जवहर नगर (नग विध-नग धाम वखाण),
काकोदर गज पत्र कुलट (नाग नांम निरवाण) ।।—५३

करन, अज नाम

श्रवण पोत रवसुत (सदा करन नाम प्रकास),
विध्र सिव वोक अनत वय जोवनादि (अज जास) ।।—५४

सिव, दुज नाम

सुख कल्याण हर श्रेष्टतर सलिल (नाम सिवसार),
पखी रद ब्रामण (पढी ए दुज नाम उचार) ।।—५५

विरोचन, वल नाम

सिखाभाण सस देत (सुण नाम विरोचन नेम),
हरि गुजरी असनहद (पढ) बळराजा (प्रेम) ।।—५६

वृख, तरक नाम

पावकवृडहा देत (पुन) वलष्टक (नाम वताय),
न्याय विचार जुदा (निरख एता तरक उपाय) ।।—५७

रज नाम

रज रजवट आरत्त (रज रज) वामातनरीत,
रजरेणा मन दीन-रज (पढ रज) पाप अनीत ।।—५८

कंबु, भुवन नाम

सख रतन खोडसावरत (कवु नाम कहाय),
गगन नीर सुरभुवण (गण भुवण नाम मन भाय) ।।—५९

कुस, कूट नाम

दनु सीता-सुत जलदरभ (ए कुस नाम उजास),
कपट अहर गिर (वोहत कहि पढ ए कूट प्रकास) ।।—६०

खर, हरनी नांम

गरधभ राकस सान (गण) तीखण खर (कहि तोल),
उमा भृगी जूथी (एता) खित मन हरणी (खोल) ।।—६१

कुंज जम नांम

मगल भोमासर (ममझ) तरकुंज (नाम बताय),
जुगक्तत (अरु) राह (जप) जम (का नाम जणाय) ।।—६२

धात्री, सिवा नाम

धाय आवळा (कहि) घरा धात्री (नाम धराय),
हरडै फौही (वळ) हरा (सिवा नाम सभळाय) ॥—६३

रस, रभा नाम

काची जिभ्या दाम (कहि) रसन (नाम रचाय),
उसा कदळी उरवसी (दळ रंभा दरसाय) ॥—६४

माया, यला नाम

दया नेह छळ (दाखजै) द्रव साया (हर दाख),
यळ वुध तिय मनहर यळा (भेद यळा गुण भाख) ॥—६५

सुमना, जोत नाम

मदती तिय (वळ) मालती सुमना कुसुम सहेत,
दीपकरण रिख अगन दुत व्रमजोत (जगवेत) ॥—६६

यडा, विघ नांम

यळ सुर मनहर अवका पिंड यज्ञ परताप,
धाता देव विधान (कहि) आविध करता (आप) ॥—६७

निसा, अजा नाम

निसा रात हळदी (निसा निसा) पकी (निरधार),
अजा अज्या माया (अजा) ब्रह्महूंतविसतार ॥—६८

जिह्‌न, हस्त नाम

कपट मूठ आळस (कहै) जिह्‌न (नाम घण जाण),
करीसूंड (कही) नखत्र (कहि विदवत हस्त वखाण) ॥—६९

ऋतत, मित्र नाम

सास्त्रागम सिधत (कहि) जम (ऋतत ज्यूं ग्यान),
सवता सजन गुण सिखा (नर जग मित्र निधान) ॥—७०

सारग नांम

गज हय केहर गिगन गिर कज प्रदीप कुरग,
दादर चातुक सस दिनद सिखी अळ, सुर (सारग) ॥—७१

हरि नाम

कपी केहर केकारण (कहि) अळियद अरविंद,
वाघ गयद कुरग वन (चव) नभ कचरण चंद ।—७२
पावक पारणी पय पवन नाग गयद नरद,
गिर हरि गिरधर(सिमर गुरण नित-नित वृज आनद) ।।—७३

ध्रुव, सुमन नाम

(पढ) निसचय ध्रूताल पद जोगादिक (ध्रू जारण),
मन वसत कुसमावळी (वळ) रिख सुमन (वखारण) ।।—७४

विटप, दान नाम

पलव स्रृग विसतार पुन तर वृख (नाम वताय,
दान देत) गजदारण (दख दान) दारण (दरसाय) ।।—७५

रस नाम

नवरस घ्रत जळ नूतरस अम्रत विख (रस) ईख,
रस-विद्या वर प्रेम-रस (सदा रांम गुण सीख) ।।—७६

स्नेह नाम

तेल घिरत मन प्रीत (तव सो सनेह तत सार,
'उदा' धर लै ध्यान उर करलै नदकुमार) ।।—७७

गउरी नाम

सुभ्र उदय कुळ चसवती उभ अप्रसतुत (आख),
दल गोरोचन देवकी (सग) नागौरी (साख) ।।—७८

हार नाम

उपवन रूपा ढिग अजय मुगता कुसम (मिळाय),
खेत (हार) खगत खड़ी (जुगती हार जणाय) ।।—७९

क्षुद्रा नाम

नटी क्षेत्र उतपत निठुर असि वैस्यादि (अेह),
मदमाखी खळजन (मुणौ क्षुद्रा) खरकीखेह ।।—८०

वाह नाम

पवन खेत अस सिस (पढौ) वरण मेघ परवाह,
(वाहण) रथ-इत्यादि (वळै विध वखारण मुण वाह) ।।—८१

कुथ नाम

केथा कवळ कीट (क हि) प्रातसथाईप्रीत,
कुथोकारज (कुथ कही रची यता कुथ रीत) ॥—८२

भाव नाम

पूज्य मनुज रस उतपती प्रीत पदारथ (पेख),
मनहुलास पूरणमया (विवधा भाव विसेख) ॥—८३

कुतप नाम

तिल कवळ खग पात्र (तव) सलल वर कुस छाग,
दोहित अगनी काळ (दग्व यता कुतप कर) आग ॥—८४

भग नाम

श्री सूरज दिनकर सुखद महिमा (ज) ससि अगंक,
क्राती सग्या सुभकळा सुभग जोन (सग सक) ॥—८५

कीलाल नाम

नीर खीर घ्रत मेघ नद मद रव पुष्प (प्रमाण,
कव यतरा कीलल कहि जाणै गुणी सुजाण) ॥—८६

देव नाम

वाळक कुलटी नृप विविध वरखा गुण विवहार,
पत सुगती जीवत प्रथी (वाळक देख विचार) ॥—८७

ललाम नाम

पुरख गुणी कोमळ (पढी) सवर स्निग्ध मेल,
भूखातमा विदग्ध (भण नाम ललाम) नवेल ॥—७८

श्री नाम

(रट) करता भरता रमा श्री अछर सुख सार,
(विवध आद ज्यू रगण विध श्री श्री श्री ततसार) ॥—८६

• • • •

एकाक्षरी नांम-माला

वीरभाण रतनू विरचित

श्री गणेसाय नम

अथः एकाक्षरी नांम - माला लिख्यते

दूहा

कहत अकार ज विस्नू कू, पुनि महेस मत मान ।
आ ब्रह्मा कू कहत है, इ—ई जुग मार जान ।।—१

लघु उकार सकर कह्यो, दीरघ विस्नु स देख ।
देव—मात लघु री कहै, दीरघ दनुज विसेख ।।—२

लघु लि—लृ कार सुर मात पुनि, नागमात गुरु होय ।
ए जु कहत है विस्नु कू, ऐ जु महेसुर सोय ।।—३

ओ ब्रह्मा जु अनत औ, परब्रह्म अभिमान ।
कविकुळ सब ही कहत यू, अ महेसुर आन ।।—४

क ब्रह्मा कू कहत कवि, वाय सूर पुनि लेख ।
कहत आतमा सुख कू, क प्रकास अरु लेख ।।—५

क सिर क जळ कजु सुख, कूं धरती धर चित्र ।
कु ... कूं जाणियौ, वजु विवेक धरि चित्र ।।—६

ख इंद्रीय नभ ख कह्यो, ख जु सरग पुनि सोय ।
कहै सुपुन्य से ख सवै, ख यू होय ।।—७

अ विस्णु, महेस । आ : ब्रह्मा ।
इ ई मार । उ सकर । ऊ : विष्णु ।
रि (ऋ) : देवमाता । री (ॠ) : दनुजमाता ।
लि (लृ) सुरमाता । लृ (ॡ) नागमाता ।
ए विस्नु । ऐ : महेसुर ।
ओ ब्रह्मा, अनत शेषनाग । औ परब्रह्म, अभिमान ।
क ब्रह्मा, विस्णु, वायु, सूर्य, प्रकास, आत्मा, सुख ।
क : मस्तक, जल, कमल, सुख, पृथ्वी । कु विवेक, वजु ।
खं इन्द्रिय, नभ, स्वर्ग, पुन्य ।

घटा किंकरणी मेघ सू, कह खकार सब कोय ।
पुनि धुनि सू घूक है, दक्ष गुणीजण लोय ।।—८

कहत ङकार जू भैरव वह, अरु जि विसन जिय जान ।
पुनि ङकार स्वर सू कहैं, चतुर चोर कहमान ।।—६

चद ही कहत चकोर सब, अरु ज चोर कह मान ।
सोभा सू सब कहत है, पक्ष सवद सू जान ।।—१०

छ निरमळ सब ही कहै, बहुरी विजुरी देख ।
छेदन कू कहत है कवि, पुनि जु सवर लेख ।।—११

कहत जकार जु वेग सू, अरु जु तेज सू कोय ।
पूजा हू सू सब कहै, जेता जय न होय ।।—१२

कहत झकार जु झर रह, बहुरि नस्ट कहु सोय ।
पुनि झकार वचक कह्यो, घर-घर स्वर ही होय ।।—१३

रुप विषयातमा, अरु जु गायन ही गाय ।
जर जर सवद सू कहत है, सवे लकार बनाय ।।—१४

ञ प्रथवी मू कहत कवि, ट वायस वजु आन ।
कहत टकार जु इस्वरी, बरहू जु स्वस्त न मानि ।।—१५

कहत वकार विसाळ सू, पुनि घन सू सब कोय ।
चद म उलहू कहत कवि, भ सकर ध्वनि सोय ।।—१६

ढक्का कू ढ कहत कवि, ध्वनि निगूढ कह जान ।
पुनि णकार कहि जान सू अरु ज स्तुसि तकार स आन ।।—१७

ख घंटा, किंकणी, मेघ, धुनि, घूक ।
ङ भैरव । जि विस्नु, जिय, स्वर, चतुर, चोर ।
च चकोर चद चौर, सोभा, पक्ष ।
छ . निर्मल, विजुरी, छेदन, सवर ।
ज वेग, तेज, पूजा, जय ।
झ झार, नष्ट, वचक, स्वर, रूप, विषयात्मा, गायन । ल : जर-जर ।
ञ पृथ्वी । ट · वायस । ट · ईश्वरी, मोर (वरपू), स्वस्ति ।
व विशाल, घन ।
म चद, उलहू (उल्लू) । भ सकर ध्वनि ।
ढ . ढक्का (बड़ा ढोल), ध्वनि, निगूढ । ण . जाण ।

चोर क्रोध पुनि पुछि कहू, कहू तकार दे चित्त।
भय रक्षण जु घकार कहू, सिला ममूहि मित्त ।।—१८

वेद दान दातान सू, अरु कलित्र दं मानि।
धान धात धन वधन हि, कहत धकार सुजु आनि ।।—१९

कहत जान विसवास पुनि, अरु ज निखेध नकार,
नो नावक कू कहत है, पडित समझ निहार ।।—२०

प वन पातरी पवन कहू कहू पुकार नित मित।
रग रव सु सुप्त फकार कहू, प्रगट जु तिन कहू नित ।।—२१

झझा वाय झकार कहू, कहू फकार भय रक्ष।
निस्ट जला सु फकार कहू, अरु फकार ही दक्ष ।।—२२

फू कारै फू कहत कवि, अफळ वचन फू आदि।
पुनि बकार सग्राम कहि, अरु प्रवेस कहू माहि ।।—२३

भ नक्षत्र पुनि भ्रमर भ, दीपत भानु भूप।
भय का भीक सब, ता कहू चित न भूप ।।—२४

चद्र रुद्र सिर मा कहत, मा लछी परमान।
माल मात अस्ना भी, पुनि वधन मूजी नि ।।—२५

सजमकाळ पकार कहि, सूर श्रेष्ट मन मान।
जान जात अरु त्याग कहू, बुधजन कहत सुजान ।।—२६

काम अनुज अस्तु वज्र पुनि, सवद रूप धरि चित।
कहु रकार जल स्व वन की, रटन भय कहू मित ।।—२७

त · स्तुति, चोर, क्रोध, पुछि (पू छ)। ध भय, रक्षण, सिला, समूही, मित्र।
दा वेद, दान, तान। द · कलित्र। ध : ध्यान, धातु, धन, वधन।
न : जान, विस्वास, निखेध। नौ नाव।
प पवन, पातुरी, वन, नित।
फ : फकार (ध्वनि) भय, रक्षा, निस्ट (खराब)।
झ झझावाय फूं · फूक। फू अफळ वचन।
ब सग्राम, प्रवेस। भ नक्षत्र, भ्रमर, दीपत, (दीप्ती) भानु भूप।
मा चद, रुद्र, सिर, लछी, माल, मात, अस्ना, वधन, मूजी।
य सजम, काळ, सूर, श्रेष्ट, मन, जान, जाति, त्याग।
र काम, आग (अनल) अस्तु, शब्द, रूप, जल, वन, ध्वनि।

इद्र लवन दत्त व्याज पुनि, रहि लकार पर सिद्ध ।
ली स्लेख मलप सू कहै, ल निस्तक कहू विध ।।—२८

सात्वन वर उर वीत कहू वकार समरत्थ ।
गति नय नर अरु श्रेष्ट पुनि, कहू वकार के अर्थ ।।—२९

कहत सकार परोख कू, पुनि सोभा अति श्रेष्ट ।
ई कल्यान ह कहत है, सजुकति पुनि प्रेस्ट ।।—३०

सयनकाज सी कहत कवी, वी दोउ सामांन ।
कहत खकार परोख कू, ल खरीक हूं ठान ।।—३१

कहत खकार जु स्नेह कू, अरु सूलाक हू मान ।
हर हकार विचित्र है, हे सबधन ठान ।।—३२

कहत क्षकार जु क्षीम कु, क्षमा क्षम का जान ।
आद अकार लकार लौं, यह विध वरतन मान ।।—३३

विहु-स्वन मुख सूं नित रक खट अस्टादस ही पुरान ।
नाम-माळ एकाक्षरी, माखी रतनू "भान" ।।—३४

• • •

ल · इन्द्र, लवन(लगन), दत्त, व्याज । ली श्लेख, मलप । ल निस्तक, विध ।
व · सात्वन, वर, उर, वीत (वित) समरत्थ, गति, नय (नीति या नगर) नर, श्रेष्ट ।
स · शोभा परोक्ष, अति श्रेष्ट । ई . कल्याण, सजुकति प्रेष्ट । सी सयन(रति) ।
वी दोउ, समान । ख परोक्ष, स्नेह, सूला, ह हर विचित्र ।
हे सबोधन । क्ष क्षीम, क्षमा, क्षम ।

एकाक्षरी नांम-माला

कवि उदयराम विरचित

अथ एकाक्षरी नाम-माळा लिख्यते

दूहा

सार सार विद्या सकळ, समझै गुण ततसार।
कीरत सार उदार कर, देसळ जगदातार ॥—१

श्री गणपत सरसुत सुमत, उकत वूवत अणपार।
अनेकारथ एकाक्षरी, "उदा" करो उचार ॥—२

सुर अच्छर मात्रा सहित, एकै अरथ अनेक।
जूदी जुदो वरणो जुगत, वरणो नाम विवेक ॥—३

ॐकार नाम

ॐ ईस्वर मुगती (उचर) केवळरूप (कहाय),
मंत्र वीज वाचक (मुणो) पूरणग्यान (पढाय)।—४

अवय सरवारथ अवच (ॐ) प्रणवधुनअग,
सरववीज (घट-घट सदा सोहू सात प्रसंग) ॥—५

अ नाम

मकर ब्रंमा श्री ऋसन अरक सिखा ससियद,
पवन प्राण सुखया प्रजा काळप्रमाण कवद।—६

आदंछर जरऊपनो (गण न्यारा गुण नाम,
अ अछर यतरा अरथ सरभ जोत घणस्याम) ॥—७

आ नाम

सिव सुरतर श्रम सरव गुण असतूत हय गय यद,
चणकरिखी शुभ धाम चख (वद आ नाम विलद) ॥—८

इ नाम

सिव रव सेनानी सुची अज अहि मनमथ यद,
वरण विक्ष धनवान विध व्याळ ससी (इ विद) ॥—९

ई नाम

ईसुर कमला (वळ) अरुण वभ्र मुकर (वताय),
त्रीवभया सुतवानत्रिय सक सवकस (सुणाय)।—१०

दयावाननर (दाखजै वदै नम) विदवान,
(दीरघ ई के नाम दख गणी एक) व्रमग्यान ॥—११

उ नाम

नारदरिख आधीन रव सकर गवरी (सार),
स्वामीकारत तडत सम आश्रीवाद (उचार)।—१२
रावन (नाम) त्रकाळ (रट) त्रगुण काळ ततरग,
(उदैराम धुर विहू उकत उ लघु नाम) उतग ॥—१३

ऊ नाम

पवन चद रव हर पनंग पूरण दळद्री प्रेत,
विध अगन मूरख व्रवण (दीरघ ऊ कहि देत) ॥—१४

ऋ नाम

उमा रमा सर गर अनत व्रक्ष साळ नळ वास,
गुर फूफी सुत नीचगुण (गहि) अदती (ऋ ग्यान) ॥—१५

ॠ नाम

सकर विध सुरपत ऋसन यम व्रखमान वयद,
वरण अघी नरवर (जपौ ॠ दीरघ परसंद) ॥—१६

ऌ नाम

अदती हर पकज अरूण पापी अतक निपुंस,
नर हार्यो पाखड (नित कहि) मलेछ (ऌ) कस ॥—१७

ॡ नाम

महापुरुख नृप मुंढनर देविपुरुख चिह्न देव,
(कथा) कथा नवेख (ईकथौ भाख) पु ज कच भेव।—१८
पापीनर अपद्वार (पढ) वुधविना नरवाळ,
(ॡ दीरघ के नाम लख विध माळ विमाळ) ॥—१९

ए नाम

मेख जीव सूरज विमनु वाळक दुज दनु वाण,
नातौ सकळी वुधनर उद्धत द्वेखी (आण)।—२०

(ग्याता गथा भेद गण एक नाम यत पाद,
ए अई के भाखू अवै निपुण सुणौ निनाद) ।।—२१

ऐ नाम

वचनवीज व्यापक विसव लोक सरूप (लखाय,
मुण) वछया सुरसुत मुकत (अई के नाम उपाय) ।।—२२

ऐ नाम [ग्रन्थान्तरे]

नृप सिव विखम (रु) पूज्यनर क्रूर विविध कुलाळ,
उष्ट मूढ कप असुर (कहि) विखमायुद्ध (अई) वाळ ।।—२३

उ नाम

असुर जक्ष अज उतकष्ट अगस्तरिख ध्रू (आख),
जख कव मुखक मजार (जप भेद) गुरड (ए भाख) ।।—२४

ऊ नाम

सेख विधाता मुन ससी सुखी जार लघु (साख),
स्वान दळद अभ (प्राय सुण ऊ) थळ (कव आख) ।।—२५

अं नाम

पकज पूरण व्रमपर दुर वरक्त दुख (दाख,
श्रेष्ट भुजन श्रीकृष्ण रौ अ अवधा जग आख) ।।—२६

अ नाम

वीतराग विसरगविधी ठौड यती ठहराय,
सुघ चाकर (फिर) विसन सुत (अध अहन्याय उपाय ।।—२७

क नाम

अगन विधाता आतमा वरही रव वनवास,
जम किंकर (कहि) रूपजग (पुन) गणक परकास ।।—२८

का नाम

यळा सेस दिव (गण) अलप कायर रथ परकास,
(कहत) निरादर, (कू कवि यौ का नाम उजास) ।।—२९

कि नाम

रमा करण मघवान रव करख्य सिकारी (काज),
कदुख अगन बालम (कहौ तव लघू कि सिरताज)।—३०

प्रसन तुछ गुण जुगपसा निंदा (की वर नाम,
वळ) विचार औंजग अथा (रट 'उदा' श्री राम)॥—३१

की नाम

यळ कमळा हय गय अही अखभ गुलावी रग,
चारपुरख चीटी जिम्या पुरख रसत्र (प्रसंग)।—३२

वास कुवध कुळ रोख (वळ दीरघ की गुण दाख,
उदैराम मत्र तज अवै राम भजन मन राख)॥—३३

कु नाम

तनक तळाई उरज तट सरस सवद भू (सोय,
लघु कु नाम कुआर लख जुगत अरथ गुण जोय)॥—३४

कू नाम

कूप भूप गभीर (कहि) मथ पटाभर (मड),
कुभ (न) कु जत सवद (कहि) खित (कू नाम अखख)।—३५

कारण अव भू आद (कहि) कारज (औंर) प्रकास,
(दीरघ कूं के नाम दख जुगती यती उजास)॥—३६

के नाम

रतन खाण केकी (रटौ) अनुगिन प्राण (उपाय),
कुण (कि के यत्यादि कहि गोवद रा गुण गाय)॥—३७

कै नाम

क्लीब मद (क) बळवत (कैं) मरसत पवन सुणाय,
पुन्न्य प्रगत कदप (पद) भारथी पवित्र (भणाय)॥—३८

को नाम

कोद कनक चक्रवाक (नृप) बाळक कोप (ह) वाज,
(ध्यान जिसौ को नर विसव रवै नह हर गुण काज)॥—३९

कौ नाम

आप वृखभ नर धिष्ट (अव) कद्रप जम जमे काज,
(कौ कव अवधा गुण कही श्रोता सुणै समाज) ।।—४०

क नाम

काम सीस सुख जळ कनक कज अनळ (कहि नाम),
पय सुभ दुख (रु) जहर (पढ क के नाम सकाम) ।।—४१

ख, खा नाम

खाई घर पकज खिती कमळा (खा कहि नाम,
चरण चत्र भज चाह भू सो नित करै सलाम) ।।—४२

खि नाम

गवण नासकाछिद्र (गण) रतन रता क्षयरोग,
कवनिवास (वळ नाम कहि सुण खि नांम सजोग) ।।—४३

खी नाम

विध श्रगाळ गुद मदन (वळ ओर) मळणगण (आख),
कुसळखेम (कु खी कहै भेद यता खी भाख) ।।—४४

खु नाम

मदन विकळ गृधू मुखक सिखावांन सख धांम,
विध खद्योत (के नाम वळ लघु खु वरण लख नाम) ।।—४५

खू नाम

कवजन सुरगर सूर (कहि) जीव नखी (खू जांण,
घू) कगर जीवादि खित (विण हर नाम वखाण) ।।—४६

खे नाम

कव खेद सभौद्वार (कहि खे) खेचर (सहि) खग,
प्राण (नाम खे वळ पढो रिव भुज जात सरग) ।।—४७

खै नाम

सिव नदी गन भ्रात सुत (मुणौ मान खै नाम,
खै ए नाम वखणिये रटो 'उदा,' श्री रांम) ।।—४८

खो नाम

खज अरुण अवराखबौ पुन्य खेड (कहि पात),
मानसहत भय मडमन (विघ खो नाम विख्यात) ॥—५०

खौ नाम

ईस्वर मधवा भूगनी जुगळ मोर भू (जाण,
कव यतरा खो नाम कहि वळ ख नाम बखाण) ॥—५१

ख नाम

सिव नभ यद्री रिख सरग ग्रह नृप सुख सुन्य ग्यान,
खज (रु) खजन छिद्र खलु (विध ख नाम विधान) ॥—५२

ग नाम

ऋसन गजानन राग कर पची पवन प्रधान,
प्राण गध जळ प्रीत (पढ वद ग नाम विदवान) ॥—५३

गा नाम

उमा रमा गगा यळा गिरा सकत वुध गयान,
चौज ग्यान नाभ (गा चढौ वळै) धनी वुधवान ॥—५४

गि नाम

प्रढ वाक्य सारद (पढौ वळै) धनी वुधवान,
गिरा राम (गावै गुणा जै वुधवान जिहान) ।—५५
गुजा रव पुर वरण गण सुर (गीणि नाम सुणाय,
वृथा नाट गि हरि विना गोवद रा गुण गाय) ॥—५६

गी नाम

सोभा श्री मदरा सुधा वाणी सकत (वताय),
वृम एक समता विधि (गी वाणी गुण गाय) ॥—५७

गु नाम

आसवका अतीगुण अरक प्राण मनोज (रु) पाज,
कूकर स्वर भय जुगत नर सुर गुण पय समाज ॥—५८

गू नाम

(कहिया गुण) मळ नदकूल(कू) लघू वृद्ध त्रिय(लेख),
सतथि वस्तु ग्लाणि सदा दुनी तमक (गू देख) ॥—५८

गे नाम

राग जमक पाप सट (रट मुण) छद गीत मलार,
(गेय कमत के नाम गण एता किया उचार) ॥—५६

गै नाम

सिव रव सोक पळास गत (अत गै नांम उचार),
छटा सरब (अत छोड नै सिव गै नाम सभार) ॥—६०

गो नाम

तर घर वाणी सरग (तव) यद्री खग जळ (आख),
छद वचन दिव वज्र छिव सुरतर सुरभी साख ।—६१

ग्लाळ वाण द्रप दर (गणी) हसती व्रखभ (कहाय),
किरण (वळै) रव सवद (कहि गो के नाम गणाय) ॥—६२

गौ नाम

क्राती गणपत कुळ सद्रग (लख्य) लाज भू लाल,
देवलोक दिस वाण (दख) मसक जुगपती माळ ॥—६३

ग्र नाम

मलयाचळ हेमाद्री (मुण) गीत श्रष्ट गभीर,
वाजा-राग-छतीसविध सरण तन्नवत सीर ॥—६४

घ नाम

सुघरम गज सिव सिख सबद रव दधसुत घणराट,
अह (तज भुज अनत कर घ के नळ कर घाट) ॥—६५

घा नांम

विध देवी धुन वसुमती असुरी सची (उचार),
निरग किंकणी थापना घार घातकी मार ॥—६६

घि नाम

अगत्रसना (अर) च वर (मुण) वडरु धरम विसतार,
(कव घि नाम पछु कहि 'उदा' दीरघ उचार) ।।—६७

घी, घु नाम

द्रव घ्रत वाळ कुमार दळ सुरगुर (घी के) मार,
अहि सठ घूक दयाळ (कहि तव घु नाम विसतार) ।।—६८

घृ नाम

गज सुर घण मदरा गुदा यळ अग्यार अलूक,
नीलवर (घृ नाम लख 'उदा' पढो अचूक) ।।—६९

घे, घै नाम

कव स्वान चौकी करा खीली (घे कर ख्यात),
रव धरमी पापी समर (सुन सुत घै दरसात) ।।—७०

घो नाम

यज घर गोह अहीर घर लोह अस्ववळ (लेख,
सवद वळे घो नाम सुण दुत घो भाखू देख) ।।—७१

घौ नाम

अरूख ताळ देता अगी रव विवाण रट (नाम,
कहिवळ) वासकलाल (कौ सो तज भज घणस्याम) ।।—७२

घ नाम

गत मलीन (घा) चित (गण) पापी नर पुन ग्रान,
(उचर नाम घ के यता विध भाखै विदवान) ।।—७३

ङ (ङ) नाम

विखय प्राण वळ भैरव (रु) अस चचळ कुटवाळ,
(चवरादिक ङ'ङ'नाम चव घद ङा'ङा'नाम विसाल) ।।—७४

ङा (ङा) नाम

यळ अघरादिक यदरा (पढ वळ लोक) पताळ,
(मुण) सुक्ष्मगत सुखमण (गुणियण भज गोपाळ) ।।—७५

डि (डि) नाम

भय जुत अग सुछम (भणौ) द्रग दुगधा सुर (दाख),
दखण दुज (कू दीजिए भेद डि पछ्यू भाख) ।।—७६

डी (डी) नाम

(कव दीरघ डी नाम कहि भेद हरि गुण भाख),
देवभूम यळ ऋकळ (दख) अहिनूप ठीवर (आख) ।।—७७

डु (डु) नाम

गिडव पवन पावन अगन (लघु डु नाम लखाय),
व्याधी अवधा अग वचन उखर धर (डू आय) ।।—७८

डे (डे) नाम

गज कपोल पारद (गणौ) लाज स्याम (कूं लेख),
अजन कठण अमोल (कहि सो डे नाम सपेख) ।।—७९

डैं नाम

परामुर रिख (नाम पढ) गधक (नाम गणाय,
उदयराम तीनू यसा सो डैं नाम सुणाय) ।।—८०

डो नाम

असतर पाडौ आरणौ (तव वळ) खचर तुरंग,
गवा-वध सवदागती सिहत दादुर सग ।—८१

प्राचत (व पुठै) स्यार (पर) सीह रुपहर (सार,
को) नाकढ मत (डौ कहौ यतरा नाम उचार) ।।—८२

डौ नाम

सस रव अगनी स्वारथी वैद भजन जबाळ,
कद-मूळ (अरथ कहि पढौ) अजव (डौ) पाळ ।।—८३

ड नाम

जळ पय व्रत सुख भग जहर चिहूर (वले) चमूह,
अग (वळै ड नाम सुण) सगना माळ समूह ।।—८४

च नाम

आलगन ज्वाळा अगन सस गण वदन (मुणाय),
ओक मनोहर पुन अरथ (रु) अवुध चोर (रचाय) ।।—८५

चा नाम

(कहू) विप्रकनौजिया कन्या ऋसना काज,
(कवियण चा कै नाम कहि रटौ राम महाराज) ।—८६

चि नाम

रव दिवाल चित्र माख (रट) अजा पिंड भय (आख,
लघू चि नांम एता लखो राम नाम चित राख) ।।—८७

ची नाम

स्याही कगसी हस्तणी (वळ) हरजटा (वखाण,
कवियण फिर) माया (कहै जुगत दीरघ ची जाण) ।।—८८

चु नाम

काळ वज्र सरद (कहै) घर भय जुत उपधान,
(अवै नाम) नाडीयडा (वद चु नांम विदवान) ।।—८६

चू नाम

सुरतर खग रव पवन सर ताळा गणिकव (तोल,
वळै) लोद पळ (नांम वण) वक (दीरघ चू वोल ।।—६०

चे नाम

रव समूह सस ऋसन (रट) मन अस कीर (मिळाय),
सुपरण कपत भैरी ससि (सो चे नाम सुणाय) ।।—६१

चैं, चौ नाम

दूत चोर प्रेरक दुष्ट जुध (चौ नाम जणाय),
उद्यत नर गउ व्रखभ अस मावत रस चौमाय ।।—६२

चं नाम

चंदन तिय पिय सुख चिरत द्रष्ट रुष्ट दुखदाय,
भ्रमण जहर कव (चं भणौ एता नाम उपाय) ।।—६३

छ, छा नांम

केकी रव सस कुज कर छिव पूरण (छ नाम),
काती छाया हर ढकण रक्षक रछ्या (राम) ।।—६४

छि नाम

कानि कुलाल सिकारी (कहि) काळ (रु) नीव कुठार,
(एक) विबुध अवधा (यता तव छि लघु ततसार) ।।—६५

छी नाम

अगत्रसना कटमेखळा सीव जीव मदसार,
(दाखो) काती छछुदरी (ए छी दीरघ उचार) ।।—६६

छु नाम

मसक जुगपसा कीर (मुण) त्रसना (सवद वताय,
कहिया छु नाम लघु कर कवि जुगती वडै जणाय) ।।—६७

छू नाम

थाट सवद गज मुरज थित खुधावत त्रिय स्यात,
भिछा (गण छू नाम मुण भुज हर सज प्रभात) ।।—६८

छे नाम

ऊखर फासी यद्रिया वेणी वसुधा स्याल,
(कव यकमत छे के कहो दुमता नाम दिखाय) ।।—६९

छै नाम

देवलोक मदपात्र (दख) तीखीवस्तु (तोल,
कव) सेन्या (वरणण करो वरणी छै कव बोल ।।—१००

छो नाम

पवन अग पूरण पुणछ रोर श्रंगार (रचाय,
काना कडमत छो कहो सुध छोह मैं सुणाय) ।।—१०१

छौ नाम

केती वरक्त दकूळ (कहि) परवत वानर (पेख,
जाण) नार कव परम (जप) लटा पवन (छो लेख) ।।—१०२

छ नाम

भू निरमळ घन ज्वाळ (भरण) कुळ तट सिखर आकास ,
मुख जळ (छ के नाम मुरण 'उदा' करो उजास) ।।—१०३

ज नाम

जनम सचारी जीव जड जैतवार नरजार ,
(गरण) ससारी जोगयौ (अहि निस राम उचार) ।।—१०४

जा, जि नाम

(चवां) व्रद्ध फासी चतुर जोन (नाम जा जारण) ,
भडग जितद्रिय रस भभक जीत (जि नाम जताय) ।।—१०५

जी नाम

वादकरण मिठासवचन जवा जीव जग (जारण) ,
हरसेवा (गरण) राग हित ('उदा' लघु जि आरण) ।।—१०६

जू नाम

प्रभुजन मित्र पिसाच नभ वाक्य गनज सिघ्र व्याळ ,
जीरण (दीरघ जू जिकै सुरण कव नाम विसाळ) ।।—१०७

जे, जै नाम

सुन समूह केहर सजय (जे को नाम जरणाय) ,
सुरगुर पुख रव विव सरभ अगन (नाम जै आय) ।।—१०८

जो, जौ नाम

आसरण सहि सिंगार अज रसरण कमळ जो रीत ,
जो) वचि चिनी जारसुत (वळ) जवान (जौ) वीत ।।—१०९

ज नाम

कज जनम प्रापत कनक मछ (भयौ) रजमड ,
जत्र मत्र (तज) जगतपत ('उदा' भजौ अखड) ।।—११०

झ नांम

मैथुन कर कुरकट (रु) मछ निरझर अव निदान ,
नम पयांन पिय नष्ट (गरण विघ झ नाम विधान) ।।—१११

झा, झि नाम

रजत जात नागर रटौ झालर घड़िया झाल,
पल सुर मावत कपहरण (लघु झि नाम त्रिघ लाल) ॥—११२

झी, झु नाम

गज हथणी घन वेत (गण) काम (पढौ झी काज),
जोन नमत वीरज जरा सास्त्र (झु कहि सिर ताज) ॥—११३

झू नाम

सौंध अघू अरव स्वारथी देव झूठ समदाय,
वाव (नाम झू वडौ गोविंद रा गुण, गाय) ॥—११४

झे नाम

राम लखमण (झे रटौ) मरजादा सममड,
वन चमार (झे वळ) वनी (एता नाम अखड) ॥—११५

झैं नाम

सुरगुर ऋति आतम सरव करभ-झैंकता-काज,
गुर(वळ)मईथुनकेगुणी(सो)सरग ध्राण समत क्रिया।
(पग झौ पाठ पुराण ऊ झैं नाम समाज)* ॥—११६

झो नाम

ऋाति नृप गोकळ करन प्रात श्रवण (झो) पांण ॥—११७

झ नाम

अगत्रसना मईथुन (मुणौ) झैंरू झप (भणाय),
झणतकार सुर झझकै (श्रै झ नाम उपाय) ॥—११८

ञ नाम

धरम अगन भय धारणा दान पुन्य (दरसाय),
घरघरधुन (सो) ग्यान घण (सो ञ नाम सुणाय) ॥—११९

ञा नाम

नाग निवारण रासभणी जरा पुज श्रम (जाण,
वळ) निखेद नानावचन वाममुख (वाखाण) ॥—१२०

---

* स्पष्ट नहीं है।

ञि, ञी नाम

अक्षा व्रध राजा अगन प्रापत (सो नि प्रकास),
भयजुतदेवळ वलभ मद पाखडी (ञी) पास ।।—१२१

ञु, ञू नाम

त्रियमुख दादुर मदतनु (वळ सुवेख वाखाण),
तव) सुथान मदमस्ततिय जवा सोर (ञू जांण) ।।—१२२

ञे, ञै नाम

सोनो (रु) प्रिय वरक्त तुल्य सध (ञे नाम सुणाय),
मा पचाळी असत महि पिपरी (ञै परठाय) ।।—१२३

ञो, ञौ नाम

सीमा प्रोढा देतसुत पळास (ञो) परमाय,
वचन कीर पयजाळ ग्रख दोभ (नाम ञौ दाय) ।।—१२४

ञ नाम

ग्यान कमळ परिव्रम (गण) द्रग भ्रत (ञ गुण दाख,
पाचव रण च छ झ ञ पढ सुण ट ठ ड ढ ण साथ) ।।—१२५

ट नाम

देवदार पीपळ (दखौ) जातरूपक (जाण),
रागफिरै (वळ) सुभट (रट) मूत्र कच्छप (ट आण) ।।—१२६

टा नाम

वाडवानळ पाठी वसत्र सुक रटणाण सुर सिध,
(कवियण यता टा कहो प्रभता नाम प्रसिध) ।।—१२७

टि नाम

पुतळी गिरतळ मुर विपुल हथणी हटी (कहाय),
भू खम्य (ए सात भण लघु टि नाम लखाय) ।।—१२८

टी, टु नाम

गोम ग्रीव क्षति मेघ गिर वेपाला (टी नाम),
कर टकन कुरकट मुकट सिखा (टु) चक्रघणस्याम ।।—१२९

टू, टे नाम

दौड वहन रिध नद मरु, भय छाया (टू) भार,
जान नान खग जोखता मकत (नाम टे सार) ।।—१३०

टै, टो नाम

भतीज नभ धन अध भख अरि पोता (टै आख),
श्रीफळ धुन चपक सिखा रद गुर (अै टो राख) ।।—१३१

टौ, टं नाम

दावानळ छत वृख दध नीत पुरख (टौ नांम),
अकुस द्रग मुत भ्रूह यळ अ्रत (रु) गहड (ट नाम) ।।—१३२

ठ, ठा नाम

ससि गुर ग्यानी मिव ऋसन वेग मेघ वाचाळ,
पूठ धनी सुन (नाम पळ) मेद रख्यक (ठहमाळ) ।।—१३३

ठि, ठी नाम

वेद छद निस्चे कुवर सुर (ठि नाम) सिखराळ,
छदी सुतजा छुध छय कुळ कुटुब कुटवाळ ।।—१३४

ठु नाम

रोगी माखी कदम (रट) दळद्री रज जमदूत,
त्वग (लघु ठु नाम तव भाख वडै अदभूत) ।।—१३५

ठू, ठे नाम

रमा मुकद वुव प्रीत (रट) धरज धरम (ठू धार),
सत्यप मन वामण सिखा सेम थान (ठे सार) ।।—१३६

ठै ठो नाम

सास्त्र व्यास नभ मूढ मिख भग्न घट्ट (ठै भाव),
रक्त पीड सिर मूरखता नखतुल्य (ठो) निरभाव ।।—१३७

ठौ नाम

गोतम रिख दध वेल (गण गणौ) जीवका ग्यान,
धार मरजादा कुळधरम (सुण ठौ नाम सुग्यान) ।।—१३८

ठ नाम

सरद नीर मदरा सुधा सुन्यर निमल वसत,
छिद्र (नाम ठं कहि छय दूजा नाम वदत) ॥—१३९

ड नाम

गोधन सिव गन डमरु पारथ धुन (जप सार),
ताडवृख वृधपण (तवौ ए ड नाम उचार) ॥—१४०

डा, डि नाम

रव भू भूत उमा रमा डाकन वैतरी डार,
(पुरख उमापदक्रीत पढ तव डि नाम विसतार) ॥—१४१

डी नाम

आसण हरडै आवळा साकळ नभ (दरसाय),
समद फीण (डी नाम सुण लघु र वडै लखाय) ॥—१४२

डु नाम

सिवा रक्त चख थभ सकति (कहि) दधवेळ कपोत,
(लोडे डु के नाम लख 'उदा' वडै डू वोत) ॥—१४३

डू, डे नाम

मोर कळावत विध मदन वाळक (वडे डू वास),
धरमराज जिह अग धरम (वद टे नाम विसेस) ॥—१४४

डै, डो नाम

कोयल कास मित(रु)वृख करन श्रुत(वै नाम सुणाय),
प्रौढत्रिया पापी मुगव पाप (नाम डो पाय) ॥—१४५

डौ, ड नाम

नर हर पत गऊ जारनर (कर डौ नाम कहाय),
पय जळ अत रद द्रग चपक(ल कर डौ फिर ड लाय) ॥—१४६

ढ नाम

ढोल भैरवा जत्र ढकण अग दस खर मजार,
स्वाद सवद निरगुण (सदा ए ढ नाम उचार) ॥—१४७

ढा, ढि नाम

गी पलास नाभी गदा अज मेरु (ढा आख),
गुडी ढेल निंदा गदा भूख लिंग (ढि भाख) ।।—१४८

ढी, ढु नाम

मत वीलो ब्रमचार सिख कु खर वृछ (ढी काम),
करम दुष्ट गज सूर कप जिभग (ढु लघु जप) ।।—१४९

ढू, ढे नाम

पाज अधरम (नकु) वप थर हथनी (ढू) हरताळ,
हींग खाल पुरवर महर मन अग गढ (ढे माळ) ।।—१५०

ढै, ढो नाम

मेघ छटा वगवत मदन वुढण आस (ढै वृद),
सुख प्रधान साधन धनी रोम पत (ढो) रद ।।—१५१

ढौ नाम

चपक पकत सुगध (चव) जमो सजन सुर (जाण),
मेवासी मानी दुष्ट (विध ढौ नाम वखाण) ।।—१५२

ण नाम

कृप घ्राण वंबूळ (कहि) क्षाम जैत मछगात,
मेधा निरफळ वक्रमग (सो ण नाम सुणात) ।।—१५३

णा, णि नाम

हरख नाभ विघ वहनी रुच अजा (नाम णा आख),
हरि करी(र) नद भोम अहि ससि(प्रकार णि साख) ।।—१५४

णी, णु नाम

श्रेणी चख जळ ईश्वरी सुरगत्रिया (णी सार),
हथणी धर अहि पास कर वाणी वस (णु) वार ।।—१५५

णू, णे नाम

जम रव करद सिव जळा जरा अगन (णू जाण),
मोजा कगुरा विडग मिनी अस लपट (णे आण) ।।—१५६

णं, णो नाम

लाभ सिवा हर राम दळ जवू (णं के जाण),
सर खर प्रमाण (सुण वळ) रक्षक (णो वाण) ।।—१५७

णौं ण नाम

मीन भार माया (मुणौं णौं के नाम सुणत),
नभ सुगध लक्षमण दरस वन जभाय (वणत) ।।—१५८

त नाम

सुख तीरथ अघ सूगना चोर मोक्ष भव चित्त,
तत छिब रूप (र) आतमा (त्यू) हिय थान तवित) ।।—१५९

ता नाम

तान ताळ मा ऊच त्रिय (त) छठौ विसतार,
सिवा ईस मईथुन वस्त्र तरण पुरख तिलतार ।।—१६०

ती, तु नाम

नट जट बेली दध नदी सकळ पात (ती सार),
रमा कमळ सुरपुर रक्त कण्ट (तु वाक्य उचार) ।।—१६१

तू, ते नाम

असुध्र जुध कर अगूरी तुछ कटाछ (ते क्षत्र),
यमुजळ नासा सुर असुर मुत ग्यान (ते सत्र) ।।—१६२

तैं, तो नाम

मोह हेत प्रक धनि समर काति (तैं परकास),
वरण स्याम (र) वमन विघन (ए तो नाम उजास) ।।—१६३

तौ, त नाम

आचारज यळ (मान) अज सरळागर (तौ) सग,
(पुन) वळ जुग सुर अपल चरण भ्रमण (त) चग ।।—१६४

थ, था नाम

गिर गणपत (र) वद (र) गुरड अधर छाक (थ आख),
द्रुत धर मुरज मदाकनी (भेद नाम था भाख) ।।—१६५

थि, थी नाम

वृखभ जमा गोदावरी नीद गळाण (थि नाम),
दध रेवा वृण नीद की (वे विचार थी) वाम ।।—१६६

थु, थू नाम

अविद्या कूचील पिक उचष्ट विसन भूठ (थु) त्याग,
दामी मुतफिर दास (कहि) पारासर (थू) पाग ।।—१६७

थे, थै नाम

सवोधन वरलळ सुगध नाल वास (थे तोल),
ताळ कील सुर उरध (तव) वृद पूरण (थै वोल ।।—१६८

थो, थौ नाम

तर मन सुत नरसिंघ चतुर (ए थो नाम उचार),
सग गमण मन अष्टसिध (सुणौ) मोह (थौ सार) ।।—१६९

द, दा नाम

दवण देवगण खग दया साधु अपल (द) सार,
रीछ दता घर मुभ रमा दियर हार (दा धार) ।।—१७०

दि दी नाम

दाता पाळग दसदिसा द्रग पाळग (दि दाख),
स्वामी दानी सस मुधा, आसागत (दी आख) ।।—१७१

दु, दू नाम

दळद्री कर गज सूंड दुख प्रधान दुरत प्रचड,
दुख विकार सताप दिल मोहनी (दु दू मड) ।।—१७२

दे नाम

सिवा पुराण अढार (सुण) रूपारेल (रचाय),
सुकव तिया (के नाम सुण) दाम (वळै दे जास) ।।—१७३

दो, दौ नाम

वृखभ दैत लट सिधवन जाण दान (दे जास),
नावस लिंग कर पाय निस दोख (नाम दो रास) ।।—१७४

दौ, द नाम

समरथभ दळद्री समर प्राण काज (दौ पेख),
दनुत्रिय सुरनर करभ दभ अघ जुग दड (दं देख) ।।—१७५

ध नाम

विध कवध गरणपत विष्णु नाथ वचन धनवान,
(वळै) कूलाल कुमेर (वद) खटमुख (ध) व्याखान ।।—१७६

धा, धि नाम

यळ कमला सारद उमा धारण (धा के धार),
धरम धिकार सतोख धर (सुण) आश्रय (धि सार) ।।—१७७

धी, धु नाम

चित्रक मेधा थरज चित दीपक (कु धी दाख),
तन धोवी कपत पवन यधक दौड (धू आख) ।।—१७८

धू नाम

धूरत कपण अगन धुज सिव गज कर (कहिसार),
चिता भार विचार चित (ए धू नाम उचार) ।।—१७९

धे, धैं नाम

पारसनाथ वृख धरम पिव कृष्ण धरण (धे) काज,
रावण ग्रीव सुग्रीव रट पठ आश्रय (धैं) पाज ।।—१८०

धो नाम

सुखद धरम सागर सकट अरथ रूपनद (आण),
वृखभ (नाम धो को वळै जुगत यसी विध जाण) ।।—१८१

धौं, ध नाम

धर वाणी देवळ धरम तट (धौं नाम वताय),
दान सुखासण मान द्रव धूण तक्षन (ध) धाय ।।—१८२

न नाम

प्रफुळत तरु पडत प्रभू अन्य बधन अहमेव,
नत प्रमान नौका (मुणै भणनकार गुण भेव) ।।—१८३

ना नाम

वनता मुख किरपणवचन निपुण वाद नाकार,
प्रनखेधर अव्यय (पढ़ौ ए ना नाम उचार) ।।—१८४

नि, नी नाम

दळद्री निस्चय दुरगती नरत स्याम (नि धार),
प्रेम अगद नृप प्रपति अतिसय (नी उचार) ।।—१८५

नु, नू नाम

वन विदेह वप बाळ वळ न्यू नस्कति (नु नाम),
नूपर दपति कठ नित त्रिया वांग (नू ठाम) ।।—१८६

ने, नै नाम

स्वान अयन चख समवृत्ती वैत छडी (ने वाच),
सिख अग श्रव मित सुध वरक्त (रटौ) न्याय (नै नाम) ।।—१८७

नो, नौ नाम

(रट) प्रतखेध नम थरगण खटमुख मौल विख्यात,
(पढ) दळद्री सुर जुगपुरख (ए नौ नाम उदात) ।।—१८८

न नाम

सुख द्रग जग सिंगार श्रव हरख नाम गज (होय),
कत स्याम (मिळसी कदै जुगत नाम न जाण ।।—१८९

प नाम

पापी रत्र रक्षक पवन वृख गुर भूप (वखाण),
सिंघ काम पीवन (सुणौ पढ प नाम प्रमाण) ।।—१९०

पा, पि नाम

सिवा पान खग रज सुधा पीवन (औ पा नाम),
विसम जोन भीम्म पवत्र सिख (पि नाम) सुरधाम ।।—१९१

पी, पु नाम

पीड हेम अय हळद (पढ) सम्रत पपीलक साख,
पुत्र पारह प्रापत पुरख दोभ (नाम पु दाख) ।।—१९२

पू, पे नाम

पूरण नभ पूरब नगर गंगा वपु (पू ग्यान),
पेटी पीवन भोग पख अड नीर (पे आन) ।।—१९३

पैं, पो नाम

आध नीरज टका सगा सुदर (पैं दरसाय),
पिंड सुत वृध समास प्रभू (ए पो नाम उपाय) ।।—१९४

पौ, प नाम

पान पुरख गिरजळ प्रभू (पौ के नाम पढत),
पय पवन रण जळपुष्ट कीच (नाम प) कत ।।—१९५

फ नाम

पाप फीण वरखा पवन माघ मास मा पुन्य,
(कहि) बुध बानन (रु) माघ (कव पढ फ नाम) प्रसन्न ।।—१९६

फा, फि नाम

गरळ तीरथ वैठक गुदा भरथ डगा (फा भाख),
काळचक्र वृध राकसी दाह जठुर (फि दाख) ।।—१९७

फी, फु नाम

गयौ कारल सुर पवन गज (ले फी नाम लखाय),
काती (लो) काती ऋतग गुण विलब (फु गाय) ।।—१९८

फू, फे नाम

सरव फूक रिण भू सरण वृथावचन (फू वाच),
अघकागण कीहो भ्रमण रटै राम फे राच) ।।—१९९

फै फो नाम

साख लाल अनखुलि कुसम रित वसत (फै रीत),
फो फळ वैधूत काळ फळ वाभ स्याम (फी) वीत ।।—२००

फौ नाम

मेम द्रोण मरत्रन मपती गगा चारज (गणाय),
मेर गुफा रणमड (तू मो फौ नाम सुणाय) ।।—२०१

फ नाम

सुन्य भुजन सभारबौ स्वाद मनोहर सार,
छिद्र (और) फालगुनी छटा भगनी (फं सभार) ।।—२०२

व नाम

बोल निबोली ववकरन प्रतबिंबत (कहि पात),
कळस पुलत सुर (फिर कहै वद ब नाम विख्यात) ।।—२०३

बा, बि नाम

बाळक वहनी नरवदा (कही) बात (बा किव),
विख ससी नभ धर फल वयण पूरण (वि परसिध) ।।—२०४

बी, बु नाम

विरह वेल निस नृप विनय श्रव खिजूर (वी) साल,
कुस त्रुस अग जळ छत्र (कहि) चक्र बाळध(बु चाल) ।।—२०५

बू नाम

अरक तूल बबूल (अख) वृख अरजुन गुरवाच,
साद सूर (बू गुर सुणो रैणव पढ गुण राच) ।।—२०६

बे, बै नाम

जिग क्रम पोहित नीचजन साखी (वे) ससार,
करण अरुण बालक श्रवन वच सत (बै विसतार) ।।—२०७

वो नाम

वकरो दाढी जाबुफळ (यु) पग स्वास उसास,
प्राणादिक (वो नाम पढ 'उदै' कियो उजास) ।।—२०८

बौ, व नाम

गौडा धातु गग (गण) सिंघासन (वौ सार),
वळ (बळ) देव सभारबौ असत (व नाम उचार) ।।—२०९

भ, भा नाम

भारगव अलि जळ नभ ससि सेवा रिख भय (साख),
जस मद निस दुत श्री उजळ (भा) मरजादा (भाख) ।।—२१०

भि, भी नाम

तीर प्रेम रोहणतिया भैरव मेरु (भि भाख),
भीम वभीखण अहि(र) भय (सो) दीवाळ(भी साख) ।।—२११

भु, भू नाम

कग भख वेसक अहि करग (ए भु नाम उपाय),
(ज्यू) नृप भूखण सतजन (भयौ भू नाम सभाय) ।।—२१२

भे भैं नाम

भेर कप भैरव गुरड भेद छेद भय (भाय),
राग वरन ब्रह्मा रमा जम (भैं नाम जणाय) ।।—२१३

भो, भौ नाम

सबोधन नवग्रह सरप मिंदर घर (भो मड),
तन मगळ प्रातर भस्म (ए भौ नाम अखड) ।।—२१४

भ नाम

अलि जळ रव उडवन रचति सिख (भ नाम सभार),
(भभ अछर के नाम भण) वयळ कळा (विसतार) ।।—२१५

म, मा नाम

सिव समूह नभ गयद सिर ससि रण राम (म सार),
गिर जाळंधर मान गत पीडथकौ (मा पार) ।।—२१६

मि, मी नाम

मील दया (रु) प्रमाण भू विसनतर विमेक,
रमा जती मदवौ करग पढ प्रमाण मी (पेख) ।।—२१७

मु, मू नाम

पायौ उप-सम मुण्ट रिख वहुत्रीजा (मु बोल),
वधण प्रक घण चक्र बळी सठ (मू नाम सतोल) ।।—२१८

मे, मैं नाम

वृखभ मेघ उपमेय (वळ) चातक (मे कहिचाव),
रमण स्वारथी रव प्रणत मित्री (मैं समभाव) ।।—२१९

मो, मौ नाम

मोती तिय पारद मुगत मोह् अछ्या (मो मग),
नभ कलाळ वडवानळा (पढ मौ) मुगत (प्रसग) ।।—२२०

मं नाम

मगळग्रह् खल गुड मिलण सुदर रूप (सुणाय),
मगळगीत डछव (मुदै ए म नाम उपाय) ।।—२२१

य, या नाम

सिवा सुतन ईमुर पुरख खवन (नाम यह् ख्यात),
जोत रमा कुलजा प्राप्त तिय नर जाळ (या) तात ।।—२२२

यि, यी नाम

जळ जुध दोहण कमळ जय (यि पिछु नाम उचार),
गज कुठार अतुडड (गण) तरसारथी (यी तार) ।।—२२३

यु, यू नाम

सरप जोख जिग अळमिया मिश्र (नाम यु मड),
जिग अम्रत नर डरत जूय थभ (बोल यू) थड ।।—२२४

ये, यै नाम

साय जोग नर रव सजन (ये के नाम उजास),
जळ पल सिसियद धनद जुग (पढि यै नाम प्रकास) ।।—२२५

यो, यौ नाम

जोत जोजना जोग पग सुण सयोग (यो साख),
सिख प्राचीदिस कण स्वरग भेद सुपुत्र (यौ भाख) ।।—२२६

य नाम

क्लीव वसत एकादसा रामकरण पसु रेस,
(वळै) जत्र (य नाम वद एकाक्षर उपदेस) ।।—२२७

र, रा नाम

दध धुनि रव रक्षक मदन सिख कपाट रस (र) सग,
राह् हेम घन क्रुध रमा पाट श्री द* (रा) पग ।।—२२८

---

* मूल प्रति मे स्पष्ट नही है ।

रि, री नाम

रावन कळम कपूर रिध भवरि (नाम भणाय),
सिख नवोढा कामी ऋण्ण भ्रांति ऋगी री (भाय) ।।—२२६

रु, रू नाम

रव अग रूई डर रुदन भाजनमवद (रु) भास,
विघ्र नृप काम गजी वयल कुलाल (रु) प्रकास ।।—२३०

रे, रैं नाम

नीच काम मुख खेद नभ वायम (रे विख्यात),
राजा सुख वर स्याम रग (रैं) मनोज (दरसात) ।।—२३१

रो, रौ नाम

उदर-रोम रिख गद असह त्रमना (रो कहि ताम),
क्रोध रौद्ररस ईस (कहि) जटा मरग (रौ जाम) ।।—२३२

र नाम

मीस रुदन रत रंग सुख घन (रं अवधा वार,
र रकार एता रटै 'उदा' नाम उचार) ।।—२३३

ल, ला नाम

चिह्न काळ सार सचवर यद चलण (ल आख),
रक्त रग तियवाळ रत (भणी) रमा (ला भाख) ।।—२३४

लि, ली नाम

सरप विछि दामी सखी मुखक (पिछ लि माप),
अलि लीलावर मिलण यळ(त्यू) सखी(ली परताप) ।।—२३५

लु लू नाम

भू माळी छेदन भखी लोक (लु नाम लखाय),
लोप काळ छेदन प्रलै गुदा रुद्र (लू गाय) ।।—२३६

ले, लै नाम

दान तार मुत राम दख (ले) गी वस्तु मलीण,
रांम प्रलय उमया रमा करुणा (लै नाम कहीण) ।।—२३७

लो, लौ नाम

सिला मीन सिकार (तव) प्रभू मोह (लो) प्रीत ,
विधपथ भूखरण चोर (वल) मारुत (लौ कहि) मीत ।।—२३८

ल नाम

लोक वचन सुख सोय लय (नाम चिन्ह के नाम ,
लख यव ले ल नाम लख सिमर सदा घरणस्याम) ।।—२३६

व नाम

वरण मुखी उपमा सिव (ही)अव्यय अरथ (उचार) ,
पवन (बळै व नाम पढ सुकव सुणौ तत सार) ।।—२४०

वा, वि नाम

अबा विकलय हेत अति (अवय म वरण वा आरण) ,
रव सिस दध पछी गुरड (वळ वि) लवौ (वखाण) ।।—२४१

वी, वु नाम

सास्त्र वेल गगा विसनु सुभट (वी सार) ,
प्रात प्रदोख (रु)घरणपटल (वळ वु नाम विसतार) ।।—२४२

वू, वे नाम

अरक तूल वहु सरब यभु कवूतर (वू) काज ,
वेद पलव सुरतर पिपर (सुणौ) वेग (वे साज) । —२४३

वै, वो नाम

(अव्यय निश्चय बळ अरथ) कृष्ण सरग (वै किध) ,
विनय सन्तसुर काल वृख सारथि (वो परसिध) ।।—२४४

वौ, व नाम

वडवा उडवा पान (बळ) खग सुत (वौ त्रिख्यात) ,
अरुण वस्त्र चख दही उरज सुख(व नाम सुणात) ।।—२४५

श नाम

अपरख भोजन सिव उमा हिमगिर शक (कहि होय) ,
रग गौर सिख्या रमा सागो गी (कहि मोय) ।।—२४६

शि, शी नाम

सूरज नाट्य सेवक कमल (लघु शि नाम लखाय),
सिया भाग सीतल वस्तु सिसु प्रवीण (शी भाय) ।।—२४७

शु, शू नाम

पल पलास ससि सुक उपल (शु) कैलास (सुणाय),
खेत्र सोक मिव खड नर (वळ) सुद्र (शू कहवाय) ।।—२४८

शे नाम

सेस सिखर गिर सरस तर पढत कीर (शे पाठ,
उकत नाम एकाक्षरी 'ऊदै' कथी उदात) ।।—२४९

शै नाम

सीतल वरक्त सिव धरम ध्रुवमार नृप (धार),
गेंद (वळै) वैसध (गण विध शै नाम विचार) ।।—२५०

शो, शौ नाम

शोक दोख थिर पवत्र सुण मड त्रभुजा (शो मड),
सख उपासन जप मनि वाळक (शौ) वळवड ।।—२५१

श नाम

सुख सरीर सुभ सणी सुमर रक्षक रोग रचाय,
('ऊदैराम' एकाक्षरी सो श नाम सुणाय) ।।—२५२

ष, षा नाम

सिपख खजर नभ श्रेष्ट (सब्द नाम ष सार),
गधी तीड रेखा (षा) गुफा मावू (नाम षा सार) ।।—२५३

षि, षी नाम

पवन घूक सुरमुख कपट प्रवल (षि नाम प्रकाम),
जम म्रतग हसतु वली (ए षी नाम लखाय) ।।—२५४

षु षू नाम

हय नख खर पु ज कौतुक हय (लघु षु नाम लखाय),
विधु निसचरा मलेछ बुध (नाम) केत (षू न्याय) ।।—२५५

षे, षैं नाम

सक खेद नभ, साथ (सुण) ए षे नाम उपाय,
कठणवस्तु षर बाळ (कहि) वट (षै नाम बताय) ।।—२५६

षो, षौं नाम

तन मलोण नर पज (तव) विचार (षो विदवान,
भू वुध रव(गण) भूख(वळ) मित्र (षौ) सगना(मान) ।।—२५७

(ष) नाम

(ए) मधु धार यद्रिया नभ (गण ष के नाम,
'उदैराम' हर नाम उर सिमर सदा घणस्याम ।।—२५८

स नाम

पद तळाव अद्रष्ट (पढ) सरिसनित रव (साख,
वळ नाराच (वणाणियै भेद दती स भाख) ।।—२५९

सा, सि नाम

तिय साळी रज माल (तव) रमा (नाम सा राख),
सिख असीस हितु सुर खडग (भेद लघु सि भाख) ।।—२६०

सी, सु नाम

सुख विवाद वदवा (मुणी) निरफळ (सी) निरधार,
रव कुठार छेदन फरस (सु लघु नाम) सुथार ।।—२६१

सू, से नाम

रसा सगर भा विध (रटौ) पारासुर (सू पेख),
वकरी नभ मिथलोक (वळ दुरस नाम से देख) ।।—२६२

सै, सो नाम

स्याळ वाळ अहि धरम (सुण) कीर (नाम सै किध),
सुक्रवार पडत ससि (सो) मंत्र (नाम प्रसिद्ध) ।।—२६३

सौ, सं नाम

श्रेष्टवाक्य भ्राता (सुणौ पढ) पुनीत (सौ पाय),
सकर सुख कारण सरण (यु स नाम उपाय) ।।—२६४

ह नाम

हरख चोर कुटबाळ हर काष्ट निखेधा (कीध,
पुन अगाक्ष (ह नाम पढ दळ एकाक्षर दीध) ।।—२६५

हा हिं नाम

सत्यारथ गध्रुव सदा हरनद (हा के) हाण,
हरा खेद टीटूहरी पनग मोर (हि) प्राण ।।—२६६

ही ह्री नाम

अगछोना पछी मनि हरख पुरख (ही होय),
वसीकरण व्रीडा अजा मंत्र वीज (ह्री मोह) ।।—२६७

हु, हू नाम

नृप निंद्या निस्चय (कर) सभारण (हु व सार),
सुर दीरघ निस्चय सुरद विप्र रूढ (हू वार) ।।—२६८

हे, है नाम

सबोधन क्रत अस्व सिव (कहि) प्रसाद (हे काज),
पाथ परीक्षक (हय पढौ) हामी (है कहि साद) ।।—२६९

है, व, हो नाम

ताळ सवद वायस तिया गाथ सिवा (ह्वै ग्यान),
जिग उछाह अरजन अति (हो सबोधन ह्यान) ।।—२७०

हौ नाम

मस्त्र पक्ष जय अतु मकध ब्रह्मा (हौ वाखाण,
भगती कर भगवत की जगनाथ गुण जाण) ।।—२७१

हं नाम

पूरण हस समूह (पढ) दीपत जीव उदार,
गार चोर हरवौ (गणौ) मिव (हं नाम सभार) ।।—२७२

ल नाम

कमळ रमा परिवृम कवि निरमळ (ळ) निरधार,
प्रथम नाम स्नका (पढै लग्व) गुरु (नाम लकार) ।।—२७३

क्ष, क्षा नाम

दनु खेत मिंदर गवण क्षमावत (क्ष ख्यात),
जमना यल सीता जरा दुरबळ (क्षा कहि दात) ।।—२७४

क्षि क्षी नाम

जोत यद्रिय चख गोख (जप कानो क्षि कहवाय),
मदरा पखी अगन (मुण) क्षीणपुरख (क्षी भाय) ।।—२७५

क्षु क्षू नाम

रव दध यद (रु) रुद्र (के) क्षय (क्षु नाम लखाय),
मुखक नष्ट पापीमुखा (विध क्षू नाम वताय) ।।—२७६

क्षे, क्षैं नाम

सकल मगळ कुरखेत (सुण) खेडू खेत (क्षे ख्यात),
मुगध जुवारी ठग मिनी क्षय लपट (क्षैं) रात ।।—२७७

क्षो क्षौ नाम

क्षुरक वृणय (लखि कहि) मत्र क्रोध (क्षो मड),
मगळग्रह नूप खज (मुण) जख मद (क्षौ ज मड) ।।—२७८

क्षं नाम

सुव कमळ पय खेत सुख (नाम) भखण आणद,
प्रागतीरथ मकरद (पढ वळ क्ष नाम विलद) ।।—२७९

श्री नाम

कीरत द्रव (सो) कुसळ क्राति रमा प्रकास,
सोर वरक्त सित सपदा पीत पत वृतादास ।।—२८०

रतन भूम बुधवान (रट) लाज अजाद (लखाय,
एकाक्षर 'उदा' एता सो श्री नाम सुणाय) ।।—२८१

'उदा' यण एकाक्षरी अरथ अनेक उपाव,
कवकुळवोध प्रकास मे देसल जळ दरियाव) ।।—२८२

इति श्री महाराव राजद्र श्री देसलजी राजसमुद्र मध्ये
त्रिविध नाम-माळा निरूपण नाम अवधा
अनेकारथी एकाक्षरी वर्णन नाम
दसमो लहर या तरग ।

अथ अव्यय—नांमावली

पहँ नाम-माळा परै अव्यय नांम अपार ,
मेघा सुण व्याकरण मत उदँ कियौ उचार ।।—१

प्र नाम

रुद्र गवण प्रथमारथ (रट) देखण (छा) दरसाय ,
कव संतोख सांति (कहौ प्र के नाम उपाय) ।।—२

अ, इ, ई नाम

अचरज प्रतखेद (रु) अभय,अनेक (नाम उजास) ,
सबोधन (लघु इ सुणौ ई) दुख सम्रती उदास ।।—३

उ, ऊ, ऋ, ॠ नाम

रोख बचन निसचय प्रसन्न (ऊ ज) निवारण (आख) ,
दोख क्षोभ वृद्ध (ऋ दखो ॠ) विश्राम गुण (राख) ।।—४

ऌ, ॡ नाम

क्षोभी वृद्ध (रु) दोख कहि ऌ लघु नाम लखाय ,
ॡ) निखेध (दीरघ लखौ अव्यय नाम उपाय) ।।—५

ए, ऐ, ओ, औ नाम

सबोधन (ए लघु सुणौ ऐ) आचारज (आख ,
ओ) दिखायवो (आखिये भण अहोतहै भाख) ।।—६

अ, आ नाम

(अ) सबोधन (आखिये) मान विधान म्रजाद ,
आगम (आ अ) पाच (अख ईहग कहत अनाद) ।।—७

पु, र, डु नांम

(आख) समुचय (पुन) अरथ (अव्यय के व अेह) ,
दुख दुरजन कष्टो दुष्ट (डु वळ अव्यय दाख) ।।—८

नि नाम

अतिसय निरणय जम (यता) निसचय गवण निखेध ,
(नि अव्यय के नांम ए वर के डु चत वेघ) ।।—९

(नो मा कहि) प्रत खेदना वा विकलप उपमांन ,
(अथ) सुवाय त्यदादि (कहि विदवत्त पढ़ौ विधान) ॥—१०

वि नाम

विखम विजोग विजोग (व्हैं अरथ जुदा भिन आय ,
ए वि नाम उचारियै स के नाम सुणाय) ॥—११

सं, सु नाम

(सुण) उतपत भव वरक्त (स) भव्य वरक्त जस (भाख ,
पूजा सुख सू पाइयै राम कृष्ण चित राख) ॥—१२

स्म ह नाम

(स्व कहियै सबे) स्वरग (कूं ह अव नाम हलाय) ,
वरजण पदपूरण* (वळै) मारबो विधी मिलाय ॥—१३

अव्यय भेद अपार है, वरण अरथ विसतार ।
चवि श्री फकीरचद, उर्द कियौ उचार ॥

इति अव्यय सपूर्ण ।

---

*पद-रचना मे मात्राओ की पूर्ति के लिए या तुक के आग्रह से 'ह' का प्रयोग प्राय बहुत से शब्दो के अत मे होता है । यथा—

सोने री साजाह, नग कण सू जडिया जिके ।
कीन्हो कवराजाह, राजा मालम राजिया ॥

अनुक्रम

[पर्यायवाची शब्दों के शीर्षकों का अनुक्रम]

क्रम		पृ स
अकुर	— नाम	२३८
अकुश	,	२१२
अकुश की नोक	,	२४६
अकुश से रोकना	,	२४६
अग	,	२००
अगदेश	,	२२७
अगिया	,	२०५
अगीकार	,	१८६, २५९
अगीठी	,	२३०
अगीरा	,	२३६
अगीरे की ज्वाला	,	२३६
अगुली	,	२०१
अचल	,	२०५
अडा	,	२५३
अत्यज	,	२२५
अधकार	,	१५७, १८४
अधा	,	१९६
अधारो	,	१२२, ७३
अब	,	१०७
अकास	,	२१, ८७
अकेला	,	२५९
अगन	,	१२६
अगनी	,	२७, ८१, १६०
अग्नि	,	१७७
अच्छा	,	२१७
अच्छा चलने वाला	,	२४८
अच्छा समय	,	१८३
अजगर	,	२५२
अर्जुन	,	२०८
अटा	— नाम	१३८
अट्टमा	,	२४०
अत	,	१३७
अतिवृष्टि	,	१८२
अदरक	,	२४२
अथाह पानी	,	२३४
अधर (होठ)	,	६५
अनमना	,	१९५
अनुक्रम	,	२५९
अनुराग	,	१८७
अन्तर्वेद	,	२२७
अन्न	,	२४२
अपछरा	,	९७
अपराध	,	२१०
अपसरा	,	२२
अपान वायु	,	२३७
अप्रसन्न	,	१८८
अप्सरा	,	२१७
अफीम	,	२२४
अभिप्राय	,	२५६
अभिशाप	,	१९४
अभी	,	१८५
अभ्रक	,	२३२
अमलताश	,	२४०
अमार्ग	,	२२८
अमृत	,	१२३
अम्रित	,	७६
अयाल व बालछा		
अयोध्या	,	२२८
अरक	,	२३५
अरजुण	,	५५, १०९

अपरापत — नाम : १३०
अलक „ २०४
अलता „ २०६
अलसी „ २४२
अवरोध „ २०९
अशोक „ २३९
अष्ट मगल „ २४८
अष्टदिकपाल „ १८३
अष्टसिधि „ १२७, १५९ १८२
अष्टापदसिंह „ २५०
असटसिधि „ ८३
अस्ताचल „ २३१
अस्थि-पंजर „ २०३
अहकार „ १२०
अहग्न „ २२३
अक्ष „ २२०
अक्षर „ २६०
आख का कोया „ २४६
आख „ २९
आखो के ऊपर
का भाग „ २४६
आगन „ २२९
आगळी „ ६३, ११५
आत „ २०२
आधी „ २३७
आबा „ १३९
आवला „ २४०
आकास „ १२९, १९२ १८२
आग्या „ ७९
आचार „ २१८
आचित „ २२०
आठ „ २१९
आड „ २५४
आणद „ ६९, १९
आनग „ १२४
आदीत „ १५४
आधि — नाम २५४
आना-जाना „ २१६
आभूषण „ ११७
आम „ २३९
आरभ „ २५९
आरसी „ १२४
आरा „ २२२
आर्यावर्त „ २२७
आलस्य „ १८८
आलिंगन „ २५९
आश्चर्य „ १८८
आश्विन „ १८४
आश्विन कार्तिक „ १८५
आषाढ „ १८८
आसन „ २०६
आसव „ २२३
आहेडी-शिकारी „ २२४
आज्ञा „ १८६

इगुर „ २३३
इद्र „ ८०, १५०, १७८
इन्द्र „ २७, ९६
इद्राणी „ ९७
इद्र के पुत्र
जयमुख „ ९७
इन्द्रगुर „ १५१
इन्द्रजाल „ २२४
इन्द्रदल „ १५१
इन्द्रपाट „ १५२
इन्द्रपुरी „ १५१
इन्द्रपुत्र „ १५१
इन्द्ररिख „ १५१
इन्द्र री राणी „ १५१
इन्द्रवन „ १५१
इन्द्रवैद „ १५१
इन्द्रसदन „ १५१

इन्द्रसभा — नाम १५१
इन्द्रिय , १४२
इमली , ४२०
इलायची , २४१
ईश्वर , १४६
ईर्षा , १९३
ईर्षालु , १६३

उजळ , १२१, १५५
उजास , १५५
उज्जैन , २२८
उतावळि , ८५
उत्कंठित , १६४
उत्तर , १८३
उत्साह , १८७
उदान-वायु , २३७
उदियाचक्र , २३१
उपजाऊ भूमि , २२६
उपल (घास) , २४३
उपला-कंडा , २५०
उपलों की आग , २३६
उपवन , १३८
उपवास , २१८
उपहास , १८७
उमर , २१७
उर्द , २४२
उलटना , ११६
उल्कापात , १८३
उल्लू , २५३
उष्ण , २५४
ऊमर , २२६
उसाँस , २५५
ऊंचा , २५८
ऊंट , २८, १०४, २४८

एक , २१६
एकान्त , २१०
एडी — नाम २०३
एरंड , २४१
एरापती , १५१
अेळची , १४२
ओखल , २३०
ओढ़नी , २०५
ओद , २२४
ओळा , १८३
औषध , १६६
औसान , २१५
ककपक्षी , २५४
कघा , २०६
कचन , १०५
कघा , २०१
कघे का रस्सा , २४६
ककडी , २४२
कचनार , २४१
कच्चा फल , २३६
कछुआ , २५५
कज्जल , २०६
कटारी , २०, २१३
कटि , ६२
कटा , २५६
कडि , ११५
कडुआ , २५६
कदत्र , २४०
कदम , १३६
कनछ , १४०
कनीर , २४०
कन्नोज , २२८
कपट , ७०, १२०, १९२
कपटी , १९२
कपडे , २०५
कपास , २४०
कपिल रंग का घोड़ा , २४७

कपूर — नाम : २०४
कबरा , २५७
कबूतर , २५४
कमठ , १०७
कमर , २०२
कमरबद , २०५
कमल , २४१
कमळ , ५२
कमल की नाली , २४२
कमल की बेल , २४१
कमेडी व पडुकी , २५४
करधनी , २०४
करण , ५६
कर्ण , २०८
करन , १११
करना , २४०
करनीदेवी , २६०
करस्ताना , २१२
कराडा , २३१
करीर , २४०
कलई-रागा , २३२
कलपब्रछ , ६६
कलपब्रछ , १५२
कला , १८४
कलार , २२३
कलिंग , २५३
कली , २३६
कलेजा , २०२
कव , ११२
कवि , १८६
कवच , २१२
कर्ष (तोल) , २२०
कसाई , २२५
कसीस , २३२
कसेला , २५७
कस्तूरी , २०४
कक्षा-कखुरी नाम २०१
काच , २०६
काच जैसा
श्वेत घोडा , २४७
काम , २५६
कामरूप , ६७
कामदेव , २२७
कास , २४२
कासा , २३२
काछिबा , ५३
काजळ , १३२
काटना , १६१
कान , ६६, २००
कान का मूल , २४६
काना , १६६
काबरा घोडा , २४७
कामदार , २०६
कामदेव , ६५ १७६
कामी , १६४
कायर , १६१
कार्य , २६०
कारण , २६०
कातिक , १८५
कारागृह , २१५
कारीगर , २२१
कारीगरी , २२१
काला घोडा , २४७
काली पिंडलियों
का श्वेत घोडा , २४७
कावर, गुरगल , २५४
कावेरी , २३५
काशी , २२८
काश्मीर , २२७
काष्ठ , १८४
किनारा , २३४
किन्नर , २२, १८८

किरिण — नाम : ७२
किला , २२७
किरण , १२१, १५५, १८१
किवाड , २२६
किसान , २२१
कीचड , २३५
कीडा , २४३
कीर्ति , १८६
कुंज , १४२
कुंड , २३६
कुंभकरण , २०७
कुंभ के नीचे
का भाग , २४६
कुंभ के बीच
का भाग , २४६
कुंभार , २२२
कुआ , २३६
कुटी , २२६
कुत्ता , २५०
कुदाली , २२१
कुबडा , १६६
कुबेर , ८३, १८०
कुमार्ग , २२८
कुमेर , ६८
कुम्हडा , २४२
कुम्हार की चाक , २३०
कुरुक्षेत्र , २२७
कुलत्थ , २४२
कुशा , २४२
कुसळखेम , १२०
कुसळ , ७१
कुहनी , २०१
कूकर , ७५
कूड , ७७
कूड , १२४
कूडा , २३०
कॅंकडा — नाम : २५५
केरल , २२७
केला , २३६
केवडा-केतकी , २४१
केशर , २०४
केस , ६५, ११७
केसर , ४८, १०५, १६६
कैंची , २२२
कैंचुवा , २४३
कैंथ , २४१
कैंद करना , २१५
कैंदी , २१५
कैलाश , २३१
कोकल , १४२
कोट , २२७
कोना , २३०
कोप , १८७
कोयल , २५३
कोलाहल , २५७
कोस , २२०
कौआ , २५३
कौडी , २४३
कौतक-खेल , २२४
क्रपा , १२०
कृपण , १६१
क्रिपा , ७०
क्रत्रिम विष , २५२
क्रोध , १३५
क्रोधी , १६३
खच्चर , २४८
खटभाषा , १३१, १६३
खटमल , २४४
खट्टा , २५६
खडा रहना , २१६
खाड़ियामिट्टी , २३१

खर — नाम : ७५, १२३
खरगोश , २५१
खलियान , २२७
खश , २४१
खश की घास , २४१
खश आदि का
पंखा , २०६
खाई , २३६
खान , २३१
खानत्र-खणीत्य-
खानत्र , २२१
खारभजना-
गजक , २२३
खारा , २५६
खाली , २५८
खिजूर , १४१
खिलौना , २०६
खुरट , १६६
खुर , २४८
खेवटिया , १३०
खेळ , २३६
खैचना , २१५
खोपडी , २०३

गंगा , ४१, ६६, २३५
गडूल , २४१
गदला पानी , २३४
गध्रव , ६७, १५३
गच , २३०
गठजोडा , २०५
गड्ळा , २५५
गढ , ५३, १०८, २२७
गणेश , १७०
गणेस , ३५, ६१
गघा , २४८
गन्धक , २३२
गन्ना , २४२
गन्ने की जड नाम २४२
गया , २२८
गरदन , २०१
गरुड , ३०, १८१
गर्जना , १८३
गर्व , १८६
गली , २२७
गळी , १३८
गहरा पानी , २३४
गाठ , २३६
गाव , २२७
गाडा , २११
गाडी , २११
गाडीवान , २११
गान , १८६
गाय , ७८, १२४, २४६
गायो का स्वामी , २२१
गाल , २०१
गिजाई , २४३
गिद्धिनी , २५४
गिनका , १३६
गिरद , १६४
गिरजा , ६२
गिर्गट , २५१
गिलाफ-खोली , २०५
गीजड , २०४
गीदड , २५१
गु जा , १४१
गु जा-घु गची , २४१
गुच्छा , २३८
गुजागलू , २२६
गुज्जी-रावडी , १६४
गुड , १६३
गुदा , २०२
गुप्तदूत , २१०
गुप्त मत्र सलाह , २१०

गवाल	— नाम	२२१
गुपत	,	१३५
गुफा	,	२३१
गुर	,	६७
गुरड	,	१२८, १५८
गुरुड	,	८५
गुलगुला	,	१६३
गुलाबी घोडा	,	२४७
गूथना	,	२०४
गूगल	,	२४०
गूलर	,	२३६
गेंद, खिलौना	,	२०६
गेरू	,	२३१
गेहूँ	,	२४२
गैंडा-हाथी	,	२५०
गोदावरी	,	२३५
गोबर	,	२५०
गोल	,	२५६
गोवडा	,	२४४
गोवडी	,	२४४
गोहरा	,	२५१
ग्रास	,	१६४
ग्रीवा	,	६४, ११६
घडनाव	,	२२०
घडा-बेहडा	,	२३०
घण	,	१२६
घर	,	५४, १०८, २२६
घाट	,	२३५
घाव	,	१६६
घास	,	२४३
घास की झोंपडी	,	२२६
घी	,	१२५
घुटना	,	२०२
घुसना	,	२१५
घूघट	,	२०५
घोघा	— नाम	२४३
घोसला	,	२५३
घोडा	,	२०, २८, ५८, ६७, ११३, १७५
घोडा उठाना	,	२१२
घोडी	,	२४८
घोडे की अयाल	,	२१२
घोडो का झुण्ड	,	२१२
घोडो के खेत	,	२४७
घृत	,	१६३
घ्रत	,	७६
चचल	,	२५८
चचळ	,	६७, ११८
चदण	,	४८, १६६
चदन	,	२०४
चंदवा	,	२०५
चदेरी	,	२२८
चद्र	,	३६, १७६
चद्रमा	,	६५, १५५
चद्रिका	,	१८१
चपा	,	१३६, २४०
चपापुरी	,	२२८
चवेर	,	२०६
चक	,	२२१
चकवा	,	२५४
चकोर	,	२५४
चक्र	,	२१४
चक्रवर्ती राजा	,	२०७
चतुर	,	१६०
चनण	,	१०५
चन्द्र	,	३१
चपळा	,	१५३
चबूतरी	,	२२६
चमडे से मढे बाजे	,	१८६
चमार-मोची	,	२२५

चने — नाम २४२
चन्द्रकान्त मणि , २३३
चमेली , २४०
चम्बल , २३५
चरपरा , २५७
चलना-दौडना , २१६
चहचहाना , २५७
चहुंओर , २१७
चादी , २३२
चाकर , ७६, १२३
चार , २१६
चारवेद , १८५
चालणी , २३०
चावल , २४२
चिडिया नर , २५४
चिडिया मादा , २५४
चितेरा , २२३
चिनगारी , २३६
चिन्ह , २६०
चिवक बिंदी , १३३
चिमगादर , २५४
चिरोंजी , २४०
चीटा , २४३
चीटी , २४३
चील , २५४
चुगलखोर , १६२
चुडेल , २६१
चूर्ण , २२७
चूल्हा , २३०
चूहा , २५१
चैत्र , १८४
चैत्र-वैशाख , १८५
चोच , २५२
चोवदार , २०६
चोर , ७४, १२२, १६२
चोराहा , २२८
चोईस अवतार नाम १३०, १४५
चौडा , २५८
चौदह विद्या , १८५
च्यार पदारथ , १३२, १६३
च्यार प्रकार री मुगती , १३२

छ- , २१६
छछूंदर , २५१
छाछ , ७६
छडीदार , ५३, १०८
छत , २३०
छतीस सस्त्रो के , ११८
छनीयार , ६८
छमा , ६७, १२१
छत्र , २०६
छाती , २०२
छाल , २३८
छिपकली , २५१
छिद्र , २५५
छुद्रघटिका , १३४
छुरी , २१३
छोटा , २५८
छोटा भाई , ६२, ११५, १६६
छोटी नस , २०४
छोटी पडुकी , २५४

छोडना , २१५
जंगम , २५८
जमीरी , २४०
जगत , २५५
जटा , २१७
जड , २३७
जनम , ६१, ११४
जनेऊ , २१८
जनेऊ लेना , २१७
जन्म , २५५

जम; धरमराज नाम	।	६०
जम	,	६८
जमना	,	४२. ६६
जमराज	,	१६१
जमी	,	१०४
जरख	,	२५०
जलकौआ	,	२५३
जलना	,	२१६
जलमानस	,	२५४
जवान हाथी के लाल दाग	,	२४५
जवार	,	२४२
जस	,	५८, ११२
जहर	,	२५१
जहाज	,	२१६
जाघ	,	२०२
जागरण	,	१६५
जाचिग	,	५७
जातवत घोडा	,	२४८
जामिन	,	२२०
जायफल	,	२०४
जार	,	१६८
जाल	,	२२४
जालवाला	,	२२४
जासूल	,	२४०
जिग	,	५५, १०६
जीतना	,	२१५
जितेंद्रिय	,	२१७
जीन	,	२१२
जीभ	,	६४, ११६, २०१
जीरा	,	१६४
जीवजीव	,	२५३
जीव	,	२०३
जुआ	,	२११
जुआ का निम्न भाग	,	२११
जुगनू —	नाम	२४४
चुजठळ	,	१०६
जुध	,	६०, ११४
जुधिष्ठर	,	५४
जुलाहा	,	२२३
जुही	,	२४०
जू	,	२४४
जूझार	,	११२
जूता	,	२२५
जेवर	,	२०४
जेष्ठ	,	१८४
जेष्ठ-आषाढ	,	१८५
जोंक	,	२४३
जो	,	२४२
जोडना	,	२१६
जोडा	,	२५७
जोत	,	१२२, २२१
जोधा	,	१६
जोरावर	,	१६२
जोरावरी	,	१८३
ज्योतिषी	,	१६६
ज्वाला	,	२३६
झडा	,	२११
झरना	,	२३६
झाक	,	२३६, २५१
झाग	,	२३४
झाडू	,	२३०
झींगर	,	२४४
झूलने वाला	,	२११
झूला	,	२११
झोपडी-कच्चा घर	,	२३०
टखना	,	२०२
टाकी	,	२२२
टिटहरी	,	२५४

टिड्डी — नाम २४४
टीला , २२६
टुकडा , २५८
टेढा , १३३
टोप , २१२
ठगई , १६२
डक , २२४
डर , ७६
डाड , २२०
डास , २४४
डाका , २१४
डाकिनी , २६०
डाकू , २१४
डाढ , २०१
डाढी , २०१
डिंडिम , २५२
डेरा-खेमा , २०५
डोंगी २१६

ढाक , २३६
ढाल , २१३
ढाल पकडने का , २१३
ढडाड , २२७
ढेला , २२७

तगडाया हुआ , १६५
तकिया , १३३
तट , १४२
तनक , १३८
तवेला , २१२
तमाळपत्र , १३६
तय्यार , २१६
तरग , ४१
तरकस , १३४
तरवार , २०, २६, ५८, ११२, १७४

तलाई — नाम . २३६
तळाव , ५१, १०६
तलुआ , २०३
तावा , २३२
तावो , ५०
तामा , १०६
ताड , २३६
तापना , २३६
तापी , २३५
तार के बाजे , १८६
तारा , ८७, १२६, १८२
ताल-मजीरा , १८६
तालाव , २३६
तितली , २४४
तीतर , २५४
तिरछी चोट करने वाला हाथी , २४५
तीन , २१०
तीर , २१, २१३
तीस वरस का हाथी , २४५
तुरई , २४२
तुला , २२०
तुपानल , २३६
तू बी , २४०
तेज (उजास) , ७३, १२१
तेल , १६४
तेली , २२२
तेंदुआ , २५०
तोडना , १६२
तोता , २५३
तोप , २१४
तृण-शैया , २०६
थावला , २३६
थावर , २५८
थूहर-सेंहुड , २४०

थोद वाला — नाम : १६५
थोडा , २५७

दड , २२०
दडित , १६५
ददभी , ६७
दईत , ६८
दगा-छल , २१५
दघजा , ६४
दवाना , २१५
दया , १६१
दयावान , १६१
दरजी-रफूगर , २२१
दराती , २२१
दरियाव , १००
दरिद्र , १६०
दर्वाजा , २२६
दस वरस का हाथी , २४५
दही , ७६, १६३
दही-छाछ , १२५
दक्षिण , १८३
दात , ६४, ११६, २०१
दान , ५६, १६२
दाख , १४०, २४१
दाडम , १३६
दाता , १६२
दातार , ५७, १११
दामाद , १६८
दाल , १६३
दाल का रस , १६३
दावानल , २३६
दास , १६०
दासी , १३२
दाह , २३५
दिन , ७२, १२१, १५५, १८३
दिल्ली — नाम २२८
दिवा , १५७
दिसा , १३६
दीनता , १८६
दीपक , ७४, २०६
दीमक , २४३
दीरघ , १३५
दु ख , २५६
दुख , १३७
दुचिता , १६४
दुपहरिया , २४०
दुवला , १६५
दुमुही सर्प , २५२
दुर्मा , २४२
दुलहिन , १६७
दुष्ट हाथी , २४५
दूत , २१०
दूध , ७८, १२५, १६३
दूधिया घोड़ा , २४७
दूब , २४२
दूरवीन-चश्मा , २३३
दूलह , १६७
देखना , २००
देव , २३, ८१
देवता , १२५, १५३, १७६
देवता जात , १२७
देवता जाति , १५३
देवर , १६६
देवळ , ५३, १०८
देश , २२६
देस , १०६
देह , १६६
देहली , २३०
देहाती , २३०
दैत , १६२
दैत्य , १८१

दो — नाम : २१६
दो कोस , २२०
दोनो ओर , २१६
दोष , २५६
दोहाई , २१०
द्रव , १५६
द्रव्य , १८२
द्रिव्य , ८३
द्रोपदी , ११३, २०८
द्वार , २२६
द्वारका , २२८

धजा , ५३, १०८
धन , १२७
धनवान , १६०
धनिया , १६४
धनुख , ११०, १३४
धनुर्वर , २१३
धनुष , ५६, २१३
धनेस , १५६
धरती , २१, २८, १६३
धरम , ७१, १२०
धर्म , २५६
धुरी , २११
धुला हुआ , २५८
धूआ , २३६
धूप , १८१
धूर्त , १६२
धूल , २२६
धूळ , ४३
धूसर रंग , २५७
धोकनी , २२३
धोवी , २२३
धोरा , २३५
ध्रष्ट हाथी , २४५
ध्वजा-पताका , २११

नकटा — नांम : १६६
नकुल , २०८
नख , ६३, ११६, २०१
नखत्र , १५६
नग , १३१
नगर , ५१, १०६, २२७
नगारा , १८७
नगारे का बजना , १८७
नदी , ४०, ६७, १००, २३४
ननद , १६६
नमक , २२६
नमक की खान , २२६
नमसकार , १३३
नमस्कार , १६५
नया , २५८
नरक , २५५
नरक मे गिरे हुए, २५५
नरवर , २२८
नर्वदा , २३५
नर्म , २५६
नव-ग्रह , १०१, १५७
नव-निघ , १५६
नवनिधि , १२७, १८२
नव-निधी , ८३
नशा , २५१
नस , २०४
नांम , ६६, ११६
नाई-हज्जाम , २२२
नाक , ११६, २००
नाग , २५२
नागपुरी , २५२
नागरवेल , २४१, २४२
नागरमोथा , २४३
नाच , १८६
नाटा , १६६
नाडा-नीबी , २०५

नाभी — नाम : २०२
नारगी , २४०
नारद , २१८
नारियल का वृक्ष , २४१
नारेल , १४०
नाला , २३५
नाळेर , १३६
नाव , ८७, १२६, २१६
नाव की उतराई , २२०
नासिका , ६५
निंदा , १८६
निकट , २५८
निकाला हुआ , १६५
नितव २०२
नित्य , १८५
निमेष आदि
वर्णन , १८४
निरकुश , २५६
निर्जल देश , २२६
निद्रा , १८८
निर्बल , १८६
निर्भय , १६३
निर्मल , २५८
निर्विष सर्प , २५२
निसा , १५७
निसास , २५५
निसैनी , २३०
निहानी , २२२
नीचा , १३६, २५८
नीम , २४०
नीर , ५१
नीला-काला , २५७
नीला घोडा , २४७
नूपर , १३४, २०४
नेत्र , ६५, ११७, २००
नेत्र वाला , २४१
नोक के आगे की
अगुली — नाम २४६
नो , २१६
नोल्या , २५१
न्याय , २१०

पक्ति , २५७
पख , २१३, २५२
पखा , २०६
पखी , १३८
पखो का मूल , २५२
पगु , १६६
पच देव वृक्ष , १८३
पचभभ्र , २४८
पडित , १६०
पकडना-
पकडाना , २१६
पग , ६२
पगरखी , १३८
पघडी , २०४
पछताना , २१७
पटना , २२८
पणच , २१३
पतग , २४४
पतला लगावण , १६३
पतव्रता , १३६
पताळ , ४३
पति , १६७
पतिव्रता , १६८
पत्थर , २३१
पत्नी , १६७
पद , ११५
पन्ना , २३३
पपीहा , १३६, २५३
पयोघर , ६३, ११५
परदा , २०५

परवत — नाम २२
परमेस्वर , ३६
परशुराम , २१८
पराक्रम , २१०
पराग , २३८
पराधीन , १६०
परिश्रम , १८६
परी , १५२
परीक्षित , २०६
पर्वत का
मध्य भाग , २३१
पर्वत , २३१
पलग , २०६
पल , २२०
पलास , १३६
पवन , ८५, १२८, २३७
पवित्र , २५८
पशु , २४४
पश्चिम , १८३
पहर , १८४
पहाड , ४६, १०५
पहिया , २११
पहिया की नाह , २११
पहिया की
नेमी-पूठी , २११
पहिला , २५६
पहुचा , २०१
पक्षी , २५२
पत्र , २३८
पत्र की नस , २३८
पत्रदूत , २१०
पत्र , १३७
पांच , २१६
पांच वरस का
हाथी , २४५
पाणी , ३०
पान बीडा – नाम १३४
पाखाण , ४६, १०५
पागल , २१६
पाटल , २४०
पाडळ , १३६
पाताल , २२, १०६, २५५
पाताळ , २२, १०६
पानी का सोता , २३४
पानी , २३४
पाप , ७१, १२०, २५६
पारवती , ३५ १७३
पारा , २३२
पालकी , २११
पात्र , २३१
पिडत , ५७
पिंडली , २०२
पिछला , २५६
पिता , ६१ १६८
पींजनी , २०३
पीडा , ७७, १२४, २५५
पीतरक्त व कृष्ण
रक्तघोडा , २४७
पीतल , २३२
पीत-हरित घोडा, २४७
पीने का पात्र , २३०
पीपर , १४०, १६४
पीपळ , ४७, १०४, १६५
पीपल , २३६
पीला , २५७
पीला घोड़ा , २४७
पीलू , २४०
पुडरीक , १०७
पुन धरती , २१
पुन सिंह , ३१
पुन सूर्य , १७६
पुन हाथी , ३०

पुराना – नाम २५८
पुरी „ ६७
पुवाड „ २४१
पुष्ट „ १६५
पुष्प „ २३८
पुष्प-रस „ २३८
पुत्र „ १६८
पुत्री „ १३३
पूंछ „ २४८
पूंछ का मूल „ २४६
पूजा „ १६५
पूजा की सामग्री „ १६५
पूजित „ १६५
पूर्व „ १८३
पूर्व कर्म व प्रारब्ध „ २५६
पेट का बंधन „ २१२
पेट „ ६३, ११५, २०२
पेटी „ २३०
पैर „ २०३
पोता „ १६६
पोती „ १६६
पौष „ १८४
प्याज „ २४२
प्याला-चुसकी „ २२३
प्यास „ १६३
प्यासा „ १६३
प्रकट „ २५६
प्रतिकूल „ २५६
प्रतिबिंब „ २५६
प्रमदा वन „ २३८
प्रमाण „ २१६
प्रलय „ १८५
प्रवाळ „ १४०
प्रवाह „ २३५
प्रश्न वचन „ १८६
प्रसन्नता „ १८८

प्राणवायु – नाम २३७
पृथ्वी „ १७३

फंदा „ २२५
फन „ २५२
फरी „ २०
फल „ २३६
फली „ २३६
फालकुश्या „ २२१
फाल्गुन „ १८४
फिरंगी „ २२५
फूंक के बाजे „ १८६
फूल „ ४५, १०१, १६५
फूले हुये पुष्प „ २३६
फेंफड़ा „ २०६
फौज „ २१०

बंगाल „ २२७
बछ्या „ ७१
बदर „ १०२
बदूक „ २१४
बंधन „ १६५
बंधा हुआ „ १६५
बंधूक „ १४१
बकरा „ २४६
बकरी „ २४६
बचन „ १८५
बछ „ १२५
बछड़ा „ २४६
बछेरा „ २४७
बज्र „ २१४
बड „ १०४
बडवानल „ २३६
बड़ा „ १६३
बड़ा भाई „ ६२, ११५, १६६
बड़ी चिमगादर „ २५४
बढ़ई „ २२२

वरा — नाम २४०
वदला लेना , २१५
वन , २३७
वनास , २३५
वया , २५४
वरगद , २३९
वरछी , २१४
वरता , १९७
वराती , १९७
वरावर , २१५
वरावर वाला , २१५
वर्फ , २३४
वळध , ७७, १२४
वळभद्र , ८२, १२६, १५८
वलि , २०९
वलैया , १९७
वलैया लेना , १९७
वसत , १३८
वसिष्ठ की पत्नी , २१८
वसिष्ठ , २१८
वहरा , १९६
वहिन , १९९
वहुत , २५७
वहुत हसना , १८७
वहेडा , २४०
वाका-टेढा , २५८
वाण , ५६
वाधने व पकडने
का स्थान , २४८
वास , २४१
वाग , २३८
वाछडा , ७८
वाजा , १८६
वाजार , २२८
वाजीगरी , २२४
वाडी , २३८
वाणिज्य — नाम २१९
वातकुभ के
नीचेका भाग , २४६
वादळ , १८३
वादशाह , २२५
वाप , ११४
वामला , २२५ २२७
वारै रासा रा , १३१
वारै गासी , १५७
वाल , २०३
वाळक , ६१, ११५
वालक , १८९
वाल-भट्टा , २४२
वालो का जूडा , २०६
वाल्मीकि , २१८
वावडी , २३६
वाहन-सवारी , २११
वाहर का वगीचा , २३८
वाहर के कीडे , २४३
विंदू के नीचे का
भाग , २४६
विचला , २५९
विच्छू , २४४
विजली , १८३
विजोरा , २४०
विना जुली भूमि , २२६
विमलाचल , २३१
विल्व , २३९
विसत , २२०
विस्तार , २५८
वीच , २५९
वीजळो , १२९
वीणा , १३४, १८६
वीणा अग , १८६
वीणा की खूटी , १८६
वीणादड , १८६

बीर वहुट्टी – नाम		२४४
वीर्य	,	२०३
बीस वरस का हाथी	,	२४५
बुगला	,	२५४
बुद्धि	,	१८८
बुधी	,	३६, १००, १६१
बुरा चलने वाला	,	२४८
बुरा समय	,	१८३
बुर्ज	,	२२७
बुझाना	,	१८६
बूद	,	२३५
वेगार	,	२५५
वेचना	,	२१९
वेटी	,	१९८
वेडा	,	१४०
वेदव्यास	,	२१८
वेरी	,	२३९
वेल	,	२३८
वेला	,	२४०
वैकूठ	,	१५२
वैत	,	२३९
वैतरणी	,	२३५
वैल	,	२४९
वैल का कुब्बड	,	२४९
वैल हाकने का	,	२२१
वैहन	,	६२
वोहरा	,	२२०
व्यजन	,	१९३
व्याज का घन	,	२१९
व्याधि	,	२५६
व्यान-वायु	,	२३७
व्रत	,	२१८
व्रद्ध	,	१८९
व्रहस्पत	,	१३४
व्रह्मा	,	२३ ३८, १४९, १७८, २२३
ब्राह्मण – नाम		२१७
ब्रिख	,	१०१
बिंदू के नीचे का भाग	,	२४६
मग	,	२२४
मगी	,	२२५
मडार	,	२२९
मवर	,	२३४
भमर	,	४५, १०२, १६५
भय	,	१८७
भयकर	,	१८७
भरखपन	,	१९२
भरणा	,	२२०
भरत	,	२०७
भरतार	,	६८, ११९
भस्म	,	२१८
भाई	,	६२, ११५
भाड	,	२३०
भाद्रपद	,	१८४
भार	,	२२०
भारवाही नाव	,	२१९
भाळ	,	१३३
भाला	,	२९, २१४
भालू	,	२५०
भालू-वनरक्षक	,	२२४
भिन्न	,	२५९
भीम	,	५५, १०९
भीमसेन	,	२०८
भीष्म	,	२०८
भुजवद	,	२०४
भुजागल	,	२२९
भूख	,	१९३
भूखा सिह	,	२५०
भूत	,	२६०
भूमि	,	४३
भेड	,	२४९

भेडिया — नाम २५१
भैरव , २६०
भैंस , २४६
भैंसा , २४६
भोरा-वर्र , २४४
भोह , २००
भोज , २०६
भोजन , ७६, १२५ १६४
भोजपत्र का वृक्ष , २८०

मगळ , १३२
मजरी , २३८
मडप , २२६
मडलेश्वर राजा , २०७
मत्रवी , १६
मकना हाथी , २४५
मकडी , १६२
मकरद , १४२
मकरी , १३६
मक्खन , १६३
मक्खी , २४४
मगध , २२७
मगर , २५४
मच्छर , २४४
मच्छ , १०७
मछली , २५४
मछली पकडने का काटा , २२४
मछी , ५२
मज्जा , २०३
मटकी , २३०
मठा , १६४
मतवाला , १६४
मतवाला हाथी , २४५
मथुरा , २२८
मद उतरा हुआ हाथी — नाम २४५
मदरा , १३७
मदार-धतूरा , २८१
मदारी , २२८
मद्य , २२३
मधुमक्खी , २४४
मधुर , २५४
मन , ६६, २०२
मनिहार , २२३
मनुख , ११४
मनुष्य , १८६
मरकट , १६५
मरघट , २२८
मर्यादा , २१०
मल , २०४
मल्लाहा धीवर , २२४
मस्तक , ६५, २००
मस्तक कुंभ , २४६
मस्त हाथी , २४५
महादेव , २६, १७१
महावत का पैर हिलाना , २४६
महीना , १८४
महुवा , २४०
माखण , ७६, १२५
माण , ७०
मास , २०३
मास की बोटी , २०३
मास की हड्डी , २०३
माघ , १८४
माघ-फाल्गुन , १८५
माता , ६१, ११४ १६८
माथा , २१३, ११७
माधवी , १४१
मानना , २१५

माया	— नाम	६७
मारना	,	१६१
मारने को तैयार	,	१६२
मारवाड	,	२२७
मार्ग	,	२२८
मार्गशिर	,	१८४
मार्गशिर-पौष	,	१८५
मालती	,	१४१
मालपुवा	,	१६३
मालवा	,	२२७
मालिन	,	२२१
माली	,	२२१
माशा	,	२२०
मिट्टी	,	२२६
मिथिलापुरी	,	२२८
मिथ्या वचन	,	१८६
मिनख	,	६०
मिरच	,	१४०
मिर्च	,	१६४
मिलना	,	२१६
मिला हुआ	,	२५६
मिश्री-बूरा	,	१६३
मित्र	,	६६, ११६, २०६
मित्रता	,	२०६
मुक्की	,	२०१
मुख	,	६४, ११६, २००
मुरदे को आग मे फेरने की लकडी	,	२१६
मुर्गा	,	२५३
मुलक	,	५१
मुसलमान	,	२२५
मूंग	,	२४२
मूंगा	,	२३३
मूंछ	,	२०१
मूंठ-वैंटा	,	२२१
मूलधन	,	२१६
मूरख	— नाम	१२२
मूरिख	,	७४
मूर्ख	,	१६०
मूर्छा	,	२१५
मूली	,	२४२
मूमल	,	२३०
मूसा	,	३५, १३१, १६१
मूत्र	,	२०४
मेघ	,	३१, ८६, १५२, १८२
मेघज्योति	,	२३६
मेघतिमिर	,	१८२
मेघनाद	,	२०७
मेघमाळा	,	१८२
मेद	,	२०३
मेघ्य-ढेले फोडने का	,	२२१
मेरगिर	,	१२५, १६२
मेरुदड	,	२०२
मेवाडा	,	२२७
मैंडक	,	२५५
मैंढा	,	२४६
मैंनसिल	,	२३३
मैंना	,	२५५
मैंल	,	२०४
मैंला	,	२५८
मोगरी	,	२२१
मोती	,	८४, १२७, १६०, २३३
मोम	,	२४४
मोर	,	८४, १२७, १६१, २५३
मोरी	,	२३५
मोल	,	२१६
मोलसरी	,	२३६
म्यान	,	२१३
म्रग	,	१०२
मृगपाश	,	२२५

मृतक — नाम : १६२, २००
मृत्यु , १८६
म्लेच्छ-भेद , २२६

यमराज , १८०
यमुना , २३५
यत्न , २१५
यक्ष , १८१
यज्ञ , २१७
याचक , १११
याद करना , १८८
यान मुख , २११
युधिष्ठर , २०८
युद्ध , २१४
युद्ध के लिए
सज्जित हाथी , २४५
युद्ध में से भागना , २१४
युद्ध योग्य हाथी , २४५
यूथपति हाथी , २४५
योजन , २२०
योनी , २०२

रगरेज , २२३
रगसाल , १३८
रभाना , २५७
रई , २३१
रई का थभा , २३१
रज , ११०
रजपूती , २१०
रक्त का घोड़ा , २४७
रत्न , २३३
रथ , २०
रसोई का घर , २२६
रसोई का दरोगा, २०६
रसोईदार , २०६
रहन-वधक , २२०
रहना , २५६

रक्षा — नाम २६०
रक्षित , २५६
रामचद्रजी , ६८
रांम , १४५
रामरण , १६२
राई , १६४
राकस , ६८, १६२
राजकर , २१०
राजघर , २२६
राजमार्ग , २२८
राजा , १६, ५४, १०८, १७४
राजा की सवारी
का हाथी , २४५
राजा प्रथु , २०७
राजावर्त हीरा , २३३
राज्य के सात अग २०६
रात , १२२
रात का डाका , २१४
रामरण , ६६
रामवेलि , १४१
रावटी , २०५
रावरण , २०७
राक्षस , १८१
रात्रि , ७३, १८३
रात्रि-प्रारम , १८४
रिख , ६७
रिख दरवान , ६७
रीढ , २०२
रुड-घड , २००
रुधिर , १३५, २०३
रूई , २४०
रूपा , ५०, १०६
रूपारेल , २५४
रेत , २३५
रेंहट , २३६
रोग , १६६

रोगी	— नाम	१६६
रोफ	,,	२५०
रोमावळी	,,	६४, ११६, २०२
लका	,,	२०८
लगडा	,,	१६६
लगूर	,,	२५१
लबा	,,	२५७
लबे दात वाला	,,	२४५
लकडी के कीडे	,,	२४३
लगाम	,,	२१२
लछमरण	,,	६६, १४६
लज्जा	,,	१८८
ललकारया	,,	२१६
ललाट-भाग्य	,,	२००
लवग	,,	१४१
लव	,,	१८४
लहगा	,,	२०५
लहर	,,	२३४
लहसुन	,,	२४२
लक्ष्मरण	,,	२०७
लक्ष्मी	,,	१८०
लाख	,,	२०६
लाज	,,	१३७
लार	,,	२०४
लाल	,,	२३३, २५७
लाल कमल	,,	२४१
लाल घोडा	,,	२४७
लाल-पीला मिला हुआ	,,	२५७
लिग	,,	२०२
लिखमी	,,	४१
लीक	,,	२४४
लू	,,	२३७
लेश	,,	२५७
लेस	,,	१८४
लोध	— नाम	२४१
लोभ	,,	१६४
लोभी	,,	१६४
लोमडी	,,	२५१
लोह	,,	५०, १०६
लोहा	,,	२३२
लोहार	,,	२२२
लोहे की जाली	,,	२१२
ल्हिसोडा	,,	२४०
वश	,,	१६६
वस	,,	१६५
वसी	,,	१०४, १३३
वज्र	,,	६६, १५१
वड	,,	४७, १६५
वन	,,	४४, ६७, १०१, १६४
वरण	,,	१२६, १५६
वरुण	,,	८२, १८१
वर्षा	,,	१८२
वसत्र	,,	६६, ११७
वसूला	,,	२२२
वहमी	,,	१६५
वानर	,,	४५
वास	,,	४७
वाट	,,	४४
वाण का टाटवा	,,	२१३
वाणिज्य	,,	२१६
वाली-वानर		२०७
वासुकी नाग	,,	२५२
वासुकी रग	,,	२५२
वाहण	,,	६७
वाहित्य के नीचे का भाग	,,	२४६
विध्याचल	,,	२३१
विक्रम	,,	२०८
विख	,,	१२३

विघ्न — नाम २५६
विपत्ति ,, १६६
विपत्तिवाला ,, १६६
विभाग ,, २५८
विभीषण ,, २०७
विभुता ,, ६७
वियोग ,, २६०
विवाह ,, १६८
विश्वामित्र ,, २१८
विश्वास ,, २६०
विष्णु ,, १७२
विस ,, ७५
विस्णु ,, २३
वीजळी ,, ८६
वीजा ,, २४०
वीजावेल ,, २३३
वुरभी ,, २१
वेग ,, १२८
वेग वाला
वछेरा ,, २४७
वेद ,, १३५, १८५
वेळा ,, ७७, १२४
वेश्या ,, १६८
वैद ,, ६७
वैदूर्य मणि ,, २३३
वैद्य ,, १६६
वैर ,, २०६
वैशाख ,, १८४
वैश्या ,, २१६
व्यभिचारिणी ,, १६८
व्यवहार ,, १८६
व्याज ,, २२०
व्रख ,, ४४, १६४
व्रखभ ,, २०
वृष्टियुक्त पवन ,, २३७
वृक्ष ,, २३८

शख — नाम : २४३
शक्कर ,, १६३
शक्ति ,, २१५
शपथ ,, १८६
शब्द ,, २५७
शयन-गृह ,, २२६
शरमिंदा ,, १६५
शरीर के कीडे ,, २४३
शस्त्र चलाना ,, २१६
शस्त्र ,, २१२
शहद ,, २४४
शत्रू ,, २०६
शाखा ,, २३८
शासन ,, १६०
शिकार ,, २२४
शिखर ,, २३१
शिलाजित ,, २३३
शीत ,, २५६
शुद्ध आचरण ,, २१७
शूद्र ,, २२१
शूरवीर ,, १६१
शेनपक्षी ,, २५४
शेषनाग ,, २५२
शोच ,, १८७
शोथ ,, १६६
शृंगारादि
नवरस ,, १८७
श्वेत कमल ,, २४१
श्वेत घोडा ,, २४३
श्वेत पिंगल ,, २४६
षट् वेदांग ,, १८५
सख ,, ८७, १२६, २४३
सचर ,, २२६
सतोष ,, १८८
सदेह ,, २५६

सध्या — नाम : १३६, १८४
सपत्ति , १६०
सपूर्ण , २१७
सत्रघी , १६६
सवत , १८४
सक्षेप , २५८
सकलीगर , २२२
सखी , १३२, १६८
सगा भाई , १६६
सघन , २५८
सजीवनी , १४१
सज्जन , १६२
सताईस नक्षत्र , १५६
सताईस नक्षत्र , १३०
सत्य वचन , १८६
सदासिव , ६२
सदृश्य , २५६
सनेह , ६६
सपतपुरी , १००
सप्तस्वर , २५७
सफेद , २५७
सबद , ७२, १२१
सभा , ७१, १६६
सभाव , १२०
सभासद , १६६
समाधि , २५६
समिधा-इंधन , २१८
समानवायु , १३५
समीप , १३५
समुद्र , २२, २८, ४०, १७७
समूह , ७०, १३७, २१६
सरकडा , २४२
सरग , ८०, ६६, १५२
सरजात , १११
सरप , ४२, ११०
सरल , १६२
सरसो — नाम : २४२
सरस्वती , ३५, १७०
सरीर , ६६, ११७
सर्प , २५१
सर्प की डाढ , २५२
सर्प की देह , २५२
सर्पिणी , २५२
सलवती , २१८
सवार , २११
सहदेव , २०८
सहस्रबाहु , २०६
सत्र , ५६
सत्रू , ११३
सत्रुघ्न , २०७
साकल , २१२
साच , ७७, १२४
साड , २४६
सावा , २४२
सास , २५५
साईस , २१२
साडी , २०५
सात , २१६
सात उपधात , १३१
सात धात , १३१
साथ , २१६
सान , २२२
साफ पानी , २३४
सामान्य दिशा , १८३
सामान्य निधि , १८२
सामान्य बात , १८५
सामान्य सतति , १६६
सामान्य समय , १८३
साम्हने , २५८
सायकाल , १८५
सायक ११०
सारदा , ६१

साल्व — नाम २२७
साक्षी , २२०
सिंघ , ४६, १०३
सिंघजात , १०३
सिंह , २५०
सिटपिटाया
हुआ , १६५
सिपाही , २१३
सिरहाना , २०६
सिलावटा , ६७
सिव , २३, ३८, १४६
सींग , २४६
सीढी , १३३, २३०
सीता , ६६, १३०, १४५
२०७
सीप , २४३
सीमा , २२७
सीमा , २३२
सुन्दर , ६८, ११६
सुई , २२२
सुक्र , १३२
सुख , २५६
सुगन्ध , २३६
सुग्रीव , २०७
सुछम , १३६
सुद्रसणचक्र , ६८
सुदरसण चक्र , १५८
सुपारी , २४१
सुभट , २१२
सुभाव , ६६
सुमार्ग , २२८
सुमेर-गिर , ८०
सुमेरु , २३१
सुरव्रख , १०२
सुवक्कड , १६५
सुम्रा , १३५

सूंठ — नाम १४०
सूंड का पानी , २४६
सूंड की नोक , २४६
सूम्रर , ४६, २५०
सूतिका-गृह , २२६
सूना भाग , २२८
सूप , २३०
सूर , १०२
सूरज , २६, ३६, ६४
सूरन , २४२
सूरिमा , ५८
सूर्यकान्त मणि , २३३
सूर्य , १७६
सूक्ष्म भाग . २५७
सूक्ष्म कीडा , २४३
सेज , १३३, २०६
सेत (श्वेत) , ७३
सेना , ५६, ६७
सेना का
अगला भाग , २११
सेना का
दहिना भाग , २११
सेना का पडवा , २१०
सेना का
पिछला भाग , २११
सेना का
बाया भाग , २११
सेना की चढाई , २११
सेनापति , २१०
सेन्या , ११३
सेर , ३०
सेव , १६३
सेवा , ६६, ११७
सेस , ४२, ११०
सेही , २५१
सैंधा , २२६
सोंठ , १६४

सोखना — नाम १९३
सोनजुही , १४१, २४०
सोना , ४६, २३२
सोनार , २२३
सोपारी , १४०
सोभा , ७२, १२१, १५५
स्तन , २०२
स्तुति , १८६
स्थानिक बाग , २३८
स्थिर , २१५
स्नान , २०४
स्नेह , ११६, २५६
स्नेह वाला , १६६
स्मरण , १८८
स्याम , ७३, १२२, १५७
स्याम कारतक , १२७
स्याम कारतिकेय, ८४
स्यामी कारतिक, १६०
स्याहारी , २६१
स्वजन , १६६
स्वभाव , २५६
स्वर्ग , १८१
स्वान , १२३
स्वाधीन , १६०
स्वामी , १६०
स्वामी कार्तिक , १८२
स्वारथी , ६७
स्त्री , ६७, ११८, १६७
स्त्री का
अधोवस्त्र , २०५
हड़िया , २३०
हंस , ३६, १०३, १३१
१६१, २५३
हजामत , २२२
हठ , २१५
हहूमान , ९६
हड्डी — नाम २०३
हणमत , १४६
हताई , २२८
हथिनी , २४४
हथोडा , २२३
हनुमान , २०७
हरड , २४०
हरड-वहेडा-
आवला , २४०
हरडी , ४८
हरड़ै , १०४, १६६
हरताल , २३२
हरा , २५७
हल , २२१
हळद , १३५
हलवाई , २२२
हल्दी , १६४
हर्षित , १६४
हस्ती , १०३
हाथ , ६३, ११५, २०१
२२०
हाथ का गहना , २०४
हाथियो की
रचना , २४५
हाथी , १६, २७, ४७, ६७
१७५
हाथी का कधा , २४६
हाथी का कपोल , २४८
हाथी का दात , २४६
हाथी का मद , २४५
हाथी का ललाट , २४६
हाथी का सवार , २१२
हाथी का सेवक , २१२
हाथी की
चार जात , २४८
हाथी की साकल , २४८
हाथी की सूंड , २४६

हाथी बाधने का		
स्तभ — नाम		२४६
हाट	,	२२६
हारना	,	१६५, २१५
हाल	,	२२१
हास्य	,	१८७
हिंगोट	,	२४०
हिंदू	,	२१७
हिनहिनाना	,	२५७
हिमालय	,	२३१
हिरण	,	४६, २५१
हीग	,	१६४
हीरा	,	१३२, २३३
हुकम	,	१२३
हूका	,	२५३
होठ	,	११६, २०१
हौद कसने का		
रस्सा	,	२४६
हृदय —	नाम	२०२
क्षमा	,	१६२
क्षत्रिय	,	२१६
त्रिगर्त	,	२२७
त्रिशूल	,	२१४
ऋणी	,	२२०
ऋण	,	२२०
शृंगार	,	२३३
श्रवण	,	११६
श्रावण	,	१८८
श्रावण-		
भाद्रपद	,	१८५
श्रीकृष्ण	,	६३
श्रीखड	,	१६३
श्रीरामचद्र	,	२०७

अनेकार्थी शब्दों के शीर्षकों का अनुक्रम

अबर	— नाम	२७०
अज	,	२७१
अजा	,	२७१
अनन्त	,	२६९
अरजुण	,	२६६
अळ	,	२६७
अत्र	,	२६९
आतम	,	२६५
आतमज	,	२६८
उडप	,	२७०
कबल	,	२७०
कबु	,	२७१
कवध	,	२६८
कर	,	२६७
करन	,	२७१
कलभ	,	२६८
कलाप	,	२७०
कळ	,	२६५
कळप	,	२६६
काम	,	२६६
काळ	,	२६९
कीलाल	,	२७४
कुज	,	२७१
कुतप	,	२७४
कुय	,	२७४
कुरग	,	२६८
कुस	,	२७१
कूट	,	२७१
कौसक	,	२७०
क्रतत	,	२७२
खग	,	२७०
खर	,	२७१
गउरी	— नाम	२७३
गुण	,	२६९
गोत्र	,	२६८
घण	,	२६९
जम	,	२७१
जळज	,	२६९
जाल	,	२६९
जिह्न	,	२७२
जीव	,	२६८
जुगल	,	२६५
जोत	,	२७२
तनु	,	२६९
तम	,	२६९
तरक	,	२७१
ताळ	,	२६९
तुरग	,	२६८
दळ	,	२६७
दर	,	२६७
दान	,	२७३
दुज	,	२७१
देव	,	२७४
धनजय	,	२६५
धाम	,	२६६
धात्री	,	२७२
ध्रुव	,	२७३
नग	,	२७०
नाग	,	२७०
निसा	,	२७२
पथी	,	२७०
पटु	— नाम	२६८
पतग	,	२६७
पयोधर	,	२६८
पल	,	२६७
पत्र	,	२६६
पत्री	,	२६६
पीत	,	२६९
पोहकर	,	२७०
बन	,	२६९
बरही	,	२६६
बरुन	,	२६८
बल	,	२७१
बळ	,	२६७
बाण	,	२६८
बुध	,	२६९
ब्रख	,	२६७
ब्रह्म	,	२७०
भग	,	२७४
भव	,	२६६
भाव	,	२७४
भवन	,	२७१
भूधर	,	२६८
मद	,	२७०
मधू	,	२६५
माया	,	२७२
मार	,	२६८
माळा	,	२६५
मित्र	,	२७२
यडा	,	२७२
यळा	,	२७२
रमा	,	२७२

रज — नाम : २७१
रम „ २७२
२७३
राजीवलोचन „ २७०

ललाम „ २७४

वय „ २६८
वर „ २६७
वरण „ २६६
वसु „ २६८
वाम „ २६६
वारन „ २७०
वाह „ २७३
विटप — नाम : २७३
विव „ २७२
विरोचन „ २७१
व्याळ „ २६६
व्रख „ २७१

सवर „ २७०
सनेह „ २७३
सारग „ २७२
सार „ २६८
सिव „ २७१
सिवा „ २७२
सुमन „ २७३
सुमना — नाम : २७२
सुरभी „ २६५
सुक्र „ २७०
स्यदन „ २७०

हस „ २६८
हरनी „ २७१
हरि „ २७३
हस्त „ २७२
हार „ २७३
क्षय „ २६६
क्षुद्रा „ २७३
श्री „ २७४

एकाक्षरी शब्दो का अनुक्रम

ऊकार नाम : २८३

अ „ २७७, २८३
आ „ २७७, २८३

इ „ २७७, २८३
ई „ २७७, २८०
२८३

उ „ २७७, २८४
ऊ „ २७७, २८४

ए „ २७७, २८४
ऐ „ २७७, २८५

ऋ „ २८५
ॠ „ २८५

ओ „ २७७
औ „ २७७
अ — नाम : २८५
अं „ २८५

क „ २७७, २८५
का „ २८५
कि „ २८६
की „ २८६
कु „ २७७
कु „ २८६
कू „ २८६
के „ २८६
कै „ २८६
को „ २८६
कौ „ २८७
क „ २७७, २८७

ख „ २७८, २८०
२८७
खा — नाम : २८७
खि „ २८७
खी „ २८७
खु „ २८७
खू „ २८७
खे „ २८७
खै „ २८७
खो „ २८८
खौ „ २८८
ख „ २७८, २८८

ग „ २८८
गा „ २८८
गि „ २८८
गी „ २८८
गु „ २८८
गू „ २८६

गे—नाम २८९
गै , २८९
गो , २८९
गौ , २८९
गं , २८९

घ , २८९
घा , २८९
घि , २९०
घी , २९०
घु , २९०
घू , २९०
घे , २९०
घै , २९०
घो , २९०
घौ , २९०
घं , २९०

ङ(ङ) , २७८, २९०
ङा(ङ) , २९०
ङि(ङि), २९१
ङी(ङी), २९१
ङु(ङु) , २९१
ङे (ङे) , २९१
ङै , २९१
ङो , २९१
ङौ , २९१
ङं , २९१

च , २७८, २९२
चा , २९२
चि , २९२
ची , २९२
चु , २९२
चू , २९२
चे , २९२
चै , २९२
चो—नाम २९२
चं , २९२

छ , २७८, २९३
छा , २९३
छि , २९३
छी , २९३
छु , २९३
छू , २९३
छे , २९३
छै , २९३
छो , २९३
छौ , २९३
छं , २९४

ज , २७८, २९४
जा , २९४
जि , २७८, २९४
जी , २९४
जू , २९४
जे , २९४
जै , २९४
जो , २९४
जौ , २९४
जं , २९४

झ , २७८, २९४
झा , २९५
झि , २९५
झी , २९५
झु , २९५
झू , २९५
झे , २९५
झै , २९५
झो , २९५
झं , २९५

ञ—नाम २७८, २९५
ञा , २९५
ञि , २९६
ञी , २९६
ञु , २९६
ञू , २९६
ञे , २९६
ञै , २९६
ञो , २९६
ञौ , २९६
ञं , २९६

ट , २७८, २९६
टा , २९६
टि , २९६
टी , २९६
टु , २९६
टू , २९७
टे , २९७
टै , २९७
टो , २९७
टौ , २९७
टं , २७८, २९७

ठ , २९७
ठा , २९७
ठि , २९७
ठी , २९७
ठु , २९७
ठू , २९७
ठे , २९७
ठै , २९७
ठो , २९७
ठौ , २९७
ठं , २९८
ड , २९८

डा—नाम २९८
डि , २९८
डी , २९८
डु , २९८
डू , २९८
डे , २९८
डै , २९८
डो , २९८
डौ , २९८
ड , २९८

ढ , २७८, २९८
ढा , २९९
ढि , २९९
ढी , २९९
ढु , २९९
ढू , २९९
ढे , २९९
ढै , २९९
ढो , २९९
ढौ , २९९

ण , २७८, २९९
णा , २९९
णि , २९९
णी , २९९
णु , २९९
णू , २९९
णे , २९९
णै , ३००
णो , ३००
णौ , ३००
ण , ३००

त , २७९ ३००
ता , ३००
ती , ३००
तु—नाम : ३००
तू , ३००
ते , ३००
तै , ३००
तो , ३००
तौ , ३००
त , ३००

थ , ३००
था , ३००
थि , ३०१
थी , ३०१
थु , ३०१
थू , ३०१
थे , ३०१
थै , ३०१
थो , ३०१
थौ , ३०१

द , ३०१
दा , २७९, ३०१
दि , ३०१
दी , ३०१
दु , ३०१
दू , ३०१
दे , ३०१
दो , ३०१
दौ , ३०२
द , २७९, ३०२

ध , २७९, ३०२
धा , ३०२
धि , ३०२
धी , ३०२
धु , ३०२
धू , ३०२
धे , ३०२
धै—नाम : ३०२
धो , ३०२
धौ , ३०२
धं , २७९ ३०२

न , २७९, ३०२
ना , ३०३
नि , ३०३
नी , ३०३
नु , ३०३
नू , ३०३
ने , ३०३
नै , ३०३
नो , ३०३
नौ , २७९, ३०३
न , ३०३

प , २७९ ३०३
पा , ३०३
पि , ३०३
पी , ३०३
पु , ३०३
पू , ३०४
पे , ३०४
पै , ३०४
पो , ३०४
पौ , ३०४
प , ३०४

फ , २७९, ३०४
फा , ३०४
फी , ३०४
फु , ३०४
फू , २७९
फू , २७९, ३०४
फे , ३०४
फै , ३०४

फो—नाम ३०४
फौ , ३०४
फ , ३०५

ब , २७९, ३०५
बा , ३०५
बि , ३०५
बी , ३०५
बु , ३०५
बू , ३०५
बे , ३०५
बै , ३०५
बो , ३०५
बौ , ३०५
बं , ३०५

भ , २७८, २७९ ३०५
भा , ३०५
भि , ३०६
भी , ३०६
भु , ३०६
भू , ३०६
भे , ३०६
भै , ३०६
भो , ३०६
भौ , ३६०
भं , ३०६

म , ३०६
मा , २७९, ३०६
मि , ३०६
मी , ३०६
मु , ३०६
मू , ३०६
मे , ३०६
मै , ३०६

मो-नाम ३०७
मौ , ३०७
म , २७८, ३०७

य , ३०७
या , ३०७
यि , ३०७
यी , ३०७
यु , ३०७
यू , ३०७
ये , ३०७
यै , ३०७
यो , ३०७
यौ , ३०६
य , ३०६

र , २७९, ३०७
रा , ३०७
रि(ऋ), २७७, ३०८
री(ॠ), २७७, ३०८
रु , ३०८
रू , ३०८
रे , ३०८
रै , ३०८
रो , ३०८
रौ , ३०८
र , ३०८

ल , २७८, २८० ३०८
ला , ३०८
लि(ऌ), २७७, ३०८
ली(ॡ, २७७, २८० ३०८
लु , ३०८
लू , ३०८
ले , ३०८

लै—नाम ३०८
लो , ३०९
लौ , ३०९
ल , ३०९

व , २७८, २८० ३०९
वा , ३०९
वि , ३०९
वी , २८०, ३०९
वु , ३०९
वू , ३०९
वे , ३०९
वै , ३०९
वो , ३०९
वौ , ३०९
व , ३०९

श , ३१०
शि , ३१०
शी , ३१०
शु , ११०
शू , ३१०
शे , ३१०
शै , ३१०
शो , ३१०
शौ , ३१०
श , ३१०

ष , ३१०
षा , ३१०
षि , ३१०
षी , ३१०
षु , ३१०
षू , ३१०
षे , ३११
षै , ३११

पो—नांम ३११
पो , ३११
प , ३११

स , २८०, ३११
सा , ३११
सि , ३११
सी , २८०, ३११
सु , ३११
सू , ३११
से , ३११
सै , ३११
सो , ३११
सौ , ३११
स , ३११

ह , २८०, ३१२
हा , ३१२
हि , ३१२
ही , ३१२
ही , ३१२
हु , ३१२
हू , ३१२
हे , २८०, ३१२
है , ३१२
है,व , ३१२
हो , ३१२

हो—नाम ३१२
[illegible] , ३१२

[illegible] , ३१२

ह , २८०, ३१२
हा , ३१२
हि , ३१३
ही , ३१३
हु , ३१३
हे , ३१३
है , ३१३
हो , ३१३
हौ , ३१३
[illegible] , ३१३

श्री , ३१३

[illegible]

अ , ३१४
आ , ३१४

इ , ३१४
ई , ३१४

उ , ३१४
ऊ , ३१४

[illegible] , ३१४
[illegible] , [illegible]

[illegible] , ३१४
[illegible] , ३१४

[illegible] , ३१४
[illegible] , ३१४

ओ , ३१४
औ , ३१४

[illegible] , ३१४
[illegible] , ३१४

[illegible] , ३१४

[illegible] , ३१४

[illegible] , ३१४

नि , ३१४

[illegible] , ३१४

सं , ३१५
गु , ३१५

स्य , ३१५

ह , ३१५

○○○○

डिंगल कोष अत्यत महत्त्वपूर्ण है। इसकी थारोनेस मुझे बहुत पसन्द है।

—राहुल साकृत्यायन

डिंगल कोष मिला। देख कर बडी प्रसन्नता हुई। इस उपयोगी प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

भाषा-विज्ञान के विद्यार्थियो के लिए ही नही, राजस्थानी ग्रन्थो का अध्ययन तथा सपादन करने वाले विद्वानो के लिए भी यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी प्रमाणित होगा। आपने इस प्रकार बहुत ही उपयोगी परन्तु अब तक प्राय अप्राप्य सामग्री प्रस्तुत कर राजस्थानी साहित्य की ही नही भारतीय साहित्य तथा इतिहास के विद्यार्थियो और विद्वानो की अमूल्य सेवा की है।

—डॉ० रघुवीरसिंह

कोष को देख कर बडी प्रसन्नता हुई। इसने प्रदेश का गौरव बढाया है।

—डॉ० कन्हैयालाल सहल

कोष की आवश्यकताओ के अलावा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह कार्य महत्त्वपूर्ण है और राजस्थानी भाषा का अध्ययन अथवा भारतीय भाषाओ का अध्ययन करने वालो को इसमे बहुत-सी आवश्यक सामग्री मिलेगी।

—डॉ० रामविलास शर्मा

डिंगल कोष अत्यत सुन्दर, उपादेय तथा महत्वपूर्ण है।

—चन्द्रगुप्त विद्यालकार